मासिकप्रकाशन

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका



स कगार पर खड़ी है
यी राजसत्ता

अशरफियों से जड़ा पेड़

बना एक शहर :
रबाद हुआ एक शहर

१३ रूपये
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

मृत्यु अनेक रूपों में आपको लुभाती है...



रुकिये !

रेलगाड़ी के भीतर एवं रेलवे स्टेशन परिसर में पड़ी लावारिस वस्तुओं एवं सामान को कदापि न छुएं। इनमें जानलेवा बम छिपा हो सकता है जो कि न केवल आपकी और आपके सहयात्रियों की अकस्मात, दर्दनाक मृत्यु का बल्कि अनेक अन्य यात्रियों को भी गंभीर रूप से जख्मी करने का कारण सिद्ध हो सकता है।

- *सावधान एवं सतर्क रहें : अपने आस पास लावारिस वस्तुओं के प्रति सतर्क रहें, उन यात्रियों का ध्यान रखें जो स्टेशन पर अथवा रेल डिब्बों में अपना सामान छोड़कर स्वयं दूर निकल जाते हैं।*
- *आपकी सावधानी आपकी एवं अन्य लोगों की जान बचा सकती है।*
- *बैठने एवं अपना सामान रखने से पहले अपनी सीट के नीचे अवश्य देखें और सुनिश्चित करें कि कहीं कोई लावारिस सामान/वस्तु तो नहीं पड़ी।*
- *अपने ऊपर वाली बर्थ/सामान रखने के स्थान पर भी देखकर सुनिश्चित कर लें कि कोई गुड़िया, खिलौना अथवा उपहार पैकेट तो नहीं पड़ा है।*



यदि आपको कोई लावारिस वस्तु अथवा समान नजर आये, उसे बिल्कुल न छुएं। अपने आस पास के सभी यात्रियों को सावधान कर दें एवं रेल सुरक्षा बल (आर.पी.एफ.) या ड्यूटी पर कार्यरत किसी रेलवे कर्मचारी को सूचित करें। कृपया हमारी सहायता करें ताकि हम आपकी सहायता कर सकें।

उत्तर रेलवे

यात्री सुरक्षा... हमारा ध्येय...

शब्द सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं और उसके बाद उनके उत्तर भी । उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए, और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए । इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा ।

१. **विनयोक्ति** —क. दब्बूपन, ख. विनम्र वचन, ग. नियंत्रित बात, घ. गुप्त वार्ता ।

२. **दुर्ज्ञेय**—क. मूर्खतापूर्ण, ख. जो कठिनता से पचे, ग. ज्ञानरहित, घ. दुर्बोध ।

३. **निरीह**-क. इच्छा-रहित, ख. निराधार, ग. निरुत्साहित, घ. उद्देश्यहीन ।

४. **योगदान**—क. अधिक दान, ख. सहयोग, ग. संपर्क, घ. उपाय ।

५. **प्रत्यारोप**—क. गंभीर आरोप, ख. आरोप मिटाना, ग. वह आरोप जो किसी आरोप के जवाब में किया गया हो, घ. झूठा आरोप ।

६. **पटापेक्ष**—क. कपड़ा खींचना, ख. परदा गिरना, ग. तंबू गिराना, घ. पहाड़ी तीर्थस्थान का शीतकाल के लिए बंद हो जाना ।

७. **प्रसार**—क. घूमना-फिरना, ख. फैलाव, ग. प्रयोग, घ. प्रचार ।

८. **प्रताड़ना**—क. ठगी, ख. धूर्तता, ग. कष्ट पहुंचाना, घ. खंडन करना ।

९. **प्रतिरोध**—क. विरोध न होना, ख. रुकावट, ग. प्रतिकूल होना, घ. बैर ।

१० **प्रतिशोध**—क. बदला, ख.अशुद्ध करना, ग. अनिष्ट, घ. निषेध ।

११. **यथावत**—क. ज्यों का त्यों, ख. विधिपूर्वक, ग. नियमानुसार, घ. सुसंबद्ध ।

१२.. **उपार्जन**—क. कमाना, ख. वेतन के अतिरिक्त आय, ग. प्राप्त करना, घ. पैदा करना ।

उत्तर

१. ख. विनम्र वचन । सभ्य पुरुष सदा **विनयोक्ति** अभिव्यक्त करते हैं । (विनय+उक्ति)

२. घ. दुर्बोध, जो कठिनाई से जाना जा सके । कुछ विषय साधारण छात्रों के लिए **दुर्ज्ञेय** होते हैं । (दुर्+ज्ञेय)

३. क. इच्छा (तृष्णा) रहित । सामान्य व्यक्ति प्रत्येक परिस्थिति में **निरीह** नहीं हो सकता । (निर्+ईह्)

४. ख. सहयोग । निर्धनों का सेवा-कार्य महत्त्वपूर्ण **योगदान** है । (योग+दान)

५. ग. वह आरोप जो किसी आरोप के जवाब में किया गया हो । यह **प्रत्यारोप** है । (प्रति+आरोप)

६. ख. परदा गिरना या गिराना (नाटक का) । उस गंभीर मामले का **पटाक्षेप** हो गया है । (पट+आक्षेप)

७. ख. फैलाव, विस्तार । शिक्षा में नैतिकता का **प्रसार** होना चाहिए । (व्युत्.-प्र+सृ)

८. ग. कष्ट पहुंचाना, सताना । अभावग्रस्त

लोग **प्रताड़ना** के भागी नहीं होते । (प्र+तड़्)
९. ख. रुकावट, बाधा । सामाजिक असंगतियों का **प्रतिरोध** करना चाहिए । (प्रति+रुध्)
१०. क. बदला । अनिष्टकारी का **प्रतिशोध** करना स्वाभाविक है । (प्रति+शुध्)
११. क. ज्यों का त्यों, जैसा चाहिए उसी तरह । चित्रकारी **यथावत** हुई है ।
१२. क. कमाना । सच्चे साधनों से **उपार्जन** मनुष्य का कर्त्तव्य है । (व्युत्–उप, अर्ज)

पारिभाषिक शब्द

Privilage	=विशेषाधिकार
Prerogative	=परमाधिकार
Agent	=अभिकर्ता
Gaurantee	=प्रत्याभूति
Security	=प्रतिभूति/जमानत
Arbirator	=मध्यस्थ
Alleged	=कथित/अभिकथित
Act of misconduct	=कदाचार

ज्ञानगंगा

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।

(चाणक्य नीति १३/२१)

—जल, अन्न और मधुर वचन ये तीन पृथ्वी के रत्न हैं ।

पूर्णता गौरवाय ।

(मेघदूत पूर्वराध २०)

—मनुष्य का पूर्ण होना उसके गौरव का कारण होता है ।

प्रयोगे शिक्षायाः परीक्षा भवति ।

(दीपमालिका २/२८)

—प्रयोग में शिक्षा की परीक्षा होती है ।

भिन्नश्लिष्टा तु या प्रीतिर्न सा स्नेहन वर्धते ।

(पंचतंत्र ३/१३१)

—जो प्रीति एक बार टूट जाने पर फिर जुड़ती है वह स्नेह से नहीं बढ़ती है ।

अक्रन् कर्म कर्मकृतः सह वाचा मयोभुवा ।

(यजुर्वेद ३/४७)

साधक कल्याणी वाणी के साथ कर्म किया करते हैं ।

तत् किं सौहृदं यत्र न समानसुखदुःखता ।

(पुरुष परीक्षा ३५)

यह कैसा सौहार्द है, जिसमें सुख और दुःख में समानता न हो ।

अनुकूलवेदनीयं सुखम् । प्रतिकूलवेदनीयं दुःखम् ।

(तर्कसंग्रह)

जो विषय अनुकूल प्रतीत हो, वह सुख है और जो विषय प्रतिकूल प्रतीत हो वह दुःख है ।

गुणामेववक्ति साधुर्दोषमसाधुः प्रकाशयति ।

(सुभाषित रत्न भण्डागार)

साधु पुरुष गुण को ही प्रकाशित करते हैं और असाधु पुरुष दोष को ही ।

नान्योऽन्यं हिंस्याताम् ।

(शतपथ ब्राह्मण ३/४/१/२४)

परस्पर एक-दूसरे को हिंसित अर्थात पीड़ित नहीं करना चाहिए ।

(प्रस्तुति : महर्षि कुमार पाण्डेय)

प्रतिक्रियाएं



पुरस्कृत पत्र

माता-पिता : प्रत्यक्ष देवता

परम आदरणीय संपादक जी राम-राम । 'कादम्बिनी' के प्रत्येक मर्मस्पर्शी तथ्य के लिए आपकी वंदना । 'कादम्बिनी' के मुख्य पृष्ठ से लेकर अंतिम छोर तक पूरा पढ़ जाने के बाद भी संतुष्टि नहीं होती । जब तक मनन न कर लिया जाए तथा मनन करने के बाद जितनी बातें अधिक-से-अधिक जीवन में उतारने की, सच्चाई से, कोशिश की जाती है, करते हैं । अपनी समस्याओं से घिरे, अपने आसपास के घनघोर दूषित वातावरण में, हमें प्रकाश किरण मिल जाए, इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है । जुलाई '९७ में 'सिसकियों में डूबा बुढ़ापा' पढ़ा था । खूब रोया भी था । आज तक पढ़कर रोया करता हूं । "हमारे माता-पिता हमारे पृथ्वी के सबसे बड़े प्रत्यक्ष देवता हैं ।" 'माता-पिता की सेवा करना तो हमारे जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य है ।' हमारी सोहबत बिगड़ गयी है । हम अपने देवता को भूल गये हैं । हमारे बच्चे भी हमारे साथ ऐसा ही व्यवहार करेंगे, यह सोचकर माता-पिता की सेवा नहीं की जानी चाहिए । माता-पिता की सेवा करना तो हमारा प्रथम कर्त्तव्य एवं दायित्व है । जीवन की सच्चाई से आपको अवगत करा दूं— यही कि माता-पिता की अनकही आंतरिक चाहत भी यही होती है कि बच्चे हमारे उस समय काम आएंगे जब हमारे हाथ-पांव थक जाएंगे । हमारे बस का नहीं रहेगा । फिर हम अपने माता-पिता को भूल जाएं तो हमारे से बड़ा दुर्भाग्यवान और कौन होगा ?

दूसरी बात 'दिसंबर '९७' की 'कादम्बिनी' में बहरीन से अमर अबीदीन से जीवन पर्यंत एक अनजानी वृद्धा प्रकाशवतीजी को आर्थिक सहायता करने का विचार आना ही सज्जनता की पराकाष्ठा है । आपने उन्हें महिमा मंडित किया, यह आपकी सज्जनता की सर्वोच्च ऊंचाई है, मगर एक बार मैं आपसे पूछकर रहूंगा, क्या बुजुर्ग माता-पिता की आर्थिक सहायता भर कर देने से हम अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लें ? नहीं । बूढ़े माता-पिता को अपनों का, अपनों से, आत्म सम्मान चाहिए, समर्पण की भावना चाहिए । सहारा चाहिए । अपना काम स्वयं करने में समर्थ नहीं हैं तो सहारा चाहिए । उनके तकिये के नीचे रखीं दस हजार की गड्डियां कुछ काम नहीं करेंगी । मां कभी यह भी नहीं चाहती कि बेटा-बहू अपना काम छोड़कर मेरी गोद में सिर रखे बैठे रहें । वे चाहते हैं चाहे उनसे हफ़्ता, दस दिन, बीस दिन या महीने में ही मिलो, पर मिल जाओ तो वो तुम्हारी याद में ही

दुःख-सुख बांट लें। हमारे अंदर समर्पण की भावना तो हो। सिर्फ पैसा देकर पांच साल तक भी खोज-खबर न लेनेवाले पुत्र, बहू भी देखे हैं मैंने।

तीसरी बात; वही पुत्र, वधु अपने पीहर की ओर अपने पति का झुकाव कैसे करा देती है, पुत्र भी अपने सास-ससुर, साले-सालियों की आवभगत करके अपने आपको कृतार्थ क्यों समझने लगता है? अपने माता-पिता में ऐसे क्या कांटे उग आते हैं जो सास-ससुर में नहीं होते? क्यों सास-ससुर अपनी बेटी-जमाई को अपने 'अंडर' में रखना, अपना तीर मारना मान लेते हैं?

आप कहेंगे मैंने इतने दिन बाद सुध क्यों ली है? ठीक है, आपकी बात। मैंने अपने वृद्ध माता-पिता को नजदीक से देखा है, महसूस किया है, रोजाना करता हूं। उन्हें रुपया-पैसा नहीं 'मैं' चाहिए अपना 'अहम्' चाहिए। कदम-कदम पर देखभाल चाहिए, सहारा चाहिए, एक अपनापन, आत्मीयता चाहिए, जुड़े रहने का भाव चाहिए और इसके बीच आर्थिक अभाव भी कभी-कभी आड़े नहीं आता। मैंने ऐसा महसूस किया है। आपसे ही सीखा है।

कम पढ़ा-लिखा हूं, फिर भी इतना समझता हूं कि मेरे माता-पिता मेरे प्रत्यक्ष देवता हैं। ईश्वर है या नहीं, मैं नहीं जानता क्योंकि मेरा भोग लगाया दूध ईश्वर ने कभी नहीं पीया, मेरे माता-पिता ने प्रत्यक्ष पीया है। आपका शुभचिंतक हमेशा से हमेशा तक।

—शिव प्रकाश शर्मा

'अयोध्यापुरी, गढ़ गेट, हापुड़, गाजियाबाद (उ.प्र.)

प्रोत्साहन पुरस्कार

बिना बचपन के बच्चे

आदरणीय अवस्थी जी, सादर नमन।

आपके बारे में सुना करता था, पढ़ा भी। आदर है आपके प्रति। 'कादम्बिनी' पढ़कर श्रद्धा एवं आदर और बढ़ा। 'कादम्बिनी' मुख सुहाती पत्रिका नहीं है, इसलिए अच्छा लगता है। एस्टेबिल्शमेंट के अनुकूल लिखना आवश्यक नहीं है। इसकी पाठन सामग्री सम्यक्, कभी-कभी क्रिटिकल तथा विचारोत्तेजक होती है। कुछ माह पूर्व एक अंक में महिलाओं के अधिकार, स्वतंत्रता अथवा आरक्षण के विषय में पढ़ा था। कुछ विचार मेरे मन में भी आए, वस्तुतः मुझे चिंता उस बच्चे की है जो नारी पुरुष की बराबरी की स्पर्धा में निगलेक्ट हो रहा है। माता-पिता उसे झोपड़ी या पेड़ की छांह में (मजबूरी में) या घर में टीवी या वीडियो गेम्स पकड़ाकर अथवा आया पर छोड़कर (मजबूरी में नहीं) अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं और उस बच्चे की मानवीय संवेदनाओं, अनुभूतियों की कोई फिक्र नहीं करते हैं और फिर यही बच्चे बिना बचपन के बड़े होते हैं। एक नयी 'वेल्यूज' के साथ, जो स्थापित मूल्यों से मेल नहीं खाती। तब हम भुनभुनाते हैं, 'कर्स' करते हैं नयी 'जेनरेशन' को।

—महेन्द्र शुक्ल

डायरेक्टर जनरल (सिविल डिफेंस)

डी १/८८, सत्य मार्ग, चाणक्यपुरी, नयी दिल्ली

संसार : शरीर का है

फरवरी अंक में 'जिंदगी जीने की है, काटने की नहीं' पढ़ा। वास्तव में जिंदगी जीने का नाम

है । उसे ढोना या काटना नहीं है, बल्कि -उसे सार्थक रूप देना है । जीवन का लक्ष्य इसमें नहीं है कि हम कैसे हैं ? बल्कि इसमें है कि हमें कैसा होना चाहिए ? इसके लिए हमें अपना प्रकाश स्वयं बनने की आवश्यकता है । यदि हम संसार को बदलने की इच्छा रखते हैं तो इसकी शुरुआत हमें स्वयं से ही करनी होगी । कहा गया है, 'हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा ।' निष्काम भाव से परोपकार, सहायता सांत्वना, खुशी, आशा, प्रेरणा देना व छोटी-छोटी भावनाएं हैं जिनसे जीवन बनता है । इस संदर्भ में हमें स्वयं से यह प्रश्न भी करना चाहिए कि हम इस संसार में क्यों आये हैं ? हमारे सामने केवल 'आज' है वर्तमान के पुरुषार्थ पर ही भविष्य की इमारत खड़ी होती है । यह शरीर संसार का है । इसके द्वारा हम इस संसार की सेवा कर सकते हैं । उसके लिए सदैव तैयार रहें ।

—गजानन पांडेय
निंबोली अड्डा, हैदराबाद

सफलतम चिकित्सा पद्धतियां

स्वास्थ्य अंक में हमेशा की तरह इस बार भी आयुर्वेद, होम्योपैथी व प्राकृतिक चिकित्सा पर कई उत्तम आलेख अति पठनीय व उपयोगी लगे । निःसंदेह आयुर्वेद, होम्योपैथी और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियां ही भविष्य की सफलतम चिकित्सा पद्धतियां साबित होंगी ।

यह भविष्य कथन पाश्चात्य वैज्ञानिक डॉक्टर जेराल्ड मैक्समैन ने बहुत वर्ष पूर्व अपनी पुस्तक 'मेडीसींस इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी' में उल्लेखित कर दिया था । सन् १९७६ में ही । उन्होंने सन् १९९६ में जिन रोगों पर विजय प्राप्त करने के संकेत दिये थे, वस्तुतः चिकित्सा वैज्ञानिकों को उसमें पूर्णतः सफलता मिल गयी है । उन्होंने लिखा है कि इक्कीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही उन सभी आध्यात्मिक मान्यताओं की पुष्टि विज्ञान द्वारा हो जाएगी जिसे इन दिनों हास-परिहास में टाल दिया जाता है । संयम, नियम, तप-तितिक्षा, ब्रह्मचर्य, प्राणायम, ध्यान, योग, व्यायाम, खान-पान, इंद्रियों का सुदपयोग—जैसे शाश्वत आध्यात्मिक सिद्धांतों पर विज्ञान एवं चिकित्सकों की मुहर लगेगी ।

—शशिभूषण बड़ोनी
जोशियाड़ा, उत्तरकाशी,

विशिष्ट पत्रिका में कुछ और विशेष

कई दशक से 'कादम्बिनी' का नियमित पाठक हूं । सभी अंक सुरक्षित हैं, ठीक उसी प्रकार— जैसे सन् १९४८ की 'हिंदी प्राइमर' आज भी मेरे पास है । दूसरे अंक के आने तक पहले अंक को तकिये के पास रखकर पढ़ते-पढ़ते सो जाता हूं । आज तक इसे कहीं भी कबाड़ी के हाथों बिकते नहीं देखा । दूसरे अंक के आते-आते पहला अंक 'फुटपाथ' से भी गायब हो जाता है और लेट-लतीफ पाठकों के घर पहुंच जाता है । अभी तक अपनी परंपरा के अनुसार यह हिंदी की गरिमा को अपनाए हुए और हिंदी साहित्य के शिखर पर सुशोभित है । इसके घर के द्वार की डार पर इसके परिवार की 'कुल-नार' इसकी शोभा बढ़ाकर सदा सुधि पाठकों का स्वागत करती है ।

—चौ. बालक राम वर्मा
पूर्वी बाबरपुर, दिल्ली-३२

विदेशियों के लिए क्या ?

मार्च के 'आखिर कब तक' स्तंभ में एक तरफ राष्ट्रपति के.आर. नारायणन एवं उनकी

पत्नी द्वारा बिना किसी सुरक्षा के एक साधारण नागरिक की तरह मतदान करना पढ़कर खुशी हुई और ऐसा अनुभव हुआ— जैसे हर नागरिक स्वयं सुरक्षित है ।

उसी स्तंभ में एक विदेशी राजनयिक की पत्नी का एक प्रकरण पढ़कर मन आत्मग्लानि से भर गया । क्या ऐसा नहीं लगता—जैसे अपनी इस लज्जाजनक और शापित जिंदगी के जिम्मेदार हम स्वयं हैं ?

जब हम अपने ही देश में, उधार की संस्कृति अपनाकर, अपनी संस्कृति को हेय दृष्टि से देंख रहे हैं । अपनी गौरवमयी भाषा को अपने क्षुद्र विचारों के मैले आंचल में छुपाकर विदेशी भाषा को संसद से लेकर चौराहों तक सम्मान दे रहे हैं, तो ये बेइज्जती भी तो उन्हीं की दी है, जिनके हम ऋणी हैं ।

इसका सम्मान हमें आत्म-सम्मान से जीना सिखाएगा और तभी हम खुले दिल से दूसरों को भी सराह सकेंगे ।

आनेवाला युग आपके दृष्टिकोण परिवर्तन से आपका ऋणी होगा ।

—रेनू श्रीवास्तव
कदमा—जमशेदपुर

रचनाकारों से

● *प्रतिक्रियाएं : इस स्तंभ का उद्देश्य लेखक और पाठक के बीच एक 'रचनात्मक संवाद' स्थापित करना है । अतः पाठकों से अपेक्षा है कि वे अपने ऐसे ही पत्र भेजें जो इस सीमा में आते हों । पत्र १०० शब्दों से अधिक न हों ।*

संपादक

कादम्बिनी

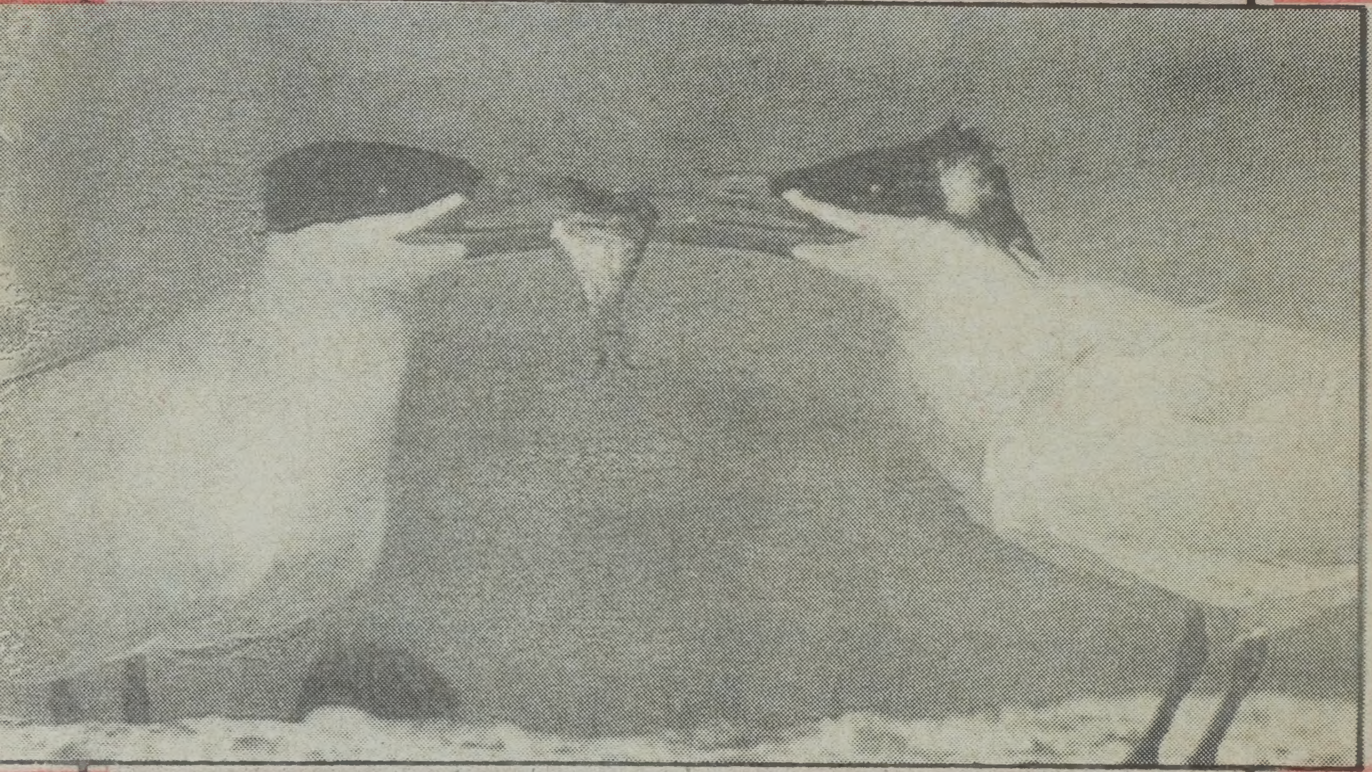
आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

● वर्ष ३८ ● अंक ७ ● मई १९९८

कार्यकारी अध्यक्ष
नरेश मोहन

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

लेख एवं निबंध



किस कगार पर खड़ी है नयी राजसत्ता □ द्वारका प्रसाद २१

हमारी कसम जो न पढ़े इसे □ एच. एल. ठक्कर २६

शरमाने का भी एक इतिहास है □ डॉ. चर्नाड कारडुसी ३०

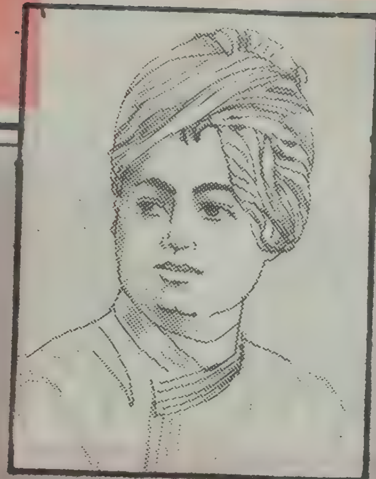
आज भी सुरक्षित है क्राइस्ट का कफन □ योगेश चन्द्र शर्मा ४२

साहित्यकार नहीं दरोगा चाहिए □ डॉ. मदन मोहन तरूण...................४५

संस्कृत के विकास में मुसलमानों का योगदान □ असद रिजवी ४८

स्थायी स्तंभ

शब्द सामर्थ्य—४, ज्ञान गंगा—५, प्रतिक्रियाएं—६, कालचिंतन—१३, आखिर कबतक—१८, प्रेरक-प्रसंग—४०, विधि विधान—९८, व्यंग्य-तरंग—१२२, इनके भी बयां जुदा जुदा—१६६, यह महीना और आपका भविष्य—१८२, प्रवेश—१८४, ज्योतिष समस्या और समाधान—१८६, नयी कृतियां—१८९, सांस्कृतिक समाचार—१९४, क्लब समाचार—१९६ समस्या पूर्ति—१९८।



स्वामी विवेकानंद के जीवन का अंतिम दिन
□ भारतीय वसंत कुमार ३६

सुकरात के जीवन का अंतिम दिन □ शराफत अली खान ५०
क्या बला है हारमोन □ चंद्रशीला गुप्ता................................५४
एक प्रतिनायक की याद □ डॉ. हीरालाल बाछोतिया........................५७
बना एक शहर : बरबाद हुआ एक शहर □ सर्वेश........................६४
अशरफियों से जड़ा पेड़ □ कमलेश माथुर..................................६८
नेताजी : कैसे भागे थे वे □ डॉ. हीरालाल बाछोतिया........................७२
पंजाब के पालने में पली प्रेम कथाएं □ संजय सुमन ७७
एक दिन की जिंदगी जीने वाले □ महेश कुमार झा...........................८०
जहां भारतीय संस्कृति जीवित है □ कन्हैया लाल गांधी ८८
सड़कें और उदासीन सरकार □ अवध श्रीवास्तव.............................१०५
स्वास्थ्य की मूल्यवान निधि □ आचार्य महाप्रज्ञ..................................१०८
इतिहास की प्रसिद्ध शादियां □ डॉ. भगवान सिंह वर्मा १२४
तीरथ वह जिसके महासागर चरण पखारे □ डॉ. अनामिका प्रकाश १३०
नयी अभिनेत्रियां : अंधी दौड़ में □ प्रस्तुति : दु. प्र. शु.....................१३४
अंतरिक्ष अन्वेषण की रोचक घटनाएं □ कालीशंकर १४७
भूतों से बचने के लिए बनवायी इमारत □ सुशील कुमार श्रीवास्तव १५२
खबर करो स्वर्ग के सम्राट को □ डॉ. दीनानाथ तिवारी.......................१५५
हाथ न पैर, फिर भी पहाड़ पर सैर □ सूर्य प्रकाश टोडरिया................१५९
धर्मक्षेत्रे प्रबंध क्षेत्रे □ सुरेश कांत १६२
राणाप्रताप के हाथ बने भील □ नारायण राव १६४
भ्रांति और शक्ति □ राजेन्द्रशंकर भट्ट...१६७
तिरुक्कुरल और प्रजातंत्र □ डॉ. जा. आशीर्वादम..............................१७१

कादम्बिनी : चंदे की दरें

वार्षिक—२३५ रु.; द्विवार्षिक : २६५ रु.; विदेशों में : पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान : वार्षिक : ३८५ रु. (अमेरिकी डॉलर १३.५०, पौंड ७.५०)

अन्य सभी देशों के लिए—वार्षिक : ५५५ रु. (२०.५० डॉलर, पौंड ११.५०) चंदा ड्राफ्ट से दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि., नयी दिल्ली को भेंजे ।

शुल्क भेजने का पता : प्रसार व्यवस्थापक, कादम्बिनी, हिंदुस्तान टाइम्स लि., 18-20 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

जासूसों से सघन पूछताछ □ धर्मेन्द्र गौड़ १७५

कहानियां एवं व्यंग्य

और प्यार हो गया □ अभय खरे ओंकार ६१

क्षरण □ डॉ. चंद्रशेखर त्रिपाठी ८३

मातृत्व □ विक्रमन ९३

धर्म का रहस्य □ डॉ. सुधा पांडे १०१

नर्बदा दीदी □ रामस्वरूप अणखी ११२

प्रशंसा के चक्कर में □ गोपाल प्रसाद व्यास ११७

नियति □ डॉ. मधु संधु १२७

अनावश्यक □ बाला शर्मा १४१

कविताएं

दुर्गा प्रसाद शुक्ल □ उपेन्द्र कुमार ३५

सतीश चतुर्वेदी □ वजीर आगा १८१

मंजू ज्योत्सना □ डॉ. नीलम दीक्षित □ अमर तनोत्रा १८८

संपादकीय परिवार

मुख्य उप-संपादक : भगवती प्रसाद डोभाल, वरिष्ठ उप-संपादक : प्रभा भारद्वाज, सुरेश नीरव

उप-संपादक : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, धनंजय सिंह, अरुण कुमार जैमिनि, सुजीत वाजपेयी

प्रूफ रीडर : प्रदीप कुमार

कला विभाग प्रमुख : सुकुमार चटर्जी, चित्रकार : भुपेन मंडल

संपादकीय पता : 'कादम्बिनी' हिन्दुस्तान टाइम्स लि., 18-20 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

फोन : ३३१८२०१/२८६, टेलेक्स : ३१-६६३२७, फैक्स : ०११-३३२११८९

आवरण (पारदर्शी) : रवीन्द्र श्रीवास्तव तथा लियाकत अली भट्टी

काल-चिंतन

प्रश्न है : अच्छा आदमी कौन है ?

●

—उत्तर सहज हो सकता है : अच्छा है वह जो सर्वांग है । सहज है । कटुता से परे है अथवा वह आत्म केंद्रित है, किसी से संपर्क नहीं रखता । किसी का भला-बुरा नहीं चाहता ।

—अर्थ हुआ वह नितांत एकांत सेवी है, निर्मूल है और अपने सिवाय किसी के लिए चिंतित नहीं है ।

—नहीं, नहीं है यह । यह परिभाषा तो आत्म केंद्रित, भयग्रस्त और निरुत्साहित व्यक्ति की है ।

—तो ?

—तो, वेद व्यर्थ नहीं हैं । चिंतक का मौन अबोले बहुत-कुछ कह गया है । कह गया है तो इस तरह नहीं कि हम स्वयं अपने आपको तो नहीं देख सकते तुलनात्मकता के लिए दूसरों को देखते हैं ।

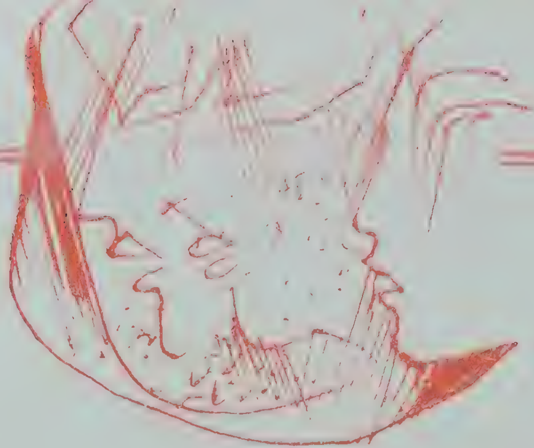
—सोचिए इस पर फिर से :

* *हम अपने को देख सकते हैं ।*
* *आईने में जो प्रतिच्छाया दीखती है, वह क्या वास्तव में सत्य है ।*
* *हमारे आचार, हमारे व्यवहार, हमारे विवरण और हमारे क्रिया-कलाप क्या वास्तव में हमारी वह प्रतिच्छाया हैं जिनसे इस प्रश्न का उत्तर मिल सकता है अथवा व्याकरण का एक अध्याय लिखा जा सकता है ।*

—मोती से स्वच्छ वस्त्र और मेघ-गर्जना से तर्रार-तेज स्वर किसी को भी अच्छा आदमी पारिभाषित नहीं होने देंगे ।

□

—पहले तो आदमी बनने की बात आती है । आदमी के बाद फिर



विशेषण—अच्छा या बुरा । यह सब इसलिए कि आदमी भी सहस्त्र जीवधारियों में एक बिंदु मात्र है । बिंदु कब, कैसे और क्यों विस्फारित होता है यह समूची एक गूढ़ प्रक्रिया है । इस प्रक्रिया में ही जीवधारियों के बीच एक नये जीवधारी का अस्तित्व उभरता है ; उसे कहते हैं मनुष्य ।

—हर मनुष्य आदमी नहीं हो सकता । मनुष्य मनुष्य हो सकता है जैसे अश्वत्थ (या पीपल) अथवा वह । दोनों महावृक्ष हैं । समान क्षमतावान होते हुए भी 'महाबोधि' तो एक ही होगा ।

—वह शाश्वत है, अविनाशी है और अक्षय है । वह नष्ट होकर कालग्रास बनने के बाद भी वायु में लहराती धराहीन जड़ों से एक नया तना निकाल देता है । इसी तने से फिर नव पल्लव प्रस्फुटित होने लगते हैं । कहा जाता है कि प्रलय के बाद भी वट शेष रहा है ।

—इसी की तरह अश्वत्थ या पीपल का वृक्ष है । पीपल उर्द्धगामी है । पीपल के सभी पर्ण एक रूप होते हैं तब भी वे परस्पर भिन्न हैं । पीपल के असंख्य पर्णों में कोई भी दो पर्ण एक जैसे नहीं होते । पीपल वटवृक्ष की तरह कभी शांत नहीं रहेगा । वह वायु-वेग के सहारे सहचिंतक बनेगा अथवा अपनी चेतना से वायु को जन्म देकर पर्यावरण का भागीदार बनेगा । दिन हो रात पीपल ओषजन छोड़ता है । संभवतः ज्ञान का मूल-केंद्र यही अश्वत्थ रहा है । जीवनी-शक्ति का निरंतर, कालहीन परिचायक कभी अंत तक नहीं पहुंच सकता । वह शाश्वत होगा । वह महाबोधि ।

□

—मनुष्य से आदमी बनने की पहचान के लिए यह अत्यंत बारीक समीकरण एक मीमांसा है । दोनों में से कोई कम नहीं । दोनों अपराजेय हैं और अपनी सम्यक लक्ष्मण रेखा में श्रद्धेय हैं ।

—कहते हैं तब भी अश्वत्थ बनो, वट-वृक्ष की जिंदगी लेकर महावृक्ष के भागीदार मत बनो ।



□

—स्वर सरोवर में दृश्यमान दो पुष्प खिले थे : दोनों का अनिंध्य सौंदर्य, दोनों काल-बोध और मौसम के साक्षी ।

- एक है कमल,
- दूसरा है कदम्ब ।

— कमल चिंतन के लिए या सोचने के लिए बाध्य करता है ।

—सोचता है जो उसके मार्ग में बाधा कभी नहीं आएगी ; आएगी तो वही होगी जैसे तेज दोपहर में पसीने से लथपथ एक व्यक्ति है । वह लगता तो परेशान है, किंतु जरा-सी छाया उसे तत्काल आगे बढ़ने के लिए व्यग्र कर देती है ।

—जो सोचता है वह कभी भटकता नहीं ।

—सोचता है जो मन उसी का चिंतक है ।

—सोचने और चिंतन की प्रक्रिया ने चेतन-मस्तिष्क को सदैव जन्म दिया है ।

—क्रांति का समूचा इतिहास चेतना की नंगी स्लेट पर लिखा गया है ।

—विश्व संकल्प के प्रेरणा-स्त्रोत और प्रगति के चरण-पग-तल मस्तिष्क की चेतन धारा के ही प्रतिफल हैं ।

—कमल में बास किसका है, कमल में सुबास कितनी है, यह सब सोचना व्यर्थ है । उसमें सोच है, सोचने के बीज हैं यही सब सोचने के अवयवों का विध्वंस कर देते हैं ।

—कदम्ब अपनी जगह है । कमल मात्र तालाब में नाजुक टहनियों में खिलता है, किंतु कदम्ब एक महावृक्ष है ।

—कदम्ब की डालों पर ही झूले पड़ते हैं, किलकारियां गूंजती हैं और गेंद की तरह सुवासित श्वेत पुष्प खिलते हैं ।

—कदम्ब क्या खिला निरभ्र वातायन में चंद्रकला फैल गयी : चंद्रमा तब एक नहीं रह जाता वह अनेक हो जाता है ।



—कदम्ब के पुष्प, प्रेमियों को प्यारे रहे हैं । कृष्णलीला के वे आधार हैं ।
—ईश्वर की अनंत सत्ता एक वृक्ष में कितने स्वरूप ले सकती है, कदम्ब उन सभी स्वरूपों का अर्थवान साक्षी है ।
—कदम्ब के पुष्प में सुगंध है, दृष्टि है, संतोष है, लज्जा है, प्रतिष्ठा है और समचेतना है ।
—कमल और कदम्ब सम्यक् होकर भी अलग पहचान के भागीदार हैं क्योंकि कमल दाता है :

- दाता है तो दान का अंत नहीं
- याचक भी अनंत है, परंतु तृप्ति का वरदान जहां हो वहां गणित का पहाड़ा काम नहीं करता ।

□

—मनुष्यता कमल और कदम्ब दोनों का अभिषेक है । सम्भवतः दोनों इसीलिए आकर्षण के केंद्र हैं—सामान्य दृष्टि के लिए और सृजनशील मानसिकता के लिए भी ।
—तराजू के बराबर पाये पर खड़े हैं हम ।
—तब ?

- सोचें हम ; आकांक्षाएं न हों तो जीवन क्या होगा !
- ज्ञान न होगा तो आकांक्षाओं को दृष्टि कहां से मिलेगी !
- ज्ञान भी हुआ और कर्महीन हुए तो जीवन का क्या होगा !
- कर्म भी किया और प्रतिफल नहीं मिला तो ?

—समग्र चेतना के साथ कर्म करने के बाद प्रतिफल न मिले, चिंता किस बात की ! यत्न अपने आपमें एक कर्म है । यत्न की निरंतरता कभी व्यर्थ नहीं होगी, यही सनातनता है ।

□

—मनुष्य से आदमी की खोज तब सहज हो जाती है ।



—समझाने के लिए शेष क्या है ? आदमी के पास बुद्धि-चेतना का जो अटूट आडंबर है वह अपरिभाषेय है । वह जोड़ता है तो तोड़ता भी है । तोड़ता है तो फिर जोड़ भी सकता है ।

—यह सब संभव है तभी जब आत्मविश्वास हो ।

—आत्मविश्वास ही सही आदमी है ।

—आदमी वह है जिसमें निश्चय की दृढ़ता है ।

—आदमी वह है जो अनंत विभीषिकाओं और अंधी दौड़ के बावजूद आस्थावान है । वह आशावादी दृष्टि लेकर जीता है ।

—मन आदमी का उत्साह है ।

—पराक्रम आदमी की ऊर्जा है ।

—उत्साह के बिना आदमी पलक भी नहीं झपक सकता ।

—संघर्ष में भी सुख खोजना आदमी का सहज धर्म है ।

—धर्म, धैर्य, तमस के ऊपर प्रकाश का वातायन खिला देना और अपनी चिर मधुर मुसकान से सबको सम्मोहित कर देना आदमी की पहचान है ।

□

—ठहरिए, देखिए, परखिए अपने बाहर और अपने भीतर भी यह सब आपमें है । मिथ्या भ्रम से दूर आलोचनाओं और प्रत्यालोचनाओं के ऊपर आप अपने को क्या उस पर्वत पर खड़ा देखते हैं जिसकी चोटी आज तक कोई नहीं खोज पाया ।

—अनश्वर वे होते हैं जो भौतिक नश्वर पदार्थों और चिंतन से अपने को कहीं बहुत ऊपर खड़ा पाते हैं ।

—खड़ा है जो वही तो है—यह आदर्श !



लेखक, राजनेता और फिर लेखक 'द इनसाइडर'

पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव का एक वृहद उपन्यास कुछ समय पहले ही प्रकाशित हुआ है । ७६७ पृष्ठों के इस वृहद उपन्यास का कथा-नायक आनंद है । आनंद अपना राजनीतिक कैरियर एक आदर्श बात को लेकर शुरू करता है, लेकिन जिंदगी के कड़वे यथार्थ से टकराकर वह आदर्शवाद चकनाचूर हो जाता है । तब आनंद को लगता है कि राजनेता सब कुछ करते हैं, बस जनता की सेवा कतई नहीं करते हैं । हर राजनेता बात जनसेवा की करता है,लेकिन सत्ता में आते ही सबसे पहले उसे ही तिलांजलि देनी पड़ती है । उपन्यास पढ़ते हुए मेरे मन में प्रश्न उठा कि आनंद क्या स्वयं नरसिंह राव हैं ? मैं नरसिंह रावजी की तारीफ करूंगा कि उन्होंने बहुत खुले रूप से स्वीकार किया है कि "हां, आनंद बहुत कुछ मैं ही हूं ।"

एक उपन्यासकार के रूप में मैं समझ सकता हूं कि एक उपन्यास लेखक सारी घटनाओं की केवल रिपोर्टिंग नहीं करता, उसे कथानक के लिए ताना-बाना भी बुनना पड़ता है । नरसिंह रावजी को एक कवि के रूप में मैंने वर्षों पहले सुना था । तब कांग्रेस का कार्यालय जंतर-मंतर के पास था । एक छोटे-से गांव में जन्मे राव साहब उन दिनों शायद कांग्रेस पार्टी के सचिव थे । उसके बाद मुख्यमंत्री और फिर आगे का सारा घटनाक्रम स्पष्ट है । श्री नरसिंह राव ने स्वीकार किया है कि वह अपनी संपूर्ण क्षमता का उपयोग पूरी तरह कहीं करना चाहते थे । इसके लिए उन्होंने राजनीति का क्षेत्र चुना । यह जानते हुए भी कि राजनीति में सफलता नाम की कोई चीज नहीं है । यदि राव साहब राजनीति में नहीं आते तो वह या तो गणित के प्रोफेसर बनते अथवा वकालत करते । यह काम तो उन्होंने नहीं किया,लेकिन तीन वर्षों तक पत्रकार के रूप में काम जरूर किया । सन् १९४९ से १९५१ तक वह तेलुगू में एक पत्रिका निकालते रहे । कहा जाता है कि उसमें इतना कुछ निर्भीकता से लिखते थे कि सत्ता परेशान थी । स्वयं प्रधानमंत्री बनते ही नरसिंह रावजी एक पत्रकार की ताकत समझते रहे या नहीं, कहना मुश्किल है । राजनीति अपने आप में इतनी बड़ी सत्ता है कि वहां पहुंचते ही आदमी बहुत कुछ भूल जाता है । अब पद से बाहर आने पर आनंद यानी नरसिंह राव को

अहसास होता है कि साहित्य की दुनिया और राजनीति की दुनिया दो एकदम अलग केंद्र बिंदु हैं । राजनीति में सत्ता का मद होता है और साहित्य में संतोष की सृष्टि । नरसिंह राव की यह पुस्तक पढ़ने लायक है, क्योंकि उन्होंने घोषणा की है कि आजकल वह जो कुछ लिख रहे हैं, वह मंदिर और मसजिद के विवाद का प्रकरण होगा ।

सत्ता के पूर्व अथवा बाद आत्म-कथात्मक उपन्यास लिखनेवाले राव साहब अकेले नहीं हैं । हमारे देश में जवाहर लाल नेहरू भी थे और यूरोप तथा अमेरिकी देशों के अनेक राष्ट्राध्यक्ष यह काम कर चुके हैं । मैं नरसिंह रावजी की तारीफ करूंगा कि उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि परदे के पीछे की राजनीति में षड्यंत्रों, सौदेबाजियों, धूर्तता, पैसे तथा ताकत के खेल से सब कुछ पाया जा सकता है । आगे देखना यह है कि इस उपन्यास का पात्र आनंद अगले उपन्यासों में भी क्या उसी साफगोई से आगे चलता है अथवा समय के हाथों वह लड़खड़ा जाता है । आशा करनी चाहिए कि नरसिंह रावजी ने जो निर्भीक काम किया है इसे बनाये रखेंगे ।

जनता दरबार में

इस देश की जनता को पहचानने के लिए दरबार लगाने का सिलसिला कोई नयी बात नहीं है । मुगल काल में अकबर और शाहजहां के दरबारों की विशेष चर्चा इतिहास में पढ़ने को मिलती है । अंगरेजों ने जब इस देश की सत्ता संभाली तो वह दरबार लगा सके या नहीं, इसकी जानकारी नहीं है । लॉर्ड माउंटबेटन का रुख भारत के प्रति उदार था, यह तो पता है और यह भी पता है कि इसका श्रेय पंडित जवाहरलाल नेहरू को जाता है । जवाहर लालजी की पूरी जिंदगी एक खुली किताब रही है । उनकी आत्म-कथा इसका प्रमाण है । वैसे भी वह खुली जीप में सड़कों से निकलते थे और जहां भी जनता की भीड़ दिखती उस अदालत में अपने को समर्पित कर देते थे । अब वह दिन चले गये । आज की हालत तो यह है कि जब तक कुरसी नहीं है, यहां का आदमी सुरक्षित है । कुरसी मिलते ही छोटे-से-छोटा आदमी भी असुरक्षित हो जाता है । असुरक्षा का घेरा सचमुच में उसे कहीं का नहीं रहने देता, लेकिन यह 'स्टेटस सिंबल' का रूप बनकर वीभत्स हो गया है ।

इन स्थितियों में जनता की अदालत में हाजिर होना सहज नहीं है । इंदिराजी भी जनता दरबार लगाती थीं । जगन्नाथ मिश्रा का जनता दरबार बिहार में बेहद लोकप्रिय रहा है । जगन्नाथ मिश्रा के पहले ललित नारायण मिश्र भी दरबार लगाते थे । केदार पांडे का दरबार लगाने का अपना तरीका था । कमलापति त्रिपाठी अपने समय में लोकप्रिय रहे हैं । मध्य प्रदेश में पंडित रवि शंकर शुक्ला और द्वारिका प्रसाद मिश्र दोनों

ने अपने दरबार हमेशा खुले रखे हैं । संभवतः और राज्यों में भी यह होता रहा है ।

दरबार लगाने की परंपरा के साथ एक बात सोचना बहुत जरूरी है—भारत एक महान देश है । इस महान देश की अधिकांश जनता गरीबी और बेबसी के बीच पलती है । वह बहुत कुछ कहना चाहती है,लेकिन किससे कहे ? सत्ता के शीर्ष व्यक्ति शायद सुनना भी चाहें,लेकिन वह कितना सुनेंगे ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने फिर इस दरबार प्रथा को उजागर किया है । निश्चित ही इसके पीछे बहुत साफ और सुथरी भावना है । यह भावना सफल हो, यह हमारी हार्दिक आकांक्षा है । शायद वाजपेयीजी की भी यही हार्दिक शुभेच्छा है । पिछले अनुभवों को देखते हुए कहां तक सफलता मिलेगी, यह एक बहुत बड़ा प्रश्न-चिह्न है । यह कार्य चूंकि अभी शुरू हुआ है,इसलिए अपनी शुभकामना देना ही उचित होगा ।

लॉस एंजलिस की एक सभा में एक बहुत बड़ा प्रश्न कई लोगों ने मुझसे पूछा था । उनका कहना था कि हिंदुस्तान में दो बातें कब तक पूरी होंगी— (१) रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार का अंत कब होगा और (२) जनसंख्या वृद्धि में रोक कब तक लगेगी ? मेरा उत्तर था, 'जब तक गंगा में पानी है दोनों बराबर चलते रहेंगे ।' मैं गलत हो सकता हूं । आगे का समय साक्षी होगा । इस बात का उल्लेख इसलिए कर रहा हूं कि वाजपेयीजी को यह देखना होगा कि उनके जनता दरबार में धीरे-धीरे घुसपैठियों की भूमिका क्या होगी ?

बुद्ध के दांत चाहिए

हमारा देश सचमुच महान है । भारत के एक व्यक्ति ने मांग की है कि महात्मा बुद्ध के दांत भारत वापस लाए जाएं । यह दांत तिब्बत के एक संन्यासी ने ताइवान के मंदिर को दान में दिये हैं । दांत देते समय हजारों की संख्या में जनता ताइवान के बौद्ध मंदिर में एकत्र हुई थी । कहा जाता है कि एक बौद्ध संन्यासी १९७० में भारत से यह दांत ले गया था । चीनी सांस्कृतिक क्रांति के भय से यह दांत थाइलैंड से ताइवान पहुंचाया गया । कहा जाता है कि महात्मा बुद्ध के दांत कई मंदिरों में पहुंचाये गये हैं । एक तो श्रीलंका के कैंडी मंदिर में है । दूसरे चीन के बीजिंग शहर में है । ताइवान तक भारत से दांत कैसे पहुंचे, इसकी अपनी एक कहानी हो सकती है । राहुल सांकृत्यायन यदि जीवित होते तो शायद इसकी खोज में लग जाते । अब यह काम सरकार को करना चाहिए ।

—राजेन्द्र अवस्थी

किस कगार पर खड़ी है नयी राज सत्ता

केंद्र में नयी सरकार का गठन हुए लगभग दो मास बीत चुके हैं और इन दो महीनों में उसे जिन दबावों का सामना करना पड़ रहा है, उसके कारण देश के समूचे जनमानस को यही एक प्रश्न उद्वेलित किये हुए है कि आखिर किस कगार पर खड़ी है यह नयी राजसत्ता ? संयुक्त मोर्चे की पिछली दोनों सरकारें आतंकपूर्ण स्थिति में चलती रही हैं । भारतीय जनता पार्टी की वर्तमान सरकार भी अपने-आप में एक इकाई नहीं है, उसे कई दलों का सक्रिय सहयोग लेना पड़ा है । यह सहयोग भीतरी है और बाहरी भी । ऐसी स्थिति में किसी निष्कर्ष पर पहुंचना कठिन है । एक बात जरूर है, और तेजी से कहा जा सकता है कि सत्ता संघर्ष में वर्तमान सरकार को यथावत बनायें रखना सभी दलों की मजबूरी है ।

'इम्तिहां और भी हैं'

२८ मार्च १९९८ को संसद में विश्वास-मत के दौरान सत्तारूढ़ गठबंधन को २७४ एवं विपक्ष को २६१ मत प्राप्त हुए । ऐन वक्त पर तेलगूदेशम पार्टी के बाहरी समर्थन के बतौर मिले ग्यारह मतों के सहारे मात्र तेरह मतों के बहुमत से नयी सरकार ने पहली बाधा पार की, लेकिन *'सितारों से आगे जहां और भी हैं, अभी इश्क के इम्तिहां और भी हैं'* के तर्ज पर नयी सरकार को अभी कठिन परीक्षाओं और संकटों के दौर से गुजरना बाकी है । ये संकट यदि दक्षिण से छलांग लगा सकते हैं (अन्ना द्रमुक-तेलगूदेशम पार्टी) तो पूर्व से भी मंडरा सकते हैं (तृणमूल कांग्रेस) । उत्तर भी निरापद हो, ऐसी बात नहीं ।

इसे देखते हुए प्रसिद्ध शायर अहमद फराज की इन पंक्तियों की याद आती है—

नश्तर चुभे हुए थे रगे जां के आसपास
वो चारागर था और मुझे डर उसी का था !

चारागर अर्थात इलाज करनेवाला और विडंबना है कि डर उसी का है ।

खतरे बाहर से ही नहीं, भीतर से भी

राजसत्ता को बाहर से तो खतरे हैं ही, उनसे ज्यादा खतरनाक साबित हो सकते हैं—ऐसे चारागरों से खतरे, जो नयी सरकार के घटक हैं, उसके खैरख्वाह हैं । एक तरफ भाजपा अपनी

केंद्र में नयी सरकार को किन दबावों का सामना करना पड़ रहा है ? आखिर किस कगार पर खड़ी है यह नयी राजसत्ता ?

पहचान शासन करनेवाली पार्टी के रूप में बनाने में लगी है तो दूसरी ओर विहिप और बजरंग दल— जैसे संगठन अपना अलग राग अलाप रहे हैं । बजरंग दल ने बाकायदा 'बलोपासना यज्ञ' की घोषणा कर दी है । इसलिए पूर्व गृहमंत्री इंद्रजीत गुप्त की टिप्पणी सही लगती है कि भाजपा को बाहर से उतना खतरा नहीं है जितना उसके अपने दूसरे संगठनों विहिप और बजरंग दल से है ।

कांग्रेस के सामने भी कम चुनौतियां नहीं हैं, यद्यपि उसके पास अपना इतिहास है ।

नयी सरकार के घटकों में अकाली दल, शिव सेना और अन्य सत्तारूढ़ हैं । शेष अपने प्रभाव क्षेत्रों में सत्ता से बाहर हैं । तमिलनाडु में अन्ना द्रमुक, कर्नाटक में लोकशक्ति, पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस, बिहार में समता-भाजपा गठबंधन, हरियाणा में चौटाला की समाजवादी जनता पार्टी ।

हरियाणा में बंसीलाल की हरियाणा विकास पार्टी केंद्र सरकार के गठबंधन का एक घटक है और उसके कट्टर विरोधी चौटाला भी उसका समर्थन कर रहे हैं । उनके चार सांसद हैं, जबकि हरियाणा विकास पार्टी का एक । अन्ना द्रमुक ने करुणानिधि सरकार को बर्खास्त करने की पुरजोर मांग की है । जयललिता ने प्रतिज्ञा की है और कहा है, 'जब तक करुणानिधि की सरकार का पतन नहीं होता, तब तक मैं चैन से नहीं बैठूंगी ।' जयललिता की भूमिका भाजपा सरकार में अत्यंत महत्तवपूर्ण है । बिहार में राबड़ी देवी सरकार को पदच्युत करने के लिए समता और अब जनता दल के समवेत स्वर उठे हैं । कर्नाटक में रामकृष्ण हेगड़े ने मुख्यमंत्री बनने की ख्वाहिश की है । एक ओर प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी ने धारा ३५६ के द्वारा किसी भी राज्य सरकार को बर्खास्त करने से इनकार कर दिया है तो दूसरी ओर उनकी सरकार के उपरोक्त घटक अपने-अपने राज्यों में जन आंदोलन छेड़ने पर आमादा हैं । तृणमूल कांग्रेस ने ज्योति बसु सरकार के खिलाफ जांच की मांग की है । जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा, इन क्षेत्रीय नेताओं की बेचैनी बढ़ती जाएगी और सब्र का प्याला कब छलक पड़ेगा पता नहीं ?

यह तो नयी सरकार की राजनीतिक मोर्चे पर भीतरी उलझनें हैं । स्वच्छ प्रशासन, पारदर्शी प्रशासन, व्यस्त स्वार्थों के हस्तक्षेप के परे प्रशासन तथा आर्थिक विकास दर को ऊंचा उठाने, कृषि मोर्चे पर उभर रही समस्याएं भी नयी सरकार के लिए अग्नि परीक्षा सिद्ध होनेवाली हैं ।

संतुष्टि और संतुलन बनाम षड्यंत्र

एक ओर नयी सरकार के सामने जहां अपने घटकों को संतुष्ट रखने और संतुलन बनाये रखने की समस्या है, वहीं दूसरी ओर उसे 'जोड़-तोड़' की राजनीति में सक्रिय विपक्ष के कुछ घटकों की भी काट करनी है । मुलायम सिंह यादव और लालू प्रसाद यादव के सहयोग से चंद्रशेखर पुराने समाजवादियों का एक मोर्चा बनाने और सरकार गिराने का प्रयत्न कर चुके हैं और अब भी यह प्रक्रिया जारी है । वे कांग्रेस का मानस भी अनुकूल करने की कोशिश में लगे हुए हैं । उनकी कोशिशों के कारण

सपा-बसपा की 'जानलेवा दुश्मनी' अब दोस्ती में बदलने जा रही है । सपा-बसपा का विश्वास है कि वे उत्तर प्रदेश में भाजपा को करारी शिकस्त दे सकते हैं । इसी नये समीकरण के फलस्वरूप अब सपा-बसपा का कांग्रेस विरोध मुखर हो रहा है । भाजपा को सत्ता से दूर रखने के लिए कांग्रेस-समर्थन की बात काफूर हो चुकी है । उत्तर प्रदेश में पुनः सत्तासीन होने और बिहार में अपनी सरकार बचाने के लिए सपा और राष्ट्रीय जनता दल के नेता नयी सरकार के लिए संकट पैदा कर सकते हैं । किन मुद्दों पर उसके घटक कब उससे अलग हो जाएं, कोई कुछ नहीं कह सकता ?

कांग्रेस : निर्णायक भूमिका

इन सब परिस्थितियों के बावजूद कांग्रेस की भूमिका नयी सरकार के लिए निर्णायक सिद्ध होनेवाली है । संप्रति कांग्रेस ने नयी सरकार को रचनात्मक सहयोग देने और एक जिम्मेदार विपक्ष की भूमिका निभाते की मुद्रा अपनायी है । संयुक्त मोर्चे की दोनों सरकारें कांग्रेस-समर्थन से ही चलीं और समर्थन वापसी के फलस्वरूप ही गिरीं । नयी सरकार के गठन में भी कांग्रेस की अप्रत्यक्ष भूमिका इस नाते रही कि उसके नेतृत्व ने अंततः गठजोड़ की राजनीति से दूर रहकर नयी सरकार को अपने क्षमता-प्रदर्शन का अवसर दिया । कांग्रेस और साथ ही कई लोगों की राय है कि नयी सरकार अपने अंतर्विरोधों के कारण स्वयं असफल हो जाएगी । अतः 'प्रतीक्षा करो' की नीति कई कारणों से श्रेयस्कर है । यदि नयी सरकार को अपदस्थ करने में कांग्रेस सक्रिय भूमिका निबाहती है तो उसके पतन से लाभ क्षेत्रीय दल और नेता उठाएंगे और उसे मिलेगी मात्र बदनामी । फिर कांग्रेस इस समय पुनर्जीवन की प्रक्रिया में है । सोनिया गांधी खुलकर सामने आ गयी हैं और उन्होंने अध्यक्ष का पदभार जोर-शोर से संभाल लिया है । कांग्रेस अध्यक्ष ने सरकार की बजाय संगठन को फिर से मजबूत करने का संकल्प किया है, वे उत्तर प्रदेश और बिहार में कांग्रेस की खोयी हुई प्रतिष्ठा वापस लाना चाहती हैं । यही वे दो प्रदेश हैं, जहां सपा, बसपा, भाजपा और राष्ट्रीय जनता दल (बिहार में) कांग्रेस को हमेशा के लिए हाशिये पर रखना चाहते हैं । इसी कारण नये समीकरण भी बन रहे हैं । कांग्रेस के सामने भी कम चुनौतियां नहीं हैं, यद्यपि उसके पास अपना इतिहास है । चुनाव के बाद अनेक दिग्गज नेताओं की पराजय ने स्थिति बदल दी है और संभव है आगे चलकर कांग्रेस में भीतरी विघटन हो ।



कितने असफल रहे तमाम गठबंधन

संयुक्त मोर्चे के गठन के समय यह बात बार-बार दोहरायी गयी कि अब एक दलीय शासन का युग समाप्त हो गया है, युग है गठबंधनों का । इस देश में संविद सरकारों के रूप में गठबंधनों का हश्र सर्वविदित है । ये सरकारें सिद्धांतों के टकराव नहीं व्यक्तिगत अह्म और कुछ नेताओं की सत्ता-प्रियता के कारण ही ध्वस्त हुईं । केंद्र में संयुक्त मोर्चे के पूर्व तीन गठबंधन सरकारें जिस तरह से आयीं और गयीं, वह भी ताजा इतिहास ही है ।

बहुदलीय राजनीति—संघवाद : मृग तृष्णा

क्षेत्रीय पार्टियों के उदय ने लोकतंत्र में बहुदलीय राजनीति और संघवाद की आशाएं जगा दी थीं, जिसके फलस्वरूप क्षेत्रीय हितों की उपेक्षा नहीं होती, लेकिन वास्तविकता कुछ और निकली। हमारे यहां क्षेत्रीय दल नहीं, क्षेत्रीय नेता हैं जो अपने-अपने राज्यों के एकछत्र शासक बनने के लिए दोस्तों को दुश्मन और फिर उन्हीं दुश्मनों को गले लगाने के लिए तैयार हैं ताकि सत्ता पर येन केन प्रकारेण काबिज हुआ जा सके। क्षेत्रीय विकास, वर्ग-विकास का नारा एक आकर्षक विज्ञापन मात्र बनकर रह जाता है। चिंता एक ही है —साध्य सधे, साधन कोई भी हों। देश का दुर्भाग्य है कि आज किसी भी पार्टी का दामन बेदाग नहीं। किसी का कम, किसी का ज्यादा। देश के सामने मौजूदा समस्याओं और देश की 'नैया के खिवैया' राजनीतिक दलों के रवैये को देखते हुए अल्लामा इकबाल की ये पंक्तियां याद बरबस आ जाती हैं—

वतन की फिक्र कर नादां मुसीबत आने वाली है
तेरी बरबादियों के मशविरे हैं आसमानों में

राममंदिर नहीं राष्ट्रमंदिर



इधर सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी अब खुद को शासन करनेवाली स्वाभाविक पार्टी में बदलेगी।

सत्तारूढ़ पार्टी बन जाने के बाद पार्टी की रीति-नीति में यह बदलाव जरूरी समझा गया है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में लालकृष्ण आडवाणी के अध्यक्षीय भाषण में यह बदलाव साफ दिखा। उन्होंने पार्टी को एक नयी भाजपा बनाने की जरूरत बताते हुए साफ किया कि अब पार्टी अतीत के मुद्दों से नहीं, बल्कि भविष्य के एजंडे से चलेगी। नयी भाजपा बनाने की जरूरत पार्टी के रणनीतिकारों को सरकार के राष्ट्रीय एजंडे और पार्टी के एजंडे में फर्क के कारण महसूस हुई है। राममंदिर की जगह अब 'राष्ट्र मंदिर' भाजपा का मुख्य मुद्दा होगा। राष्ट्रीय कार्यकारिणी के विचार के लिए श्री आडवाणी ने नया और साहसिक दृष्टिकोण रखते हुए राम मंदिर और राष्ट्र मंदिर के भेद को स्पष्ट किया। राष्ट्रीय एजंडे में भाजपा के तीन मुद्दों राम मंदिर, अनुच्छेद ३७० और समान नागरिक संहिता को शामिल न करने की सफाई इस रुख में है।

भाजपा नेता ने सुझाव दिया कि अयोध्या के मुद्दे को न्यायपालिका और विधायिका दोनों के दायरे से अलग कर देना चाहिए और इस मुद्दे को सभी पक्षों से बातचीत कर एक शांतिपूर्ण समाधान तलाशने व निकालने तक सीमित कर दिया जाए जबकि पार्टी के चुनाव घोषणा पत्र में कहा गया था कि इस मुद्दे का हल बातचीत से या फिर कानून बनाकर किया जाएगा। जाहिर है कि सरकार में बैठकर अयोध्या मुद्दे को कानून के जरिए हल करने की हैसियत में भाजपा नहीं है। राम मंदिर की जगह श्री आडवाणी ने आनेवाले दशक को पूरी तरह देश के निर्माण में लगाने की हिमायत की यानी पार्टी को देश में सुशासन के लिए दस साल का वक्त चाहिए। रही तीनों मुद्दों की प्राथमिकता को

छोड़ने की बात तो भाजपा का अब कहना है कि सही दृष्टिकोण यही होगा कि इन तीनों मुद्दों पर शांतिपूर्ण, बिना टकराव पैदा किये और रचनात्मक ढंग से बातचीत जारी रखी जाए।

लालकृष्ण आडवाणी के भाषण का दूरगामी महत्त्व है। वे नयी भाजपा को केवल सत्तारूढ़ पार्टी नहीं,बल्कि शासन करनेवाली स्वाभाविक पार्टी के रूप में देखना चाहते हैं। जाहिर है कि स्वाभाविक पार्टी वही हो सकती है जो राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य हो, जिसके एजंडे में टकराव के मुद्दे न हों और जिसका बुनियादी उद्देश्य देश की समस्याओं का समाधान हो। उन्होंने कहा कि इस समय पार्टी के जीवन में एक संक्रमण काल की स्थिति है, जिसमें एक नये युग की शुरुआत और पुराने युग की समाप्ति का सामंजस्य है।

दूसरी ओर सोनिया गांधी के नये नेतृत्व में पूर्व लोकसभा अध्यक्ष पी. ए. संगमा के सहयोग से कांग्रेस में अनेक नये कार्यक्रम बनाये जाएंगे,यह भी स्पष्ट है। इनका उद्देश्य कांग्रेस को खोयी हुई प्रतिष्ठा देना है। यह अपने आपमें संघर्ष की स्थिति है दो दलों में। भविष्य में लक्षण यही हैं कि देश का शासन दो बड़े दलों में सीमित होगा—भाजपा या कांग्रेस। बिचौलिए क्रमशः इन्हीं में मिलते जाएंगे। छोटे दलों और व्यक्तियों का अस्तित्व खतरे में है, इसमें दो राय नहीं हो सकती।

वाजपेयी पर जनास्था

अटल बिहारी वाजपेयी पर संपूर्ण देश की आस्था है, इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन क्या वाजपेयीजी वे सब निर्णय ले सकेंगे जो वे चाहते हैं ? उत्तर है—निश्चय ही नहीं। एक मजबूरी के बीच खड़े हैं। संवेदनशील प्रधानमंत्री को शायद इस स्थिति का पता है, इसीलिए उन्होंने खुलकर घोषणा की है कि वे अब भविष्य में चुनाव नहीं लड़ेंगे। अर्थ यह हुआ कि राजसत्ता, किसी भी क्षमतावान, बौद्धिक व्यक्ति के लिए एक ईमानदार रास्ता नहीं है। ऐसी स्थितियां हमारे देश में ही आयी हैं, ऐसा नहीं है। फ्रांस तथा यूरोप के कुछ देशों में तो बुद्धिजीवियों ने राजनीति को तिलांजलि दी है। अमेरिकी राजसत्ता का इतिहास भी इसी पक्ष की ओर इंगित करता है।



देश पहले, सत्ता बाद में

तीसरी ओर भारत को महाशक्ति बनने से रोकने के लिए अंतरराष्ट्रीय कोशिशें, जो इस देश में अस्थिर सरकारों के रहने पर ज्यादा सफल हो सकती हैं, आर्थिक विकास की समस्याएं, गरीबी, बेरोजगारी और भी ऐसी बहुत-सी समस्याएं हैं, जो हवा-पानी और धूप की तरह न तो जाति का भेद करती हैं, न भाषा का, न क्षेत्र का। आग जलती है तो वह फिर कोई भेद नहीं करती। विडंबना यही है कि आज देश के बाहर और भीतर आग लगानेवाले बहुत हैं, बुझानेवाले बहुत कम। आंतरिक संगठन समय की आवश्यकता है। काश ! दलगत राजनीति से उठकर इस तथ्य को हमारे नेता समझें क्योंकि देश पहले है, सत्ता बाद में।

कसमों का मनोविज्ञान

हमारी कसम इसे जो न पढ़े

● एच. एल. ठक्कर

कसमें खाने, खिलाने और देने से प्रायः सभी परिचित होते हैं। हमारे देश में तो बालक, किशोर, युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष, कोई हो कसमें खाना, देना, खिलाना आम है। अधिकांश लोग कसमों पे तो पूरा विश्वास कर लेते हैं। कोई मां की, कोई बाप की, कोई भगवान की तो कोई विद्या आदि की कसमें खाता है? कसम खाने की मनोवैज्ञानिकता क्या है, इसका प्रचलन कैसे हुआ, इन्हीं सब बिंदुओं का आधार आकलन प्रस्तुत है यह लेख।

कसमें खाने, खिलाने और देने से प्रायः सभी परिचित होते हैं। हमारे देश में तो बालक, किशोर, युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी इसका प्रयोग करते रहते हैं। अधिकांश लोग कसमों में पूरा विश्वास रखते हैं। वे स्वयं इससे भयभीत होते हैं और दूसरों को इससे डराते भी हैं। अपनी सच्चाई साबित करने के लिए स्वयं कसमें खाते हैं। दूसरों पर शक होने पर उन्हें खिलाते हैं। मनचाहा काम कराने या नहीं कराने के लिए कसम देते भी हैं। महिलाएं इससे कुछ अधिक परेशान रहती हैं।

कसमों का आशय क्या?

कसमों का आशय क्या है और उनके पीछे क्या आधार है। लोगों का ऐसा मानना है कि झूठी कसम खानेवाले का कुछ न कुछ नुकसान जरूर होता है। उसके स्वयं की अपेक्षा उसके प्रिय व्यक्तियों का अहित होने की ज्यादा आशंका समझी जाती है। लोग स्वयं की कसम तो बेधड़क खा सकते हैं, पर अपने प्रियजनों की नहीं। कसम देने या खिलाने वाले भी उसे स्वयं के लिए कसम नहीं देते। वे उसके प्रिय पात्र की कसम खाने पर जोर देते हैं। यदि कसम

दाता खुद उनको प्रिय होता है तो अपनी कसम भी देता है ।

आपने बहुत बार महिलाओं को अपने रिश्तेदारों से यह कहते सुना होगा,'ये पैसे रख लो नहीं तो तुम्हें मेरी कसम है' या 'एक लड्डू और खा लो मेरी कसम' या 'क्या सच कह रही हो ? खाओ मेरी कसम ।' सामनेवाले या तो उनकी बात मान लेते हैं या अपनी कसम वापस लेने का आग्रह करते हैं । कसमें वापस भी ले ली जा सकती हैं । इसके लिए देनेवालों को 'कसम छूट', 'कसम झूठ' या केवल 'छूटा' कह देना होता है, तब कसम प्रभावशील नहीं रह जाती ।

कसमों का बंधन और उससे छुटकारा

कभी-कभी बड़ी विचित्र और मनोरंजक स्थितियां भी उत्पन्न होती हैं । दो मित्र या सहेलियां एक दूसरों को कठिन और अप्रिय काम करने के लिए कसम का बंधन डाल देती हैं । फिर दोनों परस्पर अपनी-अपनी कसमें वापस लेकर दूसरों को बंधन मुक्त कर देती हैं । एक महिला कभी कहती है कि अमुक काम करो अन्यथा तुम्हें अपने प्रिय व्यक्ति की कसम है । दूसरी कहती है कि तुम अपनी कसम वापस लो, नहीं तो तुम्हें भी प्रिय की कसम है और आगे मुझे कसम दोगी, तो भी तुम्हें कसम है, अब तुम मेरी बात न मानो तो तुम्हें अमुक की कसम है । अब पहली वाली बहुत लाचार हो जाती है । वह किसी तीसरी को तैयार करके दूसरी को कसम देने से रोकने तथा पहली पर की सब कसमें लौटा लेने के लिए कसमें दागना सिखा देती है । इस तरह कसमों को एक शस्त्र की तरह उपयोग में लाया जाता है ।

कसमों का परिचय व्यक्ति को बचपन से ही हो जाता है । बालक-बालिकाएं बड़ों को सही बात पर कसमें खाते और झूठी बातों की कसमें खाने से झिझकते हुए देखा करते हैं । उनका कसमों में विश्वास दृढ़ हो जाता है । वे यह मानने लगते हैं कि झूठी कसमें खाने पर उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है जिसकी कसम खायी गयी हो । बच्चे मां के मरने को लेकर बहुत ज्यादा चिंतित होते हैं । अतः मां की गलत कसम खाने से सदा बचते हैं । उन्हें कोई मां की कसम दें तो वे कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाते हैं । ऐसी कसम भीरू बालकों से उनके चतुर मित्र या शत्रु अनुचित कार्य कराकर मनचाहे लाभ उठा लेते हैं ।' 'यदि तुम अपनी कलम नहीं दोगे तो तुम्हें मां की कसम है', "मेरे साथ नहीं खेलोगे तो तुम्हें पिता की कसम है", "मुझे टाफी न खिलाओ तो तुम्हें विद्या कसम है, आदि वाक्य पाठशालाओं में और गलियों में बोले-सुने जा सकते हैं । बालक-बालिकाएं मां को मृत्यु से बचाने के लिए आदेशित कार्य करने लगते हैं ।

कसम का भय दूर करना आवश्यक

बच्चों के मन से ऐसी कसमों का भय दूर करना जरूरी है और इसके लिए बड़ों को, विशेषकर माताओं को तो कसमों की वास्तविकता समझ लेनी चाहिए ।

महिलाएं पुत्र-पुत्री की कसम खाने के लिए तभी तैयार होती हैं जब उन्हें अपनी सत्यवादिता प्रकट करनी अनिवार्य होती है, वरना वह भी इससे आतंकित रहती है । जब दो व्यक्तियों का झगड़ा तीसरे के सामने प्रस्तुत होता है और दोनों एक दूसरे पर दोषारोपण करते हैं, तब सच झूठ का फैसला करने के लिए कसमें खिलायी जाती हैं । कोई शरम या फटकार की वजह से कसम

खाकर भी झूठ बोलता है तो मन ही मन बहुत व्याकुल होता है।

कुछ लोगों का कहना है कि स्वयं खायी गयी या निर्दोषिता साबित करने के लिए खिलायी गयी कसमों का तो प्रभाव पड़ सकता है, पर कोई कार्य करवाने के लिए थोपी गयी कसमों से कुछ नहीं बिगड़ता। ऐसा होता रहे तो भिखारी मांगकर, चोर चोरी कर और डाकू छीनकर क्यों धन लेंगे, कसमे देकर ही वे लोगों से धन ले सकते हैं औरा कुछ भी मनचाहा प्राप्त कर सकते हैं।

कसमों से मानसिक रोग

कसमों पर बहुत ज्यादा भरोसा करने से मानसिक रोग भी हो जाता है। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो विचित्र क्रियाकलाप करते रहते हैं। कोई हर दीवार तथा खंभे को छूते जाता है। कोई भगवान का चित्र देखते ही दर्जनों बार प्रणाम करता रहता है। कुछ लोग हमेशा सम संख्या में रोटियां या अन्य वस्तु खाते हैं या सम संख्या में पानी के गिलास पीते हैं। जिस रास्ते से आये हों उसी से वापस लौटना चाहते हैं, चाहे कितनी अड़चन हो। कुछ हर कदम को गिनते हुए चलते हैं। कई महिलाएं एक सी क्रिया को बार-बार करती रहती है। बीच में टोक देने पर सब कुछ प्रारंभ से पुनः दोहराती हैं।

ऐसे लोगों से पूछताछ और विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि इनके मूल में प्रिय व्यक्तियों की चिंता है। उन्हें हर जगह कसमें खड़ी दिखायी देती हैं। वे स्वयं ही अपने को कसमें देकर ऐसा करते हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि ऐसा न करने पर मानो अनिष्ट होगा। अपने प्रिय पात्रों की सुरक्षा की चिंता में वे हर कसम का पालन करती हैं। यदि आपको स्व-प्रदत्त काल्पनिक कसमों के दबाव में ऐसे निरर्थक और कष्ट साध्य काम करने पड़ते हों, तो इसका इलाज भी कसमें ही हैं। स्वयं को ऐसा न करने के लिए उल्टी कसमें देते रहिए। आपको जब विचित्र कार्य करने की बाध्यता महसूस हो तो विपरीत कसमों का प्रयोग करें। धीरे-धीरे आदत के रूप में सुदृढ़ हुए ये लक्षण क्रमशः कम होते हुए दूर हो जाएंगे।

कसमों से कुछ नहीं बिगड़ता

वास्तव में कसमों से कुछ भी बनता-बिगड़ता नहीं है। केवल मन के वहम, भ्रम और भय से लोग दुखित होते हैं। केवल कसमें देने या खिलाने से मृत्यु हो जाए, तो दुश्मनों से बदला लेना कितना आसान हो

शपथ लेना और सौगंध खाना पर्यायवाची हैं, पर अनेक भाषाओं में कसम और सौगंध एक ही अर्थ में लिए जाते हैं। शुभकामनाओं और बद्दुआओं का कुछ असर होता है, पर यह दीर्घकालीन और लगातार देते रहने पर ही पड़ता है। एक बार के उच्चारण मात्र से तत्काल असर नहीं होता।

जाए । लोग अपने शत्रुओं की झूठी कसमें खाकर, उन्हें आसानी से मार सकेंगे ।

कसम से मृत्यु होने की धारणा को इस तरह समझा जा सकता है 'गाय की कसम' से यह आशय निकाला जाता है कि उसे गौहत्या के बराबर पाप की संभावना है । 'विद्या कसम' में भी यह ज्ञान नष्ट होने की आहट दिखती है पर 'भगवान की कसम', 'गंगा की कसम', 'गीता की कसम'— आदि में तो किसी के मरने का प्रश्न ही नहीं उठता । यहां केवल यह मतलब निकाला जाता है कि किसी की भी झूठी सौगंध खाने पर दैवी प्रकोप होगा । शायद ईश्वर के नाराज हो जाने पर दुःख-दर्द और विपत्तियां आने लगें ? कुछ लोग तो 'अन्न की कसम', 'दूध की कसम', 'किसी स्थान की मिट्टी की कसम', 'अग्नि की कसम', आदि भी खाते हैं ।

शपथ लेना और सौगंध खाना पर्यायवाची हैं, पर अनेक भाषाओं में कसम और सौगंध एक ही अर्थ में लिए जाते हैं । शुभकामनाओं और बद्दुआओं का कुछ असर होता है, पर यह दीर्घकालीन और लगातार देते रहने पर ही पड़ता है । एक बार के उच्चारण मात्र से तत्काल असर नहीं होता । इससे कोई नहीं डरता, पर लंबी अवधि या अनिश्चित समय में परिणाम देनेवाली कसमों से लोग बचना चाहते हैं । जिन्हें किसी से मोह नहीं वे कसमों से तो नहीं डरते, पर जो कसमों को मानते ही नहीं, उनका क्या ?

कसमों पर झूठा विश्वास

कसम खाने-खिलाने से प्राकृतिक नियम प्रभावित नहीं होते । कसमों पर झूठे विश्वास के कारण कई बार सच्ची कसम खाने वाले भी पीड़ित होते हैं । यह इस उदाहरण से स्पष्ट होगा कि एक व्यक्ति पर शक किया गया कि उसने कोई गुमनाम पत्र लिखा है । उस व्यक्ति ने दृढ़तापूर्वक कहा कि यह काम उसका नहीं है । उसे कसम खाने को कहा गया । उसने पुत्र की कसम खाने से इनकार कर दिया । जब तुम सच्चे हो तो कसम क्यों नहीं खाते ? दूसरों ने जिद पकड़ ली ।

उस व्यक्ति ने स्पष्ट किया, 'इसका कारण आप लोग सुन लें । जब मैं बालक था, तब मुझ पर शक किया गया था कि मैंने किसी के कंचे चुराये थे । मां की कसम खिलायी गयी । मैं सच्चा था, इसलिए तुरंत कसम खा ली थी, लेकिन संयोग ऐसा हुआ कि कुछ ही दिनों में मेरी मां का सचमुच देहावसान हो गया । अब तो सब को लगा कि मैंने झूठी कसम खायी होगी । मैं ही चोर होऊंगा, इसलिए ऐसा हुआ ।

यह भी अच्छा हुआ कि असली कंचा चोर बच्चा भी इससे डर गया । उसे ग्लानि हुई । उसने सबके सामने कबूल कर लिया कि चोरी उसने की थी । उसकी स्वीकृति से मैं निर्दोष सिद्ध हुआ, पर सोचता हूं यदि वह बच्चा उस वक्त उपस्थित नहीं होता अथवा बाहर चला गया होता या किसी कारण चुप ही रह जाता तो मेरा क्या हाल होता ? सच्ची कसम खाकर भी मैंने मां को खोया था । झूठा और चोर दूसरा कोई साबित हुआ । उस दिन से मेरा कसमों से विश्वास उठ गया है ।

कसमें झूठ-सच का निर्णय नहीं कर सकतीं । इन्हें झूठ पकड़ यंत्र के बतौर इस्तेमाल नहीं करना चाहिए और बात-बात में कसमें खाना, खिलाना या देना बंद करना चाहिए ।

—प्राचार्य, श्री गुरुनानक हाई स्कूल
रायगढ़ (म. प्र.)

शरमाने का भी एक इतिहास है

● डॉ. बर्नार्ड कारडुसी

हर समाज में शरमीले लोगों की कमी नहीं हैं। वैसे भारतीय समाज में कहा जाता है कि लड़कियां ज्यादा शरमीली होती हैं, पर अमेरिका जैसे देशों में लड़कियां ही नहीं, लड़कों की भी संख्या काफी अधिक है जो शरमीले हैं। आप शरमीले क्यों हैं, शरमीला होना क्या कोई मानसिक रोग है, इससे कैसे निजात पायी जा सकती है, प्रस्तुत है इस संबंध में प्रकाश डालता यह लेख :—

पुरुषों की कमीज अधखुली-आधे बटन बंद झलकती चौड़ी छाती और महिलाओं की ऊंची ऐड़ी की हील और सिमटती, लटकती, झलमलाती पोशाकें—डांस फ्लोर पर थिरकते पांव और इस उन्मुक्त वातावरण में भी मेहमानों की सूची में प्रायः वही महिलाएं और पुरुष हैं जिन्हें आत्मविश्वास है... । ऐसे झूमते नाचते थिरकते वातावरण से नितांत अलग थलग एक मनोवैज्ञानिकों द्वारा शोध किया हुआ विपरीत चित्र उभरता है... एक नितांत गुमसुम शरमीला चुप्पी का वातावरण जो अमेरिका के एक दूसरे छोर पर उभर रहा है।

साईक्लोजी टुडे में छपे एक खोजपूर्ण लेख, 'सोशल डिजीस काल्ड साइनैस' (फिलिप जिम्बारडो का लेख) यानीएक सामाजिक बीमारी जिसका नाम है शरमाना, पढ़ने पर एक अजीब-सी मनःस्थिति होती है।

अमेरिका जैसे सुपर फास्ट और सभ्यता के क्षेत्र में सर्वोपरि देश में, झिझकना, शरमाना-जैसे शब्द कुछ अटपटे से लग सकते हैं,पर अमेरिकी महाविद्यालयों में शोध करने पर जो निष्कर्ष हाथ लगे हैं उनसे ज्ञात होता है कि आठ सौ प्रश्नों के चालीस प्रतिशत उत्तर अपने आप में स्पष्ट करते हैं कि वे उत्तर देने में भी शरमा रहे हैं।

मजे की बात यह है कि ऐसे व्यक्तियों का शालीन व्यक्तित्व उनको इस वृत्ति और भीतरी हलचल का तनिक भी आभास नहीं देता। उनके उत्तरों से ज्ञात होता है कि वे स्वयं को

भीतर ही भीतर समाहित करके कहीं कुछ भी आभास ही नहीं होने देते कि ये लोग अत्यधिक सेल्फ कांशस हैं । लगातार स्वयं के बारे में नकारात्मक वृत्ति अपनाकर अपने बारे में स्वयं ही यह धारणा बनाते जा रहे हैं कि और लोगों की उनके बारे में क्या राय है... और लोग उनके बारे में क्या सोच रहे हैं । जब लोग उन्हें तपाक से मिलते हैं तो भी उस समय भी वे जनता के सम्मुख उनका कैसा प्रभाव पड़ा आदि के बारे में योजना बना रहे होते हैं—सामाजिक मान्यता से वे मुक्ति पाने को आतुर हैं । समाज का यह मेल-जोल मान्यताओं का ढांचा उन्हें रास नहीं आ रहा । मन ही मन वे कहते हैं मेरा तो समय नहीं कट रहा है और यह लोग हैं जो मुझे घूरने से बाज नहीं आ रहे—ऐसी पार्टियों या सामाजिक मेल-जोल के कार्यक्रमों में ऐसे व्यक्तियों के दिल उछल रहे होते हैं... शारीरिक विक्षिप्तता के यह लक्षण अनचाहे भी उभर ही आते हैं ।

शरमाने पर शोध कार्य

शरमाने पर लोगों की प्रतिक्रियाएं दर्शनीय थीं—पत्र का रेकॉर्ड कायम करनेवाले की मदद करें... इस लेख को पढ़नेवाले प्रायः पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी और स्वयं से भिज्ञ लोग थे—ऐसे व्यक्ति शरमानेवालों की श्रेणी में नहीं आते ।

इस लेख ने एक नितांत नयी दृष्टि भी दी । पिछले बीस वर्ष से शरमाने पर चली आनेवाली शोध की शैली को एक नयी दृष्टि मिली । हम सबने सोचा कि इस नयी सामाजिक बीमारी पर नया प्रकाश डालें । इस शोध कार्य में

शरम दूर कराने में आप भी सहायक

☐ आप चाहे उतने संकोचशील न हों, जितने कुछ और लोग होते हैं । आप में उतना आत्मविश्वास चाहे न हो कि औरों से घुल-मिलकर बात करने का साहस न जुटा पायें । इन व्यक्तियों को पहचानकर उन्हें उनकी इस अत्यधिक भावुक शैली से उबरने में आप मदद तो कर सकते हैं ।

☐ किसी भी पार्टी वगैरह में जाएं तो इतना ध्यान दें कि कहीं कोई एकदम अकेला तो नहीं है, भीड़ में अलग-थलग अपने में खोया-सा । आपने यदि यह पार्टी स्वयं ही दी है तो एक अच्छे मेहमाननवाज की तरह प्रत्येक व्यक्ति की ओर पूरा ध्यान देते हुए... उनके भीतर जो भी सर्वश्रेष्ठ गुण है, उसी को सम्मुख लाने की चेष्टा करें । आपका मधुर व्यवहार ही आकर्षक शैली होता है, मीठी वाणी अस्त्र । प्रत्येक व्यक्ति से आत्मीयता का प्रदर्शन व किसी को अकेले देखकर उसके पास जाकर रुचिकर बातों द्वारा उसे मुखर कर देना, उस अकेले व्यक्ति को अकेलेपन से मुक्त तो करेगा ही, उसमें आत्मविश्वास भी उभारेगा । व्यक्तित्व के विकास का यह हल्का-सा प्रयास निराश तथा हताश स्थितियों की जड़ों पर प्रहार करता है ।

☐ दूसरों को सम्मुख आने का, अपना कौशल दिखाने का मौका दें, उनकी रुचि ज्ञात कर उन्हीं से उस विषय पर बात करें । जो लोग अधिक शरमाते हैं, वे अधिक देर बातें करने से भी कतराते हैं तथा हां, न में जवाब देकर पुनः नजरें चुराने लगते हैं । उन्हें बातों में उलझाने पर उनमें एक नया विश्वास उत्पन्न होता है तथा वे अपने आप अकेलेपन की स्थितियों से उबरने को तत्पर भी हो उठते हैं ।

☐ ये भी ध्यान रहे कि किसी भी आयोजन में किसी एक व्यक्ति पर ही सारे व्यक्ति अपना ध्यान केंद्रित करके उसे चर्चा का विषय न बनायें, बल्कि चेष्टा रहे कि यदि ऐसी स्थिति हो भी तो स्थिति संभालकर बातों का रुख मोड़ दें ।

बुद्धिजीवी, मनोवैज्ञानिक तथा क्लीनिक साईकोलोजी के लोग भी सम्मिलित थे । इसका विश्लेषण यों है—

सभ्यता के बदलते तेवर, बदलती मान्यताओं के कारण शरमाने की क्रिया इतनी अधिक बढ़ गयी है कि अमेरिका के अड़तालीस प्रतिशत लोग इसी से ग्रस्त मिलेंगे । शरमाना, सकुचाना, झिझकना, सामान्यतः भीतरी वृत्ति है । ऐसे व्यक्ति देखने में औरों से भिन्न नहीं होते, किंतु भीतर ही भीतर यह वृत्ति उन्हें काटती-कचोटती रहती है ।

जन्म से ही अंतर्मुखी

कुछेक लोगों का जन्म ऐसी वृत्तियों के साथ ही होता है । अंतर्मुखी वृत्ति उनमें जन्मजात होती है, लेकिन ऐसी प्रवृत्ति भी समय के साथ बदल सकती है । अपेक्षा है अच्छे मां-बाप की, वे शिशु की भीतरी वृत्तियों को किस प्रकार विकसित करते हैं । उन्हें प्रायः अंतर्मुखी अथवा बहिर्मुखी बनाने में मां-बाप का बहुत बड़ा हाथ होता है ।

प्रायः शरमाने की इस वृत्ति का जीवन के अनुभवों से सीधा संपर्क होता है और इसका उद्‌भव इन्हीं की देन है । शरमाने की वृत्ति की भी एक मानसिक प्रक्रिया (न्यूराबायलोजी ऑव शाईनैस) है—हमारे मस्तिष्क में तीन ऐसे केंद्र होते हैं जो मानसिक भय, उत्कंठा तथा जिज्ञासा, कुछ ऐसे तंतु निसृत करते हैं कि तंतुओं को वे झिंझोड़ देते हैं । इन वृत्तियों के उद्‌भव होते ही जो तात्कालिक प्रतिक्रिया होती है, वास्तव में वही लज्जा अथवा शरमाना है ।

शरम दूर करने के कुछ उपाय

□ तेजी से धड़कते दिल को थाम लें, पेट में जो खलबली मची है, उसे भी जैसे-तैसे रोक लें । तनाव से मुक्ति पाने के लिए स्वयं में ही नियंत्रण रखें । अपने प्रति सचेत हो जाएं स्थितियों को स्वयं पर हावी न होने दें, बल्कि धीरे-धीरे स्वयं को समझाकर अपनी अनायास होती प्रतिक्रियाओं पर स्वयं कड़ी नजर रखें । आत्मनियंत्रण ही तनावमुक्ति की कुंजी है ।

□ अपने आपको सामाजिक संवाद में उलझायें, यानी कुछेक विषयों पर लोगों से बातचीत करके अपने विचारों को प्रकट करें । उन्हीं विचारों पर कुछेक प्रतिक्रियाओं के जवाब देकर स्वयं में विश्वास जमायें । धीरे-धीरे अपनी हीनता की इस भावना से उबरने में आप सफल हो जाएंगे ।

□ तारीफ करना एक बहुत बड़ा गुण है, औरों की तारीफ करके उसे आगे बढ़ने को प्रोत्साहन करें । कभी पोशाक, कभी हेयर स्टाइल, बात करने का सलीका आदि अनेक ऐसे पहलू हैं जिन पर खुलकर चर्चा भी हो सकती है तथा तारीफों के पुल बांधे जा सकते हैं ।

□ किसी की आंखों में मुसकराहट उभरते ही एक चमक-सी आ जाती है... आपने मुसकराकर जैसे उस वातावरण में संबंधों का जाल फेंक दिया है । आपके आकर्षण के इस वृत्त में लोग स्वतः आते जाएंगे ।

□ यदि आप सिर झटककर, पांव पटककर, गुस्से से फनफनाते यहां-वहां देखने लगें तो आप अपनी ही हानि करेंगे, क्योंकि एक तो इस बात पर शायद कोई गौर ही न करे और करे भी तो छिटककर दूर हो जाए । अपने आपको बुरा-भला कहना बंद करिए ।

□ हर समय अपने ही दोष ढूंढ़ना, अपने में कमी देखना और अपनी खाल खींचना हमारी प्रवृत्ति होती है—ऐसी वृत्ति हताश व्यक्ति की स्थिति का परिचय देती है । हम धीरे-धीरे स्वयं को निराशा के गर्त में धकेलते हैं और फिर उससे उबर पाना कठिन हो जाता है ।

लज्जा और शरम के भिन्न रूप

लज्जा और शरम भी भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न रूप से उभरती है । इजरायल के लोगों में लज्जा और शरम का भाव, संकोच और झिझकने की वृत्ति संसार के सब देशों से सबसे कम पायी जाती है ।

हारवर्ड यूनिवर्सिटी के खोजपूर्ण लेखों से ज्ञात होता है कि प्रायः एक तिहाई अंतर्मुखी वृत्ति के लोग जन्मजात ही ऐसे होते हैं । हालांकि यह चिंतन का विषय है कि शरमीला होने का गुण तो समय, समाज और वातावरण की देन हैं, किंतु सही तथ्य यही है कि शोध करने पर शिशुओं में इस संकोचशील वृत्ति को शैशव में ही पनपते देखा गया है । हारवर्ड यूनिवर्सिटी के इस खोजपूर्ण तथ्य को स्थापित करने के लिए चार महीने के चार सौ बच्चों को एक प्रयोगशाला में लाया गया । ऐसे बच्चों के सामने मोबाइल तथा मनुष्य की रेकॉर्ड की हुई आवाज सुनायी गयी । फिर कुछ समय बाद उन्हें पुनः वहीं लाया गया तथा उनके कार्यकलापों पर नजर रखी गयी । काफी शोध के बाद विभिन्न विश्वविद्यालयों ने जो निष्कर्ष दिये, उनसे यह स्पष्ट था कि संकोच की प्रवृत्ति शैशवकाल में अथवा यों कहें कि जन्मजात होती है ।

शरमाने की क्रिया वंशानुगत

बच्चों में शरमाने की प्रवृत्ति पर ध्यान दें तो उनका बादाम के आकार का ब्रेन, मस्तिष्क भय और उत्सुकता के भावों का सृजन करता है । ऐसे बच्चों का मानसिक विकास ही कुछ इस प्रकार से होता है कि उन्हें नये वातावरण अथवा नये व्यक्तियों से मिलते समय उनका व्यवहार भिन्न होता है । हालांकि यह अजीब तो लगेगा, लेकिन कह सकते हैं कि संकोच का या शरमाने का भी एक मौसम होता है । कहा यह जाता है कि जो महिलाएं अगस्त या सितम्बर में गर्भ धारण करती हैं, उनके बच्चों में शरमाने की भावना अधिक होती है । इन महीनों में सूर्य का ताप इतना अधिक नहीं होता । महिलाओं के हारमोन जो शारीरिक घड़ियों को चालित करते हैं, प्लेसेंटा द्वारा नन्हें के शारीरिक निर्माण पर अपना प्रभाव डालते हैं और मस्तिष्क की अनेक वृत्तियों के निर्माण में सहयोग देते हैं । संकोच की यह वृत्ति 'जीन्स' में होती है तथा पीढ़ियां दर पीढ़ियां यह प्रवृत्ति चलती रहती है । ऐसे बच्चों के दादा-परदादा यानी वंशानुगत इस वृत्ति का

□ स्वयं को पहचानें, अपने गुणों को देखें और आत्मविश्वास न खोयें ।

□ हर समय अगर-मगर, किंतु-परंतु की उलझन में न रहें । हर समय किसी आशंका से त्रस्त-ग्रस्त रहकर अंतकाल या विनाश की संभावनाओं से न घिरे रहें । बेहतर हो औरों से संवाद स्थापित करके ऐसी स्थितियों का निराकरण करें ।

□ आमने-सामने बातचीत करने का हौसला बढ़ायें ।

□ स्वयं को किसी एक विशेष कार्य की सीमा रेखा में न बांधें । जहां जी चाहे वहां अवश्य जाएं, अपनी रुचि के अनुकूल कार्य में प्रवृत्त हों ।

□ संकोच से मुक्ति पाने का सरल उपाय है, स्वयं आत्मकेंद्रित न होकर दूसरों पर ध्यान केंद्रित करना । आपके साथ रहकर बहुत अच्छा लगा आदि वाक्यों द्वारा दूसरे को तो संतोष मिलता ही है स्वयं भी अकेलेपन से उबरने का, दूसरे से संवाद स्थापित होने का एहसास मिलता है ।

होना देखा जा सकता है । वे निश्चय ही अन्य लोगों के मुकाबले भिन्न वृत्ति के होंगे तथा उनकी प्रतिक्रियाएं व उनके व्यवहार में संकोचशील वृत्ति को देखा जा सकता है ।

श्री कागन व स्निडमेन ने इन वृत्तियों पर शोध किया तथा जो तथ्य उनके हाथ लगे हैं वे साफ घोषणा करते हैं कि ऐसे मां-बाप तथा उनकी भी पुरानी पीढ़ियां प्रतिक्रियाओं में उतनी सहज तथा सामान्य नहीं । उन्होंने यह भी पाया कि प्री-स्कूल यानी विद्यालयों में प्रारंभिक अवस्था में जानेवाले बच्चों के व्यवहार में भी फर्क था । जिन बच्चों के मां-बाप उदासीनता की वृत्ति से ग्रस्त थे, उन बच्चों की प्रतिक्रियाएं सामान्य प्रतिक्रियाओं में भिन्न थीं ।

लड़कियां अधिक शरमीलीं

शरमाने की वृत्तियां किसी विशेष वर्ग की थाती नहीं । यह सच है कि लड़कियां लड़कों से प्रायः अधिक शरमाती हैं । इसके पीछे कारणों में लड़कियों को हमेशा एक सुरक्षित वातावरण में रखना, उनकी सुरक्षा के लिए हरदम चिंतित रहना और उनके व्यवहार पर अंकुश लगाना है, जबकि लड़कों को उन्मुक्त वातावरण व खुलापन सहज ही मिल जाता है ।

कुछेक किशोरों का कथन है कि संकोचशील वृत्ति लड़कों में मानसिक विक्षिप्तता बढ़ाती है, किंतु प्रौढ़ होते ही यह वृत्ति प्रायः लुप्त होने लगती है । संकोच की वृत्तियों पर शोध करते समय पता चलता है कि पंद्रह से बीस प्रतिशत बच्चे संकोचशील प्रवृत्ति के पैदा होते हैं—यानी उनमें यह वृत्ति जन्मना होती है । हममें से पचास प्रतिशत लोग शरमीली वृत्ति के होते हैं ।

मनोवैज्ञानिक कारण

पॉल पिल्किन का कथन है कि अत्यधिक असुरक्षित महसूस करनेवाले बच्चों में यह भाव अधिक देखा गया है । बच्चों को पूरी तरह से ममत्व न दे पाना, अविश्वास और भटकने की स्थितियां उसे असुरक्षित वातावरण देती है । हालांकि कोई ऐसे तथ्य तो नहीं हैं जिनसे यह घोषित रूप से कहा जाए कि व्यक्ति का जैसा भी व्यवहार आरंभ में होता है, वही सारी उम्र भी रहता है, लेकिन हीनभावना से ग्रस्त अथवा असुरक्षा से त्रस्त व्यक्तियों के आरंभिक लक्षणों से ही यह आभास अवश्य मिल जाता है कि वह व्यक्ति आगे चलकर इसी वृत्ति से जरूर ग्रस्त होगा ।

कुछेक लोगों में जीवन के कुछेक वर्षों में ही संबंधों में तनाव उत्पन्न होने, तलाक की नौबत आने, नये संबंध स्थापित करने तथा स्वयं को नये परिवेश में ढालने की स्थितियों से अनेक प्रकार की वृत्तियां जन्म देती हैं । इसी प्रकार कार्यालय में कार्य करने की कार्यशैली तथा अधिकारियों का भर्त्सनापूर्ण व्यवहार भी अनेक दुविधाओं को जन्म देता है, लेकिन संकोच की इस शैली को रूपाकार व अस्तित्व देने के पीछे केवल शारीरिक बनावट, वंशानुगत वृत्तियां और पूर्वाग्रह ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति का भी बहुत बड़ा हाथ होता है । कुछेक देश-प्रदेशों के लोगों के अत्यधिक भावुक व शरमीली वृत्ति के होने के पीछे उनके वातावरण का ही सबसे बड़ा हाथ माना जा सकता है । शरमानें का भी अपना इतिहास है । इतिहास दोहराना यहां जरूरी नहीं है ।

प्रस्तुति : रितु सूद

दो स्थितियां



निवेदन

नियति वृक्ष की ऐसी कभी नहीं हो प्रभुवर
अमर बेल के सम्बल की वह करे कामना
चातक के भी ऐसे दुर्दिन कभी न आयें
स्वाति छोड़ वह नदी नीर की करे याचना

जीवन पथ पर भाल उठाये चलूं अहर्निश
पग कंपित हों उसके पहले मुझे थामना
जिस दिन पूर्ण करूं कर्त्तव्य सभी जो सौंपे
उस दिन लौटूं पास तुम्हारे यही चाहना

उषा काल का रूप धरे संध्या की बेला
बचपन की स्फूर्ति प्रवाहित हो रग-रग में
विषम परिस्थितियों को समझूं भेंट तुम्हारी
चाहूं रोड़े, शूल मिलें मुझको पग-पग में

यही सीख तो दी है तुमने मुझको प्रभुवर
सतत जूझना संघर्षों से नहीं भागना
वृक्षों सा मैं बनूं आसरा हर पंछी का
दीपशिखा सी रहे प्रज्वलित यही प्रार्थना।

—दुर्गा प्रसाद शुक्ल
आर-७/डी-७ पुराना राजनगर
गाजियाबाद (उ. प्र.)

जाने कितना दर्द भरा था?

कभी रचे थे गीत जो हमने बंजर में, वीरानों में
चर्चा आज उन्हीं की होती दुनिया के अफसानों में

जिक्र किया था उनका हमने यूं ही बातों-बातों में
लिख डाला है नाम हमारा दुनिया ने, दीवानों में

गैरों की राहों से चुनना शूल समर्पित हाथों से
फूल खिला जाता है अकसर जीवन के सुनसानों में

भटकन त्याग, छुई है देहरी किस जोगी के पांवों ने
फिर से चांद उतर आया है घर के रोशनदानों में

कोई है जिसने बोये हैं नफरत के जहरीले बीज
आग लगी है देखो, देखो, खेतों में खलिहानों में

जिनका जिक्र किया था केवल
मौसम और हवाओं से
उन बातों की खुशबू महकी है तेरी मुसकानों में

तुमसे बिछड़े तो सच मानो गुमसुम मन का फूल रहा
और निरंतर रहे भटकते हरे-भरे बागानों में

कैसी है तहजीब कि इनको ले आयी बाजारों में
वरना पेड़ों की तो पूजा होती थी इनसानों में

वो बस्ती क्या छूटी हमसे अपना घर भी छूट गया
बस कर भी हम बस न सके शहरों के बड़े मकानों में

छोड़ किनारे धारों के संग जिनको सुनकर लोग बहे
जाने कितना दर्द भरा था मल्लाहों की तानों में।

—उपेन्द्र कुमार
१८९, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नयी दिल्ली

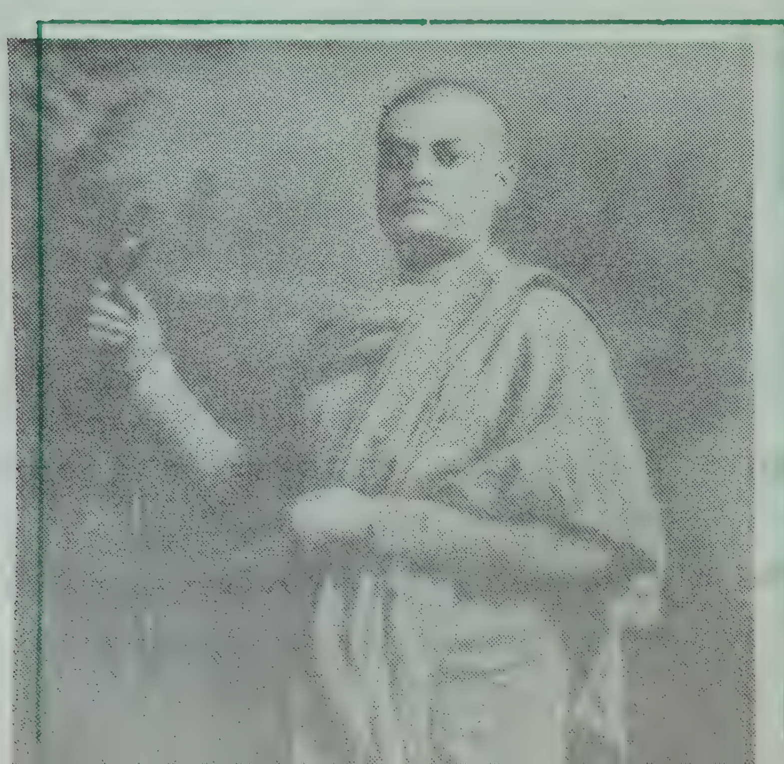
जीवनपर्यंत अपनी सारी शक्ति को मानवीय उत्कृष्टता तथा उसके कार्यान्वयन एवं आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने में व्यय करनेवाले स्वामी विवेकानंद इस धराधाम पर मात्र ३९ वर्ष ही रहे। इस अल्पायु में ९ वर्ष तक स्वामी विवेकानंद व्यापक रूप से (१८९३-१९०२) कार्यरत रहे। भारत भ्रमण के पश्चात १८९३ में वे पाश्चात्य देशों में गये, जहां इन्होंने भारत को 'आध्यात्मिक देश' के रूप में प्रतिष्ठा दिलायी। पाश्चात्य देशों से लौटने के पश्चात स्वामीजी अपने देश को पुनर्जागृत करने में प्रयासरत रहे। स्वामी विवेकानंद ४ जुलाई, १९०२ को महासमाधि के द्वारा आत्मस्वरूप में लीन हो गये।

नरेन कौन है

स्वामी विवेकानंद के विषय में इनके गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस ने एक दिन (जब तीसरी बार स्वामीजी श्री रामकृष्ण से मिले थे।) यह जान लिया था, 'जिस दिन स्वामी विवेकानंद यह जान जाएंगे कि वे कौन हैं ? उस दिन वे इस शरीर को त्याग देंगे।' तीसरी बार स्वामी विवेकानंद जब दक्षिणेश्वर आकर श्री रामकृष्ण

स्वामी विवेकानंद के जीवन का अंतिम दिन

● भारतीय वसंत कुमार



परमहंस से मिले तो उस दिन श्री रामकृष्ण देव उन्हें अपने साथ दक्षिणेश्वर के समीप यदु मल्लिक की वाटिका में घुमाने ले गये । वस्तुतः श्री रामकृष्ण यह जानना चाहते थे, कि स्वामी विवेकानंद कौन हैं ? अपने स्पर्श से उन्होंने नरेंद्र (विवेकानंद के बचपन का नाम) की ब्राह्य चेतना को लुप्त कर दिया । उसके बाद उन्होंने नरेंद्र से अनेक बातें पूछी । इस घटना के विषय में श्री रामकृष्ण ने बाद में कहा था, 'नरेन कौन है ? कहां से आया है, क्यों जन्मा है, कितने दिन धराधाम में रहेगा, आदि । वे सब गुप्त बातें हैं । पर उन बातों से मैं यह जान गया हूं, कि जिस दिन नरेंद्र जान जाएगा कि वह कौन है ? उस दिन वह इस लोक में नहीं रहेगा । वह योगबल के प्रभाव से तत्क्षण देह त्याग देगा । नरेंद्र ध्यान सिद्ध महापुरुष है, सप्तर्षिमंडल का एक ऋषि है ।'

महाप्रस्थान की ओर

जब स्वामी विवेकानंद के जीवन का अंतिम समय निकट आया तो वे सांसारिक व्यापारों में उदासीन रहने लगे थे एवं कभी-कभी अति गंभीर ध्यान में निमग्न हो जाते । कामधाम के संबंध में सलाह मांगने पर वह कहते हैं, 'इन सब बातों में मैं अब और सिर नहीं खपाऊंगा ।' उनके इस बदलते स्वभाव को देख उनके गुरु भाइयों को शंका हुई और अंततः एक दिन एक गुरु भाई पूछ बैठे, 'स्वामीजी ! क्या आप जान गये हैं, कि आप कौन हैं ?' स्वामी विवेकानंद ने उत्तर दिया था, 'हां ! जान गया हूं । जिस अनुभूति के द्वार को श्री रामकृष्ण देव ने बंद कर दिया था, उसे उन्होंने अब खोल दिया ।'

जब स्वामी विवेकानंद के जीवन का अंतिम समय निकट आया तो वे सांसारिक व्यापारों में उदासीन रहने लगे थे एवं कभी-कभी अति गंभीर ध्यान में निमग्न हो जाते । कामधाम के संबंध में सलाह मांगने पर वह कहते हैं, 'इन सब बातों में मैं अब और सिर नहीं खपाऊंगा ।' उनके इस बदलते स्वभाव को देख उनके गुरु भाइयों को शंका हुई और अंततः एक दिन एक गुरु भाई पूछ बैठे, 'स्वामीजी ! क्या आप जान गये हैं, कि आप कौन हैं ?' स्वामी विवेकानंद ने उत्तर दिया था, 'हां ! जान गया हूं । जिस अनुभूति के द्वार को श्री रामकृष्ण देव ने बंद कर दिया था, उसे उन्होंने अब खोल दिया ।'

शरीर त्यागने के एक सप्ताह पूर्व उन्होंने पंचांग देखकर अपने महाप्रस्थान की तिथि

निश्चित की थी । देह त्याग के तीन दिन पूर्व बेलुड़ मठ में अपने एक शिष्य से उन्होंने कहा था, 'मेरे देहांत के बाद वहां (जहां अभी समाधि मंदिर है) मेरा अंतिम संस्कार करना ।'

अंतिम दिन

अपने जीवन के अंतिम दिन (४ जुलाई, १९०२) को वह काफी सवेरे उठे थे । आठ बजे से ग्यारह बजे तक उन्होंने श्री ठाकुर के मंदिर में ध्यान किया था । मंदिर से लौटने के बाद वह मां काली का एक भजन गाते हुए बरामदे में टहलने लगे । उस समय स्वामी प्रेमानंद पास में ही थे । स्वामी प्रेमानंद ने सुना कि स्वामी विवेकानंद कह रहे हैं, 'यदि एक और विवेकानंद होता तो समझ पाता कि यह विवेकानंद क्या कर गया है ?' यह सब सुन प्रेमानंदजी काफी चिंतित हो गये । दोपहर के भोजन और थोड़ा विश्राम करने के बाद स्वामी विवेकानंद ब्रह्मचारियों को लगातार लगभग चार बजे तक संस्कृत व्याकरण पढ़ाते रहे । शाम को बेलुड़ बाजार तक घूमने भी गये थे । अंधेरा होने के पूर्व ही वह बाजार से लौट आये । उसके बाद मंदिर में आरती का घंटा बजने के बाद स्वामीजी दूसरी मंजिल पर अपने कमरे में जाकर पूर्व की ओर मुंह करके ध्यानमग्न हो गये । श्री रामकृष्ण देव की उक्ति सत्य हुई । स्वामी विवेकानंद महासमाधि के द्वारा आत्मस्वरूप (९ बजकर १० मिनट) में विलीन हो गये ।

स्वामी विवेकानंद के एक शिष्य (मठवासी) ने लिखा है कि महासमाधि नौ बजे के तुरंत बाद हुई । स्वामी प्रेमानंद और निशच्छानंद ने पाया कि स्वामीजी का शरीर स्थिर हो गया है । स्वामी अद्भेतानंद के कहने पर स्वामी बोधानंद ने स्वामी विवेकानंद की नाड़ी को देखा । पर, उस समय तक तो स्वामी विवेकानंद पंचतत्व में विलीन हो चुके थे । उसके बाद स्वामी निर्भयानंद डॉ. महेंद्र नाथ मजूमदार को बुला लाए । डॉक्टर ने कृत्रिम श्वास देकर स्वामीजी के शरीर को पुनर्जीवित करना चाहा, पर वे असफल रहे और अंत में उन्होंने हृदयगति रुक जाने से मृत्यु होने की बात कही । सवेरे कलकत्ता से डॉ. बिपिन बिहारी घोष भी आये और उन्होंने रक्ताघात के कारण मृत्यु की बात कही । लेकिन, इसके बाद जो भी डॉक्टर आये, वे इन दोनों कारणों से सहमत नहीं थे । कई तरह की जांच-पड़ताल के बावजूद वे किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सके ।

उदबोधन पत्रिका में स्वामीजी के एक गुरु भाई ने लिखा है, कि दूसरे दिन सुबह स्वामीजी के मुंह और आंख से हलका रक्तस्राव पाया गया । जिससे निष्कर्ष निकलता है कि जप और ध्यान के दौरान शरीर त्याग करते समय उनके 'ब्रह्मरंध्र' में छेद हो गया होगा ।

मृत्यु का पूर्वानुमान

स्वामी विवेकानंद को अपनी मृत्यु का पूर्वानुमान था । अपने पत्रों में वह यह संकेत दे रहे थे कि उनके महाप्रस्थान का समय निकट है । भगिनी क्रिश्चिन को लिखे पत्र (१४ अक्तूबर, १९००) में उन्होंने लिखा था, '...अब मैं मुक्त हूं । पहले की तरह ही एक भिक्षु संन्यासी । मठ के अध्यक्ष पद से भी मैंने त्यागपत्र दे दिया है । ईश्वर को धन्यवाद देता हूं कि मैं मुक्त हूं । अब ऐसी जिम्मेदारी अपने सिर

पर लेना मेरे बूते की बात नहीं । मैं बहुत विक्षुब्ध और दुर्बल हो गया हूं ।

'जिस प्रकार पेड़ की डालियों पर सोती हुई चिड़िया जग जाती है और सुबह होने के साथ गाती हुई गहन नीलाकाश में ऊपर उड़ जाती है, उसी प्रकार मेरे जीवन का अंत भी है ।'

मुझे अनेक कठिनाइयां झेलनी पड़ी और इसके साथ ही कई महान सफलताएं भी मिलीं । किंतु मेरी तमाम कठिनाइयों और कष्टों का कोई मूल्य नहीं, क्योंकि अंत में मैं सफल हुआ हूं । मैंने अपना लक्ष्य पा लिया है । मुझे वह मोती मिल गया है, जिसके लिए मैंने जीवनरूपी सागर में गोता लगाया था । मैं पुरस्कृत हुआ हूं । मैं संतुष्ट हूं ।

इस तरह मुझे ऐसा लगता है कि जैसे मेरे जीवन का एक नया अध्याय खुल रहा है । मुझे ऐसा लगता है कि जैसे जगन्माता जीवन मार्ग पर मुझे मंद-मंद बिना किसी अवरोध के ले चलेंगी । विघ्न बाधाओं से पूर्ण मार्ग पर अब नहीं चलना पड़ेगा, अब जीवन फूलों की सेज होगा । इसे समझ रही हो न ? विश्वास करो, मैं इस विषय में पूर्ण आश्वस्त हूं... ।'

२७ अगस्त, १९०१ को कुमारी मेरी हेल को लिखे पत्र में भी उन्होंने लिखा था, '...आह ! यह जीवनपर्यंत दूसरों को रास्ता दिखाते रहने का व्यापार । यह अत्यंत कठोर है, अत्यंत क्रूर । पर मैं असहाय हूं इसके आगे । मैं तुम्हें प्यार करता हूं, मेरी ईमानदारी से, सच्चाई से, मैं तुम्हें प्रिय लगनेवाली बातों से छल नहीं सकता । न ही यह मेरे वश का रोग है ।

फिर मैं एक मरणोन्मुख व्यक्ति हूं, मेरे पास छल करने के लिए समय नहीं... ।'

कई अन्य पत्रों में भी उन्होंने इस तरह के संकेत दिये । एक स्थान पर लिखते हैं, 'मेरे शरीर एवं मन भग्न हो चुके हैं । विश्राम की आवश्यकता है ।



कहीं यह कि... जीवन प्रवाह में उत्थान-पतन के अंदर होकर मैं अग्रसर हो रहा हूं । आज मानो मैं कुछ नीचे की ओर हूं... ।'

संदेश

स्वामीजी ने ११ जनवरी १८९५ ई. को शिकागो से अपने एक मद्रासी शिष्य को लिखे पत्र में लिखा था, 'मैं मृत्युपर्यंत निरंतर कार्य करता रहूंगा और मृत्यु के बाद भी संसार की भलाई के लिए कार्य करता रहूंगा । उन्होंने यह भी कहा था, 'मृत्युपर्यंत काम करो —मैं रहूं या न रहूं मेरी आत्मा तुम्हारे साथ रहेगी । संसारी कीड़े की तरह मरने से अच्छा है, कर्तव्य क्षेत्र में सत्य का उपदेश देते मरना ।'

आज भी स्वामीजी की अमोघवाणी, उनका वेदांत दर्शन, आत्मा की,आस्था की बातें, ज्ञान, भक्ति और कर्म तथा राजभोग पर विचार, तथा संपूर्ण विश्व एक परिवार की बातें हमारे बीच है । धार्मिक कट्टरता के इस माहौल में इस अमर विभूति की वाणी हमारी प्रेरणा स्रोत है । उन्हें श्रद्धासुमन ।

—आई.बी. रोड
हवेली खड़गपुर
मुंगेर-८११२१३ (बिहार)

प्रेरक प्रसंग

गंगा भारत की प्राचीन सभ्यता की प्रतीक रही है, निशान रही है, सदा बदलती, सदा बहती, फिर वही गंगा की गंगा। मैंने सुबह की रौशनी में गंगा को मुसकराते, उछलते-कूदते देखा है और देखा है शाम के साये में उदास, काली-सी चादर ओढ़े हुए। यही गंगा मेरे लिए निशानी है भारत की प्राचीनता की, यादगार की, जो बहती आयी है वर्तमान तक और बहती चली जा रही है भविष्य के महासागर की ओर।

(जवाहर लाल नेहरू)

आशा नाम की एक नदी है, जिसमें मनोरथ रूपी जल भरा है, तृष्णा रूपी तरंगें हैं, राग-रूपी मगर और वितर्क-रूपी अनेक पक्षी हैं। वह धैर्य रूपी तट के वृक्षों को ढहानेवाली है। उसमें मोह-रूपी भंवर है, जिनके कारण वह अत्यंत दुस्तर और गंभीर है। उसकी चिंता-रूपी ऊंची-ऊंची कगारें भी हैं। उस मोह नदी के पार पहुंचे हुए विशुद्ध चित्त योगीश्वर ही आनंद पाते हैं।

(भर्तृहरि)

अनुराग पर ही यह सारा संसार ठहरा हुआ है। यह अनुराग संतानों पर, गुरुजनों के ऊपर, बंधु-बांधवों के साथ और ईश्वर के प्रति स्नेह, श्रद्धा, प्रणय, प्रेमभक्ति इत्यादि के भिन्न-भिन्न नाम से व्यवहृत है। ... मनुष्यों के हृदय में अनुराग ही जीवन का सुख और प्रफुल्लता का भाव प्रकट करता है। ...कष्ट से भरे हुए संसार को स्वर्ग बनाने के लिए एकमात्र अनुराग ही चाहिए।

(ज्ञानेन्द्र मोहन दास)

अत्यंत सात्विक वृत्तिवाले हमारे पुराने साथी अप्पा साहब पटवर्धन ने सर्वोदय का विचार स्पष्ट करने की दृष्टि से 'सर्वोदय' के लिए एक सुंदर प्रतियोगी शब्द हमें दिया है— 'अंत्योदय।' समाज के सभी घटकों का भला करने का हमारा प्रयत्न सबसे आखिरी, दबे हुए, परित्यक्त, उपेक्षित लोगों की सेवा से शुरू होना चाहिए। इसमें

उच्चवर्गीय तथा भाग्यशाली लोगों की उपेक्षा भले ही हमारे हाथों हो । लेकिन हमारे भूले-बिसरे बांधवों से ही हमें अपनी प्रवृत्तियों का शुभ प्रारंभ करना चाहिए । यह भाव व्यक्त करने के लिए उन्होंने हमें समीकरण दे दिया है—सर्वोदय यानी अंत्योदय ।

(काका साहब कालेलकर)

मनुष्य का जीवन इतना एकांगी नहीं है कि उसे हम केवल अर्थ, केवल काम या ऐसी ही किसी एक कसौटी पर परखकर संपूर्ण रूप से खरा या खोटा कह सकें । कपटी-से-कपटी लुटेरा भी अपने साथियों के साथ कितना सच्चा है, उसे देखकर महान सत्यवादी भी लज्जित हो सकता है । कठोर-से-कठोर अत्याचारी भी अपनी संतान के प्रति इतना कोमल है कि कोई भावुक भी उसकी तुलना में नहीं ठहरेगा ।

(महादेवी वर्मा)

हिंदू और मुसलमान दोनों एक डाल के दो फूल हैं, और दोनों को बड़ा बनानेवाला मूल भी एक ही है । जो लोग इन दोनों को आपस में लड़ा रहे हैं, उनका उनकी लड़ाई में कुछ स्वार्थ है । यह सोचने की बात है कि जब इन दोनों में से एक की बुराई होगी, तो दूसरे की भलाई कैसे हो सकती है ?

(सियाराम शरण गुप्त)

समाज, राष्ट्र और धर्म की अपनी-अपनी नीति होती है । उन नीतियों के सहारे समाज, राष्ट्र एवं धर्म की परंपरा चलती है । समाज नीति के द्वारा समाज का संचालन करनेवाले व्यक्ति समाज-नेता कहलाते हैं । राजनीति के द्वारा राष्ट्र का संचालन करनेवाले व्यक्ति राजनेता कहलाते हैं और धर्मनीति के सहारे समाज को प्रतिष्ठा और राष्ट्र में धार्मिक मूल्य देनेवाले व्यक्ति धर्मनेता या धर्माचार्य कहलाते हैं । उक्त तीनों नीतियों की स्वतंत्र सत्ता है, स्वतंत्र कार्यक्षेत्र है और स्वतंत्र कार्य पद्धति है । एक नीति के कार्य में दूसरी नीति का हस्तक्षेप कभी वांछनीय नहीं होता । कोई भी धर्माचार्य कभी समाजनेता या राजनेता नहीं बन सकता । यदि वह वैसा बनने का प्रयास करेगा तो न घर का रहेगा, न घाट का । समाजनेता, राजनेता वह बन नहीं सकेगा, इधर धर्म की डोर भी उसके हाथ से छूट जाएगी । ऐसी स्थिति में उसकी अपनी अस्मिता भी सुरक्षित नहीं रह सकेगी ।

धर्म का क्षेत्र व्यापक है । व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र सबके लिए धर्म जरूरी है । राजनेता और समाजनेता भी धर्मगुरुओं से पथदर्शन प्राप्त कर अपना रास्ता प्रशस्त करते हैं । जिस समय राजनेता और समाजनेता अपनी नीतियों को छोड़कर निरंकुश हो जाते हैं, धर्म का अंकुश ही उन पर नियंत्रण रखता है ।

अणुव्रत अनुशास्ता श्री तुलसी)

आज भी सुरक्षित है— क्राइस्ट का कफन

• योगेश चंद्र शर्मा

सामान्य रूप में यह बात आश्चर्यजनक लग सकती है कि दो हजार वर्ष पुराने कफन का वस्त्र आज भी लगभग अपने मूल रूप में कहीं पर सुरक्षित रखा है। मगर प्रभु ईसा मसीह के कफन के बारे में यह दावा सत्य ही है। अब तक उस कफन पर अनेक वैज्ञानिक प्रयोग किये जा चुके हैं, मगर कोई भी उसे क्राइस्ट के कफन के रूप में अस्वीकारने की स्थिति में नहीं है। धर्माधिकारी भी सामान्यतः अब उसे अपनी स्वीकृति दे चुके हैं।

क्राइस्ट का कफन

लॉर्ड क्राइस्ट का यह कफन इटली के ट्यूरिन नगर के चर्च में एक चांदी की बनी मंजूषा में सुरक्षित रखा हुआ है। यह लिनन का बना हुआ है, जिसे पुराने समय में जेरुसलम में कफन के रूप में ही काम में लिया जाता था। यह हाथ का बुना हुआ है। इसे बुनने से पहले ही रंग लिया गया था। रंगने की यह तकनीक भी पुराने जमाने की है। यह कपड़ा चार मीटर लंबा और एक मीटर चौड़ा है। इसे देखकर अनुमान लगाया गया है कि इसे इस प्रकार लपेटा गया होगा कि इससे पूरा शरीर लंबाई में ढक जाए और पीठ की तरफ से इसे आगे लाकर सामने के हिस्से पर इसे पुनः दुहरा दिया जाए। इस वस्त्र को देखने से यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि इसमें जिस व्यक्ति के शव को लपेटा गया, उसका कद पांच फुट ग्यारह इंच का रहा होगा, उसके एक घनी दाढ़ी होगी और उसके शरीर से स्थान-स्थान पर रक्त स्राव हो रहा होगा। उस ज़माने में सामान्यतः रोमन लोगों का छोटा कद होता था, लेकिन यहूदी वंश के गडरियों का कद आम तौर से लंबा ही होता था। वे दाढ़ी भी रखते थे। प्रभु यीशु की लगभग यही आकृति हम प्रारंभ से ही चित्रों और मूर्तियों में देखते आ रहे हैं। इसमें एक अंतर भी है। इस समय उपलब्ध चित्रों में यीशु की हथेलियों में गड़ी हुई कीलें दिखलाते हैं, जबकि इस कफन से निष्कर्ष निकाला गया है कि क्राइस्ट की हथेलियों में नहीं बल्कि कलाइयों में कीलें ठोकी गयीं थीं। उस जमाने के प्राप्त एक अन्य अस्थि पंजर में भी हमें इसी प्रकार कलाइयों में कील ठोकने के प्रमाण मिले हैं। इससे यही लगता है कि क्राइस्ट के भी कलाइयों में ही कीलें ठोकी गयीं होंगी। कफन को देखकर कुछ अन्य बातों की भी जानकारी मिलती है। क्राइस्ट को क्रॉस पर लटकाने से पूर्व कोड़ों से मारा गया था तथा उस मार से दायीं आंख सूज गयी थी। रोमन

साम्राज्य में अपराधियों के साथ इस प्रकार के व्यवहार की आम परंपरा थी । इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं । क्रॉस पर लटकाने के बाद क्राइस्ट पर भालों से भी चोट की गयी थी, जिससे होनेवाले घावों का खून कफन पर विद्यमान है ।

इटली में सुरक्षित रखे इस कफन को 'सांताशिडॉन' या 'टयूरिन का कफन' के नाम से संबोधित किया जाता है । इस पर साधु-जैसे एक निर्वस्त्र व्यक्ति की आकृति स्पष्ट रूप से उभरी हुई दिखलायी देती है । यह उभरी हुई मानव-आकृति ही इसकी प्रमुख विशेषता है । इसमें रक्त के हलके धब्बे स्थान-स्थान पर लगे हुए हैं । पीठ की ओर रक्तधारा के भी निशान हैं । इससे लगता है कि क्रॉस पर चढ़ाने के बाद क्राइस्ट के सर पर कांटों का ताज पहनाया गया होगा, जिससे पीठ पर यह खून बहा । पैरों की तरफ लगे खून के निशान वहां पर ठोकी गयी कीलों को प्रमाणित करते हैं ।

धर्माधिकारियों द्वारा विरोध

कफन का यह पवित्र वस्त्र सितंबर १३५६ में फ्रांस के एक सैनिक जियोफ्रे-द-चार्नी के घर पर उसकी मृत्यु के बाद मिला । चार्नी की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी और उसके पुत्र ने इस वस्त्र को 'क्राइस्ट का कफन' का संबोधन देकर लोगों को दिखलाना शुरू कर दिया । इस पर कुछ धर्माधिकारियों ने विरोध किया और इसे यीशु का कफन मानने से इनकार कर दिया । एक बिशप ने तो यहां तक कहा कि, 'यह वस्त्र हमारे यीशु का असली वस्त्र नहीं हो सकता । इस पर अंकित चित्र भी हमारे यीशु के चित्र से मेल नहीं खाता और न ही हमारे धार्मिक उपदेशों में इसका कोई जिक्र है । अगर यह वस्त्र असली होता तो प्रभु के भक्त इसका कहीं-न-कहीं उल्लेख अवश्य करते । यह कैसे संभव है कि इस छिपे हुए रहस्य का आज तक भी पता न चले ।'

बाइबल अथवा ईसाई धर्म के किसी भी अन्य प्राचीन ग्रंथ में क्राइस्ट के कफन की चर्चा नहीं है । उनके किसी शिष्य ने भी इसका उल्लेख नहीं किया । मगर प्राचीन धर्मोपदेशों के प्रवचनों में मेंडिलियोन नामक एक वस्त्र की चर्चा मिलती है । जो शायद यह कफन ही था ।

यह सच है कि बाइबल अथवा ईसाई धर्म के किसी भी अन्य प्राचीन ग्रंथ में क्राइस्ट के कफन की चर्चा नहीं है । उनके किसी शिष्य ने भी इसका उल्लेख नहीं किया । मगर प्राचीन धर्मोपदेशों के प्रवचनों में मेंडिलियोन नामक एक वस्त्र की चर्चा मिलती है । यह शायद कफन ही था । यह वस्त्र उनके शिष्यों के पास था । बाद में जब ईसाई धर्मावलंबियों पर काफी अधिक अत्याचार हुए और उनकी प्राचीन धार्मिक वस्तुओं को नष्ट किया जाने लगा तो

अन्य वस्तुओं के साथ इस वस्त्र को भी छुपा दिया गया। बाद में दसवीं शताब्दी में यीशु के भक्तों ने इस वस्त्र को मुसलिम आक्रमणकारियों से प्राप्त किया। १२०२ ईस्वी में यह वस्त्र फिर गायब हो गया और अब १३५६ में इसे चार्नी के पास से प्राप्त किया गया। संभव है चार्नी के बुजुर्गों ने ही कभी किसी प्रकार से इसे प्राप्त करके अपने पास रख लिया हो।

धर्माधिकारियों के विरोध से खिन्न होकर चार्नी के परिजनों ने इसकी प्रदर्शनी बंद कर दी। बाद में १४५३ में चार्नी की पौत्री ने इस वस्त्र को ड्यूक ऑव सेवाय को भेंट कर दिया। इससे यह पवित्र वस्त्र पुनः चर्चा का विषय बन गया। ड्यूक ने चेंबूर में एक विशेष भवन बनवाकर उसमें इस वस्त्र को रख दिया। १५३२ में उस भवन में आग लग गयी। इससे इस कफन का भी कुछ भाग जल गया। फिर भी उसमें मानव आकृति-जैसा उभरा हुआ भाग यथावत रहा, जिससे उसके महत्त्व में कोई कमी नहीं आयी। इसके उपरांत इस पवित्र वस्त्र पर 'द साइलेंट विटनेस' के नाम से एक वृत्तचित्र भी बनाया गया।

कफन के इस पवित्र वस्त्र को सामान्यतः एक सौ वर्ष में एक बार जनता के सामने रखा जाता है। पिछली बार इसका प्रदर्शन २७ अगस्त, १९७८ को किया गया था। तदनुसार अब इसका अगला सार्वजनिक प्रदर्शन २६ अगस्त, २०७८ को किया जाएगा। परंतु इस बीच वैज्ञानिक जांच-पड़ताल निरंतर जारी है। संभव है वह जांच हमें किसी निश्चित नतीजे पर पहुंचा सके।

—१०/६११, मानसरोवर,
जयपुर-३०२०२० (राज.)

मैं प्रत्येक तार कातते हिंदुस्तान के गरीबों के बारे में सोचता हूं। हिंदुस्तान के गरीब लोगों का ईश्वर से विश्वास उठ गया है। फिर मध्यमवर्ग अथवा धनिक वर्ग पर कैसे हो? जिसके पेट में भूख है, वह उस भूख को मिटाना चाहता है। उसका पेट ही परमेश्वर है। जो मनुष्य उसे रोटी के साधन देगा वही उसका अन्नदाता बनेगा और उसके द्वारा शायद वह ईश्वर के दर्शन भी करेगा। इन मनुष्यों को हाथ-पैर सलामत होने पर भी अन्नदान करना, यह स्वयं ही दोषी होना और उन्हें भी दोषित करने जैसा है। उन्हें कैसे भी मजदूरी मिलनी चाहिए। करोड़ों लोगों की मजदूरी तो चरखा ही हो सकता है। मैं चरखे पर उनकी श्रद्धा भाषण द्वारा पैदा नहीं कर सकता, परंतु स्वयं कातकर ही कर सकता हूं। इसलिए कातने की क्रिया को मैं तपश्चर्या अथवा यज्ञ ही मानता हूं। जहां गरीबों का शुद्ध चिंतन है, वहां ईश्वर है ही यह मानने के कारण मैं प्रत्येक तार में ईश्वर को देख सकता हूं।

(● महात्मा गांधी)

साहित्यकार नहीं, दरोगा चाहिए

● डॉ. मदनमोहन तरुण

२ अगस्त, १९६२ का वर्षा की फुहारों में भीगा-भीगा दिन था। आचार्य शिवपूजन सहाय का १९२५ में प्रथम बार प्रकाशित एकमात्र उपन्यास 'देहाती दुनिया' समाप्त करते-करते मैं इतना अभिभूत हो उठा कि उसके लेखक से प्रत्यक्षतः मिलने की इच्छा का निवारण नहीं कर सका। भाषा की ऐसी निरावृत सहजता, चपल-चुहलभरी अभिव्यक्ति, फिर भी आद्यंत प्रशांत विदग्धता का यह मानो प्रथम साक्षात्कार था। पूरा ग्रामीण जीवन मानो अपने समस्त आंतः एवं बहिर्परिवेश की समग्र जीवंतता के साथ स्फूर्त हो उठा था।

मन में विचार आया कैसा होगा यह मिट्टी की सोंधी गंध की तरह अपने इस पूरे सृजन में व्याप्त लेखक ! मतवाला मंडल के यशस्वी सदस्य के रूप में अपने संपादन कौशल और अपनी रचनाधर्मिता के प्रति समर्पित आचार्य शिवपूजन सहाय के बारे में मुझे जानकारी थी, किंतु देहाती दुनिया की तो एक अलग ही दुनिया थी। उसके चितेरे को देखने की लालसा को दबा पाना असंभव था।

आचार्यजी से भेंट

आचार्यजी उन दिनों पटना में रहते थे। पता लेकर दूसरे ही दिन प्रातःकाल मैंने उनका दरवाजा खटखटाया। थोड़ी ही देर बाद नाटे कद के अत्यंत गौरवर्ण, गंजी पहने और कमर में अंगोछी लपेटे एक वयोवृद्ध सज्जन ने दरवाजा खोला। लगता था अभी-अभी स्नान करके निवृत्त हुए हों। पूरे चेहरे के आत्मीय प्रसार में पतले-पतले होठों के ऊपर से गुजरती नासिका के दोनों तटों पर उनकी आंखें अपनी पूरी उद्दीप्ति से कह रही थीं—भला और कौन हो सकते हैं—आचार्य शिवपूजन सहाय ! मैंने करबद्ध विनम्रता से अपनी प्रणति अर्पित करते हुए उनके दर्शनार्थ आने का अपना अभिप्रायः व्यक्त किया। उन्होंने मृदुल आत्मीयतापूर्वक मेरा स्वागत करते हुए पास ही खड़ी हुई चौकी पर बिठाया। चौकी पर दरी बिछी थी। उस पर हिंदी पत्रिकाओं के कुछ ताजा अंक रखे थे। आचार्यजी मुझे बिठा कर थोड़ी देर के लिए

भीतर चले गये । तनिक देर बाद एक युवक थाल में ठेकुआ और लडुआ (ठेकुआ आटे में गुड़ या चीनी मिलाकर घी में तल कर बनाया जाता है तथा लड्आ चावल के आटे में चीनी या गुड़ मिलाकर बनाया जाता है) लिए आये

कुछ ही देर बाद आचार्यजी सफ्फाक धोती-कुर्ता पहने बाहर आये और सामने चौकी पर बैठ गये । लगा एक पूरा युग सामने आकर थम गया । राजनीति और साहित्य की हलचलों से भरा युग । तब साहित्य कद में राजनीति से किसी भी तरह छोटा नहीं था । लोग गांधीजी को जानते थे तो प्रेमचंद और रवीन्द्र की भी उतनी ही खबर रखते थे । हिंदी पत्रकारिता स्वाधीनता संग्राम का प्रतीक बन चुकी थी ।

और सामने रखकर भोजपुरी में बोले, 'तब तक खाइए, वे अभी आते हैं' कहकर युवक चले गये । मैं ठेकुआ और लडुआ खाने लगा । कुछ ही देर बाद आचार्यजी सफ्फाक धोती-कुर्ता पहने बाहर आये और सामने चौकी पर बैठ गये । लगा एक पूरा युग सामने आकर थम गया । राजनीति और साहित्य की हलचलों से भरा युग । तब साहित्य कद में राजनीति से किसी भी तरह छोटा नहीं था । लोग गांधीजी को जानते थे तो प्रेमचंद और रवीन्द्र की भी उतनी ही खबर रखते थे । हिंदी पत्रकारिता स्वाधीनता संग्राम का प्रतीक बन चुकी थी । चारों ओर असाधारण जागृति थी । हर किसी की आंखों में नूतन भविष्य का स्वप्न तरंगित हो रहा था । उसी युग के सुदृढ़ स्तंभों में से एक थे आचार्य शिवपूजन सहाय, जिन्होंने हिंदी के तेजस्वी क्रांतिपुरुष निराला के समग्र संघर्ष को अपनी आंखों से देखा ही नहीं था, उसकी सांस से भी परिचित थे । 'कामायनी' की प्रथम हस्तलिखित प्रति से गुजरने का आमंत्रण दिया था प्रसादजी ने आचार्य को और उन्होंने प्रसादजी को तत्संबंधी अपने कुछ सुझाव भी दिये थे जिनमें से कुछ को प्रसादजी ने स्वीकार भी किया था ।

दरोगा की जरूरत है !

आचार्यजी से बातें होने लगी । इस उम्र में भी उनकी वाणी में एक खनक थी । उस युग की चर्चा कुछ ऐसी अविरल भावुकता से चली कि 'देहाती दुनिया' वाला प्रसंग यों ही पड़ा रह गया । बल्कि, वह बात ध्यान में आयी ही नहीं । उन दिनों मुझे लेखकों और कवियों की बहुत-सी पंक्तियां याद रहती थीं, जो प्रसंग आते ही स्वयं निकल पड़ती थी । पता नहीं क्यों आचार्यजी मुझसे बहुत प्रभावित हुए । उन दिनों मेरी कुछेक कविताएं और एकाध तीखी

टिप्पणियां पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी थी। यह जानकर कि मैं कविता भी लिखता हूं उन्होंने एकाध कविता सुनाने को कहा। सुनकर उन्होंने कहा, 'अब मैं बूढ़ा हो गया हूं। आज की कविताएं मेरी समझ में नहीं आतीं, परंतु बहुत अधिक संख्या में लोग लिख रहे हैं, पत्रिकाओं में वे छप रही हैं। अन्य लोग उसका रस अवश्य ही लेते होंगे।' कहकर वे तनिक देर चुप रहे। दूर बाहर की ओर देखते रहे फिर बोले— 'काव्य-रचना और साहित्य सृजन तो ठीक है, परंतु मैं आज के युवकों से आशा करता हूं कि वे समर्पित एवं ईमानदार प्रशासक के रूप में सामने आयें। आज साहित्यकार से अधिक अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित दरोगा की आवश्यकता है। मैं चौंका। भौंचक्क उनकी ओर ताकता रह गया।' क्षणभर पश्चात वे पुनः बोले, 'आज की स्थितियों को देखकर मन खिन्न हो उठता है। चारों ओर अराजकता-सी फैली है। शरीफ लोगों का जीना कठिन हो गया है। स्त्रियां शाम को अकेले घर से बाहर नहीं निकल सकतीं। भाई-भतीजावाद का बोलबाला है। युवकों में बेकारी और निराशा फैली हुई है। हम लोग किसी प्रकार अपनी इज्जत बचाए हुए हैं। गरीबों की कोई सुननेवाला नहीं है। रोज चोरी-डकैती हो रही है। हुल्लड़बाजी है।' फिर तनिक थमकर बोले, 'मैं आप जैसे साहित्य के क्षेत्र में महत्वाकांक्षा रखनेवाले युवकों को निराश करना नहीं चाहता, परंतु मैं फिर कहता हूं आज देश को कवियों और लेखकों से अधिक अच्छे दरोगा की आवश्यकता है, जो दूसरों का दुख-दर्द समझ सके।' उस समय मुझे उनकी बातें सुनकर ठेस-सी लगी थी। शब्दों के संसार के जुझारु महारथियों की लेखनी के प्रभाव से पूर्णतः परिचित इस लेखक के साथ आखिर कौन-सी घटना घटित हो गयी कि साहित्य की शक्ति के प्रति उनकी आस्था इतनी डगमगा गयी कि वह साहित्यकार की जगह आज दरोगा की प्रतीक्षा कर रहा है।

—प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषा संकाय
लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी
मसूरी-२४८१७९

मेरे सपनों का भारत

मैं एक ऐसा भारत देखना चाहता हूं जिसमें सबसे ज्यादा निर्धन यह महसूस करें कि यह उनका अपना ही देश है और इस देश की सत्ता में उनकी आवाज की भी कीमत है। एक ऐसा भारत, जिसमें गरीब तथा अमीर में कोई भेद न हो, एक ऐसा भारत, जिसमें समाज के सभी लोग पूर्ण सौहार्द से रहे... ऐसे भारत में अस्पृश्यता, मदिरापान तथा नशे जैसे अभिशाप के लिए कोई स्थान नहीं हो। महिलाओं को भी वही अधिकार मिलें—जैसे पुरुषों को प्राप्त हैं। यही मेरे सपनों का भारत है।

(महात्मा गांधी)

भारत के भाषायी इतिहास का सिलसिला तीन हजार वर्षों से चला आ रहा है। संस्कृत भाषा का साहित्य में समावेश आठ सौ (८००) वर्ष पू. ईसा हो चुका था। इस भाषायी इतिहास का दस्तावेजी सबूत 'ऋगवेद' है जिसका लेखन युग एक हजार वर्ष पूर्व ईसा है। वह भाषा जिसे आर्य पहली बार भारत में लाए थे आज भी ऋगवेद के रूप में मौजूद है। जारी रही और व्याकरण की जंजीर हुई इस भाषा का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जाने लगा।

एक लंबा इतिहास

ऋगवेद के लेखन युग और 'पाणनी' के युग के बीच छः सौ वर्षों का एक लंबा अंतराल है। यह वह तूलानी दौर है जिसमें वेद की भाषा अपनी तबदीलियों से गुजरते हुए 'पाणनी' के युग तक पहुंची। उस समय यह भाषा

संस्कृत के विकास में मुसलमानों का योगदान

● असद रिजवी

स्वयं ऋगवेद की भाषा उस प्राचीन भाषा की विकसित छवि है जो 'हिंद-इरानी खानदाने अलसना' से गहरा गठजोड़ रखती थी। ऋगवेद में प्रयोग होनेवाली भाषा सदा बदलाव के बहाव में रही। ईसा से चार सौ वर्ष पूर्व व्याकरणदाता 'पाणनी' ने ऐसा महसूस किया कि इस भाषा को बोलचाल की सतह पर आगे होनेवाले बदलाव से बचाकर रखना अति आवश्यक है वरना यह अपनी पहचान खो देगी। 'पाणनी' ने ऋगवेद का व्याकरण लिखकर उसे संपूर्ण जीवनदान देने की कोशिश की और इसके असूलों की पैरवी धार्मिक सम्मान की पाबंदी के साथ कई सौ वर्षों तक 'दिचिया' कहलाती थी। 'पाणनी' ने इसे केवल 'भाषा' कहा है इससे यह साबित होता है कि उस युग में यह भाषा बोलचाल के लिए भी प्रयोग होती थी। व्याकरण की जंजीर ने इस भाषा की विकासशील यात्रा पर रोक लगा दी और वैदिक संस्कृत एवं पाणनी के युग की संस्कृत में जिसे साहित्यिक संस्कृत एवं क्लासिकी संस्कृत भी कहते हैं उसमें काफी मतभेद हो गया। वैदिक संस्कृत और क्लासिकी संस्कृत के बीच छः सौ वर्षों का अंतर है और इस लंबे अंतराल में भाषाएं अपनी पहचान बदल देने में सक्षम होती हैं फिर भी इन दोनों में भाषायी गठजोड़ तो पाया ही जाता है।

इसका मुख्य कारण पुजारियों की वैदिक भाषा को बोलचाल की सतह पर पड़ोसी भाषाओं के असर से बचाए रखने का एक प्रयास है ।

विद्या और वैभव का समन्वय

भारत में धार्मिक भाषा होने की हैसियत से संस्कृत आज भी हिंदू समाज में सम्मान की दृष्टि से देखी जाती है और इसे देववाणी का दर्जा हासिल है । धार्मिक दृष्टिकोण से अलग यह भाषा अपने अंदर विद्या एवं वेद का वैभव छुपाए हुए है । इसी छुपे हुए वैभव की खोज ने कई विदेशी विद्वानों को इसे सीखने पर मजबूर किया । ईरान के सासानी और हिन्दुस्तान के गुप्तशाही परिवारों के बीच सांस्कृतिक मेल-जोल कायम होने के बाद दर्शनशास्त्र तथा तर्कशास्त्र जैसे विषयों पर संस्कृत भाषा में लिखी हुई पुस्तकों एवं संस्कृत की कथाओं और लघुकथाओं का पहलवी जुबान में अनुवादों का एक सिलसिला चल पड़ा । नौशेरवां के युग् में पंचतंत्र को पहलवी जुबान में अनुवाद किया गया और 'पहलवी' से 'अरबी' में उसका अनुवाद 'कलीला व देहना' के नाम से हुआ । इसी किताब का अनुवाद अरबी से 'जदीद इसलामी फारसी' में 'अनवारे सहेली' के नाम से किया गया । अब्बासी खलीफा मामून रशीद के शासनकाल में जब 'बेतुलहिकमा' में फलसफा, मनतिक, हैयत, हिंदसा और गणित पर लिखी हुई यूनानी किताबों के अरबी में अनुवाद का काम बहुत तेजी से जारी था । संस्कृत से अनुवाद के लिए भी कुछ हिंदू विद्वानों और पंडितों की सेवा प्राप्त की गयी । शिबली नोमानी 'तारीखनफ़' के हवाले से ऐसे दो हिंदू अनुवादकों के नाम लिखे हैं जो हिंदुस्तान से बगदाद अनुवाद के काम के लिए बुलाए गये थे ।अबूरेहान अलबरूनी ने हिंदू धर्म, शिक्षा एवं संस्कृति की जानकारी लेने के लिए हिंदुस्तान आकर पंडितों से संस्कृत सीखी थी और उसके बाद 'अलबरूनी' ने अरबी में वह विश्वविख्यात पुस्तक लिखी जो 'किताबुल हिंद' के नाम से आज भी प्राप्त है ।

संस्कृत के प्रति रूझान

संस्कृत की शिक्षा लेने के लिए एक विदेशी आलिम अबुलमआशर फलकी हिंदुस्तान आया था और हिंदुस्तान में दस वर्षों के दौरान उसने हिंदुओं की विद्याओं पर एक मोटी पुस्तक लिखी थी । हिंदुस्तान के वह मुसलिम बादशाह जिन्होंने संस्कृत भाषा व साहित्य के विकास में गहरी दिलचस्पी ली थी उनमें 'फिरोज शाह तुगलक' वाली ए कशमीर सुलतान जैनुल आबेदीन और शहंशाह अकबर के नाम विशेष हैं । इस दौर में संस्कृत की धार्मिक एवं साहित्यिक पुस्तकें फारसी में लिखी गयी । अमीर खुसरो ने भी संस्कृत की तारीफ की है और अपनी फारसी शायरी में संस्कृत के शब्दों का भी उपयोग किया है और संस्कृत को 'दरी' भाषा से बेहतर बताया है ।

अलीगढ़ मुसलिम युनिवर्सिटी के लेक्चरर मोहम्मद शरीफ हिंदुस्तान के पहले मुसलमान हैं जिन्होंने संस्कृत में डी. लिट. (डॉक्टर ऑव लिट्रेचर) की डिग्री हासिल की है । यह सम्मान संस्कृत में मोहम्मद शरीफ ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त किया है ।

—एलिया कमर्शियल एजेंसी,
पक्की सराय रोड,
मुजफ्फरपुर-८४२००१

सुकरात के जीवन का अंतिम दिन

● शराफत अली खान

एथेंस के न्यायाधीशों द्वारा सुकरात को मृत्यु दंड की सजा सुनाने के एक माह बाद वह दिन भी आ पहुंचा जब सुकरात को मृत्यु पथ पर चलने के लिए प्रस्तुत होना था ।

सुकरात के तमाम प्रशंसक सुबह से ही उनके पास जमा हो गये थे । अपने प्रशंसकों को दुःखमग्न और तनावग्रस्त जानकर भी वह उनसे सुबह से शाम तक लगातार वार्तालाप करते रहे, जब तक उनके विषपान का समय नहीं हो गया ।

सुकरात के शिष्य प्लेटो की अमर कृति 'फीडो' में सुकरात की मृत्यु के दिन का चित्रण इतना जीवंत है कि शरीर, मृत्यु और आत्मा की अमरता पर सुकरात की अपने शिष्यों के साथ चर्चा सुनने के बाद सुकरात को सायंकाल विषपान करते मानो पाठक साक्षात देख रहा हो ।

मुकदमे का चश्मदीद गवाह : प्लेटो

सुकरात के मुकदमे के समय प्लेटो न्यायालय में स्वयं उपस्थित था । इस प्रकार वह मुकदमे की सारी कार्यवाही का चश्मदीद गवाह था, किंतु सुकरात के विषपान करनेवाले दिन वह कारावास में उपस्थित नहीं था । शायद इसलिए कि अपने अत्यधिक प्रिय गुरुदेव को बिछुड़ता देखना उसे सहन न हो, इसी से वह कारावास न पहुंचा हो । 'फीडो' में मृत्यु के दिन का सारा दृश्य सुकरात का एक प्रिय शिष्य फीडो खींचता है ।

सुकरात के विषपानवाले दिन फीडो और उसके साथी, एथेंसवासी अपोलोडोरस, कीटो, क्रीटोबूलस आदि तथा एथेंस के बाहर थीबीस, मेगारा आदि से आये सुकरात के कुछ प्रशंसक सुबह-सुबह ही कारावास पहुंच गये थे । वहां उन्होंने सुकरात की पत्नी को गोद में बच्चा लिए रोते देखा । उन्हें देखकर वह और भी जोर-जोर से चीखकर रोने लगी । तब किसी तरह सुकरात ने उसे घर भिजवाया था ।

वैसे वहां उपस्थित सभी लोगों के मन सुकरात की पत्नी जेंथिपी के समान ही दुःखी थे, एकमात्र सुकरात को छोड़कर । उनके चेहरे को देखकर कहीं से नहीं लगता था कि उन्हें आज मृत्यु का सामना करना है । मृत्यु के प्रति सुकरात की निर्भयता वहां उपस्थित लोगों को रोमांचित कर रही थी । सुकरात से हमेशा के

लिए बिछोह की कल्पना से सबके मन विकल अवश्य थे, पर जिस प्रकार मृत्यु पथ के राही के प्रति लोगों के मन में दया उमड़ती है, वैसी कोई दया उनके मन में नहीं थी, बल्कि फीडो कहता है, उस समय वह इतने निर्भीक लग रहे थे, उनकी चाल और वाणी इतनी कुलीन लग रही थी कि उन्हें देखकर हमें खुशी भी हो रही थी। मुझे लग रहा था कि देवलोक में पहुंचकर यह व्यक्ति अवश्य ही प्रसन्न होगा।

आज अंतिम दिन में ऐसी स्थिति में भी सुकरात ने अपने शिष्यों के साथ विभिन्न विषयों—जैसे आत्मा, आत्मा की स्थिति, पुनर्जन्म आदि पर घंटों चर्चा की।

अंतिम क्षणों में हुई काव्य चर्चा

चर्चा कवि इवलिस से प्रारंभ हुई। किसी ने पूछा कि इवलिस पूछ रहे थे कि सुकरात ने तो जीवनभर कभी एक पंक्ति भी नहीं लिखी, अब अंतिम समय में कारावास में कविताएं कैसे लिख रहे हैं ? इस पर सुकरात ने जवाब दिया कि इवलिस से कहना कि मैं उनसे स्पर्धा करने के लिए छंद नहीं रच रहा हूं। यह तो मैं अपने एक पुराने स्वप्न के आदेश का पालन कर रहा हूं। साथ ही उन्होंने इवलिस को एक संदेश देने को भी कहा कि वह भी मुझे मृत्यु-पथ यात्री का अनुसरण करने को तैयार रहे। इस पर किसी ने कहा कि यह तो आपने बहुत अजीब बात कही, क्या आप उन्हें मृत्यु-पथ पर आने की सलाह दे रहे हैं, तब सुकरात ने उत्तर दिया, 'हां' और कहा, 'जो भी समझदार व्यक्ति होगा, वह अवश्य ही, इस पथ पर चलना चाहेगा, पर इसका मतलब यह नहीं कि आत्महत्या के द्वारा वह जबरदस्ती मृत्यु को गले लगाएगा। यहां, सुकरात का आशय यही था कि जब भी मृत्यु व्यक्ति का द्वार खटखटाने आये, वह प्रेम से उसका स्वागत करे। येन-केन-प्रकारेण जीवन को बचाने का प्रयत्न मानव की मूर्खता है और फिर सुकरात आगे लंबे समय तक अपने शिष्यों की जिज्ञासाओं को शांत करते हुए उनसे विभिन्न विषयों पर वार्तालाप करते हैं। एक बार जेल का एक कर्मचारी आकर कहता है कि ज्यादा बात न करें क्योंकि ज्यादा बातचीत करने से शरीर गरम हो जाता है, जो लोग ज्यादा उत्तेजित होते हैं, उन्हें विष की दो या तीन खुराक देनी पड़ती है किंतु सुकरात उसे यह कहकर कि जरूरत हुई तो वह भी विष की दो-तीन खुराक ले लेंगे, वार्तालाप में लगे रहते हैं। धैर्यपूर्वक वह आत्मा की अमरता संबंधी शंकाओं का समाधान करते हैं और उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि मृत्यु के बाद शरीर के नष्ट होते ही आत्मा धुंए की लकीर की भांति बिखर नहीं जाती, न ही कुछ शरीरों को धारण करने के बाद अंततः नष्ट हो जाती। मृत्युपरांत प्रत्येक आत्मा देवदूत के द्वारा परलोक ले जायी जाती है। यहां पर धरती के जीवन के कर्मानुसार फैसला सुनाया जाता है। कालांतर में उन्हें पुनः शरीर धारण करना पड़ता है। जो पुण्यात्माएं होती हैं वे हमेशा के लिए जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाती हैं।

सत्य-पथ पर चलें

सुकरात के उठने पर क्रीटो ने उनसे पूछा कि क्या आप हमें अपने परिवार के बारे में कोई उपदेश देंगे और कृपया यह भी बताइए कि हम आपकी सबसे अच्छी सेवा किस तरह कर सकते हैं ?

इस पर मानव को सत्य के पथ पर चलने के

लिए आजीवन प्रेरित करनेवाले सुकरात अपने चरित्र के अनुरूप ही जवाब देते हैं, 'आप अपना ध्यान रखना । मेरी और मेरे परिजनों की सेवा आप तभी अच्छी तरह कर सकेंगे जब मेरे बताये मार्ग पर चलेंगे ।'

सुकरात से बिछुड़ने का खयाल सबको

निश्चय ही वह इसका आदी भी रहा होगा, पर सुकरात को यह बताते-बताते वह रो पड़ा । इस पर सुकरात उसकी सहृदयता की सराहना करते हैं । जेलर के जाने के बाद सुकरात ने पुनः उनकी सहृदयता की तारीफ की और जहर का प्याला मंगवाने का आदेश दिया ।

सुकरात के शिष्य प्लेटो की अमर कृति 'फीडो' में सुकरात की मृत्यु के दिन का चित्रण इतना जीवंत है कि शरीर, मृत्यु और आत्मा की अमरता पर सुकरात की अपने शिष्यों के साथ चर्चा सुनने के बाद सुकरात को सायंकाल विषपान करते मानो पाठक साक्षात देख रहा हो ।

बार-बार विचलित कर देता है, विशेषकर क्रीटो जो सुकरात का खास मित्र था, जिस पर सुकरात को दफनाने की जिम्मेदारी थी, कुछ अधिक ही विचलित था । इसी कारण सुकरात अन्य लोगों से वचन लेते हुए कहते हैं, 'मेरी मृत्यु पर क्रीटो बहुत अधिक उत्तेजित न हो, न मेरे शरीर का अंतिम संस्कार करते वक्त वह यह सोचकर परेशान हो कि मैं भयानक कष्ट भोग रहा हूं । यह आप लोगों की जिम्मेदारी है ।'

विषपान की तैयारी

थोड़ी ही देर में सुकरात नहाकर बाहर आये। इसी बीच उनका परिवार भी आ गया । उन्होंने उन्हें अपनी अंतिम आज्ञा दी और फिर उन्हें घर भिजवा दिया । इसी समय जेलर आ गया, यह सूचना देने कि उनके लिए विष तैयार किया जा चुका है, बस अब कुछ ही देर में उन्हें इस लोक को छोड़ना होगा, वैसे तो यह खबर देना जेलर की नौकरी का ही एक हिस्सा था और

किंतु सूर्य की रश्मियां अभी बाकी थीं । अतः क्रीटो ने कहा, 'सूरज अभी पहाड़ी के ऊपर है । बहुत-से कैदी उनकी चेतावनियों के बावजूद जहर पीने में विलंब करते हैं । वे अपना समय खाने-पीने और दूसरी अधूरी इच्छाएं पूरी करने में लगाते हैं । जल्दी नहीं है, अभी काफी समय बाकी है ।'

सुकरात ने कहा, 'जिनके बारे में तुम बात कर रहे हो, वे अपने व्यवहार में सही हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि जितनी देर वे जिंदा रहेंगे, उतना सुख मिलेगा । मैं ऐसा नहीं सोचता देर करने से मैं अपनी नजर से गिर जाऊंगा । इसलिए, जो मैं कहता हूं, वही करो । मेरी बात टालो मत ।'

क्रीटो ने भारी मन से सेवक को जहर लाने का इशारा किया । थोड़ी देर में जेलर एक कर्मचारी के साथ हेमलॉक (जहर का नाम) का प्याला लेकर हाजिर हो गया । सुकरात ने पूछा,

'मेरे भले दोस्त, अब मुझे क्या करना है ?'

उस कर्मचारी ने जवाब दिया, 'इसे आप पी लीजिए और तब तक टहलिए जब तक कि आपको अपने पैर भारी न लगें, फिर आप लेट जाइए तब यह विष अपना काम स्वयं करेगा ।'

विष का सेवन

सुकरात ने बिना किसी उत्तेजना के हेमलॉक का प्याला अपने हाथ में थाम लिया और देनेवाले की ओर निर्दोष दृष्टि से देखते हुए पूछा, 'यदि मैं इस प्याले में से अपने देवता के नाम कुछ आहुति चढ़ाऊं तो कैसा रहे ? क्या मैं ऐसा कर सकता हूं ?' जेलर ने कहा, 'सुकरात, हम उतना ही विष तैयार करते हैं, जितना जरूरी समझते हैं ।' मैं समझता हूं, सुकरात बोला, 'लेकिन मैं देवताओं से जरूर प्रार्थना करूंगा कि मेरी परलोक-यात्रा शुभ हो ।' ऐसा कहते हुए सुकरात ने प्याले को होंठों से लगा लिया और देखते-ही-देखते सारा जहर शांतिपूर्वक पी गये । उस समय भी उनके चेहरे पर कहीं कोई दुःख का नाम नहीं था ।

सभी लोग चुपचाप सांस रोके सुकरात को जहर पीते देखते रहे । जैसे ही सुकरात का जहर पीना समाप्त हुआ, सभी उपस्थित लोगों की आंखों से आंसू बहने लगे । क्रीटो तो अपने आंसू छुपाने में असमर्थ होने के कारण पहले ही बाहर चला गया था और अपोलो डोरस, जो सुबह से ही लगातार रो रहा था, सुकरात के जहर पीते ही जोर-जोर से चिल्लाकर रोने लगा । उसके इस तरह रोने के बाद तो कोई भी अपने आंसुओं को नहीं रोक सका । एकमात्र सुकरात ही वहां शांत बैठे थे । सबको इस तरह रोते देख वे बोले, 'दोस्तों, यह तुम क्या कर रहे हो ? मैंने औरतों को इसलिए घर भिजवा दिया कि यह सब न हो । किसी भी मनुष्य को शांतिपूर्वक मरना चाहिए, अतः तुम लोग शांत रहो और धीरज रखो ।'

इसके बाद सुकरात उठकर टहलने लगे । वह तब तक टहलते रहे जब तक कि उन्हें अपने पैर भारी नहीं लगने लगे । फिर पीठ के बल लेट गये । तब वह कर्मचारी जिसने उन्हें विष दिया था, उनके पांवों की जांच करने लगा, फिर उसने उनके पैरों को जोर से दबाकर पूछा, 'क्या यहां कुछ महसूस होता है ?' इस पर सुकरात ने कहा, 'नहीं ।' कुछ देर में उसने पैरों के ऊपरी हिस्सों को भी दबाया और उपस्थित लोगों को दिखाया कि ये ठंडे और कड़े हो गये हैं । तब सुकरात ने स्वयं ही अपने शरीर को टटोला, फिर कहा, 'जब जहर मेरे हृदय तक पहुंचेगा तो मैं मर जाऊंगा ।'

अंतिम शब्द

थोड़ी देर बाद सुकरात ने अपने चेहरे से चादर हटायी (तब तक वह कमर तक ठंडे पड़ चुके थे) और बुदबुदाये, 'क्रीटो मैंने...स्वास्थ्य देवता...एस्क्लेपियस के नाम...एक मुरगे की...मनौती मानी है...वह...पूरी...करना ।' क्रीटो ने हामी भरी और पूछा, 'और कुछ ?' उधर से कोई जवाब नहीं मिला । यह विश्व के सबसे बुद्धिमान व्यक्ति के अंतिम शब्द थे ।

प्लेटो ने अपने महान गुरु को श्रद्धांजलि देते हुए लिखा है, 'इस तरह हमारे मित्र का अंत हुआ, जो वस्तुतः जमाने के सारे लोगों में सबसे बुद्धिमान, सबसे न्यायप्रिय और भला था ।'

—वन क्षेत्राधिकारी,
सिविल लाइंस,
बदायूं-२४३६०१ (उ.प्र.)

क्या बला है हारमोन

• डॉ. चंद्र शीला गुप्ता

हारमोन शब्द यद्यपि हरेक के लिए परिचित है फिर भी है क्या, यह बहुत कम, केवल विषय से संबंधित लोग ही जानते हैं। हारमोन की शरीर में जरूरत ऑक्सीजन या खून से कम नहीं है। हारमोन शरीर में नलिकाविहीन ग्रंथियों द्वारा सूक्ष्म मात्रा में पैदा किये गये रासायनिक पदार्थ हैं जो संपूर्ण शरीर के विभिन्न क्रियाकलापों पर नियंत्रण रखते हैं। ये नलिकाविहीन ग्रंथियों से पैदा होते हैं, अतः इनको सीधे रक्त में उंडेल दिया जाता है ताकि ये रक्त संचारण के साथ शरीर के हर भाग या उस खास जगह पर, जहां इनका कार्य क्षेत्र है, पहुंच सकें। इनकी सूक्ष्म मात्रा ही विशेष अंग पर अपना प्रभाव डालने में सक्षम रहती है। इन्हें रासायनिक दूत कहा जाता है क्योंकि यह अपने कार्य क्षेत्र के लिए खबर ले जाते हैं। प्रत्येक हारमोन एक से अधिक क्रियाओं को नियंत्रित करते हैं।

हारमोन हमारे भोजन में नहीं होते हैं। हां! इन्हें बनानेवाले पदार्थ अवश्य भोजन से ही शरीर को मिलते हैं। वे ज्यादातर प्रोटीन तथा कुछ स्टीरॉयड (कोलेस्ट्रॉल नामक वसा) के बने होते हैं। ये जल में घुलनशील होने के कारण शरीर में संचित नहीं रह पाते हैं और शीघ्र ही विखंडित होकर मूत्र के साथ बाहर निकल जाते हैं इसलिए ग्रंथियों द्वारा इनका निरंतर निर्माण जारी रहता (कुछ को छोड़कर जिनकी आवश्यकता समय विशेष पर ही होती है, जैसे प्रसव हारमोन) है।

हारमोन के कार्य

हारमोन एक-दूसरे के क्रियाकलापों को भी प्रभावित करते हैं इसलिए जब भी हारमोनों का संतुलन बिगड़ता है तो शरीर की कार्य-प्रणाली भी बिगड़ जाती है। शरीर में सामान्यतया हारमोन का स्त्रावण सामान्य दर से चलता ही रहता है, अतः आवश्यकता समाप्त होने पर वह हारमोन व्यर्थ ही कार्य में अड़चन पैदा करेगा, इसलिए एक ऐसी फीडबैंक व्यवस्था प्रकृति ने निर्धारित की है—जैसे ही शरीर के अंग विशेष में इसका कार्य समाप्त हो जाता है, तो रक्त में अप्रयुक्त मात्रा में वृद्धि ही उस हारमोन निर्मात्री ग्रंथि के लिए संकेत होता है कि अब बस करिए अभी जरूरत नहीं है। इसी प्रकार किसी हारमोन के टारगेट अंग द्वारा सक्रिय उपयोग से रक्त में उसका स्तर कम होता जाता है तो निर्मात्री

ग्रंथि उत्पादन को बढ़ा देती है । एक ओर जहां हारमोन अपने लक्ष्य अंग के क्रिया-कलापों को नियंत्रित करता है, वहीं वह अंग इसके उत्पादन को अपनी जरूरत के अनुसार नियंत्रित करता है यानि नियंत्रक एवं नियंत्रित में पारस्परिक प्रभाव कार्य करता है । वैज्ञानिक इसे फीडबैंक या खींचतान (पुल एंड पुश) कहते हैं ।

हमारे शरीर में लगभग दस-ग्यारह ऐसी ग्रंथियां हैं जो एक या अनेक हारमोन बनाती हैं । इनमें सबसे जटिल व मास्टर ग्रंथि पीयूष या पिट्यूटरी है क्योंकि लगभग अन्य सभी ग्रंथियों पर इसका शासन चलता है । यह वृद्धि से लेकर यौवन को लाने तथा जनन में भी अपना दखल बनाकर रखती है । यह शरीर में सबसे ऊपर मस्तिष्क में विराजती है ।

शरीर पर प्रभाव

हारमोनों की मात्रा का भी शरीर पर बहुत प्रभाव पड़ता है । इनके जरा से ज्यादा या कम हो जाने से बात ज्यादा ही बिगड़ जाती है । कई युवा लड़के-लड़कियों में अनियमितताएं भी हारमोन की गड़बड़ी से ही आती हैं । लड़कियों में मासिक की देरी, लड़कों में पुंसत्व के लक्षणों में देरी आदि अनियमितताओं को हारमोन थैरेपी से ही दूर किया जाता है । प्रजनन संबंधी अंगों व क्रियाकलापों, यौन क्षमता आदि सभी विभिन्न ग्रंथियों पिट्यूटरी, ओवरी या टेस्टीस, एड्रीनल ग्लेंड आदि के नियंत्रण में चलती हैं । प्रोजेस्ट्रान हारमोन जो महिलाओं की ओवरी या डिंबाशय से निकलता है, मासिक चक्र को चलाता है । हारमोनों की गड़बड़ी से पुरुषों में शुक्राणु का निर्माण प्रभावित होता है तो महिलाओं में गर्भ-धारण, गर्भपात या प्रसव ये सभी घटनाएं हारमोन से जुड़ी हुई हैं । यौवनागमन के समय रजोनिवृत्ति भी हारमोन की ही करामात है । उस समय डिंबाशय को यह आदेश भेज दिया जाता है कि अब तुम्हारा कार्य खतम । अतः डिंबाशय हारमोन बनाना बंद कर देता है । कभी-कभी पीयूष ग्रंथि बिना-विचारे डिंबाशय को हारमोन बनाने का निर्देश देती रहती है क्योंकि डिंबाशय की फीडबैंक व्यवस्थावाला एस्ट्रोजन हारमोन उस तक पहुंच नहीं पाता है । यह जानकर वह दुगुनी मात्रा में हारमोन बनाती है फलस्वरूप रजोनिवृत्ति के समय कई महिलाओं में अनियंत्रित रक्त स्राव होने लगता है । यह

हमारे शरीर में लगभग दस-ग्यारह ऐसी ग्रंथियां हैं जो एक या अनेक हारमोन बनाती हैं । इनमें सबसे जटिल व मास्टर ग्रंथि पीयूष या पिट्यूटरी है क्योंकि लगभग अन्य सभी ग्रंथियों पर इसका शासन चलता है । यह वृद्धि से लेकर यौवन को लाने तथा जनन में भी अपना दखल बनाकर रखती है । यह शरीर में सबसे ऊपर मस्तिष्क में विराजती है ।

एस्ट्रोजन थैरेपी से ठीक हो जाता है ।

एक एड्रीनल ग्रंथि है जो अपने हारमोनों द्वारा शरीर में अनेक जगहों पर अपना दखल रखती है । रक्त में शर्करा, चयापचय क्रियाएं आदि पर तो अपना प्रभाव रखती हैं । इसका एक हारमोन कार्टीसोल शरीर की सामान्य रोग प्रतिरोधक या सुरक्षा व्यवस्था पर रोक-टोक करता है, इसलिए इसे एंटी इनफ्लेमेटरी या रोग प्रतिरोधक दाबी हारमोन भी कहते हैं । गठिया इनफ्लेमेशन का ही रोग है, अतः इसमें इस हारमोन के इंजेक्शन के लगाने से दर्द में राहत मिलती है । इसी तरह जब शरीर में अंग प्रत्यारोपण करते हैं तो शरीर की प्रतिरोधी क्षमता उसको बाहरी तत्त्व मानकर रिजेक्ट न कर दे, उसके लिए पहले से ही कार्टिसोल देकर एंटीबाडी के निर्माण को रोक देते हैं । एलर्जी भी एक प्रकार की रोग प्रतिरोधक प्रतिक्रिया है, अतः इसके इलाज में भी इस हारमोन का प्रयोग किया जाता है ।

पाचन क्रिया का संचालन

हमारी पाचन क्रियाएं भी हारमोनों से ही संचालित रहती हैं । आमाशय में भोजन के पहुंचते ही एक हारमोन गैस्ट्रिन आमाशय की दीवार से ही निकलता है और रक्त में घूमकर वापस आमाशय की भित्तियों में मौजूद आमाशयी ग्रंथियों के कान में बुदबुदाता है कि भोजन आ गया है अब तुम पचाओ । यही व्यवस्था भोजन के आंत में पहुंचने पर आंत द्वारा की जाती है ।

एक और महत्त्वपूर्ण हारमोन है इंसुलिन जिसके कारण कितनी ही मिठाईयों के आनंद से वंचित हो जाते हैं । इंसुलिन की कमी से डायबिटीज यानी मधुमेह रोग हो जाता है । इंसुलिन का कार्य रक्त में शक्कर को एक निश्चित मात्रा से आगे नहीं बढ़ने देना है । जिनका पेंक्रियास इंसुलिन बनाना बंद कर देता है, वे दवा के रूप में इसे लेते हैं । इंसुलिन का महत्त्व मानव स्वास्थ्य के लिए कितना है, यह इससे सिद्ध होता है कि सेंगर साहब ने सन् १९५३ से इंसुलिन की रासायनिक संरचना मालूम कर नोबल पुरस्कार जीत लिया । अभी तक तो सिंथेटिक इंसुलिन का उपयोग किया जाता था लेकिन अब स्कॉटलैंड के वैज्ञानिकों द्वारा किये गये क्लोनिंग के चमत्कार से मानव जन्य इंसुलिन भी हमें उपलब्ध हो पाएगी ।

—सामु. स्वा. केंद्र के सामने,
मनासा, जिला-मंदसौर (म. प्र.)-४५८११०

मूली : रोग भगाये

मूली में विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में होता है, अतः इसके सेवन से नेत्र ज्योति बढ़ती है । इसके साथ-साथ दांतों तथा हड्डियों को मजबूत बनाने के लिए कैल्शियम भी इसमें भरपूर होता है । पीलिया, हृदय रोग, तपेदिक, बवासीर में मूली का रस लाभकारी रहता है खांसी एवं दमा के मरीजों को इसका सेवन लाभ पहुंचाता है । मूली के सेवन से पेशाब संबंधी अनेक रोगों का शमन हो जाता है । इसके निरंतर सेवन से एसीडिटी, खट्टी डकारें दूर होती हैं ।

कप्पाड में समुद्र तट से थोड़ी दूर एक प्रस्तर स्तंभ है । इस स्तंभ पर अंकित है —२७ मई, १४९८ को वास्को-डी-गामा यहां उतरा । यह दिन भारतीय इतिहास में निश्चय ही महत्त्वपूर्ण है । उसी दिन भारत के भाल पर नियति ने उपनिवेश बनने की इबारत लिख दी थी । इस घटना के साथ ही यूरोप के



एक प्रतिनायक की याद

• डॉ. हीरालाल बाछोतिया

साम्राज्यवाद ने धीरे-धीरे अपने पैर फैलाने शुरू किये और अंततः वह यहां स्थापित हो गये । निश्चय ही वास्को-डी-गामा द्वारा भारत पहुंचने का समुद्री मार्ग खोजना अत्यधिक दुस्साहस से भरा काम था । इस खोज के द्वारा अपने देश पुर्तगाल के हितों को साधना, भारत के साथ व्यापार तथा अंततः उपनिवेश स्थापित करना ही उसका उद्देश्य था ।

लिस्बन से प्रस्थान

८ जुलाई, १४९७ ई. को पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन से रवाना हुआ । तब भारत सोने की चिड़िया माना जाता था । यहां के आभूषणों, मसालों, इत्रों, कलाकृतियों की धूम थी । इस सोने की चिड़िया पर ही वास्को-डी-गामा की आंख थी । तभी वह अज्ञात समुद्रों, उनमें उठनेवाले भीषण तूफानों, मार्ग में स्थित द्वीपों और देशों के निवासियों के विरोध, यहां तक कि कातिलाना हमलों से बचते-बचाते वह आगे बढ़ता रहा । इतना ही नहीं यात्रा के असह्य कष्टों, बार-बार बीमार पड़ जाने, लक्ष्य का अज्ञात होना, पीने के पानी का अभाव-जैसे कारणों से वास्को-डी-गामा के साथी और पोतवाहक अपना धैर्य खो बैठते थे । कुछ ने स्वदेश लौटने का आग्रह किया तो कुछ ने वास्को-डी-गामा के खिलाफ बगावत कर दी । वास्को-डी-गामा अपने ही साथियों से अत्यंत कठोरता से पेश आया और विद्रोह कुचल दिया गया । सारी कठिनाइयों और प्रकृति द्वारा उपस्थित बाधाओं को पार करते हुए वास्को-डी-गामा मई, १४९८ में भारत के दक्षिणी छोर कालीकट के पास आ पहुंचा । कालीकट से १६ कि.मी. दूर कप्पाड में उतरने से पहले २१ मई १४९८ को वास्को-डी-गामा से ट्यूनिस का एक व्यापारी उसके जहाज पर मिलने आया । वह व्यापारी अपने साथी के साथ बहुत पहले से भारत में व्यापार करता आ रहा था । ये ट्यूनिस व्यापारी पुर्तगाली बोल लेते थे । विदेशी होने के कारण वास्को-डी-गामा से

उसकी सहानुभूति संभव थी । वास्को-डी-गामा द्वारा पुर्तगाल से भारत की कठिन वरन् असंभव यात्रा का विवरण सुनकर वह व्यापारी बोल उठा, 'तुम्हारा अभियान मंगलकारी है । यह देश तो माणिक्य और पन्नों से भरा है । तुम्हें तो भगवान को धन्यवाद देना चाहिए कि उसने तुम्हें इस समृद्ध देश में पहुंचा दिया ।' इन शब्दों से वास्को-डी-गामा की खुशी की कल्पना ही की जा सकती है ।

वास्को-डी-गामा ने कालीकट के राजा जमोरिन के पास अपने दो साथियों फरनाओ मार्न्तिस और मौंसेद को मिलने के लिए भेजा । राजा ने उनके द्वारा संदेश भेजा कि वास्को-डी-गामा उनसे कालीकट में भेंट कर सकता है । जहां वास्को-डी-गामा का जहाज रुका हुआ था वहां समुद्र में अनेक चट्टानें थीं जिनसे जहाजों को क्षति पहुंच सकती थी । अतः राजा ने अपना एक मार्गदर्शक भी वास्को-डी-गामा के संदेशवाहकों के साथ भेजा और आदेश दिया कि वह जहाजों को पंडारनी ले जाए क्योंकि वहां के निकटवर्ती समुद्र में जहाज सुरक्षापूर्वक खड़े किये जा सकते हैं । यहीं २७ मई, १४९८ को वास्को-डी-गामा साओग्रेवियल जहाज से उतरा और यहीं राजा के वजीर ने उसे साथ चलने का संदेश दिया था ।

वास्को-डी-गामा ने कालीकट के राजा जमोरिन के पास अपने दो साथियों फरनाओ मार्न्तिस और मौंसेद को मिलने के लिए भेजा । राजा ने उनके द्वारा संदेश भेजा कि वास्को-डी-गामा उनसे कालीकट में भेंट कर सकता है ।

कालीकट में प्रवेश

कालीकट पहुंचने पर वास्को-डी-गामा राजा से मिलने से पूर्व जान-बूझकर या गलती से एक मंदिर में जा पहुंचा । मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक ऊंचा स्तंभ था जिस पर कांसे का पत्र मढ़ा था । प्रमुख द्वार पर छोटी-छोटी सात घंटियां टांगी हुई थीं, जिन्हें भक्तजन प्रवेश करते समय बजाया करते थे । उसके आगे दीप स्तंभ पर दीप जलाये जाते थे । यह देवी का मंदिर था । पूजा गृह का द्वार तांबे और चांदी का बना था । प्रतिमा पत्थर की बनी हुई थी । वास्को-डी-गामा उस देवी प्रतिमा को मेरी समझ बैठा । वह और उसके साथी प्रतिमा के सामने घुटनों के बल झुके और उन्होंने प्रार्थना भी की । पुजारियों ने उन पर अभिमंत्रित जल छिड़का और भभूति दी । कहा जाता है वास्को-डी-गामा और उसके साथियों को देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी ।

कालीकट मलाबार का मोती भी कहा गया है । तेरहवीं शताब्दी के मध्य में इब्न बबूता ने छह बार कालीकट की यात्रा की थी । उसने वहां के अरब व्यापारियों की समृद्धि के बारे में

लिखा है । उसी समृद्धि की कहानियों से आकर्षित होकर वास्को-डी-गामा राजा जमोरिन से व्यापारिक सुविधाएं ऐंठने और वहां कोठी बनाने की अनुमति चाहता था । पहले से व्यापार कर रहे अरब व्यापारियों ने इसका विरोध किया । परिणाम यह हुआ कि कालीकट से रवाना होते समय वास्को-डी-गामा ने राजा के छह लोगों को अपने जहाज में बंदी बना लिया । उनके लिए यह व्यवहार सर्वथा अविश्वसनीय था । वे 'अतिथि देवो भव' मर्यादा का पालन करनेवाले थे । तथापि जमोरिन के सशस्त्र नाविक सत्तर नावों में सवार होकर बंदियों को छुड़ाने पहुंचे तो उन्हें भगाने के लिए वास्को-डी-गामा ने तोपें दाग दीं । नाविक डर गये । उनके पास तोपों का जवाब नहीं था बल्कि कहना चाहिए उनमें चालाकी और कूटनीति का अभाव था । उन दिनों जहाजों को हवाओं की सहायता से चलाया जाता था । वास्को-डी-गामा जल्दी-से-जल्दी अपने देश के लिए रवाना होना चाहता था किंतु हवाओं का रुख अनुकूल नहीं था । इसलिए विवश होकर कालीकट से थोड़ी दूर समुद्र में वह रुका रहा । जिन लोगों को उसने बंदी बनाया था उनमें से एक को मुक्त कर कैनानोर के पास तट पर छोड़ दिया । यह स्थान जमोरिन के विरोधी राजा के अधीन था । मुक्त किये गये बंदी के हाथ वास्को-डी-गामा ने जमोरिन के नाम एक पत्र भी भेजा जिसमें उसने जमोरिन से क्षमा मांगी थी । उसके आदमियों को कैदी बनाने का कारण भी लिखा था । उसने लिखा कि वह उन्हें अपने भारत पहुंचने के प्रमाण के रूप में ले जा रहा है, किसी द्वेषवश नहीं । जब वह पत्र जमोरिन को मिला और उसके सामने पढ़ा गया तब उसे थोड़ी शांति मिली ।

व्यापार का प्रमुख केंद्र

वास्को-डी-गामा और उसके साथियों ने कालीकट को बड़े निकट से देखा था । उन्होंने अपने यात्रा वृत्तांतों में तत्कालीन कालीकट की समृद्धि का वर्णन किया है । उससे ज्ञात होता है कि कालीकट शताब्दियों से मसालों के व्यापार का प्रमुख केंद्र था । मंगलौर से केप कमोरन तक का क्षेत्र काली मिर्च के लिए प्रसिद्ध था तथा यहां से पिछले दो हजार सालों से काली मिर्च लाल सागर और फारस की खाड़ी को भेजी जा रही थी । कालीकट के व्यापारियों के काहिरा, सिकंदरिया तथा फैज-जैसे दूर के स्थानों पर माल गोदाम थे ।

वास्को-डी-गामा को भारत के लिए नये समुद्री मार्ग की खोज के लिए याद किया जाता है । कालांतर में पुर्तगालियों ने मलाबार में व्यापार का अपना केंद्र बना लिया । किंतु मलाबार की समृद्धि पर पुर्तगालियों की नजर हमेशा बनी रही । १५१५ में वास्को-डी-गामा गोआ का वाइसराय नियुक्त हुआ । तब मलाबार को हथियाने और विशेष रूप से जमोरिन को हराने की मुहिम में उसका सेनापति था कुट्टी अली ।

कालीकट की समृद्धि देखकर तो पुर्तगाली चकित ही रह गये थे । उन्होंने लिखा है कि कालीकट लिस्बन से बड़ा था । लगता था संसार की सारी समृद्धि कालीकट में केंद्रीभूत हो गयी है । हाथी दांत, कपास, चीनी, हर तरह के मसाले दालचीनी, सौंठ और काली मिर्च से दुकानें भरी रहती थीं । यहां तरह-तरह के फलों, नींबू, संतरा, मोसंबी, खरबूजों की भरमार थी ।

रंगीन मखमल, साटन, सुनहरी जरी के कपड़े, हीरे, नीलम, माणिक्य आदि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे । लेन-देन में सोने की अशरफियों का प्रचलन था । कालीकट अंतरराष्ट्रीय व्यापार का भी लोकप्रिय केंद्र था । यहां विदेशी वस्तुएं भी बिकती थीं । ग्रीस की अंगूरी शराब यहां के बाजार में बिका करती थी । अनेक विदेशी व्यापारी कालीकट आते थे, जिनमें चीनी व्यापारी प्रमुख थे । चीन से ये लोग कपड़ा और पीतल का सामान लाते और लौटते समय अपने जहाजों में मसाले भरकर ले जाते थे ।

आज भी कालीकट के बाजारों की चमक-दमक देखते ही बनती है । 'बड़ा बाजार' क्षेत्र में देश-विदेश जाने के लिए तैयार खड़े काली मिर्च, मसाले, नारियल, काजू से लदे ट्रक देखे जा सकते हैं तो पालयम क्षेत्र में मीलों तक फैले बाजार में जौहरियों की एक-से-बढ़कर-एक दुकानें और उनमें होनेवाली खरीददारी की भीड़ का नजारा देखते ही बनता है । कल्लई में लकड़ी, विशेष रूप से सागौन, बादाम-जैसी कीमती लकड़ी का कारोबार शताब्दियों से हो रहा है । नदी के प्रवाह के साथ अंतरिम जंगलों से काटी और बहाकर लायी गयी लकड़ी को कल्लई में संरक्षित तथा पानी में डाले रखकर पक्का (सीजंड) किया जाता है, फिर आरा मशीनों में उसे विभिन्न आकारों (साइज) में चीरा जाता है । यह लकड़ी कालीकट टिंबर के नाम से बिकती है ।

वास्को-डी-गामा आगमन के ५०० वर्ष

कहना न होगा कालीकट की आज की समृद्धि के अन्य कारण भी हैं । विशेष रूप से बड़ी संख्या में यहां के लोगों का अरब देशों में जाकर काम करना । शीघ्र ही वास्को-डी-गामा के आगमन के ५०० साल पूरे होने जा रहे हैं । इस घटना को स्मरणीय बनाने हेतु बड़े पैमाने पर कार्यक्रम आयोजित करना प्रस्तावित है, जिनमें यूरोप के भ्रमण और पर्यटन प्रेमियों द्वारा पहले तरह के पोत या जहाज पर सवार होकर उसी रास्ते से कालीकट तक आने का कार्यक्रम प्रस्तावित है, जिस रास्ते का अनुसरण कर वास्को-डी-गामा भारत तथा कालीकट पहुंचा था । प्रश्न है इसके द्वारा कौन-सा पक्ष महिमा-मंडित होगा । इसमें संदेह नहीं कि वास्को-डी-गामा ने खतरे झेलकर एक असंभव-सी यात्रा संपन्न की थी । मनुष्य के धैर्य, परिश्रम, लगन की यह अनुपम कहानी कही जा सकती है, किंतु वास्को-डी-गामा का उद्देश्य क्या केवल देशाटन और यात्रा वृत्तांत लिखना था —जैसा फाह्यान या इब्न बतूता का था ? यदि नहीं तो क्या यूरोपीय उपनिवेश की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करना ही इस यात्रा का उद्देश्य था । कालीकट के राजा जमोरिन ने भारतीय परंपरा के अनुसार वास्को-डी-गामा का स्वागत किया, उसकी सहायता की, जबकि वास्को-डी-गामा ने धौंस, कुटिलता, चालाकी, जहां जिसकी जरूरत थी, का परिचय दिया । तथापि कप्पाड का प्रस्तर स्तंभ वास्को-डी-गामा का भारत की धरती पर उतरने की याद दिलाता रहेगा । यह भी केरल और भारत की उदारता ही है कि हम नायकों को ही नहीं प्रतिनायकों को भी याद करना नहीं भूलते ।

—के-४०-एफ, साकेत
नयी दिल्ली-१७

हास्य-व्यंग्य

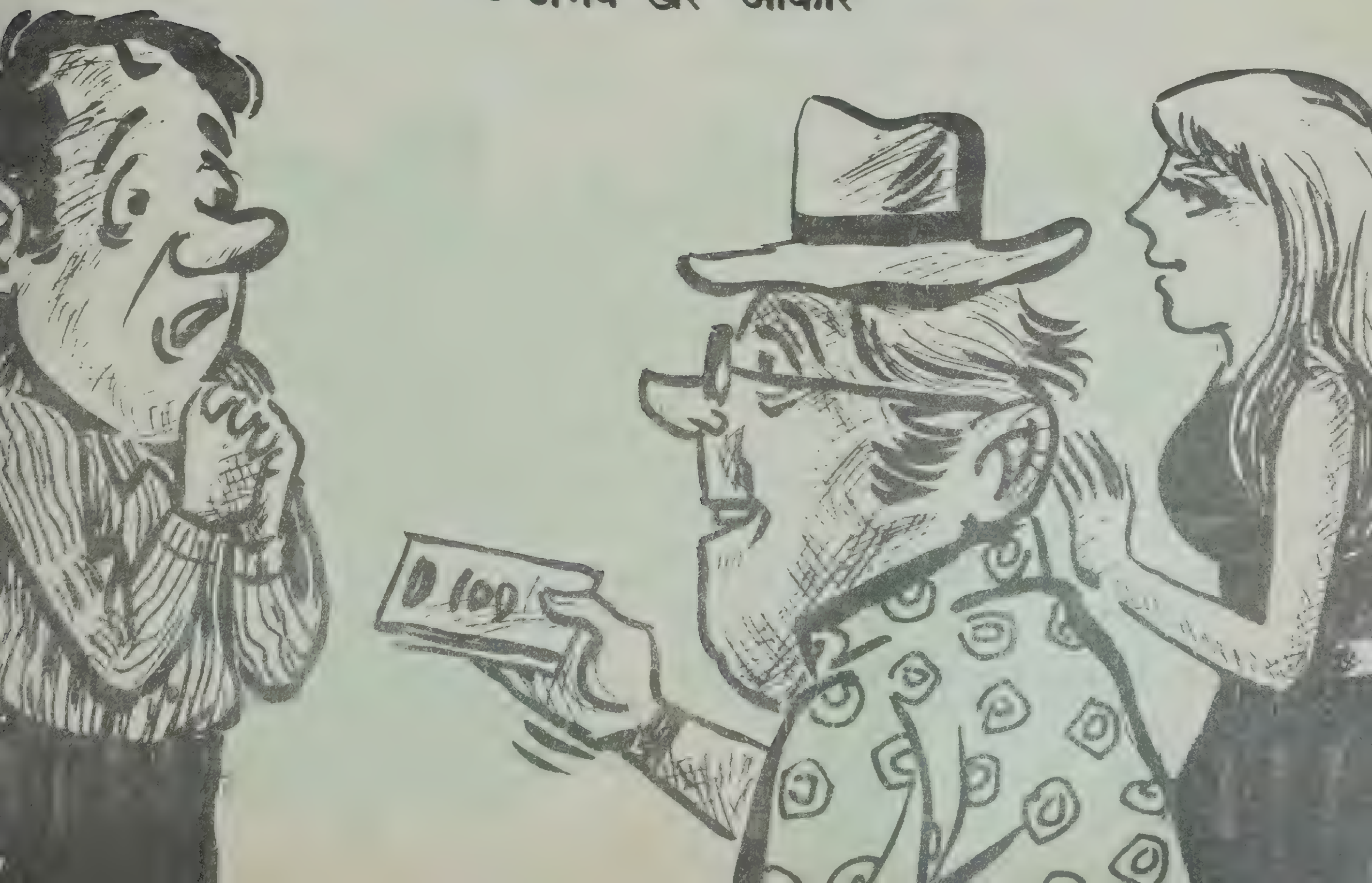
और प्यार हो गया

● अभय खरे 'ओंकार'

मेरी प्रेमिका ऐनी-जॉन को मेरे जैसे सड़क छाप आदमी के साथ सीता-राम मंदिर में शादी करने से पहले देश के अंदर किसी पर्यटन स्थल में घूमने की धुन सवार हुई ।

हम दोनों ने नक्शे पर पर्यटन स्थल की खोज शुरू की । खोजते-खोजते मेरी प्रेमिका 'ऐनी-जॉन' को वह स्थान मिल ही गया खजुराहो । मैंने शुभ दिन का मुहूर्त निकाल कर और दूसरे दिन अपने डॉन साहब को अपनी छुट्टी की अर्जी देने की सोची। मुझे अपने ऊपर पूर्ण विश्वास था कि मैं ऑफिस का काम-काज करने से कभी भी जी नहीं चुराता हूं । अतः डॉन साहब खुशी-खुशी मुझे 'बेस्ट ऑव लक' कह कर मेरी बीस दिन की छुट्टी मंजूर कर लेंगे । मगर यह सोचना मेरा भ्रम था ।

जिस दिन मैं हनुमान चालीसा का जाप करते हुए हाथ में छुट्टी की अर्जी लेकर अपने डॉन साहब को देना चाहता, उस दिन डॉन साहब जरूरी मीटिंग में जाने का बहाना बना देते । कई दिनों के इंतजार के बाद मेरी एक दिन डॉन



साहब से दफ़्तर में टक्कर हो गयी । मैंने विनम्रतापूर्वक कमर तक झुककर नमस्कार किया । उन्होंने फिल्मी हीरो अमिताभ की तरह सिर हिला कर मेरे नमस्कार का जवाब दिया फिर बनारसी पान की पीक के छींटे मेरे कपड़े

सरकारी टूर निकाल लेता हूं और तुम दोनों भी मेरे साथ चलो । मैं अपने साथ तुम्हारा भी टी. ए., डी. ए. बनवा दूंगा । आम-के-आम गुठली के दाम ।' मैंने इधर कुआं उधर खाई देखकर अपने डॉन साहब की बात पर हां मिलाई, शाम

डॉन साहब, थोड़ा गंभीर मुद्रा में बोले, 'मैं और ऐनी जॉन' संडे के दिन बड़े चर्च में शादी करनेवाले हैं । अगर तुम्हारे पास कोई जरूरी काम न हो तो शादी में आये हुए मेहमानों की देखभाल का काम तुम संभाल लेना । यह रहा तुम्हारा निमंत्रण-पत्र मुझे अभी बहुत सारे निमंत्रण पत्र बांटने है ।' मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं ?

एवं मुंह पर मारते हुए बोले, 'मिस्टर अभय, आज कल तुम बहुत खोये-खोये से रहते हो क्यों क्या बात है ?' मैंने दोनों हाथ जोड़कर डॉन साहब से कहा, 'साहब, बात दरअसल यह है कि मेरी नयी-नयी शादी होनेवाली है मेरी वर्तमान समय में 'प्रेमिका साहिबा' भविष्य में होनेवाली मेरी 'धर्मपत्नी साहिबा' खजुराहो घुमाने की जिद कर रही है, अतः आपसे मेरा निवेदन है कि आप मेरी बीस दिन की छुट्टी मंजूर कर दें ।

डॉन साहब फिल्मी हीरो की तरह एक आंख दबाकर कर बोले, 'गुरु तुम बुरा न मानो तो अपना छोटा भाई समझ कर एक बात कहूं ।'

मैंने आज्ञाकारी छोटे भाई की तरह अपनी गरदन झुका कर कहा हां-हां आप आदेश दीजिए ।

डॉन साहब बोले, 'मैं अपना खजुराहो का

को घर पहुंचने पर मैंने 'ऐनी जॉन' को अपने डॉन साहब का सारा-का-सारा किस्सा विस्तारपूर्वक सुना डाला । ऐनी जॉन ने फिल्मी हिरोइन की तरह एक्टिंग करते हुए अफसोस जाहिर किया मगर ऐसा लग रहा था कि वह मन-ही-मन बहुत खुश है ।

अब मेरे डॉन साहब, सुबह-शाम खुजराहो कैसे घूमे भ्रमण पुस्तिका लेकर आते, मेरी होनेवाली धर्मपत्नी का हाथ पकड़ कर पुस्तक में बने चित्रों के बारे में कुछ समझाते और फिर तेज रफ़्तार के साथ कार चलाकर चले जाते । धीरे-धीरे मेरी प्रेमिका ऐनी जॉन के ऊपर डॉन साहब के जादू का असर तेजी के साथ छाने लगा ।

मेरे घर पर डॉन साहब, हर रोज सफेद शेर की तरह आते और आते ही दहाड़ मारकर मुझसे कहते तुम बाजार जाकर इस चीज को

ढूंढ़कर जल्दी से ले आओ । मैं भीगी बिल्ली की तरह बाजार में इस दुकान से उस दुकान उस चीज की तलाश में घूमता, मगर वह चीज बाजार में नहीं मिलती । मैं सुबह से लेकर शाम तक उस चीज की तलाश में पागल की तरह घूमता रहता । अंत में मैं वापस घर लौटता तब तक डॉन साहब घर से रफू चक्कर हो गये होते । मेरी प्रेमिका ऐनी जॉन भी डॉन साहब की प्रशंसा करने लग जाती और कहती मेरी किस्मत में तुम्हारे जैसे सड़क छाप मंजनू प्रेमी क्यों फंसा । इधर आस-पड़ोस के दोस्त भी और उधर ऑफिस के यार-दोस्त भी मेरा मजाक उड़ाने लगे ।

घर में 'ऐनी जॉन' का हमेशा टाइम बम की तरह मुंह फुला रहता और मुझे देखते ही गाना गुनगुनाने लगता । एक दिन बनूंगी मैं राजा की रानी... । उधर दफ्तर में डॉन साहब फिल्मी हीरो की तरह हाथ में कंघी लेकर मुझे जब मिल जाते तो यह गाना गुनगुनाने लगते— न लेना देना, उस्ताद हम बड़े हैं... । लड़के तुम्हारे जैसे, मेरी जेब में पड़े हैं... । मैं अपनी प्रेमिका और साहब को हीरो-हीरोइन की तरह गाना गाते देखकर अपने टूटे हुए दिल को ढांढ़स देने के लिए अपने साथ घटी घटना के ऊपर एक कहानी लिखने लगा । उधर मेरी प्रेमिका ऐनी और डॉन साहब के बीच प्यारभरी मुलाकात होते-होते ठंड के दिन चालू हो गये । एक दिन पांच बजे सवेरे कॉल बेल बजी । मैंने आंखें मलकर दरवाजा खोला, देखा अपने डॉन साहब, "मैरिज सूट" पहने खड़े हैं । मैंने हाथ जोड़कर नमस्कार किया, उन्होंने हल्की-सी गरदन झुका कर मेरे नमस्कार का जवाब दिया । डॉन साहब मुसकरा कर बोले, 'तुम बुरा न मानो



तो एक बात कहूं ।' मैंने कहा, 'हां-हां कहिए ।'

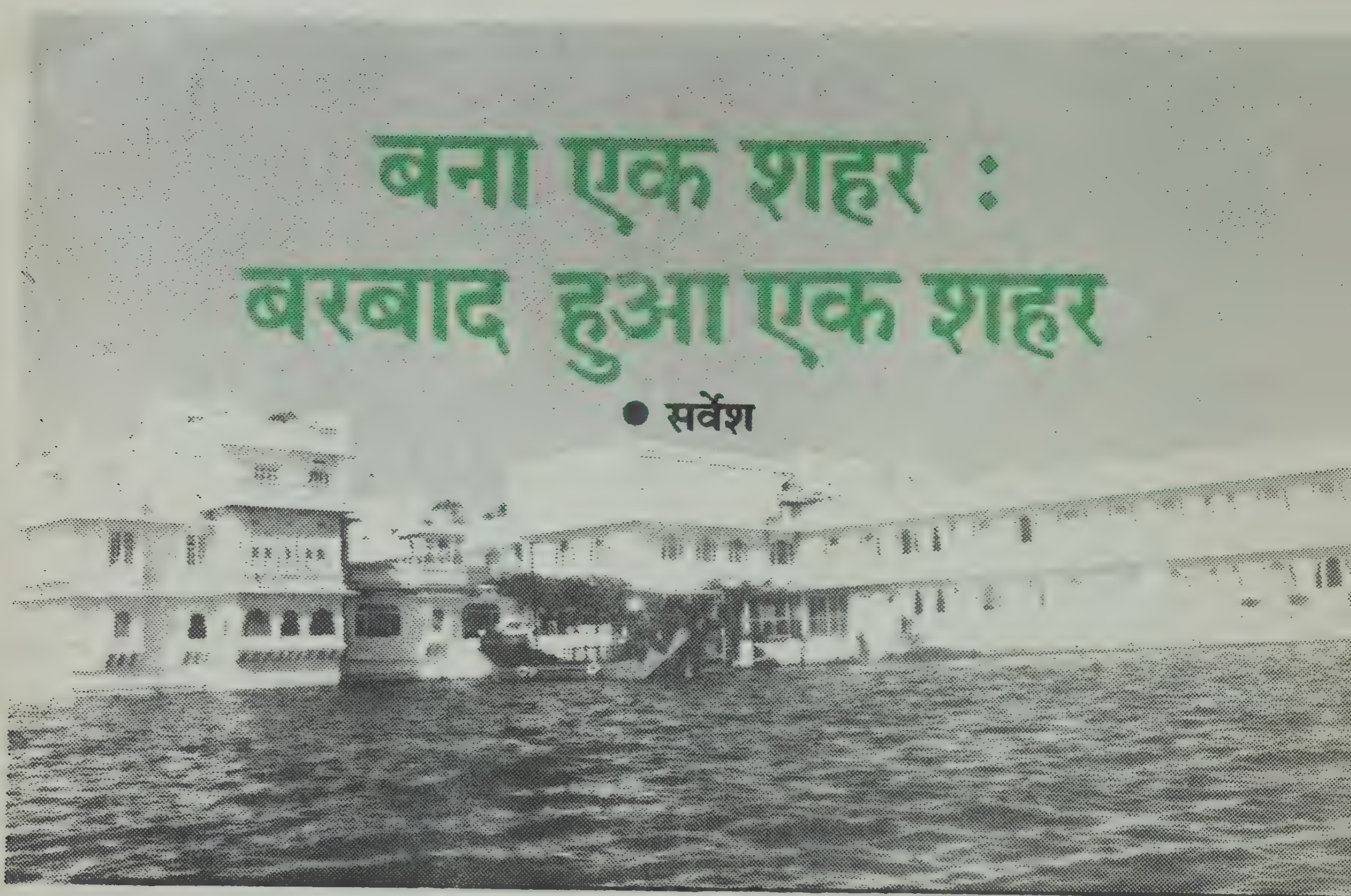
फिर डान साहब थोड़ा गंभीर मुद्रा में बोले, 'मैं और ऐनी जॉन' संडे के दिन बड़े चर्च में शादी करने वाले हैं । अगर तुम्हारे पास कोई जरूरी काम न हो तो शादी में आये हुए मेहमानों की देखभाल का काम तुम संभाल लेना । यह रहा तुम्हारा निमंत्रण-पत्र मुझे अभी बहुत सारे निमंत्रण पत्र बांटने है ।' मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं ? क्या किसी नयी ऐनी जॉन की तलाश करना चालूं करूं या चुल्लूभर पानी में डूब मरूं ? सच में किसी महात्मा ने ठीक कहा है पुरुष का भाग्य (डॉन साहब) और स्त्री का चरित्र (ऐनी जॉन साहिबा) कब बदल जाए कहा नहीं जा सकता ।

अतः मेरे भारत महान के महान कर्णवीरों आप सभी लोगों से मेरा विनम्र निवेदन है कि आप किसी कन्या के प्यार भरे जाल में न फंसे, भले ही देश के अंदर किसी नामी नदी या तालाब में डूबकी लगा-लगा कर भगवान के पास पहुंच जाएं ।

—२/एच/३, नरेन्द्र नगर
रीवा (म. प्र.)—४८६०००१

बना एक शहर : बरबाद हुआ एक शहर

● सर्वेश



सन् १५६७ का साल राजस्थान के इतिहास में विशेष स्थान रखता है । इस साल एक शहर बर्बाद हुआ और दूसरा आबाद । एक शहर इतिहास की गर्त में खो गया तो दूसरा इतिहास बनने के लिए अस्तित्व में आ गया । बर्बाद होनेवाला शहर था चित्तौड़गढ़ और आबाद होनेवाला शहर था उदयपुर ।

मुगल बादशाह अकबर की राजस्थान फतह में सबसे बड़ा रोड़ा था चित्तौड़गढ़ । बड़ी और ताकतवर मुगल सेनाएं चित्तौड़ के किले का कुछ भी नहीं बिगाड़ पा रही थीं । बार-बार हमलों की नाकामी से आजिज अकबर ने १५५७ में किले पर आर-पार की लड़ाई करने की ठानी । अब तक का अभेद्य किला इस बार मुगल सेना के घातक हमले को नहीं झेल पाया ।

लेकिन खुद नेस्तनाबूद होकर भी चित्तौड़गढ़ एक नये और बेहद खूबसूरत शहर उदयपुर की नींव पर रखा गया । दरअसल जहां चित्तौड़गढ़ की कथा समाप्त होती है वहीं से उदयपुर की कथा शुरू होती है ।

चित्तौड़गढ़ के बर्बाद होने के बाद वहां के राजा उदयसिंह अरावली की पहाड़ियों में भटकने लगे । उन्हें नयी राजधानी बसाने के लिए किसी सुरक्षित जगह की तलाश थी । एक महात्मा ने उन्हें अरावली की गोद पिछोला झील के किनारे राजधानी बनाने की सलाह दी । बस फिर क्या था जोर-शोर से राजधानी बनाने का काम शुरू हो गया ।

सिटी पैलेस के आकर्षण

सबसे पहले बनकर तैयार हुआ महल आज सिटी पैलेस के नाम उदयपुर की पहचान है । मूलतः यह महाराजा उदयसिंह का निवास स्थान और राजकाज का केंद्र था । इस महल के अंदर

जाने के लिए त्रिपोलिया दरवाजे से गुजरना पड़ता है । हवा महल, दिलकुश महल, मोती महल और शीश महल, सिटी पैलेस के चार मुख्य महल हैं । इन सभी में नक्काशीदार बालकॉनियां, मेहराबों और सजे-धजे खंभों की भरमार है ।

एक-एक महल की बारीक खूबसूरती को देखने के लिए पूरे दिन का समय भी कम है । पूरे सिटी पैलेस की सैर कर उसकी एक-एक कलाकृतियों को मन में बैठाने के लिए कम-से-कम एक हफ़्ता तो चाहिए ही ।

इन चार मुख्य महलों के अलावा सिटी पैलेस में और भी कई आकर्षण हैं जो अपनी विस्मयकारी सुंदरता से आपको सम्मोहित करते हैं । सूरज गोखड़ा (सूर्य बालकॉनी), बड़ा महल, भीम विलास, चीनी चित्रशाला, मोर चौक, जनाना महल, फतहप्रकाश, दरबार हॉल, शंभुनिवास आदि सिटी पैलेस की खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं ।

सुबह-सुबह उगते सूरज की रोशनी में सूरज गोखड़ा की खूबसूरती देखते ही बनती है । बड़ा महल असल में ९० फुट ऊंची चट्टान पर बगीचे के बीच बनी खूबसूरत आरामगाह है । हरे-भरे पेड़ों की ठंडी छांह, ऊंचाई की साफ और शीतल वायु, शर्तिया आपका दिल वहां से उठने को नहीं करेगा । चीनी चित्रशाला में चीनी मिट्टी के बरतनों का संग्रह है तो लक्ष्मी विलास महल में जगप्रसिद्ध मेवाड़ चित्रकला का विशेष संग्रह है ।

मोर महल में जग प्रसिद्ध मेवाड़ चित्रकला का विशेष संग्रह है । मोर महल की दीवारों पर उकेरी गयी मोर की जीवंत आकृतियां देखकर लगता है कि अभी ये पंख फैलाकर नाचने लगेंगे । अमर विलास सिटी पैलेस का सबसे ऊंचा स्थान है । यहां पर झूलते बगीचे, मीनारें और नक्काशीदार बारहदरियां बनी हैं । यहां से पिछोला झील और शहर का विहंगम दृश्य नजर आता है ।

सिटी पैलेस के चारों मुख्य महल यानि हवा महल, दिलकुश महल, मोती महल और शीश महल अपनी अलग-अलग खूबियों के लिए जाने जाते हैं फिर भी इनमें शीश महल अपनी एक खूबी के लिए बेजोड़ है । इसमें दीवारों पर फर्श से लेकर छत तक असंख्य शीशे लगे हुए हैं । कुल कितने शीशे होंगे कोई गिनती नहीं कर सकता । प्रसिद्ध फिल्म 'मुगल-ए-आजम' का मशहूर गीत 'प्यार किया तो डरना क्या' इसी महल में फिल्माया गया था ।

अब सिटी पैलेस का एक हिस्सा संग्रहालय में तब्दील कर दिया गया है । इसमें राजपूताना अस्त्र-शस्त्रों, चित्रों, राजसी प्रतीकों और मेवाड़ व सिसौदिया महाराणाओं की निजी वस्तुओं का संग्रह है ।

अद्‌भुत लेक पैलेस

पिछोला झील के बीचोंबीच एक टापू पर बना लेक पैलेस या जगत निवास भी पर्यटकों को विस्मित करता है । इसे सन् १७४६ में जगत सिंह ने बनवाया था । खूबसूरत नक्काशीदार बालकनियों, टेरेस गार्डन से युक्त महल झील के पानी पर तैरता लगता है । नीला आसमान, सफेद मोती-सा लेक पैलेस इसकी मेहराबदार खिड़कियां, फौवारे और इन सभी का झील के शांत नीले जल में अक्स एक न भूलने वाला मंजर पेश करते हैं ।

झील में ही एक अन्य टापू पर बना जगमंदिर पर्यटकों के लिए आकर्षण का एक अन्य केंद्र है । इस महल में मुगल शहजादे खुर्रम (शाहजहां) ने बगावत के दौरान पनाह ली थी । यह सारा महल लाल बलुआ पत्थरों से बना है । इसकी तमाम दीवारों पर कभी लाल, संगमशब, सूर्यकांत, पन्ने-जैसे बेशकीमती पत्थर जड़े हुए थे । लेकिन इन्हें बाद में अंगरेज निकाल कर ले गये । अब इनकी जगह रंगीन मसाला भरा हुआ नजर आता है ।

जगमंदिर में एक बड़ा आंगन है, सफेद संगमरमर का बना एक गुंबज है और ऊंची छतों वाले कमरे हैं । खूबसूरत हरे-भरे बगीचों में मेहराबदार आरामगाहें भी तपती धूप में आपको सुकून पहुंचाने को तत्पर दिखती हैं । यहीं पर ब्रह्मांड का मंदिर है । इस मंदिर में मूर्ति तो कभी दिखती नहीं । हां, पत्थरों से बने ढेर सारे खंभे जरूर दिखते हैं । यह मंदिर ब्रह्मांड स्वामी को समर्पित है ।

सहेलियों की बाड़ी

उदयपुर शहर के बीचोंबीच बना जगदीश मंदिर धार्मिकजनों और कला पारखियों को बराबर अपनी ओर खींचता है । परंपरागत शैली में बना विष्णु भगवान का मंदिर जगत सिंह प्रथम ने बनवाया था । मंदिर की दीवारों पर मगरमच्छ, हाथी, नृत्यांगनाओं और साजिंदों की मूर्तियां उकेरी गयीं हैं । यहीं पर कांसे की बनी गरूड़राज की मूर्ति है ।

पिछोला झील के उत्तरी तरफ फतेह सिंह झील के किनारे सहेलियों की बाड़ी है । इसका डिजाइन महाराणा फतेह सिंह ने तैयार किया था । रानियां और राजकुमारियां यहां आमोद-प्रमोद और सैर-सपाटे के लिए आती थीं । यहां मर्दों का आना बिल्कुल वर्जित था । लेकिन राजा-रजवाड़ों के साथ लड़कियों और औरतों की वह प्यार भरी चुहलबाजी और छेड़छाड़ भी चली गयी जिससे सहेलियों की बाड़ी कभी गूंजा करती थी । आजकल इसके कमल तालाब, फूलों की क्यारी, लाल फौवारों और संगमरमर की आरामगाहों में पर्यटकों की भीड़-भाड़ या कभी-कभार प्रेमी युगल बैठे नजर आते हैं ।

उदयपुर में आधुनिक युग के आकर्षण भी कम नहीं हैं । भारतीय लोक कला संग्रहालय, शिल्प ग्राम, नेहरू पार्क एवं ढेरों लॉज व रेस्ट हाउस सब पर्यटकों की अगवानी के लिए तत्पर

> ***सिटी पैलेस के चारों मुख्य महल यानि हवा महल, दिलकुश महल, मोती महल और शीश महल अपनी अलग-अलग खूबियों के लिए जाने जाते हैं फिर भी इनमें शीश महल अपनी एक खूबी के लिए बेजोड़ है । इसमें दीवारों पर फर्श से लेकर छत तक असंख्य शीशे लगे हुए हैं । कुल कितने शीशे होंगे कोई गिनती नहीं कर सकता ।***



हैं । देश के अन्य प्रमुख नगरों की तरह उदयपुर भी रेल, सड़क व हवाई मार्गों से जुड़ा हुआ है । शहर में राजस्थान टूरिज़्म, आईटीडीसी, कई निजी होटल एवं लाज हैं, तो क्यों न इस बार राजस्थान के गौरवशाली अतीत और शानदार वर्तमान की एक झलक उदयपुर में ली जाए ?

उदयपुर की प्राचीन सहेलियों की बावड़ी

उदयपुर की एक झांकी



चित्र : सर्वेश



गुलमोहर वृक्षों की अनोखी छटा

सुंदर पुष्पों से सुसज्जित गुलमोहर



अशरफियों से जड़ा पेड़

** कमलेश माथुर*

पारदर्शी : लियाकत अली भट्टी

मेडागास्कर से फ्रांसीसियों द्वारा लाये गये प्लाईसियाना रेगिया अर्थात् गोल्ड मोहर को सर्वप्रथम हमारे देश में पांडिचेरी मेंलगाया गया । छुईमुई-सी नन्हीं-नन्हीं कोमलांगी इमली के पत्तों के सदृश गहरी हरी मूंगिया पत्तियों वाले विदेशी प्रजाति के इस वृक्ष का नाम अंगरेजी में गोल्ड मोहर है, किंतु इसका अपभ्रंश गुलमोहर बन गया ।

उल्लेखनीय है कि सौराष्ट्र में इसी वृक्ष की अन्य प्रजाति में खिलनेवाले फूल बासंती और श्वेत होते हैं, जिसे बारदे पहाड़ियां के नाम से जाना जाता है । यह शुद्ध गुलमोहर नहीं है, यह अपेक्षाकृत कद में छोटा होता है । मेडागास्कर में तो गुलमोहर को पहले केवल जंगली पौधा समझा जाता था जबकि, भारत में लगभग एक सदी से सड़कों के किनारे, बड़े-बड़े पार्कों, बाग-बगीचों या गृह-वाटिकाओं की शोभा बढ़ानेवाले वृक्षों की श्रृंखला में इसे एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है । कुछ लोग इसे मारीशस मूल का मानते हैं । जो भी हो, यह वृक्ष गरम देशों में गरमियों में ही फूलता है । गुलमोहर या गुलमौर से तात्पर्य अशरफी से होता है । जब यह वृक्ष अपने सुर्ख चटकीले लाल और गहरे नारंगी रंग के चित्ताकर्षक फूलों से लद जाता है, तब यह ऐसा सुंदर दिखायी देता है, मानो संपूर्ण वृक्ष की हर शाख पर असंख्य अशरफियां लगी हुई हों । संस्कृत में इसका नाम 'राजआभरण' है, जिसका अर्थ राजसी आभूषणों से सज्जित वृक्ष होता है जबकि, फ्रेंच भाषा में इसका अर्थ स्वर्ग होता है ।

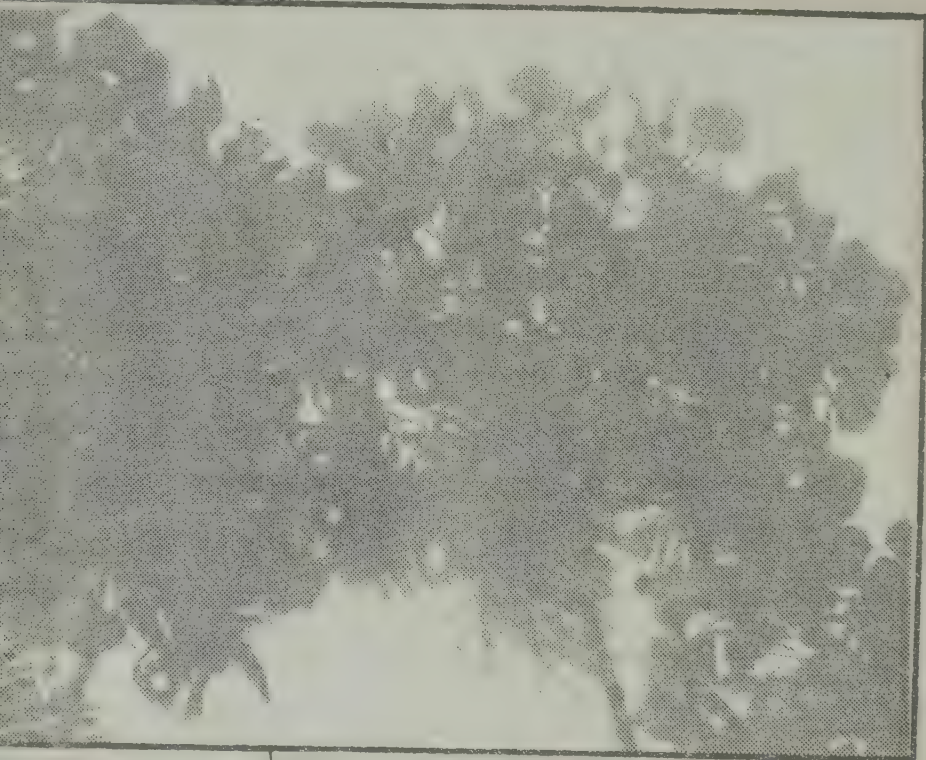
कहा जाता है सत्रहवीं शताब्दी में एंटिलीज से यह वृक्ष सर्वप्रथम भारत में लाया गया, तब वहां के गवर्नर एम.दे.पौयंसि थे, अतः उनके नाम पर ही इसका नाम 'पौयंसिआना रिजीया बोजर एक्स हुक' रख दिया गया । लेटिन भाषा में रिजीया का अर्थ शाही होता है । परंतु हाल ही में अब इसका नाम बदलकर डेलोनिक्स रिजीया रेफिन रख दिया गया है ।

मेडागास्कर से फ्रांसीसियों द्वारा लाये गये प्लाईसियाना रेगिया अर्थात् गोल्ड मोहर को सर्वप्रथम हमारे देश में पांडिचेरी मेंलगाया गया । छुईमुई-सी नन्हीं-नन्हीं कोमलांगी इमली के पत्तों के सदृश गहरी हरी मूंगिया पत्तियों वाले विदेशी प्रजाति के इस वृक्ष का नाम अंगरेजी में गोल्ड मोहर है, किंतु इसका अपभ्रंश गुलमोहर बन गया ।

गरमियों की झुलसती तपन, जब अप्रैल माह का आधा हिस्सा बीतने को होता है, तब सदाबहार, बारहमासी इस वृक्ष पर लगभग दो फीट लंबी पतली शाखों पर प्रकृति द्वारा करीने से सज्जित गहरे हरे रंग की, महीन, नाजुक, छुईमुई-सी पत्तियों के बीच इस फूल की कलियों

के समूह बनने शुरू हो जाते हैं। फिर देखते ही देखते जेठ-आषाढ़ की तपती धूप में मई माह में नये-नये नाजुक नरम पत्तों के बीच कलियां चटककर लाल सुर्ख और नारंगी रंग के आकर्षक फूलों में बदल जाती हैं। पहला फूल खिलते ही एक सप्ताह के अंदर सारा वृक्ष ही जैसे लाल अंगारों से लद जाता है। शुष्क और कठोर भूमि पर चिलचिलाती धूप व तेज गरम लू के थपेड़ों में प्रकृति की यह विशिष्ट सौगात मानव-नेत्रों को शीतलता प्रदान करती है। अपने आकर्षक फूल और निहायत सुंदर पर्ण-वितान के कारण इस विदेशी पौधे ने भारत के प्राचीन गौरवशाली टेसू, सिंबल व अशोक आदि ख्यातिनाम वृक्षों के मध्य अपनी एक विशिष्ट पहचान बनायी है।

भारत की अनुकूल भूमि और जलवायु के कारण गुलमोहर को भारत में स्थान-स्थान पर उद्यान वृक्ष के रूप में चौराहों के पार्क-बगीचों में या झुरमुटों की तरह समूह में लगाकर प्रतिष्ठित किया गया है। सुर्ख चटकीले लाल और नारंगी रंग के चित्ताकर्षक पुष्प समूह से आच्छादित गुलमोहर वृक्ष की शाखाएं और गहरे हरे रंग की नरम-नाजुक छुई-मुई सी पत्तियों का छतरीनुमा आकार इसकी सुंदरता में चार चांद लगाता है। इसकी लगभग दो फीट लंबी पतली डाल पर करीने से सज्जित पत्तियों के बीच में तीन-चार इंच लंबाईवाले सुर्खलाल चटकीले फूलों के समूह विमोहित तो करते ही हैं, वहीं आरंभ में दो-तीन फीट लंबी बीजोंवाली हरी फलियां लटकती हैं। पकने पर ये बीज कठोर हो जाते



सुर्ख चटकीले लाल और नारंगी रंग के चित्ताकर्षक पुष्प समूह से आच्छादित गुलमोहर वृक्ष की शाखाएं और गहरे हरे रंग की नरम- नाजुक छुई-मुई-सी पत्तियों का छतरीनुमा आकार इसकी सुंदरता में चार चांद लगाता है।

हैं और फलियों का रंग भूरा-काला हो जाता है । हरे छत्र के राज छत्र में लाल फूलों के समूह-जैसे कुंदन पर रंग-बिरंगी मीनाकारी की इंद्रधनुषी दमक । ऐसा है यह रंग-बिरंगी अशरफियों से लदा प्राकृतिक आभूषणों में सबसे सुंदर वृक्ष गुलमोहर ।

इसका तना अधिक मोटा और मजबूत नहीं होता क्योंकि, थोड़ी-सी ऊंचाई में ही इसकी शाखाएं विभक्त होने लगती हैं । संभवतः गुलमोहर की लोकप्रियता का प्रमुख कारण यह भी है कि यह अन्य वृक्षों की अपेक्षा बहुत जल्दी बढ़ता और फूल देने लगता है । जरा-से आंधी-तूफान में इसकी नाजुक शाखाएं क्षत-विक्षत हो जाती हैं अथवा कभी-कभी जड़-मूल सहित उखड़ जाता है, परंतु तेजी से बढ़ने की क्षमता के कारण शीघ्र ही छोटी-मोटी क्षतियों की पूर्ति यह स्वयंमेव ही कर लेता है । इसकी जड़ें मूलतः धरती की ऊपरी सतह से अपना भोजन लेती हैं, इसलिए इस वृक्ष के तले कोई भी व्यर्थ पैदावार नहीं उगती । वैसे तो यह वर्षभर हरा-भरा ही रहता है । हां, कुछ समय के लिए यह पर्ण-विहीन भी हो जाता है ।

आसान होती है कलम

गुलमोहर को लगाने का सबसे बढ़िया मौसम जुलाई-अगस्त होता है । बीज की अपेक्षा इसकी शाखाओं को काटकर तैयार की गयीं कलमों से उगाना अधिक आसान होता है । बीज से उगाने में झंझट बहुत है और समय भी अधिक लगता है । फलियों में तैयार बीज इतना कठोर होता है कि उसे बोने से पहले पानी में भिगोकर रखना पड़ता है । इस वृक्ष की जड़ें जमीन में गहरी नहीं जातीं तथा न ही इसकी लकड़ी का कहीं कोई उपयोग है । हां, इसके फूल का मकरंद बहुत बढ़िया होता है, जिसे शहद की मक्खियां बहुत पसंद करती हैं । फूलों में परागण मुख्यतया पक्षियों द्वारा होता है । इसकी फलियों के बीजों से प्राप्त गोंद का उपयोग भोजन तथा वस्त्र उद्योग में किया जाता है । भारत के नमी तथा गरम जगहों पर यह वृक्ष आसानी से उगाया जा सकता है । इसके वृक्ष को सुंदर आकार देने के लिए आरंभिक अवस्था में ही शाखाओं की कटाई-छटाई कुशल हाथों से की जानी चाहिए ।

सूखी कठोर भूमि हो या चिलचिलाती धूप, तन को झुलसा देनेवाली गरम लू के थपेड़े हों अथवा तेज गरमी से मुरझाये फूल-पत्ते हों, ऐसी स्थिति में प्रकृतिजन्य आनंदपूर्वक आभूषणों से सज्जित सुर्ख अंगारों की फुहारों के सदृश सुनहरी अशरफियों-जैसे फूलों से लदे-फदे गुलमोहर के रूप-सौंदर्य और रंग-बिरंगी मनमोहक छटा का निरालापन हारे-थके क्लांत पथिक को मदहोश कर देता है ।

— जी-११, जनपथ, श्याम नगर
जयपुर-३०२००१

रेटिना

हमारी आंख के अंदर स्थित रेटिना का कुल क्षेत्रफल ६५० वर्ग मिमी. है, लेकिन इतने छोटे सेल में १३.७ करोड़ प्रकाश संवेदी कोशिकाएं हैं । इनके अतिरिक्त काले और सफेद रंग की पहचान करनेवाली १३ करोड़ छड़ कोशिकाएं तथा दूसरे रंगों का भेद करनेवाली ७० लाख शंकु कोशिकाएं हैं ।



नेताजी

कैसे भागे थे वे

(खुफिया सूत्रों से संग्रहीत)

पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत के जिला नौशेरा के एक गांव बदरशी के मियां अकबर शाह को एक तार मिला— 'फौरन कलकत्ता पहुंचो— बोस ।' यह बात सन् १९४० के दिसंबर के शुरू की है । बयालिस वर्षीय अकबर शाह एक खूबसूरत पठान, पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में फारवर्ड ब्लाक का नेता था । उसने यथाशीघ्र पेशावर पहुंचकर रात को छूटनेवाली फ्रंटियर मेल पकड़ी । लगातार तीन दिन की यात्रा के बाद वह कलकत्ता पहुंचा और मिर्जापुर स्ट्रीट के एक होटल में आ टिका । दूसरे दिन बड़े सवेरे वह नेताजी से मिलने उनके एलिगन रोड स्थित मकान पर पहुंचा । नेताजी अपने इस मकान में पांच दिसंबर, १९४० से, जेल से रिहाई के बाद स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे । लेकिन जेल से रिहाई यूं ही नहीं हुई थी । इसके लिए नेताजी ने जेल में भूख हड़ताल की थी । नेताजी के खिलाफ अदालत में दो केस चल रहे थे और वह जानते थे कि अंगरेज उन्हें युद्ध की समाप्ति से पहले नहीं छोड़ेंगे । अतः उन्होंने भूख हड़ताल शुरू कर दी । अतः बिगड़ते स्वास्थ्य को देखते हुए उन्हें रिहा कर दिया गया ।

अकबर शाह ने देखा उनका नेता बिस्तर पर पड़ा है— बहुत कमजोर और दाढ़ी बढ़ी हुई । नेताजी ने उससे कहा, "अब मैं काबुल के जनजातीय इलाके से होकर देश से बाहर जाना चाहता हूं । इसके लिए तुम्हारी मदद चाहिए । तुम्हें वहां का अच्छा अनुभव है ।"

"हां । यह कोई मुश्किल काम नहीं है । लेकिन आपको वेश बदलकर सी.आई.डी. से बचते हुए पेशावर तक की रेल-यात्रा और उससे आगे की जनजातीय सीमा पार करनी पड़ेगी ।" शाह ने उत्तर दिया ।

नेताजी ने शाह को बताया कि, "आल इंडिया फारवर्ड ब्लाक वर्किंग कमेटी के सदस्य मोहम्मद शरीफ मेरी मदद कर रहे हैं । उनकी सलाह पर मैंने दाढ़ी बनाना बंद कर दिया है, दाढ़ी बढ़ा ली है । मेरे पास एक काली शेरवानी है और मैं शरीफ से वह सब कुछ सीख रहा हूं, जो वेश बदलने के लिए जरूरी है ।"

शाह ने कहा, "ठीक है, आप नेताजी अपना

नाम 'जियाउद्दीन' रख लें और अपना पहनावा एक मुसलमान की तरह रखें ।''

''यह समय है, जब हमें उठ खड़े होना है और मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए कुछ करना है । युद्ध जारी है और मैं सोचता हूं मुझे भारत से बाहर जाकर खुद सोवियत सरकार सहित उन देशों के नेताओं से बात करनी होगी, जो ब्रिटिश साम्राज्य के दुश्मन हैं'', नेताजी ने कहा ।

इसके बाद दोनों ने योजना के ताने-बाने पर विचार किया । शाह को नेताजी के भतीजे डॉ. शिशिर बोस से मिलवाया गया । शाह और शिशिर बाद में धर्मतल्ला स्ट्रीट स्थित वाचेल मोहल्ला के प्रसिद्ध डिपार्टमेंटल स्टोर 'मोहमडेन' से वेश बदलने का सामान लेने निकल पड़े । कलकत्ता से रवाना होने से पूर्व शाह ने नेताजी के साथ कुछ और समय बिताया, और उन्हें सिखाया कि जनजातीय इलाके से गुजरते समय उन्हें कैसा व्यवहार करना चाहिए । मुंह और कानों को साफे (पगड़ी) से बांधकर रखने और गूंगा-बहरा बनकर भाषा की बाधा को दूर करें, आगे सब कुछ भाग्य और भगवान पर छोड़ दें ।

बोस परिवार के दो मकान थे । नेताजी एलगिन रोड स्थित मकान में रहते थे, जबकि वुडबर्न पार्क के मकान में उनके बड़े भाई शरत बोस । शरत बोस के बेटे शिशिर बोस को नेताजी का संदेश उनकी रिहाई के बाद दूसरे सप्ताह में मिला । यह ५७ साल पहले की है किंतु डॉ. शिशिर बोस को उस दिन की याद ताजा है, जो उनके जीवन को प्रचंड रूप से बदलने वाला था । डॉ. बोस का संस्मरण चाचा ने बुलाया और कहा, ''क्या तुम मेरा एक काम कर सकते हो ?'' मैंने उत्तर में सिर हिलाया । ''क्या तुम गाड़ी बढ़िया ढंग से चला सकते हो ?'' उन्होंने जानना चाहा । मैंने उत्तर दिया, ''कुल मिलाकर ठीक चला लेता हूं ।'' उन्होंने आगे पूछा, ''क्या तुमने लंबी दूरी तक भी गाड़ी चलायी है ?'' मैंने कहा, ''नहीं ।'' ''देखो, तुम्हें एक रातभर में मुझे कार से काफी दूर, समझो वर्दवान या ऐसे ही किसी स्थान पर पहुंचाना पड़ेगा और किसी को मालूम न हो ।'' नेताजी ने धीरे से अपना लक्ष्य समझाया । डॉ. बोस जरा भी उत्तेजना दिखाये बिना अपने वुडबर्न पार्क के मकान में लौट आये, स्तंभित, उत्तेजना को किसी तरह काबू में रखते हुए । दरअसल, उनके चाचा ने दूसरे दिन योजना लेकर आने के लिए कहा था ।

दूसरे दिन दोनों में गपशप शुरू हुई और दोनों बिस्तर पर बैठ गये और इस तरह बातचीत की जैसे दोनों बराबर के हों । ''मुझे लगा, जैसे चाचा मेरी ओर से किसी भी प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए तैयार थे ।'' डॉ. बोस याद करते हुए कहते हैं—

नेताजी चाहते थे शिशिर अपने माता-पिता को बिना बताये पूरी योजना को क्रियान्वित करे, जिसके लिए शिशिर निश्चिंत न होने पर भी तैयार हो गये थे ।

योजना पलायन की

पलायन योजना पहले कुछ इस तरह बनी नेताजी खुले तौर पर यह घोषणा करेंगे कि स्वास्थ्य लाभ के लिए वह बड़े भाई शरत के रिश्रा के उद्यान-घर में जा रहे हैं । वहां से शिशिर उन्हें गाड़ी में गुप्त रूप से बर्दवान या आसनसोल ले जाएगा । लेकिन, यह योजना रद्द कर दी गयी । इसी तरह वुडबर्न पार्क से भाग निकलने की दूसरी योजना भी स्थगित

रही। स्थगन के आधार वही थे, ऐसी हरकतें पुलिस को अनावश्यक रूप से सतर्क कर सकती थीं। अंततः उन्होंने तय किया कि एलगिन रोड स्थित मकान से ही पलायन करना निरापद है। नेताजी की भतीजी इला भी शिशिर के साथ इसमें सहयोगी हो गयीं।

सत्रह जनवरी, १९४१ की रात १ रात को डेढ़ बजे एलगिन रोड स्थित मकान की ऊपरी मंजिल पर गला साफ करने की तेज आवाज सुनायी दी, जो नीचे प्रतीक्षा कर रहे तीन व्यक्तियों के लिए संकेत थी। सीढ़ियों पर पंजों के बल चलते हुए वे जरमन माडल की बेंडीरर कार तक पहुंचे। खामोश और सरद रात में कलकत्ते के लोग सोये पड़े थे लेकिन, आकाश में चंद्रमा अपनी चांदनी बिखेर रहा था, इसलिए सब सतर्क थे कि दीवारों पर परछाई भी न पड़े। इनमें एक विशेष दिखनेवाला पठान था, जो बंद गले का भूरा लंबा कोट, चौड़ा पायजामा और काली फैज टोपी पहने था। उनमें से एक जो बिस्तरबंद लिये था, ने ड्राइवर की सीट पर सामान रखने के बाद कार का पिछला दरवाजा खोला। उसके बाद उसने जल्दी से मकान का अगला फाटक खोला। पठान ने सीट पर बैठने के बाद दरवाजे को बंद नहीं किया, हाथ से पकड़े रखा ताकि दरवाजा बंद होने की आवाज से कोई जाग न जाए। तीसरा व्यक्ति ड्राइवर की सीट पर बैठा और उसने धीरे से दरवाजा बंद किया, जिसकी आवाज से कुछ कौवों ने कांव-कांव भर किया। जैसे ही सामने का फाटक खुला, शोर करते हुए कार रवाना हो गयी। लकड़ी की बेंच पर कंबल में लिपटे आराम करते सी.आई.डी. के लोगों को कोई संदेह नहीं हुआ। कार सनसनाती हुई एलगिन रोड और वुडबर्न रोड के सामरिक महत्त्व के संगम की ओर बढ़ चली। इस तरह नेताजी ने अनिश्चित भविष्य और अनजानी राजनीतिक नियति हेतु हमेशा के लिए कलकत्ता छोड़ दिया।

लेकिन इस पलायन में रहस्य कथा के तत्व भी थे। नेताजी से मिलने आनेवालों, नौकरों आदि सब पर सादी वरदीवाले पुलिसजनों की कड़ी नजर रहती थी। डॉ. बोस कहते हैं, "हमारे एक बेरोजगार किंतु अति-जिज्ञासु संबंधी को शक हो गया और उन्होंने प्रश्न पर प्रश्न पूछने शुरू कर दिये। इस पर नेताजी ने उन्हें जमशेदपुर के टाटाओं के एक ऊंचे अधिकारी के नाम पत्र दिया और साथ ही भाषण पिलाया कि वे अभी तक क्यों बेकार हैं। उसे अपेक्षित धन दिया और कहा कि जब तक नौकरी का पक्का आश्वासन न मिल जाए, कलकत्ता मत लौटना। जैसी कि संभावना थी, उक्त संबंधी नेताजी के पलायन कर चुकने के बाद ही लौटे और वह भी बेरोजगार।"

शिशिर को और भी अनेक काम सौंपे गये। २५ दिसंबर, १९४० को शिशिर को अपनी सहन-शक्ति की पहली परीक्षा देनी पड़ी। वह परीक्षा थी, बिना कहीं रुके लगातार गाड़ी चलाकर वर्दवान जाना और फिर तत्काल कलकत्ता लौटना और चाचा को यह बताना कि उसे कितनी थकान महसूस हुई। उसे यह भार भी सौंपा गया कि वह नेताजी के विजिटिंग कार्ड मोह. जियाउद्दीन, एक जीवन बीमा कंपनी के ट्रेवलिंग इंस्पेक्टर के नाम से छपवाये। शिशिर ने राधा बाजार के एक छापेखाने में जियाउद्दीन नाम बताकर ये कार्ड छपवाये।

इसी समय शिशिर ने धनबाद के पास बरारी

के सर्वेक्षण हेतु चक्कर लगाया, जहां उनका बड़ा भाई कोयला खदान में काम करता था। प्रदर्शित यह किया कि उन्हें अपनी मां को वहां से कलकत्ता ले जाना है। तब तक योजना का पूरा ताना-बाना तैयार किया जा चुका था। नेताजी ने घोषणा की कि वे कुछ दिनों तक एकांत में रहेंगे तथा न किसी से मिलेंगे, न बोलेंगे। वे सिर्फ शाकाहारी भोजन लेंगे, वह भी उनके कमरे में लगे परदे के बाहर से थाली को अंदर खिसका दिया जाए। शरत और उनकी पत्नी को भी विश्वास में ले लिया गया और शिशिर के ताऊजी के बेटे द्विजेंद्रनाथ को उस नाटक के लिए तैयार किया गया, जिसे पलायन के बाद उन्हें करना था। नेताजी के भाई का अलसेशियन खुले रहने पर समस्या पैदा कर सकता था। तभी एक रात मिलने आये एक सज्जन को उसने काट खाया। यह अच्छा बहाना था इस हिदायत के लिए कि कुत्ते को बांधकर रखा जाए।

पलायन के लिए निर्धारित दिन आया और रात भी होने लगी, किंतु दो रिश्तेदार आसपास ही मंडराते रहे। तब द्विजेन ने किसी प्रकार उन्हें ले जाकर ऊपर के कमरे में बंद जैसा कर दिया। उसके बाद सी.आई.डी. के आदमियों से रास्ता निरापद जान उसने नेताजी, शिशिर और अरविंदो को इशारा किया। सामनेवाला फाटक खोलना, दूसरे भतीजे अरविंदो की जिम्मेदारी थी।

ऐसे हुए थे फरार

"गाड़ी चलाते हुए हमने जानबूझकर चक्करदार रास्ता लिया। जी.टी. रोड चौराहे पर पहुंचने के लिए हमने अधिक सुविधाजनक दक्षिणेश्वर के विलिंगटन ब्रिज की जगह हावड़ा ब्रिज वाला रास्ता लिया क्योंकि, पहले रास्ते पर 'टोल' का तरीका था। हमने चैन की सांस तभी ली, जब हम फ्रेंच पुलिस से आमना-सामना हुए बिना सही सलामत चंदन नगर पहुंच गये। दुर्गापुर से गुजरते हुए, जो उस समय जंगलवाला डाकूग्रस्त इलाका था, एक जगह भैंसों के एक झुंड से टकराते-टकराते बचे। सौभाग्य से गाड़ी के ब्रेक ने सही काम किया और हम सही-सलामत बच गये।" डॉ. बोस

ब्रिटिश शासन को तो [illegible] तक नेताजी की फरारी के घटनाक्रम का आभास तक नहीं हुआ। फरारी के बाद केंद्रीय खुफिया विभाग ने बंगाल सी.आई.डी. को आड़े हाथों [illegible]

ने स्मृतियों में डूबते हुए बतलाया है।

अपने भाई के बरारी स्थित मकान पर पहुंचने के बाद दूसरा नाटक शुरू हुआ। दूसरे दिन शिशिर अपने भाई और भाभी को साथ लेकर नेताजी को गोमोह पहुंचाने चल पड़े, जहां से नेताजी को दिल्ली-कालका मेल पकड़नी थी। "गाड़ी आधी रात के बाद आती थी। हमने उन्हें पैदल-पुल (ओवरब्रिज) पर चढ़ते और अंधकार में विलीन होते देखा। पास आती मेल गाड़ी की घड़घड़ाहट सुनायी पड़ रही थी। अंततः हमने गाड़ी को भाप छोड़ते सुना और

फिर देखा रौशनी की माला जैसे दूर और दूर होती जा रही हो... ।'' यह लिखते हैं डॉ. बोस अपने 'द ग्रेट ऐस्केप' में ।

पूरे एक सप्ताह तक यह नाटक चला, जब तक कि पूर्व योजना के अनुसार यह सर्व-ज्ञात नहीं हो गया । अफवाहें बंद हो गयीं । यहां तक कि ऑल इंडिया रेडियो ने अपने समाचारों में घोषणा की कि नेताजी को धनबाद के पास गिरफ्तार कर लिया गया है । तथापि बाद में एसोशिएटेड प्रेस द्वारा इसका खंडन कर दिया गया था ।

अपने नकली वेश में नेताजी १९ जनवरी को पेशावर छावनी स्टेशन पहुंचे । अकबर शाह ने खुद उनकी अगवानी की । फारवर्ड ब्लाक सदस्य मोहम्मद शाह और भगतराम भी उनके साथ थे । नेताजी को तांगेवाले द्वारा बताये एक अच्छे मुसलिम होटल में ले जाया गया किंतु, बाद में उन्हें शाह के विश्वस्त मित्र अबद खां के घर रखा गया । छब्बीस जनवरी को खां के घर से नेताजी को भगतराम, मोहम्मद शाह और एक मार्गदर्शक के साथ आगे रवाना किया गया । ताकि वे यूरोप के लिए जनजातीय क्षेत्र से होकर वे अपना रास्ता खोज सकें । पेशावर में इन लोगों ने नेताजी की बड़ी सहायता की और उन्हें पूरा कबीलाई दिखनेवाला बना दिया ।

आभास तक नहीं हुआ

डॉ. बोस के अनुसार ब्रिटिश शासन को दो सालों तक इस घटनाक्रम का आभास तक नहीं हुआ । फरारी के बाद केंद्रीय खुफिया विभाग ने बंगाल सी.आई.डी. को आड़े हाथों लिया और उसके स्थान पर पंजाब सी.आई.डी. को रख दिया, ताकि वह 'बोस फाइल' की पड़ताल करे । बंगाल सी.आई.डी. की नाक नीची हो गयी । डॉ. बोस के अनुसार कुछ कट्टर अंगरेज आज भी मानते हैं कि नेताजी इसलिए भाग सके क्योंकि, बंगाल सी.आई.डी. ने निगरानी में ढिलाई बरती थी, जबकि वास्तविकता यह है कि नेताजी की निगरानी कभी भी शिथिल नहीं की गयी । अंगरेजों के एजेंट बोस के मकान में थे और सूचनाओं के लिए उन्होंने नेताजी के रिश्तेदारों का भी उपयोग किया था । ''सत्य यह है कि उन्होंने नेताजी को विदेशों में भी पकड़ लेना चाहा,'' तीस के दशक में कम से कम एक दर्जन एजेंट उन पर लगातार नजर रखते थे और उनकी हर गतिविधि, उन्होंने क्या खाया, कौन उनसे कब मिलने आया आदि की सूचना हर दिन स्पेशल ब्रांच को देते थे । कुल मिलाकर उनकी योजना विरोधी को तब धूल चटाना था, जब वह बेखबर हो ।'' डॉ. बोस कहते हैं, ''लेकिन, बाद में किसी जगह विश्वासघात हुआ और अंगरेजों को हमारे शामिल होने का पता चल गया ।'' आखिर में अक्तूबर, १९४४ में हम पकड़े गये और कुख्यात लाहौर फोर्ट में, सितंबर १९४५ में, रिहाई तक रखे गये ।

नेताजी ने पलायन के बाद भी कलकत्ता से संपर्क बनाये रखा था और जापानी वाणिज्य दूतावास के माध्यम से अपने भाई शरत बोस को संदेश भेजे थे । निस्संदेह अति सावधानी से बनायी गयी नेताजी की पलायन योजना और उसका क्रियान्वयन भारतीय स्वाधीनता संग्राम की सबसे दुस्साहसिक घटना है ।

प्रस्तुति : डॉ. हीरालाल बाछोतिया
— के. ४० एफ, साकेत, नयी दिल्ली-११००१७

पंजाब के पालने में पली प्रेम-कथाएं

● संजय सुमन

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के कथन के अनुसार विश्व की प्राचीनतम सभ्यता का पलना पंजाब है, जहां पहला सभ्य मनुष्य चला-फिरा और बातें कीं। पांच नदियों से पोषित पंजाब की कहानी सहस्त्रों वर्ष पुरानी है। यदि गेहूं शारीरिक रूप से शक्तिदायक पंजाबियों का भोजन है, तो प्रेम मानसिक भोजन। यह बात पंजाबी चरित्र को समझने के लिए इतनी आवश्यक है कि एक के बाद एक यहां आये विदेशी यात्रियों ने कई शताब्दियों के अनिश्चित जीवन के बावजूद पंजाबियों की इस असाधारण विशेषता पर आश्चर्य प्रकट किया कि अन्यत्र कहीं भी किसी प्रेमी ने अपनी प्रेमिका को खुश करने के लिए अपनी जांघ का मांस पेश नहीं किया और न ही किसी प्रेमाभिभूत सुंदरी ने अपने प्रेमी से प्रेम का प्रमाण देने के लिए उसका सारा शरीर ही मांग लिया। एक फ्रांसीसी यात्री ने पंजाबियों को अमर-प्रेमी और उनकी स्त्रियों को चिर-सुंदरियां बताया।

यहां की प्रेम-गाथाएं ऐसे समय से संबंधित हैं, जब पंजाब अपने गांवों में अपनी नदियों के किनारे रहता था, जब सिख गुरुओं ने हिंदू एकता का प्रचार किया, जब अकबर एक धर्मनिरपेक्ष और कल्याणकारी राज्य की बुनियादें रख रहा था। आश्चर्य की बात है कि ये गाथाएं उतनी ही हृदयद्रावक हैं जितनी कि धर्म-निरपेक्ष। हीर-रांझा, सोहनी-महिवाल, मिरजा-साहिबां और सस्सी-पुन्नू की कहानियों पर आलोचनात्मक दृष्टि डालने पर उनकी धर्मनिरपेक्ष पृष्ठभूमि स्पष्ट रूप से सामने आती है। यह भी उल्लेखनीय है कि ये ही प्रेम-गाथाएं अभी भी दोनों विभाजित पंजाबों को एक किये हुए हैं। लोक काव्य— 'हीर' किसी संधि अथवा समझौते की अपेक्षा उप-महाद्वीप के लोगों को जोड़ने वाला एक बहुत बड़ा सूत्र है।

रांझा मुसलमान है। वह एक साधु के-से गेरुए वस्त्र पहने और भगवान श्रीकृष्ण की प्रिय बांसुरी बजाते हुए एक मंदिर में शरण लेता है, तो उसे शांति मिलती है और उसका प्रेम उदात्त होता है। पंजाबी मुसलिम-सूफी कवि वारिस शाह द्वारा लिखित इस प्रेम-गाथा से पंजाब में उच्चकोटि के लेखन को बहुत बल मिला। मुश्किल से ऐसा कोई पंजाबी कवि होगा जो 'हीर' से प्रभावित न हुआ हो। 'हीर' चाहे इतिहास न हो, परंतु इसने पंजाबियों के हृदयों में

अपना घर बनाया हुआ है । यह अब पंजाब के जीवन और चेतना का भाग है । कहा जाता है कि जब रूस में पहली बार 'हीर' गायी गयी तो श्रोता मानो पागल हो उठे । उर्दू शायर सौदा के विचार में हीर-रांझा की कहानी सर्वाधिक भावुकतापूर्ण कहानी है ।

परंतु उनकी खुशी अल्पकालिक होती है । दुष्ट चाचा हीर को विष दे देता है और रांझा दूल्हे की पोशाक पहने ही हीर की कब्र पर छुरा घोंपकर अपने आप को खतम कर लेता है ।

सोहनी-महिवाल

सोहनी-महिवाल की कहानी पंजाबी कवियों

पंजाब की प्रेम गाथाओं को समझे बिना पंजाबी जीवन की कोई भी व्याख्या पूरी नहीं हो सकती । ये प्रेम-गाथाएं पंजाब के ग्राम्य जीवन को सौंदर्य की अनवरत तलाश में आशा और साहस प्रदान करती हैं ।

हीर-रांझा

हीर का प्रेमी रांझा भाभियों के अत्याचारों से तंग आकर अंततः हीर की तलाश में घर से निकल पड़ता है । हीर से पहले वह एक नाव में मिला था । हीर ने पहली ही मुलाकात में उसका दिल छीन लिया था । जब रांझा अपनी जादुई बांसुरी बजाता है तो धरती और आकाश मिलकर ऐसी मधुर तान पैदा करते हैं, जिसे संसार ने पूर्व के लिखित दो सहस्र वर्षों के इतिहास में नहीं सुना । रांझा हीर के घर में जाकर घरेलू नौकर बन जाता है । लगभग दो वर्षों तक दोनों का प्रेम शांतिपूर्वक चलता रहता है । उसके बाद जब हीर के माता-पिता को पता चला तो उन्होंने हीर के प्यार का गला घोंटकर उसका विवाह एक धनी जमींदर से कर दिया । इस पर रांझा जोगी बन जाता है और दोनों प्रेमी संसारभर की प्रेम-गाथाओं की भांति मानवीय तिकड़म और दैवी इच्छा से पुनः मिल जाते हैं ।

द्वारा रची गयी कोमलतम प्रेम-कहानी है । इस कहानी में सुंदर मुटियार सोहनी आधी रात को तूफान में ही नदी पार करती है । बुखारा का निवासी और पेशे से जौहरी इज्जत बेग पंजाब आता है और एक कुम्हार की बेटी सोहनी से मुलाकात होते ही उसे दिल दे बैठता है । वह कुम्हार के घर में भैंसों के रखवाले (महीवाल) के रूप में नौकरी कर लेता है । अपनी प्रेमिका का दिल जीतने के लिए वह स्वयं को पंजाबी रंग में रंग लेता है । प्रभावशाली ढंग से पंजाबी बोलने लगता है । पंजाब में बस जाता है । यहीं की पोशाक पहनता है और यहीं रहता है और यहीं प्राण त्यागता है । 'मैं तुम्हें कभी नहीं बताऊंगी कि मेरा नाम सोहनी है ।' इस उत्तर ने उसका दिल मोह लिया था । शीघ्र ही गांव में बात फैल गयी और लोग यह चर्चा करने लगे कि सोहनी एक परदेशी से प्यार करने लगी है । लोगों के मुंह बंद करने के लिए उसके बाप

तुल्हा ने बेटी का विवाह उसी गांव में एक अन्य युवक से कर दिया । इज्जत बेग नदी के दूसरे किनारे पर चला गया । सोहनी हर रात चोरी से मिट्टी के घड़े के सहारे चनाव नदी (जो अब पाकिस्तान में है) पार करके अपने प्रेमी से मिलने आती । एक रात उसकी ननद को संदेह हो गया और उसके पक्के घड़े की जगह कच्चा घड़ा रख दिया । सोहनी को कुछ पता नहीं था । वह उसी घड़े को लेकर पानी में उतर गयी । उस रात नदी का बहाव बहुत भयंकर था । और वर्षा भी हो रही थी । डूबती सोहनी की सहायता की पुकार सुनकर महिवाल पानी की लहरों को चीरता हुआ आगे बढ़ा और अपनी प्रेमिका के साथ ही नदी में डूब गया । इस कहानी को भारत और पाकिस्तान में कई बार फिल्माया भी जा चुका है । हीर-रांझा और सोहनी-महिवाल दोनों ही उस चनाव नदी के तटवासी थे, जो दोनों देश में किसी गुम हुए व्यक्ति की भांति टेढ़ी-मेढ़ी चलती है । पंजाब के बुजुर्ग अभी भी अपने बच्चों को दर्दभरे दिल से यह कहानी सुनाते हैं । और दोनों उत्तरी भारत में भी सच्चे प्रेमियों का आदर्श उदाहरण हैं । चनाव नदी के किनारे बैसाखी को यह लोक-गाथा अभिनीत की जाती है । बैसाखी को हिंदू, सिख और मुसलमान सभी समान रूप से मनाते हैं ।

मिर्जा-साहेबां

मिर्जा-साहेबां पंजाब की एक अन्य प्रेम-गाथा है, जो 'झंग हुई' जो अब पाकिस्तान में है, में घटी थी । मिर्जा और साहेबां स्कूल के दिनों के प्रेमी हैं । मिर्जा का पिता बेटे को धनुर्विद्या, शिकार और तलवार चलाना सिखाने के लिए स्कूल से निकाल लेता है । दोनों प्रेमी थोड़े समय के लिए एक चाची के घर में मिलते हैं और आजीवन एक-दूसरे का होकर जीने का प्रण करते हैं । मिर्जा एक घोड़े पर बैठकर अपनी साहेबां को लेने बाग में आता है । साहेबां को पता है कि उसके सातों भाई उसका पीछा कर रहे हैं । साहेबां मिर्जा को पास ही एक झाड़ी में छिपा देती है । इससे पहले उसने उससे वचन ले लिया था कि वह उसके भाइयों को नहीं मारेगा । खैर, अंत में मिर्जा और साहेबां के भाइयों में लड़ाई छिड़ जाती है और वचनबद्ध मिर्जा घायल हो नीचे गिर पड़ता है । साहेबां भी स्वयं छुरा मार लेती है और वहीं ढेर हो जाती है ।

सस्सी-पुन्नू

सस्सी एक हिंदू लड़की है जिसे एक मुसलमान धोबी उट्टा पालता है । वह पुन्नू नाम के एक अबोध युवक से प्यार करने लगती है, परंतु गांव के कई युवक उससे विवाह करने के इच्छुक हैं,जो पुन्नू को चुनौती देते हैं । सिंध रेगिस्तान के ऊंटवान आज भी एक पागल मुसलमान की एक हिंदू राजकुमारी की तलाश की बातें करते हैं । "मैं पुन्नू हूं । क्या तुमने मेरी सस्सी को देखा है । वह कहां चली गयी है ? क्या वह इस रास्ते गयी थी ?" मुल्तानी राग 'काफी' की शैली में गायी गयी सस्सी की लोकगाथा का आज भी कोई जवाब नहीं । पुन्नू ने मिट्टी के उस टीले पर जान दे दी, जहां सस्सी दुल्हिन के वस्त्र पहने गाती हुई मर गयी थी ।

पंजाब की इन प्रेम-गाथाओं को समझे बिना पंजाबी जीवन की कोई भी व्याख्या पूरी नहीं होती । ये कहानियां ग्रामीण पंजाब को सौंदर्य की अनवरत तलाश में आशा और साहस प्रदान करती हैं ।

— हृदयनगर, बनमनखी,
पूर्णियां-८५४२०२

एक दिन की

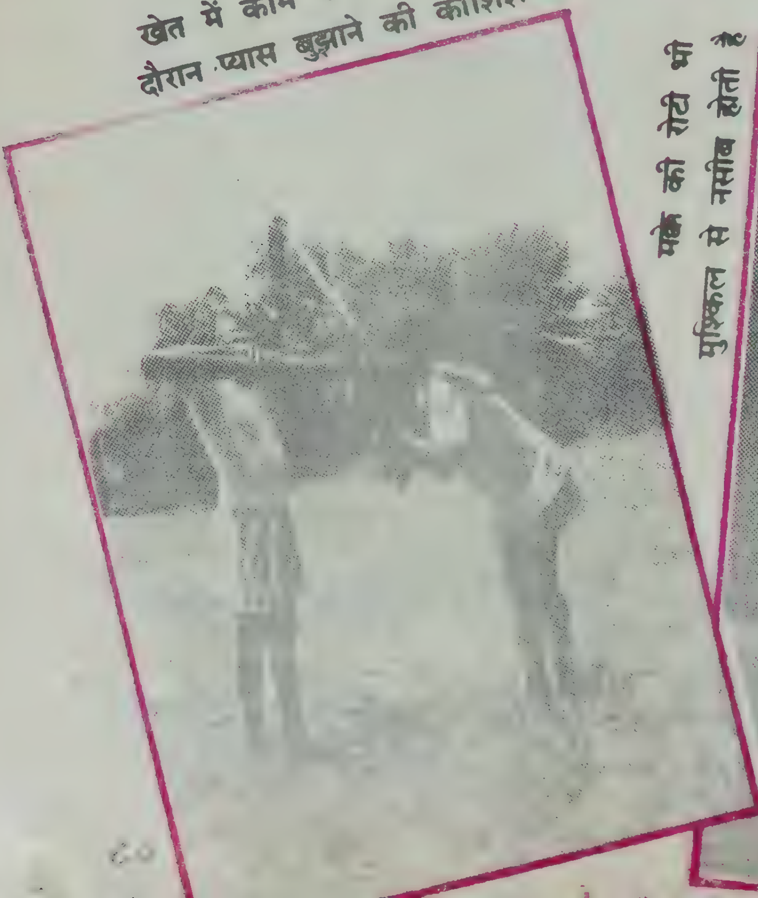
जहां एक ओर दुनिया कल की चिंता में परेशान है, वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज में मुसहर हैं, जिन्हें चिंता अगर होती है तो सिर्फ आज की । कल पर इन्हें भरोसा नहीं है । केवल आज की रात गुजर जाए मस्ती में, कल सुबह होगी तो देखा जाएगा— इस जीवन दर्शन को लेकर जीते हैं ये लोग ।

मुसहर की सर्वाधिक संख्या (पच्चीस-तीस लाख) बिहार में ही है, किंतु बंगाल व उत्तर प्रदेश सहित अन्य राज्यों में भी ये पाये जाते हैं, जहां उन्हें अलग नाम से पुकारा जाता है । बिहार में इनके नाम के पीछे भूईयां लिखा रहता है तो कहीं धांगड़, कहीं ऋषिदेव तो कहीं मांझी आदि । इनका कोई जातीय पेशा नहीं है । जब जो काम मिल गया, ज़ी-जान लगाकर कर लिया । न कभी किस्मत से कोई शिकायत, न कभी मालिकों से शिकवे । कभी खेत में हल जोतते नजर आते हैं, तो कभी पेड़ पर टहनियां काटते, कभी कुदाली से धरती खोदते, कभी खेत में धान रोपते । जिस गांव में मुसहर मौजूद हैं वहां के सारे कठिन शारीरिक काम मुसहर ही करते हैं ।

सुबह के साथ

ये सोचना तब शुरू करते हैं जब सुबह होती है । शाम को कभी भी ये सुबह की बात तय नहीं करते । शाम में किसी काम पर सहमति जताने के बावजूद वे मालिक से कहते हैं, 'सुबह आइएगा, तब देखा जाएगा ।' अगर

खेत में काम के दौरान प्यास बुझाने की कोशिश



मके की रोटी भी मुश्किल से नसीब होती है





सुबह फिर मुसहर के दरवाजे पर मालिक अपनी हाजिरी नहीं दर्ज करवाये, तथा शाम की बात पर ही भरोसा किये रहे तो बाद में पता चलता है कि वह किसी दूसरे का काम करने चला गया ।

जब इनका पेट खाली होता है, तब तो ये कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं, किंतु पेट भरा तो लाख तलवे सहलाते रहिए, काम करने को तैयार नहीं होते । अगहन के महीने में, जब धान पककर तैयार होता है, तो उन दिनों इनके भाव बेहद चढ़ जाते हैं, और इन्हें भरपेट भोजन भी इन्हीं दिनों नसीब होता है ।

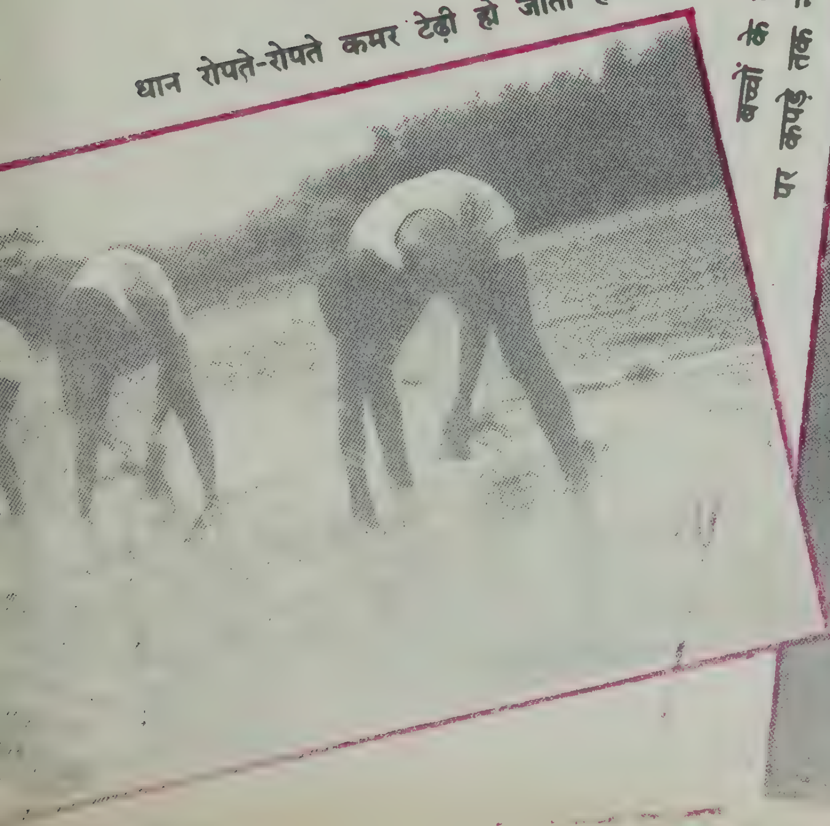
भोजन भट्ट

भोजन के मामले में ये पेटू हैं । ये आम लोगों से अधिक भोजन करते हैं । इसका पहला कारण है शारीरिक कठिन श्रम और दूसरा कारण यह है कि जब ये अपने मालिक के यहां भोजन करते हैं तो यह सोचकर भी ज्यादा खा लेते हैं कि मालिक कल भोजन कराये या न कराये । इस संदर्भ में बिहार के अररिया जिले के सिरसिया कला गांव की अर्चना झा एक दिलचस्प किस्सा बताती हैं, ''मेरे घर पर एक मुसहर नौकर था । जब वह खाने बैठता था तो ये पूछने पर कि 'और लोगे' वह कभी 'ना' नहीं कहता था । हर बार कहता— 'थोड़ा-सा और दे दीजिए मालकिन ।' यह सिलसिला तब तक चलता रहता जब तक हम लोग यह नहीं कहते— 'अब तुम उठ जाओ, बहुत ज्यादा खा लिये हो ।'

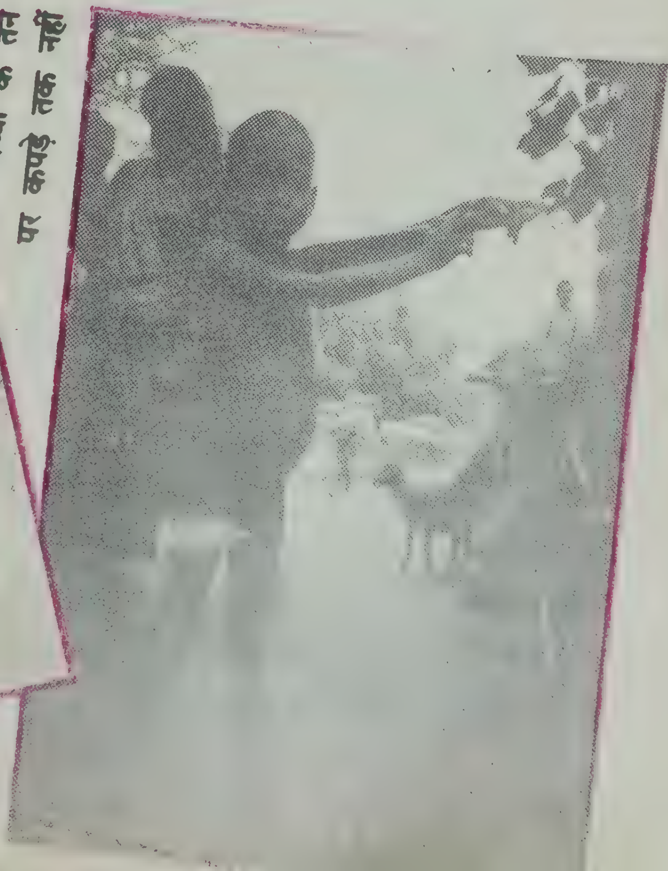
जिंदगी जीनेवाले

• महेश कुमार झा

धान रोपते-रोपते कमर टेढ़ी हो जाती है



बच्चों के तन पर कपड़े तक नहीं



भोजन में ये व्यंजनों के स्वाद की गहराई में कभी नहीं उतरते, वे बस, पेट भर लेने से मतलब रखते हैं ।

धन-संग्रह करना इनकी मानसिकता में नहीं है । जब कभी इन्हें जरूरत से ज्यादा हासिल हो भी जाता है, तो अंधाधुंध खर्च कर डालते हैं । रोजगार के अभाव के कारण बिहार के अधिकांश किशोर व जवान मुसहर पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों की ओर करीब दो दशकों से जाने लगे हैं । फसल कटाई के समय में तो मुसहरों की पूरी बस्ती ही मर्दविहीन हो जाती है । बाहर से कमाकर जब लौटते हैं तो इनके एक हाथ में बड़ा-सा बैग तथा दूसरे हाथ में पूरी आवाज में बजता हुआ ट्रांजिस्टर होता है । उनके आते ही उनके परिवार में एक बहार-सी आ जाती है । महाजनों के कर्ज चुकाये जाते हैं, ताड़ी-दारू पीते हुए जमकर मौज-मस्ती की जाती है । पैसे खतम होते ही फिर परदेश जाने की तैयारी । उसके लिए महाजन के आगे ऊंची ब्याज दर (८ से १० प्रतिशत प्रति माह) पर ऋण लेने के लिये गिड़गिड़ाते हैं ।

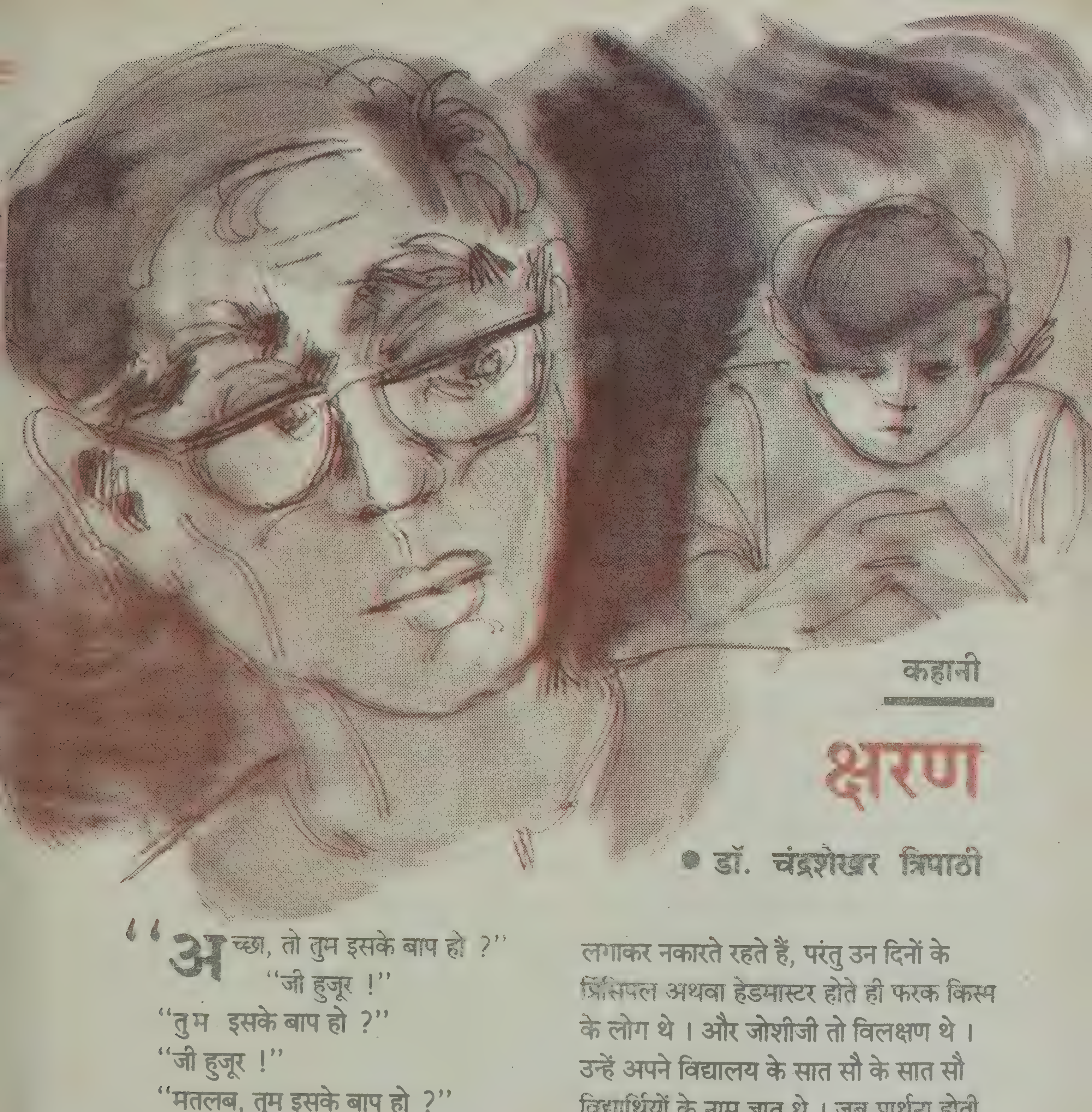
महिलाओं के प्रति उदार

महिलाओं के प्रति काफी उदारवादी दृष्टिकोण है मुसहरों में । मालिक भले ही महिला मुसहर मजदूर को पुरुष की तुलना में कम मजदूरी दें, किंतु ये आपस में किसी तरह का भेदभाव नहीं बरतते । नयी नवेली बहू भी ससुराल आने के कुछ ही दिनों बाद मजदूरी करने निकल पड़ती है । सद्य प्रसूता भी अपने नवजात शिशु को खेत की मेड़ पर लिटाकर खेत में काम करती रहती है । पति को परमेश्वर मानने का रिवाज नहीं है । अगर थोड़ी-सी भी अनबन हुई, तो पति-पत्नी सद्भावपूर्वक अलग हो जाते हैं तथा फिर अपनी जोड़ी किसी और से बना लेते हैं । दूसरे विवाह को 'चुमाउन' कहा जाता है । विधवा भी चुमाउन के द्वारा फिर घर बसा लेती है ।

स्वभाव से काफी बहादुर एवं कर्मठ मुसहर कठोर श्रम, भांग, गांजा व दारू आदि के सेवन और अनियमित एवं असंतुलित भोजन तथा दरिद्रता व लापरवाहियों की वजह से जवानी ढलते ही ये कई तरह की बीमारियों के शिकार हो जाते हैं । भोजन के अभाव में ये चूहे, घोंघे व अन्य कई तरह की चीजें भी खाते रहते हैं । गरीबी के चलते शिक्षा का प्रसार नहीं के बराबर है । सहरसा जिले के खजुराहा गांव के पांच सौ मुसहरों के टोले में सिर्फ एक मुसहर मैट्रिक पास मिला ।

स्वतंत्रता पूर्व ही ठक्कर बापा ने 'अखिल भारतीय मुसहर सेवा मंडल' की स्थापना की थी, जिसकी शाखा बिहार में समस्तीपुर के पास रोसड़ा में थी । बिहार में मुसहरों के चर्चित नेता मिश्री सदा ने भी 'बिहार मुसहर सेवा संघ' की स्थापना की थी । इंदिरा आवास योजना के तहत कुछ पक्के घर भी मुसहरों के लिए बनाये गये हैं, लेकिन यह ऊंट के मुंह में जीरा के समान ही है । राजनीति ने हमेशा मुसहरों को केवल वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल किया है । मुसहर नेताओं की भी कमी नहीं है, लेकिन तमाम प्रयासों के बावजूद इनकी जिंदगी बदहाल है ।

— द्वारा : श्री सहजानंद
स्टेट बैंक ऑव पटियाला
हथुवा मार्केट के सामने, पटना-४



कहानी

क्षरण

● डॉ. चंद्रशेखर त्रिपाठी

"अच्छा, तो तुम इसके बाप हो ?"

"जी हुजूर !"

"तुम इसके बाप हो ?"

"जी हुजूर !"

"मतलब, तुम इसके बाप हो ?"

"हुजूर मैं..."

और बाप बनाकर लाया गया वह रिक्शावाला भाग खड़ा हुआ । रह गया मनमोहन, जो हमारा सहपाठी था । जिरह करनेवाले हमारे प्रिंसिपल जोशीजी थे । कदाचित, उस समय वे संसार के सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम प्रिंसिपल थे । वैसे, 'ब्रिटिश लीगेसी' के सकारात्मक पक्ष को भी हम विभिन्न विशेषण लगाकर नकारते रहते हैं, परंतु उन दिनों के प्रिंसिपल अथवा हेडमास्टर होते ही फरक किस्म के लोग थे । और जोशीजी तो विलक्षण थे । उन्हें अपने विद्यालय के सात सौ के सात सौ विद्यार्थियों के नाम ज्ञात थे । जब प्रार्थना होती, वो आंखें खोले सभी विद्यार्थियों को देखते रहते थे कि कौन प्रार्थना नहीं कर रहा है । विद्यालय के बरामदे को बढ़ाकर बनाये गये ऊंचे से चबूतरे पर वे खड़े होते, जहां से सभी विद्यार्थी दिखायी देते थे । प्रार्थना के पश्चात प्रार्थना न करनेवाले छात्रों को उनके नाम से संबोधित कर उन्हें रोक लेते तथा दोनों हाथों में एक-एक बेंत का 'प्रसाद' देकर ही कक्षाओं में जाने देते ।

विद्यालय में छठी कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थी थे । कक्षाओं की पंक्ति चौड़ाई में होती थी । अतः छठी कक्षा के पीछे सातवीं का विद्यार्थी, फिर आठवीं, नौवीं, दसवीं इत्यादि । इससे छोटे कद के लड़के आगे एवं बारहवीं कक्षा के बड़े लड़के सबसे पीछे खड़े होते थे । ऐसे में सभी का नाम याद रखना आदरणीय जोशीजी के वश की ही बात थी । और उनके इसी स्मरण-शक्ति का शिकार बन गया था— मनमोहन । होता यह था कि प्रार्थना के बाद 'प्रसाद' वितरण कर जोशीजी यह देखने के लिए निकलते थे कि किस ने अपने साइकिल में ताला नहीं लगाया है । ऐसी बिना ताले वाली साइकिलें जब्त हो जाती थीं, और जब तक छात्र अपने पिता को नहीं लाता था, और वह लड़के की ओर से क्षमा नहीं मांग लेता था, साइकिल वापस नहीं मिलती थी । मनमोहन के साथ भी ऐसा ही हुआ । परंतु वो एक रिक्शाचालक को पटाकर ले आया । बात एक रुपये पर तय हुई थी । साइकिल मिल जाने पर मनमोहन ने रिक्शाचालक को एक रुपया देकर विदा किया और मस्त हो गया ।

एक दिन संध्या के समय आदरणीय जोशीजी कहीं जाने के लिए विद्यालय से बाहर रिक्शा तलाश कर रहे थे कि अकस्मात उन्हें वही रिक्शावाला दिख गया । खैर, वे उस पर बैठकर अपने गंतव्य पर पहुंचे तथा दूसरे दिन विद्यालय आने पर पहला कार्य, जो उन्होंने किया, वह था मनमोहन को गरीब छात्रों को दिये जानेवाले छात्रवृत्ति कोष से बीस रुपये महीने की छात्रवृत्ति स्वीकृत करना, जो सत्र के प्रथम माह, यानी जुलाई से लागू होनी थी । यह महीना दिसंबर का चल रहा था । अचानक मनमोहन को आफिस के क्लर्क ने बुलाकर सौ रुपये पकड़ा दिये, क्योंकि, जोशीजी इसमें तनिक भी विलंब नहीं चाहते थे । मनमोहन के साथ हम सभी अविश्वास और विस्मय से उस सौ रुपये के नोट को देख रहे थे । कुछ दिनों के लिए मनमोहन हम सभी का चहेता बन गया था । उन पैसों से हम सभी को मनमोहन ने कई बार भरपेट चाट खिलायी । अपने लिए पैंट-कमीज एवं जूते लिये । एलार्म घड़ी एवं नयी कलम ली । क्लर्क ने उसे बता ही दिया था कि प्रतिमाह उसे बीस रुपये मिलते रहेंगे, अतः हम सभी के लिए मनमोहन मात्र सहपाठी न होकर हमारा नेता हो गया ।

एक दिन मनमोहन से अपनी साइकिल में ताला न लगाने की भूल पुनः हो गयी । उसकी साइकिल प्रिंसिपल साहब ने फिर जमा कर ली । मनमोहन को अपने किराये के पिताजी नहीं मिले, तो वह दूसरे रिक्शेवाले को इस बार दो रुपये में पटा लाया । कथा के प्रारंभिक संवाद इसी शुभ अवसर के हैं । रिक्शावाला जोशीजी की कड़कती आवाज से आतंकित हो टूट गया । जोशीजी उसकी ओर लपके, परंतु वह भाग खड़ा हुआ और रह गया सहमा हुआ मनमोहन । प्रिंसिपल साहब ने अपना बेंत उठाया और मनमोहन की धुनाई शुरू कर दी । परंतु आज उनकी धुनाई का सुर ताल दूसरा था । वे उसे मारते जाते और प्रलाप भी करते जाते थे । अपने साथ हुए छल से आहत जोशीजी कदाचित् मनमोहन की मानसिक अवस्था नहीं नाप पाये । उनके प्रलाप से मनमोहन तथा कुछ अन्य विद्यार्थी, जो वहां खड़े थे, मनमोहन को स्वीकृत बीस रुपये महीने की छात्रवृत्ति का मर्म आज समझ पाये ।

मनमोहन निर्द्वंद्व भाव से पिटता रहा। अचानक जोशीजी को मनमोहन की मासूम गलती का बोध हुआ। वे उसे अपने कमरे में ले गये तथा उसके द्वारा की गयी शैतानी की कैफियत पूछी। मनमोहन के पिता नहीं थे, तथा मां स्वभाववश प्रिंसिपल के समक्ष आ ही नहीं सकती थी, अतः मनमोहन ने यह जुगाड़ लगायी थी। मनमोहन के पिता नहीं हैं, यह जानकर जोशीजी ने उसकी बीस रुपये की छात्रवृत्ति बंद नहीं की। उन्होंने मुसकराकर मनमोहन को हौले से एक चपत लगायी और उसकी साइकिल उसे दे दी।

मैंने जब भी जोशीजी को देखा, लगता वे अभी-अभी स्नान करके आ रहे हैं। वे सफेद कमीज या बुशर्ट एवं सफेद पैंट पहनते थे। पैरों में काला जूता। बाल उनके सफेद हो गये थे, जिनमें हलका-सा तेल लगाते थे। कमीज की जेब में दो कलमें, एक नीली तथा दूसरी लाल रोशनाईवाली। रबड़ सोल के जूते पहने वे कक्षाओं के बाहर कब आकर खड़े हो जाते, किसी को ज्ञात नहीं होता था। किसी भी विषय की कापियां कभी मांग लेते तथा शिक्षकों द्वारा किये मूल्यांकन का पुनर्मूल्यांकन करते। पी.टी. टीचर की ड्रेस के अलावा उसके शारीरिक यथा तोंद इत्यादि का भी निरीक्षण करते। उनका भूत सबके ऊपर सवार रहता था। हम लोगों का विद्यालय मात्र सात सौ विद्यार्थियों का होने के बावजूद लगभग प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी था। जनपद तथा मंडल स्तर पर आयोजित होनेवाली प्रतियोगिताओं में हमारा प्रदर्शन उत्कृष्ट स्तर का होता था। वर्ष के अंत में जोशीजी स्वयं विजेता छात्रों को विद्यालय में आयोजित समारोह में पुरस्कारस्वरूप तुलसीकृत रामचरित मानस का गुटका देते।

कई वर्षों पश्चात, संयोगवश मैं अपने ही गृहनगर के राजकीय चिकित्सालय में तैनात हुआ। एक दिन अकस्मात मैंने जोशीजी को देखा। बीस वर्ष पश्चात भी वे एकदम वैसे ही थे। मैं कार में चौराहे के इस पार और वे सामने उस पार। ट्रैफिक रुका हुआ था। ट्रैफिक का सिपाही अपनी खैनी मल रहा था,

जोशीजी पिछड़ गये थे, समय आगे बढ़ गया था या कदाचित बहुत पीछे चला गया था। दरअसल, जोशीजी नहीं पिछड़े थे। जोशीजी पिछड़ ही नहीं सकते थे

अतः दोनों हाथ व्यस्त होने के कारण हाथ से इशारा नहीं कर पा रहा था। खैनी उसकी सध नहीं रही थी। वह बेचारा बहुत परेशान था। अचानक कार, ट्रक, बस, स्कूटर, मोटर साइकिल के भोंपुओं से परेशान होकर उसने अपने पैर को ही हिलाकर उनको जाने का इशारा कर दिया। व्यवस्था का प्रतिनिधि वह सिपाही भी क्या करे ? हाथ नहीं तो पैर ही सही। असली बात तो ट्रैफिक चलने की है। जोशीजी भी सिपाही के सामने से अपनी साइकिल से निकले। मैंने शीघ्रता से कार किनारे खड़ी की और उनकी ओर दौड़ लगा दी। चरण-स्पर्श किये। मैं आश्वस्त था कि वे मुझे अवश्य पहचान लेंगे। एक क्षण के लिए उन्होंने मुझे

गौर से देखा और फट पड़े ।

"चंद्रशेखर,तुमने देखा !"

"सर, क्या ?"

"सर क्या, तुम्हारा सर ! जब तुमने देखा ही नहीं तो मैं क्या बताऊं ?"

मैं तत्काल समझ गया । वे उस सिपाही की बात कर रहे थे । यह मेरी उनसे बीस वर्षों के बाद की मुलाकात थी । वही आवाज, वही तेवर, वही आक्रोश । बस, उनका बेंत उनके पास नहीं था, अन्यथा कदाचित् उस सिपाही के खैनीवाले हाथों को वे 'प्रसाद' अवश्य देते । उनको संयत होने में समय लगा । मेरा हाल-चाल पूछा । उन्हें पता था कि मैं डॉक्टर हो गया हूं । उन्होंने अन्य छात्र जो विभिन्न पदों पर थे, की चर्चा की । फिर बोले, "चंद्रशेखर, मैं जरा जल्दी में हूं । बिजली दफ्तर जा रहा हूं । नालायकों ने बहुत बढ़ाकर बिल भेज दिया है । तुम जब घर आओगे तो देखना, भला दो कमरे के घर का इतना बिल कैसे आ सकता है ?"

"जी, मैं चला जाऊंगा । आप बिल की कॉपी मुझे दे दीजिए ।"

"नहीं, तुम कहां जा पाओगे । तुमसे अधिक समय तो मेरे पास है । रिटायरमेंट के बाद अब यही सब करके समय कट जाता है ।" कहते हुए वे अपनी पुरानी साइकिल चलाते हुए चले गये ।

मैं देर तक उनको देखता रहा ।

लगभग एक हफ्ते पश्चात मैं उनके आवास पर गया । कार वहां पहुंच नहीं सकती थी, अतः उसे मुख्य सड़क पर ही छोड़ मैं कई संकरी गलियों को पार करता हुआ पहुंचा । संध्या का समय था, जोशीजी तख्त पर बैठे हुए कुछ लिख रहे थे । मैंने चरणस्पर्श किया और बैठ गया । मुझे देखकर वे मुसकराये । हाथ के इशारे से आभास दिया कि रुको, बस अभी बात करता हूं । लिखना समाप्त कर मेरी ओर मुखातिब हुए और बोले, 'लेटर टू एडीटर कॉलम' में बिजलीवालों की शिकायत लिख रहा था । नालायकों ने अभी तक बिल सही नहीं किया ।"

मैं कुछ नहीं बोला ।

लगभग एक घटे तक मैं उनके साथ रहा । चलते समय मैंने पुनः उनसे बिल मांगा । मैंने उन्हें बताया कि उनका ही छात्र और हमारा सहपाठी बिजली विभाग का एक्ज़ीक्यूटिव इंजीनियर है, तो वे एकदम उबल पड़े । जैसे, मैंने उन्हें यह बताकर उनका बोझ हलका कर दिया हो । वे एकदम तमतमा उठे और स्वयं उससे मिलने का निश्चय कर बैठे ।

कुछ समय पश्चात मैं पुनः उनके निवास पर गया, तो जोशीजी मुसकराते हुए बोले, "जानते हो चंद्रशेखर, मनमोहन की मैंने क्या दुर्गति की ? नालायक को उसके विभाग की करतूत बतायी । बिल तो उसने ठीक कर दिया परंतु अपनी लाचारगी ही जाहिर करता रहा । क्या सचमुच ऐसा है कि वह अपने से नीचेवालों का कुछ नहीं बिगाड़ सकता ?"

"जी हां, ऐसा ही है ।"

"पर क्यों ?"

"क्योंकि, अब ऐसा ही है सर ! हम लोग प्रजातंत्र में रह रहे हैं ।" मैंने उनसे अधिक बात करना उचित नहीं समझा । जोशीजी पिछड़ गये थे, समय आगे बढ़ गया था या कदाचित बहुत पीछे चला गया था । दरअसल, जोशीजी नहीं पिछड़े थे । जोशीजी पिछड़ ही नहीं सकते थे ।

जोशीजी जहां रहते थे, उससे कुछ ही दूरी

पर कच्ची शराब की हौली थी ।

बाकायदा लाइसेंसशुदा । बाहर लिखा था— 'सरकारी देशी शराब की दुकान ।' दुकान का मालिक अलमस्त किस्म का पहलवान छाप आदमी था । मौज-मौज में वे अपनी गाय एवं बछड़े को भी शराब पिला देता था । उस समय महल्ले के लोग बड़ी कौतुहल से इस 'दिव्य' दृश्य को देखा करते थे । उस स्थान पर बड़ी रौनक लगी रहती थी ।

भुनी हुई मछली, गोश्त इत्यादि के ठेले पेट्रोमैक्स जलाये अपनी दुकानदारी करते रहते । महल्ले के बिगड़ैल लड़कों के लिए वह एक आदर्श जगह बन गयी थी । पहलवान जिस पर उधार बाकी रहता, उसे उसका नाम ले मां-बहन की चुनिंदा गाली देकर तकादा करता । लड़का खीसें निपोरकर सफाई देता और कम से कम उस दिन उधार दारू लेने के लिए पहलवान की मिन्नत करता । पहलवान 'तू भी क्या याद करेगा' की तर्ज पर गाली देता हुआ कुछ दारू उधार दे देता ।

जोशीजी ने मुझसे हौली के विषय में अत्यंत दुःखी होकर चर्चा की थी । मेरे यह बताने पर कि आबकारी की आमदनी से ही प्रांत चलता है, मर्माहत होकर बोले, ''जिन लड़कों को शाम के समय फुटबाल की फील्ड पर होना चाहिए, वे शराब की दुकान पर होते हैं । बड़े शहरों की दशा तो शायद और भी खराब होगी । वहां तो सुना है लड़कियां भी इस व्यसन में पड़ गयी हैं । आनेवाली पूरी पीढ़ी ही शराबियों की हो जाएगी क्या ? तब आबकारी की आमदनी भी कई गुनी हो जाएगी । पूरा देश ही 'टैक्स पेयर' होगा । संपन्नता की परिभाषा भी कदाचित यही होगी क्या ?''

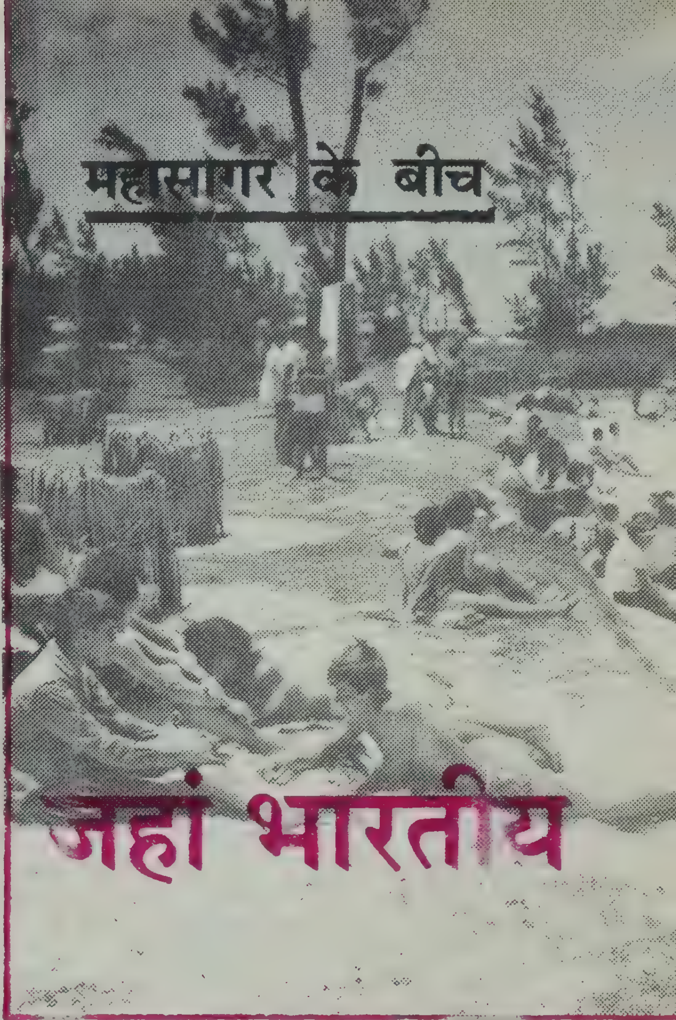


जोशीजी के लिए यह दृश्य असहनीय था ।

अचानक एक दिन जोशीजी सीधे हौली पहुंच गये और वहां बैठे लड़कों को खूब लताड़ा । घर-घर जाकर अभिभावकों को समझाया और भला-बुरा भी कहा । उन्होंने इस विषय पर एक मुहिम-सी चला दी । वे पुनः प्रिंसिपल साहब हो गये । अभिभावकों ने भी साथ देना आरंभ कर दिया । लड़कों के संदर्भ में वे केवल अभिभावकों को ही जानते थे । केवल उनसे ही बात करते आये थे । लड़कों पर घरवालों ने सख्ती प्रारंभ कर दी । दो-चार अभिभावक प्रायः हौली के सामने अथवा पीछे से अनायास आते-जाते निगाह रखने लगे । इनमें 'अच्छे' बच्चों के अभिभावक भी होते । उनकी मांएं भी कभी-कभार चक्कर काटने लगीं । घर में पैसों का हिसाब-किताब अधिक सख्त हो गया । हौली पर लड़कों की संख्या कम होने लगी । जोशीजी के घर पर अभिभावकों की संख्या बढ़ने लगी ।

एक रात लगभग आठ बजे जोशीजी कहीं से लौट रहे थे कि उनके ही महल्ले के एक लड़के ने उनके सिर पर पत्थर दे मारा । पत्थर भारी था । मुझे भी खबर मिली । मैं लगभग विक्षिप्तावस्था में तेजी से स्कूटर चलाता हुआ वहां पहुंचा । कई लोग उनके इर्द-गिर्द जमा थे । सर से बहे खून की एक गाढ़ी रेखा कुछ दूर तक फैल गयी थी । आदरणीय जोशीजी, हमारे प्रिंसिपल साहब सड़क पर पड़े थे ।

— उपमुख्य चिकित्सा निदेशक,
पश्चिम रेलवे, चर्चगेट, मुंबई-४०००२०

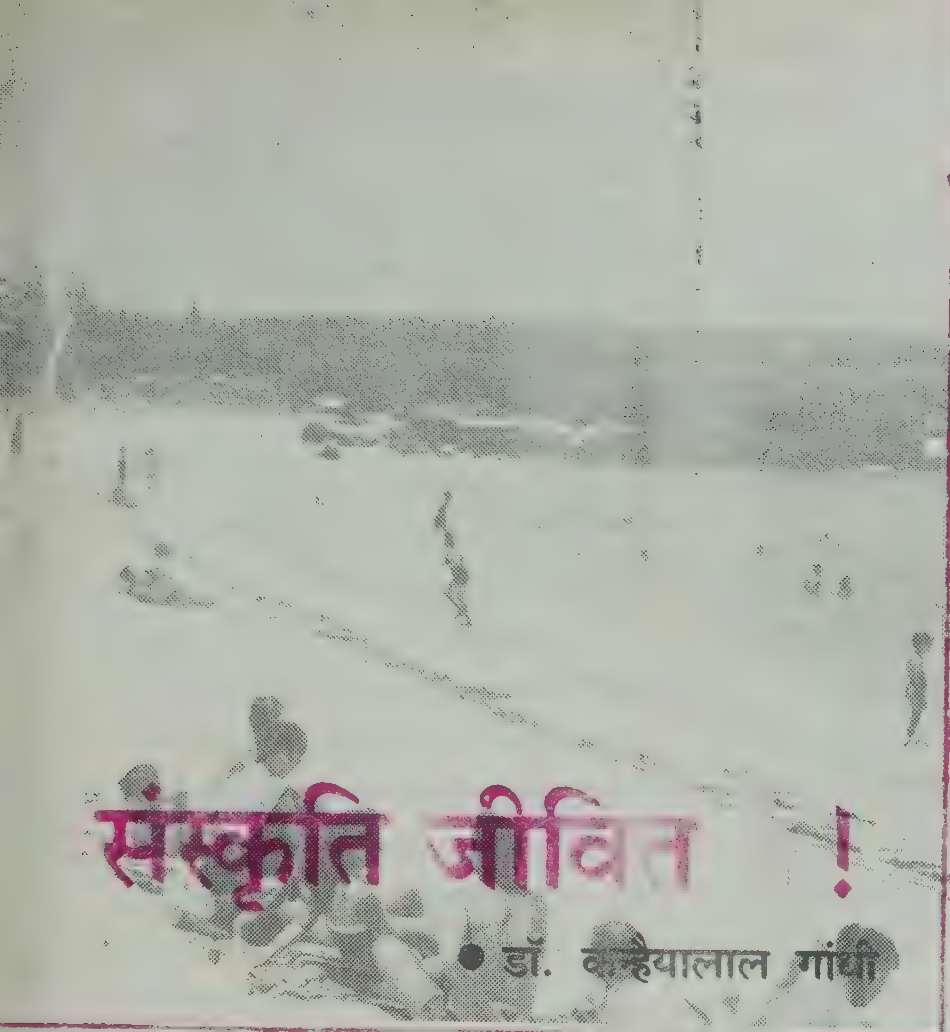


महासागर के बीच जहां भारतीय

मारीशस कई प्रकार से भारत के लिए बहुआयामी संबंधों की भूमि है । यहां के अधिकांश निवासी या तो स्वयं भारत मूल के हैं अथवा कुछ-एक पीढ़ियों पूर्व उनके पूर्वज भारत से मारीशस जा बसे थे । उनकी संस्कृति मूलतः भारतीय है और वहां जाकर बसनेवाले भारतीयों की मातृ-भाषा भोजपुरी थी या फिर कोई अन्य भारतीय भाषा थी ।

चारों ओर सैकड़ों और हजारों मील तक समुद्र से घिरे इस द्वीप-देश पर सबसे पहले, अब तक की खोजों के अनुसार, पुर्तगालियों ने कदम रखा था । यह बात पंद्रह-सोलह शताब्दी की है । सन् १६३८ में डच लोगों ने इस पर अपना कब्जा जमा लिया और अपने देश के राजकुमार मारिस के नाम पर इसे 'मारीशस' नाम दिया । गन्ने की खेती पर आधारित यहां की अर्थ-व्यवस्था कुछ हद तक इन्हीं लोगों की ऋणी है, क्योंकि यहां पर गन्ना बोने की शुरुआत डच लोगों ने ही की थी । सन् १७१५ में मारीशस को फ्रांसीसियों ने हथिया लिया । अपने खेतों पर काम करने के लिए वे निकटवर्ती मैडागास्कर द्वीप और दक्षिण अफरीका से दास यहां पर ले आये । लगभग एक शताब्दी बाद अर्थात् सन् १८१० में मारीशस पर अंगरेजों का आधिपत्य हो गया । सत्ता-हस्तांतरण के समय फ्रांसीसियों और अंगरेजों के बीच हुई संधि के अनुसार अंगरेज शासक यहां पर फ्रांसीसी भाषा, संस्कृति और रीति-रिवाजों में दखलंदाजी न करने पर राजी हो गये । फ्रांसीसियों की ओर से यह बड़ी बुद्धिमत्ता की मांग थी । यह इसी मांग का नतीजा है कि फ्रांस की हकूमत खतम होने के बावजूद वहां पर आज भी फ्रांसीसी संस्कृति का प्रभाव ज्यों का त्यों बना हुआ है ।

१२ मार्च, १९६८ को मारीशस दासता की जंजीरें तोड़कर आजाद हो गया और १२ मार्च, १९९२ को इसने अपने-आपको गणतंत्र घोषित कर दिया । भारत की मिसाल पर मारीशस गणतंत्र होने पर ब्रिटिश राष्ट्रमंडल का सदस्य बना । मारीशस के राष्ट्रपिता सर शिवसागर राम गुलाम अंगरेजों के खिलाफ आजादी की लड़ाई लड़ने में महात्मा गांधी की अहिंसा-पद्धति से बहुत अधिक प्रभावित हुए थे । सन् १९०१ में दक्षिण अफरीका से भारत लौटते समय जब गांधीजी यहां पर आये थे, तो उन्होंने स्वयं भी यहां के अप्रवासी भारतीयों को स्थानीय राजनीतिक गतिविधियों के प्रति सजग रहने का परामर्श दिया था । स्वतंत्रता की तीसवीं वर्षगांठ



संस्कृति जीवित !

• डॉ. कन्हैयालाल गांधी

के अवसर पर मारीशस के प्रधानमंत्री और डॉ. सर शिवसागर राम गुलाम के पुत्र डॉ. नवीन राम गुलाम ने कहा था कि मारीशस ने वर्षगांठ मनाने की तिथि १२ मार्च इसलिए चुनी थी, क्योंकि इसी दिन महात्मा गांधीजी ने डांडी मार्च शुरू किया था । एक तरह से मारीशस और भारत के बीच राजनीतिक रिश्तों या इन रिश्तों की पृष्ठभूमि का आरंभ बहुत पुराना है ।

सांस्कृतिक संबंध

जब ब्रिटिश संसद से दास-प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया गया, तो वहां पर 'आयात' किये गये हब्शी गुलामों ने गन्ने के खेतों पर काम करने से इनकार कर दिया । मजदूरों के अभाव की पूर्ति के लिए सन् १८३४ में अंगरेज ७८ भारतीय कुलियों का एक जत्था पानी के जहाज से मारीशस ले गये । उन्हें ऐसा करने में कोई बाधा नहीं आयी, क्योंकि उस समय भारत और मारीशस दोनों अंगरेजों के उपनिवेश थे । ये मजदूर अपने संक्षिप्त सामान में रामचरितमानस, श्रीमद्भगवद्गीता,हनुमान चालीसा और सत्यनारायण की कथा आदि पुस्तकें भी साथ ले गये थे । इस प्रकार मजदूरों के साथ भारतीय संस्कृति भी समुद्र-यात्रा कर रही थी और उन्हीं के साथ इस संस्कृति ने मारीशस की सीमा में प्रवेश पा लिया । यदि अंगरेजों को तनिक भी आभास हो जाता कि मजदूरों के साथ भारतीय संस्कृति भी मारीशस में प्रवेश कर रही है, तो इसकी रोकथाम के लिए वे कोई कदम जरूर उठाते । बंबई से ४७०० किलोमीटर और दिल्ली में ५५०० किलोमीटर दूर इस देश में अपने पुरखों की संस्कृति को जिंदा रखने के लिए प्रवासियों को निरंतर प्रयास करना पड़ा था । यदि उन्होंने ऐसा न किया होता, तो यह पौधा अब तक कुम्हला गया होता । दिनभर काम करने के पश्चात् वे रात्रि के समय मिलकर बैठते और धर्मग्रंथों का पाठ एवं पाठ की व्याख्या सुनते थे । इस प्रकार वे अपने धर्म तथा संस्कृति के साथ जुड़े रहे और एक-सूत्र में भी बंधे रहे ।

यहां के आवासी भारतीय अब भी

शिवरात्रि, दीवाली, ईद और अपने त्यौहार बड़े शौक से मनाते हैं । शिवरात्रि के दिन अब भी 'गंगा-तलाब' के निकट स्थित शिव मंदिर में सैकड़ों दर्शनार्थी आते हैं । इनमें से दसियों तीर्थ-यात्री प्राचीन रीति के अनुसार लंबा सफर पैदल तय करके वहां पर पहुंचते हैं । मारीशस में सभी मतों के पूजा के स्थान हैं ।

गंगा तलाब के बारे में एक कथा प्रसिद्ध है कि सन् १८९८ में अर्थात आज से एक सौ साल पहले, एक ब्राह्मण ने स्वप्न देखा कि अमुक स्थान पर स्थित पानी की झील भारत की पवित्र गंगा नदी से जुड़ी हुई है । लोगों ने इस स्वप्न को आकाशवाणी मान लिया और इसे गंगाजी की भांति पवित्र मानने लगे । सन् १९७२ में इसमें भारत से गंगाजी का जल ले जाकर डाला गया और इसका मूल नाम बदलकर 'गंगा तलाब' रख दिया । इसी तलाब के किनारे पर शिव मंदिर और इसके तट को छूती हुई एक पहाड़ी पर हनुमान मंदिर बना हुआ है । ऐसे स्थान मारीशस में अनिवासी भारतीयों की अपने पूर्वजों की संस्कृति के प्रति आस्था के प्रमाण हैं ।

मानवता और एकता

मारीशस में जानेवाले मजदूर निवास-स्थान, धर्म और भाषा की दृष्टि से यद्यपि नानाविध थे, परंतु उनमें एक बात में समानता थी कि वे सब कुली थे, सभी घर से बेघर हो चुके थे और सबको फ्रांसीसी जमींदारों और अंगरेज आकाओं से कोड़ों की मार सहनी पड़ती थी । चाहे कोई कुली उत्तर प्रदेश से भरती हुआ था या फिर बिहार, कलकत्ता, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश से, वे सब एक-दूसरे के दुःख-सुख के साथी थे । बहुत दिन तक एक ही जलपोत में साथ-साथ सफर करने के कारण उनमें भाईचारा हो गया । उनके मालिक उन्हें करीम, करतार या कैनिथ नाम से नहीं बल्कि कुली नंबर— एक, दो और तीन से संबोधित करते थे । यह किसी को मालूम नहीं है कि मारीशस की भूमि पर सबसे पहले कदम रखनेवाला कुली हिंदू था या मुसलमान, ईसाई था या सिख, सभी लोग बस इतना ही जानते हैं कि वह कुली 'नंबर— एक' था । मुसीबत आदमी को इनसान बना देती हैं । काम की दृष्टि से वे केवल निम्न स्तर के कुली थे, परंतु परिस्थितियों ने उनके अंदर मानवता का भाव कूट-कूट कर भर दिया था । मानव चरित्र का एक ऐसा पक्ष, जो भारत की उदात्त संस्कृति का प्रबल पक्ष है । यह हर्ष की बात है कि मारीशस मत-मतांतरों के भेद-भाव से ऊपर उठ कर परस्पर एकता को अब भी बनाये हुये हैं जो भारतीयों के लिए भी अनुकरणीय है ।

विरोध या विरोधाभास

जहां तक आज के अनिवासी भारतीयों की भाषा का संबंध है, इसमें कुछ-एक विरोध या विरोधाभास सामने आते हैं । धर्म के आधार पर वर्गीकरण के अनुसार मारीशस की आबादी में हिंदू ५१ प्रतिशत, बौद्ध २, मुसलिम १७, क्रियोल २७.५, फ्रैंच-मारीशसीय १, ईसाई २.७ तथा चीन मूल के मारीशसीक ३.२ प्रतिशत है ।

भाषा के आधार पर, जिनकी अपनी या उनके पूर्वजों की भाषा हिंदी है ४३ प्रतिशत, उर्दू १८, तमिल ९, तेलुगु ४, मराठी ३ प्रतिशत हैं ।

मारीशस दूरदर्शन के एक चैनल पर नियमित रूप से हिंदी के कार्यक्रम प्रसारित होते

हैं, जिसमें हिंदी के गीत, धारावाहिक, समाचार, फिल्में तथा अन्य कार्यक्रम होते हैं । परंतु इस सबके बावजूद मारीशस में हिंदी का प्रचलन पहले की अपेक्षा कम हुआ है, बढ़ा नहीं । इसका कारण यह है कि वहां के आर्थिक जीवन में हिंदी अथवा किसी अन्य भारतीय भाषा की कोई भूमिका नहीं है । सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए अंगरेजी और फ्रेंच की जानकारी पर्याप्त थी । गन्ने के खेतों के जमींदार अधिकांशतया फ्रांसीसी लोग थे, इसलिए फ्रांसीसी भाषा और पोलिटिकल-शासकों की अंगरेजी भाषा सीखने में लोग गर्व की अनुभूति करते थे । इसलिए समय के साथ भारतीय भाषाओं का इस्तेमाल और महत्त्व क्षीण होता चला गया होगा । इसलिए आज की युवा पीढ़ी भारतीय भाषाओं के बोलने में या तो असमर्थ है या इसमें कठिनाई का अनुभव करती है । इस स्थिति से पैदा खतरे को नजरअंदाज नहीं किया सकता कि भारतीय भाषाओं से संबंध टूटने पर अनिवासी भारतीयों की संतानों का भारतीय संस्कृति के साथ संबंध भी कमजोर पड़ सकता है, क्योंकि संस्कृति के संप्रेषण का माध्यम भाषा ही होती है ।

इन हालात के सामने यह जरूरी हो जाता है कि भारत और मारीशस के बीच सभी प्रकार के संबंधों को बनाये रखने और उन्हें सुदृढ़ बनाने के लिए कुछ ठोस कदम उठाये जाएं ।

ठोस कदम

इस समय प्रत्यक्ष और परोक्ष, दोनों रूप से मारीशस में फ्रैंच भाषा और संस्कृति का प्रभाव बढ़ता जा रहा है । इसका कारण फ्रांसीसियों का वर्तमान आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक निवेश हो सकता है या कुछ और भी । जिस अनुपात में मारीशसीय लोगों के जीवन में फ्रांसीसी प्रभाव बढ़ता जा रहा है, उसी अनुपात में भारतीय संस्कृति का प्रभाव वहां पर कम होता जा रहा है । इस प्रकार मारीशस में हमें जो आरंभिक लाभ मिला था, वह भारत के हाथ से निकलता दिखाये देता है । यहां पर एक और बात भी याद रखनी होगी कि प्रभाव और सत्ता, कुछ हद तक पर्यायवाची शब्द है । जब तक भारत राजनीतिक, आर्थिक एवं सामरिक दृष्टि से शक्ति संपन्न नहीं बनेगा, इसका सांस्कृतिक प्रभाव कोई अन्य देश नहीं मानेगा, चाहे हमारी संस्कृति कितनी ही महान् क्यों न हो । सन् १९७६ में मारीशस में दूसरे विश्व हिंदी सम्मेलन में, किसी साधारण व्यक्ति ने नहीं, वहां के प्रधानमंत्री डॉ. सर शिवसागर राम गुलाम ने गर्व से कहा था कि 'मारीशस एक लघु भारत है । हिंदी भाषा यदि भारत से बाहर किसी देश में बोली जाती है, तो वह देश मारीशस है । यदि

जब ईश्वर समस्त सृष्टि को बना चुका, तो इसके बाद उसने सृष्टि में रंग भरना शुरू किया । इस दौरान जब हरा रंग भरने की बारी आयी होगी तो शायद, ईश्वर ने यह काम मारीशस से आरंभ किया होगा । यही कारण है कि इस देश में हरियाली का जो सौंदर्य देखने को मिलता है, उसे शब्दों में बयान करना कठिन है ।

भारत के बाहर कोई हिंदी भाषी प्रधानमंत्री है, तो वह मैं हूं । हमारे पुरखों की नदी गंगा ने हमारे ऊपर कृपा की है और वह भी यहां पर चली आयी है ।' उनका संकेत गंगा तलाब की ओर था ।

मारीशस में हिंदुस्तानी अभी भी बहुसंख्या में हैं, इसलिए सरकारी, अर्द्धसरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर कुछ टिकाऊ कदम उठाने पर स्थिति में बदलाव लाया जा सकता है ।

विश्वीकरण की प्रवृत्ति के समर्थक देशों की गणना दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । इस प्रवृत्ति को देखते हुए भारत को मारीशस के साथ औद्योगिक और आर्थिक क्षेत्रों में अपनी हिस्सेदारी बढ़ानी चाहिए । इस सिलसिले में हमारी सोच सुप्रसिद्ध 'गुजराल सिद्धांत' के अनुसार होनी चाहिए, अर्थात, यह नहीं कि मारीशस में हमारे निवेश के बदले में मारीशस भारत के लिए क्या करेगा, परंतु केवल इतनी कि लगभग २००० वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के छोटे-से देश के लिए हम क्या कर सकते हैं । इसका मतलब यह नहीं है कि मारीशस हमें कुछ भी नहीं दे सकता । अपनी जन्मभूमि भारत के साथ प्रतिदिन का संपर्क न रहने पर भी यहां के प्रवासी भारतीयों ने भारतीय संस्कृति को वहां पर जीवित रखा है । यद्यपि, प्रवासी भारतीय मजदूर वर्ग के थे, परंतु आज वहां प्रति व्यक्ति की औसत आय प्रति भारतीय की आय से कहीं अधिक है । सीमित भौतिक और मानव संसाधनों के बावजूद देश ने उद्योग, व्यापार, कृषि, विज्ञान और टेक्नोलॉजी में काफी उन्नति की है । मारीशस के उदाहरण में हम बहुत कुछ सीख सकते हैं ।

भारत में 'भारत-मारीशस मित्रता' जैसी कोई संस्था नहीं है । इसकी स्थापना हो, क्योंकि जो काम गैर-सरकारी और स्वयंसेवी संस्थाएं कर सकती हैं, कई कारणों से, सरकार वह काम नहीं कर सकती । मारीशस की राजधानी पोर्टलुई में इस प्रकार की संस्था मौजूद है । वहां पर स्थित हमारा हाई कमीशन, अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के नियमों के दायरे में रहते हुए, यदि इस संस्था को यथासंभव प्रोत्साहन दे, तो यह एक ठीक कदम होगा । सौभाग्य से इस समय मारीशस में भारतीय उच्चायुक्त श्री मणि त्रिपाठी, एक अनुभवी राजनयिक हैं और भारतीय संस्कृति की अच्छी जानकारी रखते हैं । उनकी मृदु स्वभाव सहधर्मिणी श्रीमती शशि त्रिपाठी भी भारतीय विदेश सेवा की अफसर हैं और भारतीय संस्कृति से उनका गहरा लगाव है । इन दोनों तथा वहां पर हमारे दूतावास में काम कर रहे अधिकारियों और कार्यकर्ताओं द्वारा इस ओर ध्यान देने से भारत-मारीशस संबंधों को अनेक नये आयाम दिये जा सकते हैं ।

'भारत-मारीशस मित्रता' संस्था तथा अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं एवं सरकार द्वारा जब किसी सांस्कृतिक प्रोग्राम के अंतर्गत डेलिगेट मारीशस भेजे जाएं, तो उनमें पत्रकारों, लेखकों, कलाकारों, धार्मिक नेताओं को उचित प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए ।

(ध्यान रहे उपराष्ट्रपति मारीशस गये थे, लेखक भी उनके साथ थे । तब भी किसी पत्रकार को वे अपने साथ नहीं ले गये)

— सं.

— निदेशक, उपराष्ट्रपति निवास,
६, मौलाना आजाद रोड,
नयी दिल्ली-११००११

तमिल कहानी

मातृत्व

• विक्रमन्

क्रिं-क्रिं धक...

कार बहुत तेज स्पीड़ से आ रही थी। अचानक ब्रेक लगने से क्रीं-क्रीं... की आवाज करती हुई वह रुक गयी। लोगों की निगाह उस कार पर गयी। चारों ओर भीड़ लग गयी।

"क्या हुआ ? क्या हुआ ?"...

"मां"...घबरायी हुई धीमी-सी आवाज थी उस बच्ची की।

ड्राइवर पोन्नुसामी घबरा गया। आज सुबह न जाने वह किसका मुंह देखकर घर से निकला है ? ऐसा हुआ कैसे ? जब स्टियरिंग पर हाथ रखा तो समझो कि सड़क पर चलनेवालों की सुरक्षा अपने हाथ में है। बच्ची कार के सामने आ कैसे गयी ?

पोन्नुसामी झटपट गाड़ी से उतरा। सड़क पर गिरी बच्ची को उसने गोद में उठा लिया। बच्ची रो रही थी। चोट तो उसे ज्यादा नहीं लगी थी। पांच-छह साल की होगी वह। खाना खाने के लिए वह स्कूल से घर लौट रही थी। उसके साथ बुढ़िया दादी भी थी लेकिन, बच्ची दादी से अपना हाथ छुड़ाकर अकेले ही घर जाने की जिद में सड़क पर दौड़ पड़ी थी।

पोन्नुसामी ने बच्ची को उठाया तो एक आदमी ने सड़क पर बिखरी किताब-कापी और स्कूल के बैग को। बच्ची के कपड़ों पर लगी धूल को झाड़ते हुए पोन्नुसामी ने देखा, चोट तो कहीं नहीं लगी है ? हां, गिरने से एक हाथ पर थोड़ी-सी खरोंच जरूर आ गयी है, जहां पर जरा-सा खून झलक आया है।

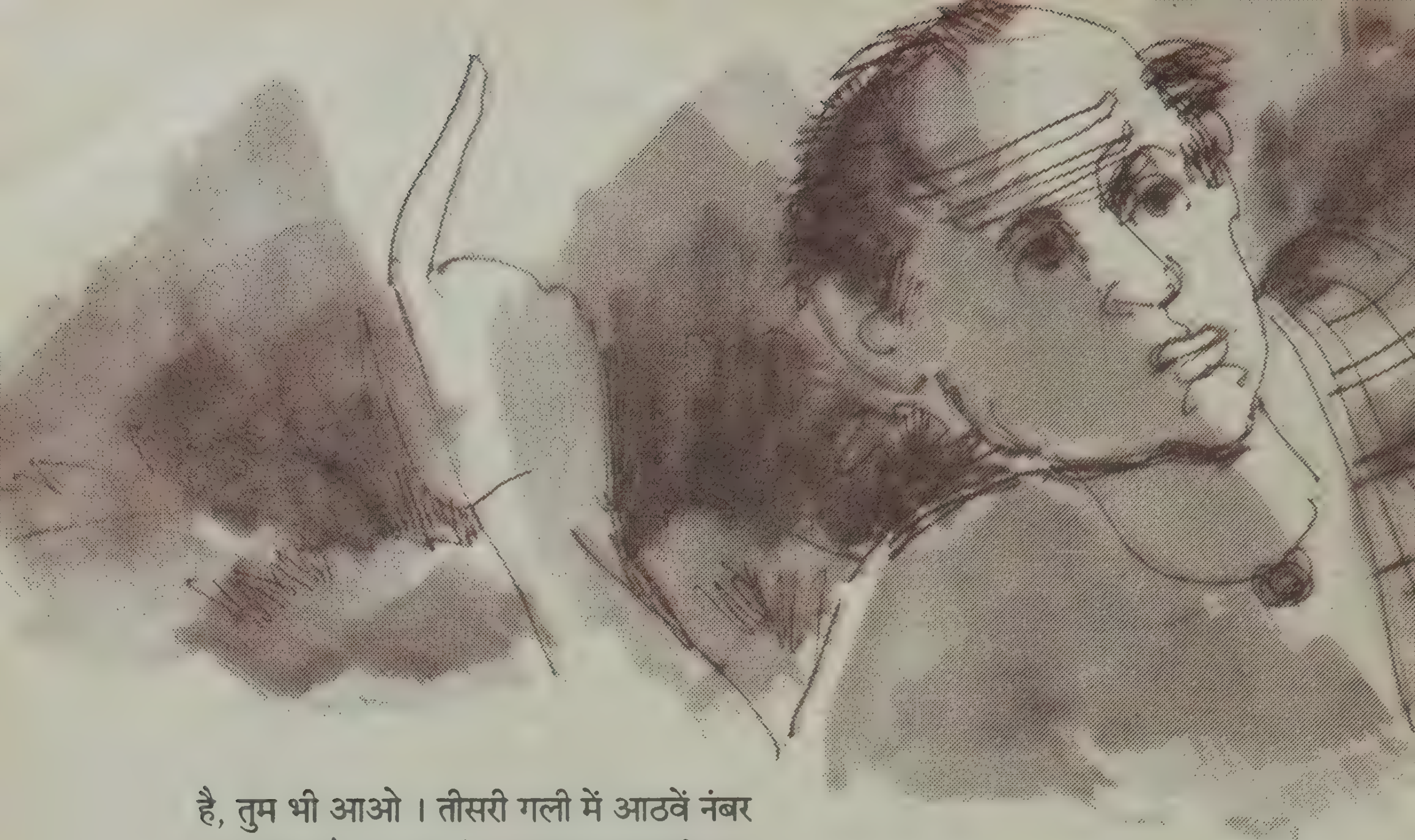
"आंखें बंद करके गाड़ी चलाते हो क्या ?" भीड़ में से किसी की तेज आवाज सुनायी दी।

आंखें बंद करके गाड़ी चला रहा होता तो इस बच्ची की आवाज भी न सुनायी पड़ती... पोन्नुसामी ने मन ही मन कहा—पर, इस समय कुछ भी बोलना उसे उचित नहीं लगा। तभी पोन्नुसामी को मारने के लिए किसी ने हाथ उठाया ही था कि, 'अरे चलो हटो, चोट-ओट कुछ लगी नहीं, फिर काहे का शोर-शराबा। पहले बच्ची को देखो, उसे चुप कराओ, घर भेजो... ।' एक वृद्ध सज्जन ने कहा।

भीड़ कुछ कम हुई पर, बच्ची का रोना कम न हुआ। वह लगातार रोये जा रही थी। बुढ़िया दादी ने पोन्नुसामी से बच्ची को अपनी गोद में ले लिया।

"दादीजी, मैं भी एक गृहस्थ हूं, बाल-बच्चों की कीमत जानता हूं। इस बारे में घर में किसी से कुछ न कहिएगा।" धीमी आवाज में पोन्नुसामी ने कहा।

"फ़िक्र न करो बेटा, अगर ठीक समय पर तुम गाड़ी न रोकते तो इस बच्ची की क्या हालत होती, यह तो भगवान ही जानता है। आज तुमने इसकी जान बचा दी।... घर पास में ही



है, तुम भी आओ । तीसरी गली में आठवें नंबर का मकान है ।'' दादी ने आत्मीयता दिखाते हुए कहा ।

''मत रो बेटा, आज तो तू भगवान की कृपा से ही बच गयी,'' दादी ने बच्ची को पुचकारते हुए कहा, लेकिन बच्ची का रोना था कि रुक ही नहीं रहा था ।

*** ***

रोती हुई बच्ची की लिये दादी साथवाली गली में घुस गयी ।

पोन्नुसामी का दिल अब भी धड़क रहा था । उसने सोचा कि चलो, एक गिलास चाय पी लूं । उसने गाड़ी को एक किनारे लगाया और चाय की दुकान में घुस गया ।

चाय की दुकान में एक आदमी कह रहा था, ''ड्राइवर ने बच्ची को बचा लिया'', तो दूसरा आदमी बोला, ''ये ड्राइवर बड़े घमंडी लोग होते हैं, उन्हें किसी की चिंता नहीं होती । चलो, चिंता न करें, न सही, पर गाड़ी तो सावधानी से चलाएं ।''

इस बातों को सुनकर पोन्नुसामी को बहुत दुःख हुआ । वह सोचते-सोचते विचारों में खो गया । जब उसकी शादी हुई थी, तब वह पच्चीस साल का था और उसकी पत्नी पवलवल्ली सोलह साल की । उन दिनों पोन्नुसामी के मन में बहुत-सी अभिलाषाएं थीं । गले में सोने की पतली-सी चैन पहने, घने बाल, कुरते के अंदर से झलकती गंजी, सजा-धजा, हाथ में रंग-बिरंगी किताबें लिए वह दिनभर यों ही घूमता-फिरता रहता था ।

शादी के बाद विदाई के समय उसके ससुर ने कहा, 'देखो भाई, पवलवल्ली बिना मां की बच्ची है । खयाल रखना, उसे कोई भी कष्ट न हो । उसकी अच्छी तरह देखभाल करना । उसे तंग मत करना । अब मैं उसे तुम्हारे हाथ सौंप रहा हूं ।'' ससुर की यह बात सुनकर उसे बहुत हंसी आयी । मन हुआ कि कह दे कि पिताजी क्या मैं इतना मूर्ख हूं, जो उसे तंग करूंगा ?

ससुर की सिफारिश पर एक मोटर कंपनी में उसे क्लीनर की नौकरी मिल गयी । उसने शीघ्र ही मोटर मरम्मत करना सीख लिया और फिर ड्राइविंग भी सीख ली । उसकी लगन, मेहनत



और ईमानदारी के साथ अच्छी ड्राइविंग को देख एक अंगरेज साहब ने उसे अपनी कंपनी—लिटिल ब्यूटी में ड्राइवर रख लिया ।

अच्छी नौकरी । अच्छा वेतन । पति-पत्नी दोनों खुश और आराम से थे । लेकिन, इस नौकरी में उसे महीने में पंद्रह-बीस दिन घर से बाहर रहना पड़ता था । पवलवल्ली को अकेलापन बहुत खलता । साथ ही उसे डर भी लगा रहता कि कहीं पोन्नुसामी शहर में किसी दूसरी औरत के जाल में फंस गया तो उसका क्या होगा ?

पवलवल्ली के मन के डर को वह समझाने-बुझाने के बाद भी निकाल नहीं पाता था ।

पवलवल्ली दो-तीन बार गर्भवती हुई, पर हर बार गर्भ गिर गया ।

एक दिन पवलवल्ली ने उससे पूछा, "हमें

बच्चा क्यों नहीं हो रहा... क्या हमसे पूजा-पाठ में कोई गलती हुई या कोई और वजह है ? मगर तुम्हें कुछ पता हो तो बताओ ।''

''कितनी नादान हो तुम ! तुम इतनी फिक्र मत करो । एक क्या, दस बच्चे पैदा होंगे,'' पोन्नुसामी ने उसके गाल थपथपाते हुए कहा ।

''बस, तुम यूं ही बोला करो । तुम्हें क्या पता, आसपास की औरतों को अपने-अपने बच्चों को लाड़-प्यार से खिलाते-पुचकारते देख मुझे तो रोना आता है । फिर तुम भी घर पर नहीं रहते ।'' कहते-कहते पवलवल्ली की आंखों से आंसू बह निकले ।

पवलवल्ली जल्दी ही चौथी बार गर्भवती हुई । पोन्नुसामी ने ठीक-ठाक ढंग से सारी व्यवस्था की । रुपये भी जमा करके रखे । कुछ समय बाद बच्चा हुआ ।

बच्चे को देख पास-पड़ोस की औरतें कहतीं, ''तुम्हारा बेटा तो बिलकुल राजा बेटा है । एकदम तुम्हारे पति पर गया है । उसी की तरह बड़ी-बड़ी आंखें... लंबी नाक...।'' इसे सुनकर पवलवल्ली खुशी से झूम जाती !

''क्यों जी, बैठे-बैठे सो गये क्या ? चाय तो ठंडी हो गयी ।'' चाय वाले की आवाज सुनकर पोन्नुसामी का ध्यान टूटा । झट से वह ठंडी बेस्वाद चाय को पी गया और उठकर बाहर निकल आया ।

उसकी निगाह यकायक सड़क पर गयी । एकदम ब्रेक लगाने की वजह से सड़क पर टायरों के घिसटने के निशान बन गये थे । अगर, उसने ठीक समय पर ब्रेक न लगाया होता तो न जाने इस बच्ची का क्या होता ?

''बार-बार बच्चे पैदा हों और मरें, इसके लिए हम क्यों तकलीफ उठाएं । अब हमें बच्चे-बच्चे कुछ भी नहीं चाहिए । हम ऐसे ही रह लेंगे''—पोन्नुसामी अकसर कहता रहता । पवलवल्ली भी सुनकर मौन रहा करती । पर उसके मौन मनोभावों को पोन्नुसामी समझ ही नहीं पाता ।

बच्ची को खास चोट तो नहीं आयी, पर बच्ची लगातार रो क्यों रही थी ?... उहं, कौन जाने आजकल पवलवल्ली भी तो बहुत रोया करती है ।

पोन्नुसामी ने सोचा, पवलवल्ली आजकल कहती रहती है कि तुम तो किसी के बारे में भी नहीं सोचते । मेरे मन में कैसी हलचल मची रहती है, तुम्हें कुछ पता भी है ?

पोन्नुसामी ने सोचते-सोचते कार के पहियों पर नजर डाली । ''हाय राम, ये क्या... ?'' एक छोटी-सी गुड़िया कार के पहिये के नीचे फंसी हुई थी । उसने उस टूटी गुड़िया को निकाला । ''उफ, अब समझ में आया कि बच्ची क्यों लगातार रो रही थी ।''

पवलवल्ली के प्रसव के समय पोन्नुसामी उसके पास ही था । बेटे को देख-देख दोनों को खुशी का कोई ठिकाना नहीं था । अपने

नन्हें-मुन्ने बालक की चाल से, बोल से, खेल से और मुसकान से उन्हें बेहद खुशी मिला करती थी।

"तू किसका प्यारा है ?" कोई पूछता तो बच्चा झट से जवाब देता, "बाबूजी का प्यारा हूं।"

उन लोगों के दिन हंसी-खुशी से रंग-बिरंगे सपनों के बीच गुजर रहे थे कि एक दिन बच्चा अचानक बीमार पड़ा। उसे क्या बीमारी हुई, कुछ भी समझ नहीं आया। इलाज कराया, पर बच्चा बचा नहीं। दोनों दुःख के अथाह सागर में डूब गये।

कुछ ही दिनों में पोन्नुसामी ने तो खुद को संभाल लिया पर पवलवल्ली खुद को नहीं संभाल पायी। वह कमजोर और अशक्त हो गयी, हंसना-बोलना भी भूल गयी।

"बार-बार बच्चे पैदा हों और मरें, इसके लिए हम क्यों तकलीफ उठाएं। अब हमें बच्चे-वच्चे कुछ भी नहीं चाहिए। हम ऐसे ही रह लेंगे"—पोन्नुसामी अकसर कहता रहता। पवलवल्ली भी सुनकर मौन रहा करती। पर उसके मौन मनोभावों को पोन्नुसामी समझ ही नहीं पाता।

बहुत अजीब बात है। एक मासूम बच्चे के मन में खिलौना सिर्फ खेलने की वस्तु नहीं होती बल्कि, उसके लगाव की वस्तु होती है।
पोन्नुसामी ने कार शेड में रोकी। उसकी जेब में ओवर टाइम के पांच रुपये थे। इधर एक दुकान थी, जिसमें पवलवल्ली की पसंद की बहुत-सी चीजें मिला करती हैं। उस दुकान पर पोन्नुसामी की नजर एक जीते-जागते बच्चे की तरह की एक सुंदर-सी गुड़िया पर पड़ी। दाम था चार रुपये बारह आना। उसने गुड़िया खरीद



ली। शेष बची चवन्नी से कुछ मिठाई और फूल खरीद लिये।

पोन्नुसामी तीसरी गली के आठवें नंबर के मकान की ओर चल पड़ा। मकान के बाहर उसे बूढ़ी दादी खड़ी मिल गयी। उसने पूछा, 'दादीजी, बच्ची कहां है ?" दादी को उसे पहचानने में कुछ देर लगी। वह बोली, "आओ बेटा ! बच्ची का रोना तो रुक ही नहीं रहा। शायद, वह बहुत डर गयी है।"

"मैं दवा लाया हूं, अब वह नहीं रोएगी। आप उसे बुलाइएगा।"

बच्ची को उसने तुरंत पहचान लिया। उसने बच्ची की ओर गुड़िया बढ़ाते हुए कहा, "बच्ची, तुम्हारे लिए गुड़िया है।"

गुड़िया को देख बच्ची की आंखों में चमक आ गयी। कुछ हिचकिचाने के बाद बच्ची ने गुड़िया की ओर हाथ बढ़ा दिया।

पोन्नुसामी जब एक छोटी-सी बच्ची के मन को समझ गया, तो क्या उसे पवलवल्ली के मन को समझने में देर लगेगी ?

वह खुशी-खुशी घर लौट पड़ा।

— अनुवाद : चारु रत्नम्

विधि-विधान

> **विधि-विधान स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं । प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ**
>
> **—रामप्रकाश गुप्त**

तलाक मिल जाए

कुंवर अनुपम परिहार, इलाहाबाद : मेरी बहन की शादी ग्यारह साल पहले हुई थी । शादी के दूसरे वर्ष बहन अचानक मानसिक रूप से अस्वस्थ हो गयी । सुसरालवाले उसे मारपीट कर मेरे घर छोड़ गये । मैंने उसका इलाज कराया । वह ठीक हो गयी तो उसे पुनः सुसराल भेज दिया । सुसराल वालों ने उसकी नियमित रूप से दी जाने वाली दवा बंद कर दी जिससे वह पुनः अस्वस्थ हो गयी । यही क्रम चलता रहा । इसके बाद सन् ९५ में जीजाजी ने दूसरी शादी कर ली । बहन अब हमारे साथ है । हम चाहते हैं कि बहन को तलाक और स्त्री-धन वापस मिल जाए ।

वधु को सुसराल पक्ष की तरफ से मिले उपहार भी वधु का स्त्री धन होता है । कानून इस पर वधु का अधिकार स्वीकार करता है ।

पत्नी से तलाक लिये बगैर किया गया दूसरा विवाह अवैध होता है । आपके जीजाजी की दूसरी शादी भी अवैध ही मानी जाएगी । पत्नी का अधिकार तो आपकी बहन को ही प्राप्त है ।

यह निर्णय तो आपकी बहन को ही करना है कि वह दूसरी शादी को अवैध कराना चाहती हैं या पति द्वारा दूसरे विवाह के आधार पर तलाक लेना चाहती है । तलाक के लिए मुकदमा उस न्यायालय में हो सकता है, जिसके अधिकार क्षेत्र में विवाह हुआ है । मुकदमा उस न्यायालय में भी हो सकता है, जिसके अधिकार क्षेत्र में दोनों पति-पत्नी के रूप में साथ-साथ रहे हों ।

जून ९५ में आपके जीजाजी ने दूसरा विवाह किया । इसलिए तलाक की कार्यवाही को देरी से की गयी कार्यवाही नहीं माना जा सकता ।

साझेदारी तोड़नी है

विजय राजौरिया, सागर : हम तीन मित्रों ने साझेदारी में प्रधानमंत्री रोजगार योजना के अंतर्गत बैंक से एक जीप फाइनेंस करायी थी । जीप आने के कुछ समय बाद मेरे अन्य दोनों साथियों ने बलपूर्वक जीप अपने नियंत्रण में ले ली, जिसकी आय वे अपने पास ही रखते हैं । बैंक में भी उन्होंने शुरू-शुरू में दो-चार किश्तें ही जमा करायीं, इसके बाद नहीं करायीं । यह भी पता चला है कि जीप का उपयोग कुछ अवैध कार्यों में किया जा रहा है । मैंने बैंक को इस सब की सूचना दे दी है लेकिन, बैंक ने कोई

भी कार्यवाही करने में असमर्थता जतायी है । कृपया बताए कि किस प्रकार साझेदारी को समाप्त कराकर मैं अपने दायित्वों से छुटकारा पा सकता हूं ?

बैंक को तीनों भागीदारों से रुपया वसूल करने का अधिकार है ? यह ठीक है कि बैंक रुपया वसूल करने के लिए, जीप कुर्क करने की प्रार्थना न्यायालय से कर सकता है । परंतु यह तो तब ही होगा जबकि बैंक रुपया वसूली की कार्यवाही शुरू करे ।

आप न्यायालय में शेष दो भागीदारों के विरुद्ध दावा करके अब तक का हिसाब मांग सकते हैं । न्यायालय से आप यह भी प्रार्थना कर सकते हैं कि वह अन्य भागीदारों को आदेश दे कि आपको काम से पृथक न रखा जाए । पूरे काम की देखभाल करने के लिए रिसीवर भी नियुक्त कराया जा सकता है । इससे बैंक की देनदारी का भुगतान हो सकेगा । साझेदारी समाप्त करने के लिए भी आप न्यायालय में दावा कर सकते हैं ।

क्षति क्या हुई ?

कखग : उत्तर प्रदेश के शहर की नगरपालिका को मैंने प्रार्थना-पत्र देकर अनुरोध किया था कि मेरी माताजी ने मुझे मकान का आधा हिस्सा दे दिया है, अतः आधे हिस्से का गृह-कर व जल-कर आदि मेरे नाम किया जाए । माताजी ने भी ऐसा ही प्रार्थना-पत्र नगर पालिका को दिया था कि उन्होंने आधा हिस्सा बेटे को दे दिया है अतः गृहकर आदि उसके नाम लगाया जाए । अधिकारियों द्वारा मांगे गये शपथ-पत्र तथा नोटरी द्वारा प्रमाणित कागजात भी मैंने दाखिल कर दिये थे । डेढ़ वर्ष बाद अब नगर पालिका का एक पत्र आया है जिसमें रजिस्टर्ड कागजात मांगे गये हैं, जबकि मैं उन्हें डेढ़ साल पहले ही जमा कर चुका हूं । नगर पालिका के अधिकारी बहानेबाजी व विलंब कर रहे हैं । उससे मुझे जो क्षति हुई तथा परेशानी उठानी पड़ी है, इसकी पूर्ति के साथ न्याय प्राप्त करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ?

नगर पालिका द्वारा आपके द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के मूल दस्तावेज मांगे जाने को अनुचित नहीं कहा जा सकता । नगर पालिका आपके प्रार्थना-पत्र पर निर्णय लेने में धीरे चल रही है । सभी दस्तावेज एक साथ मांगे या देखे जा सकते थे । आपको इस विलंब के कारण क्या क्षति हुई, उसका उल्लेख आपके पक्ष में नहीं है । नगरपालिका की गलती के कारण आपके प्रार्थनापत्र के निर्णय में हुए विलंब के फलस्वरूप हुई क्षति की पूर्ति की मांग आप कर सकते हैं । क्षतिपूर्ति के लिए नगर पालिका को नोटिस देने के बाद आप न्यायालय में जा सकते हैं ।

अब संभव नहीं

गिरीश प्रसाद गुप्ता, खगड़िया : मैं सन् १९९२ में जिला गव्य विकास पदाधिकारी कार्यालय, दरभंगा में टंकक-लिपिक के पद पर कार्यरत था । मैंने अपने अधिकारी को मौखिक आदेश का पालन करते हुए अपने विभाग के निदेशालय के तत्कालीन उप-निदेशक का एक

निजी कार्य कराया, जिसमें मेरे ८२० रुपए खर्च हुए, जो उन्होंने मेरे हर संभव प्रयास के बाद, आज तक नहीं दिये। वह सेवा-निवृत्त भी हो गये और मेरा स्थानांतरण खगड़िया में हो गया।

हार कर मैंने विभाग से उक्त उप-निदेशक से पैसा वसूली के लिए मुकदमा दायर करने की अनुमति मांगी, जिसे विभाग ने यह कह कर लौटा दिया, 'यह आपका व्यक्तिगत मामला है। इसमें निदेशालय स्तर से कोई कार्यवाही करने का प्रश्न ही नहीं उठता।'

बताइए, अब मैं अपने पैसे की वसूली के लिए क्या करूं?

जबकि निदेशालय ने इसे आपका व्यक्तिगत मामला कहकर छोड़ दिया है तब ऐसी स्थिति में रुपया वसूली के लिए आप मुकदमा करने को स्वतंत्र हैं। रुपया सूद समेत वसूल करने की कार्यवाही की जा सकती थी।

आपने यह रकम सन् १९९२ में लगायी थी, जिसे अब तीन वर्ष से अधिक का समय हो चुका है। परिसीमा अधिनियम १९६३ के अंतर्गत रुपया वसूली की कार्यवाही के लिए तीन वर्ष की समय सीमा निर्धारित है। इसलिए आपकी कार्यवाही समय सीमा से बाहर होने के कारण, न्यायालय से डिग्री प्राप्त करना संभव नहीं होगा।

कब्जा बत्तीस साल पुराना

डॉ. आर.एस. पांडे, इलाहाबाद : ३२ साल पहले मेरे पिताजी ने गांव से लगी एक बीघा जमीन दो भाइयों से कच्ची लिखा-पढ़ी करके खरीदी थी। इस जमीन पर चाहरदीवारी, बीच में एक घर और लगभग तीस साल पुराने पचास आम के पेड़ लगे हैं। मेरे पास इस जमीन की खरीद संबंधी कोई कागजात नहीं है। पिछले दिनों मेरे खानदान के ही एक व्यक्ति ने, जिसका कि खेत इस जमीन के बगल में है, यह दावा किया है कि इस जमीन में आठ बिस्वा जमीन उनकी आ रही है।

क्या तीस साल के कब्जे, पुराने पेड़ों और घर के आधार पर मैं मुकदमा लड़ सकता हूं, जबकि यह जमीन अब भी खेत के रूप में ही दर्ज है और उन्हीं दोनों भाइयों के नाम है, जिनसे मेरे पिताजी ने खरीदी थी।

न्यायालय में मूल प्रश्न प्रमाण प्रस्तुत करने का होता है। आप किस प्रकार से प्रमाणित कर सकेंगे कि आम के पेड़ आपके हैं तथा उसमें मकान आपका बनवाया हुआ है। इस मकान का तथा जगह का प्रयोग यदि आप स्वामी के रूप में कर रहे हैं, तब ही प्रतिकूल कब्जा की बात प्रमाणित की जा सकती है।

जिन व्यक्तियों के नाम जमीन लिखी है उनके अलावा अन्य व्यक्ति किस आधार पर स्वामित्व की बात कर रहे हैं। आठ बिस्वा जमीन पर उन्होंने पिछले ३२ वर्ष से कोई अधिकार नहीं मांगा। तीस साल से अधिक के कब्जे का आधार पर मुकदमा लड़ा जा सकता है। साथ ही यह कहना भी उचित रहेगा कि इस व्यक्ति विशेष का जमीन पर कोई अधिकार नहीं है क्योंकि, न तो उनका जमीन पर स्वामित्व है और न ही कब्जा।



धर्म का रहस्य

● डॉ. सुधा पांडे

"जाजलि तुम्हारी कठोर तपस्या और यह साधना अवश्यमेव उत्कृष्ट है, किंतु धर्मज्ञान में तुम वाराणसी के तुलाधार वैश्य के समान नहीं हो, फिर भी तुम अपने धर्म का इतना गर्वपूर्ण बखान कर रहे हो । तुलाधार तो कभी इस प्रकार गर्वभरी वाणी में नहीं बोलते हैं ।"

पार्थिव देह को मृतवत बनाकर सर्वसहिष्णु बनने की कामना से उन्होंने अखंड तपस्या करनी प्रारंभ कर दी थी । वर्षा से गीली केशराशि उलझकर वृक्ष की जटाओं-जैसी बन गयी थी । वर्षों तक अपने स्थान से लेश मात्र भी न हिलने के कारण शरीर पर धूल की मोटी परतें जम गयी थीं, निर्जल-निराहार तप करते उनकी देहयष्टि सूखे काष्ठ की भांति रह गयी थी, किंतु तप के तेज से चित्त सुस्थिर व्यग्रता विरहित था । काष्ठ की भांति जराजर भरे एक ठूंठ सूखे पेड़ की भांति दिखनेवाले उनके सिर की जटाओं में अवसर पाते ही एक गौरैया ने घोंसला बना लिया । वहीं गौरैया ने अंडे दिये और उनके नन्हें पक्षी भी वहीं बसेरा करने लगे । आनंद से मुनि जाजलि का हृदय करुणा विगलित हो उठा था. यही अनुभव करके कि उनके प्रश्रय में वे जीव निर्भय, निश्चिंत हो निवास कर रहे हैं । जाजलि अपने स्थान से हिले-डुले बगैर, उन्हीं पक्षियों के सुख में सहयोग देकर अपनी साधना की सफलता देख रहे थे । एक समय ऐसा आया कि बच्चों सहित सभी पक्षी दूर कहीं उड़ गये

और लौटे भी नहीं । महात्मा जाजलि के लिए यही आनंद का विषय था कि पक्षियों का परिवार उनकी जटाओं में लंबी अवधि तक रहा और वह लेशमात्र भी विचलित न हुए । उनकी साधना पूर्ववत अडिग रही । इसी भावना से गर्व से भर उठे और आत्मालाप करते हुए अंतर्मन की बातें कह उठे कि मैंने इस धरती पर धर्म का रहस्य जान लिया है । भुवन भास्कर की तेजस्विता से बढ़कर भी मेरी तपस्या का तेज है । मेरी इस धर्मसाधना के माहात्म्य को पूरे विश्व में प्रसिद्ध होना चाहिए । मैंने विपरीत क्षणों में कठोर-से-कठोर तपस्या करके विजय पायी । कोई भी बाधा मेरे तप में विघ्न नहीं डाल पायी है, अतः अब यहां से जाकर मनुष्य समाज में पहुंचूंगा । उन्हें इस धर्म के रहस्य और अपनी तपस्या की महिमा से परिचित करवाऊंगा और देखूंगा कि विश्व में ऐसी महान साधना करनेवाला कौन अन्य है ? आत्मश्लाघा और अहंकार से उनका मन-प्राण ओत-प्रोत था, तभी उन्हें आकाशवाणी से ये वचन सुनने को मिले—

'तुम धर्म के रहस्य की प्राप्ति में तुलाधार के समान भी नहीं हो । जाओ वाराणसी जाकर तुलाधार से धर्म के सच्चे स्वरूप की शिक्षा प्राप्त करो ।'

उद्विग्न हो उठे थे जाजलि । ईर्ष्या और क्रोध से उनके मुख की भंगिमाएं विकृत हो उठीं । इतनी घोर साधना । दिन-रात, धूप-वर्षा-शीत किसी की चिंता किये बगैर अविचलित भाव से विजन-अरण्य में निराहार जीवन बिताया और वाराणसी के एक साधारण विक्रेता तुलाधार वैश्य की धर्म साधना के समक्ष उनकी सारी तपस्या निष्फल है । अंतर्द्वंद्व से मन हाहाकार कर उठा । तप की स्थिरता क्षणभर में ही मानो जल के फेन की भांति विलीन हो गयी ।

जैसे भी हो शीघ्र ही मुझे वाराणसी जाकर उस तुलाधार से भेंट करनी ही होगी । ऐसा क्या है उसके पास, जो आकाश के देवगण भी उसका कीर्तिगान कर रहे हैं ।

दुर्गम वन पथ को पार करते वह वाराणसी की ओर चल पड़े थे । एक बार फिर वह दृढ़ निश्चयी बने, बिना थके, उस पथ पर भूखे-प्यासे, तब तक चलते रहे जब तक वाराणसी न पहुंच गये, वाराणसी में तुलाधार के यश और कृतित्व से सभी परिचित थे । क्षणभर में ही उनके निवास पर पहुंच गये, जहां तुलाधार अपने ग्राहकों के बीच घिरे अपने सामान की बिक्री कर रहे थे । जाजलि मौन भाव से जा खड़े हुए थे, उनकी दुकान पर जाकर मन क्षोभ से भर गया, 'कहां एकांत कठोर तपस्या से धर्म का तत्त्व प्राप्त करनेवाला साधक मैं और कहां सांसारिक वस्तुओं के क्रय-विक्रय में मगन यह तुलाधार, जो लाभ-हानि भरे लोभमय क्षणों का ही जीवन बिता रहा है ? द्वंद्व से विचलित उन्हें कुछ भी समझ न आ रहा था । चुपचाप वहीं खड़े रहे और तुलाधार से एकांत में वार्ता की प्रतीक्षा करने लगे ।

''मुझे ज्ञात है कि अविश्रांत दुर्गम पथ को पार करके आप मेरे समीप आये हैं । पथ में भूखे-प्यासे आपको अनेक कष्ट उठाने पड़े हैं । यह भी मुझे ज्ञात है, स्वयं को अकेले मर्मज्ञ मानने के कारण आप जिज्ञासा भाव से आकाशवाणी सुनकर मेरे समीप आये हैं । आदर-भाव से उतरकर तुलाधार जाजलि के समीप आ चुके थे । 'आप मेरे समीप ही कुछ क्षण विश्राम करें फिर आपकी जिज्ञासा दूर

करूंगा ।'

तुलाधार की विनम्र शांत वाणी सुनकर जाजलि को बड़ा आश्चर्य हुआ । तुलाधार एक बार फिर अपने कार्य में व्यस्त हो चले थे ।

संध्या उतर आयी थी । दैनिक संध्योपासन से निवृत्त तुलाधार अब निश्चिंत भाव से आसन ग्रहण कर चुके थे, जाजलि की शंकाओं को दूर करने के लिए ।

शांत संयमित वाणी में तुलाधार ने उन महामुनि से निवेदन किया ।

"हे महामुने ! मुझे भली-भांति ज्ञात है कि निरंतर कठोर तप से आपने महती सिद्धि प्राप्त कर ली थी, इतना ही नहीं स्थाणु बनी आपकी देह में पक्षियों ने भी घोंसले बना लिये थे, आप लेशमात्र भी विचलित नहीं हुए, किंतु 'आप सबसे बड़े धर्मज्ञ' हैं, यही मिथ्या गर्व आपके लिए अनिष्टकर बन गया । साधना रूपी कल्पतरु को छिन्न-भिन्न करके 'अहंकार कुठार' दीर्घ साधना के बाद भी आप में छिपा रहा । यही आपके लिए घोर शत्रु बन गया और इसी कारण आपको यह अशरीरी वाणी सुनायी दी और यहां तक आना पड़ा । आप ही बताइए मैं आपका कौन-सा प्रिय कार्य करूं ? जिससे आपका कल्याण हो सके ।"

तुलाधार की ऐसी वाणी से जाजलि के नेत्र खुल गये थे, वे स्तब्ध हो उठे । निर्जन अरण्य में उनके साथ जो भी हुआ, उसका रहस्य यहां इतनी दूर बैठे इस तुलाधार को कैसे ज्ञात हुआ ? इसी विस्मय से भरे उन्होंने तुलाधार से प्रश्न किया, "हे तपोधन तुलाधार ! आप वैश्य पुत्र हैं और गृहस्थ भी, किंतु आपने ऐसी अलौकिक सिद्धि कहां से, कैसे प्राप्त की ? निरंतर लौकिक कर्म में लगे रहकर औषधि, रसगंध, फलमूल आदि के विक्रय करते हुए आपको यह धर्मबुद्धि कहां और कैसे प्राप्त हुई ? कृपया आप मुझे इस धर्म के रहस्य को बताने की कृपा करें ।"

जाजलि का गर्व छंट चुका था, वाणी में विनम्रता उतर आयी थी ।

तुलाधार ने पूर्ववत संयत वाणी में धर्म का रहस्य जाजलि के सामने रखा— 'जो समस्त प्राणियों में मैत्री भाव रखता है...और सबका हित-चिंतन करता है, वही सच्चा धर्मज्ञ है । किसी प्राणी के साथ द्रोह भाव विहीन जीवनवृत्ति ही श्रेष्ठ धर्म है । मैं चंदन, रसगंध आदि वस्तुएं दूसरों से क्रय करके विक्रय करता हूं । मदिरा नहीं बेचता । छल-कपट से दूर सभी को मित्र मानता और सभी के हित-चिंतन में लगा रहता हूं । मेरी यह तुला सभी के लिए समान है । किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं,

'मैं सदा अनासक्त रहता हूं । दूसरों की निंदा-प्रशंसा से परे निश्चिंत भाव से मेरा मन इंद्रियों-विषयों में भी नहीं लगता । यह भी जानो कि जो सबको अभयदान देता है, वही निर्भय रहता है, परब्रह्म की प्राप्ति संपूर्ण और निष्काम अभयदान से ही संभव है, यही सबसे बड़ा यज्ञ है ।

सबके प्रति मैं समान भाव से व्यवहार करता हूं ।'

जाजलि विस्मय विमुग्ध तुलाधार के उपदेशामृत रस में डूबे हुए थे । किसी सिद्धयोगी की भांति ज्ञान का संदेश देती तुलाधार की वाणी अविराम स्रोतस्विनी-सी बह रही थी ।

'मैं सदा अनासक्त रहता हूं । दूसरों की निंदा-प्रशंसा से परे निश्चिंत भाव से मेरा मन इंद्रियों-विषयों में भी नहीं लगता । यह भी जानो कि जो सबको अभयदान देता है, वही निर्भय रहता है, परब्रह्म की प्राप्ति संपूर्ण और निष्काम अभयदान से ही संभव है, यही सबसे बड़ा यज्ञ है । सकाम कर्म करने से स्वर्गादि फल तो प्राप्त होते दिखते हैं, किंतु पुण्य क्षीण होते ही स्वर्ग से गिरते भी देर नहीं लगती, इसलिए निष्काम कर्म ही श्रेष्ठ है ।'

जाजलि का हृदय इन विलक्षण रहस्यभरे उपदेशों से अभिभूत हो उठा । तुलाधार ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "मैं जो तराजू हाथ में लेकर तौलते हुए इस प्रकार धर्माचरण करता दिखता हूं, ऐसे उपदेश देता हूं, उसका यह तात्पर्य नहीं कि मैं नास्तिक हूं । यज्ञ के सच्चे स्वरूप को जाननेवाले पुरुष आज दुर्लभ हैं । वेदमंत्रों के मूल रहस्य को न समझकर यज्ञ का जो प्रचार करते हैं, ऐसे पुरुष धर्म के मूल तत्त्व को नहीं समझ सकते । सत्कर्म रूपी हविष्य से ही देवगण संतुष्ट होते हैं । श्रद्धापूर्वक, निष्काम बुद्धि से किया गया यज्ञ ही मनुष्य को धर्म की सीढ़ी तक पहुंचाता है । सभी ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों को ईर्ष्या-द्वेष से रहित जीवनयापन करना चाहिए । शुभ संकल्प से ही वृक्षों में भी फल-फूल लग पाते हैं । ब्रह्मज्ञान की जिज्ञासा लेकर ही धर्म रहस्य को पाया जा सकता है ।

धर्म तत्त्व की ऐसी गूढ़ व्याख्या से जाजलि का अहं खंड-खंड होने लगा, उनकी जिज्ञासा और बढ़ चली, फिर पूछा, "अज्ञानी व्यक्ति यदि आत्म परिष्कार के शुभ संकल्पों से आत्म यज्ञ का संपादन नहीं कर पाते, तो उन्हें किस धर्म से सुख प्राप्त हो सकता है ?"

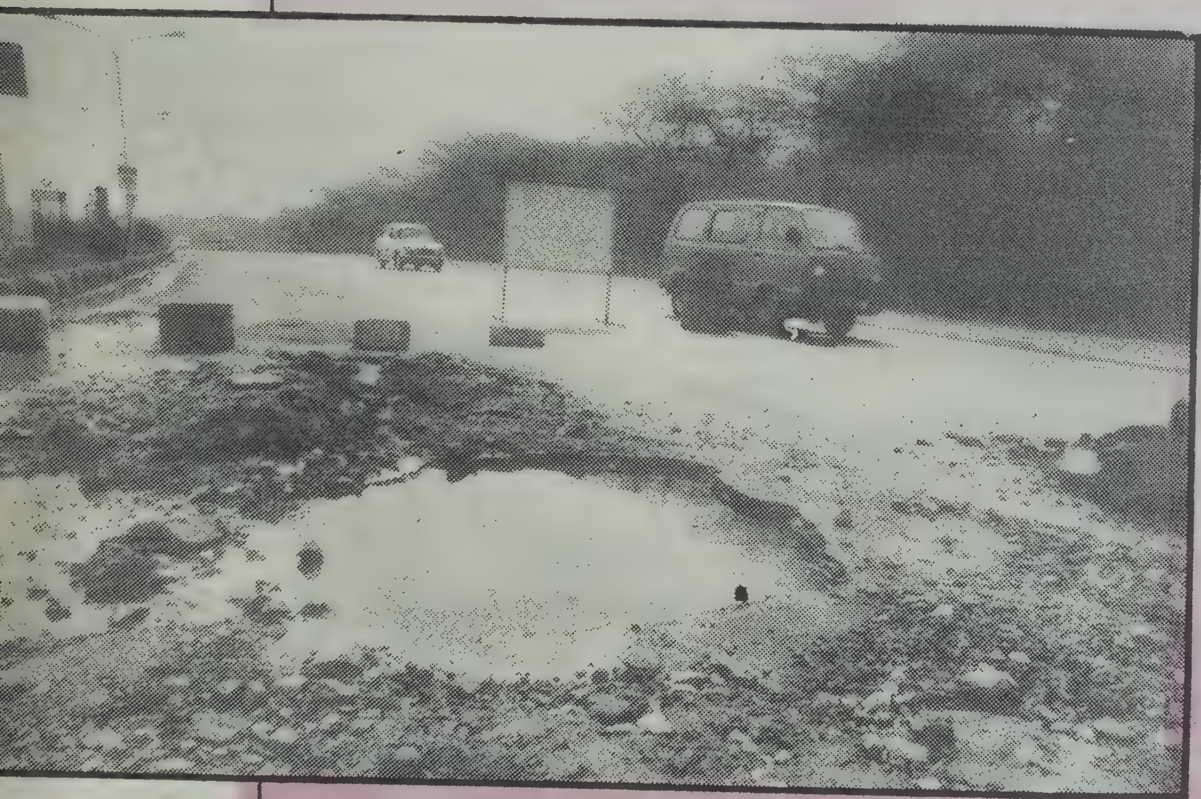
"मन में अश्रद्धा-शंका होने के कारण यज्ञ, यज्ञ नहीं रह जाता, वह केवल अहंकार मात्र कहलाता है । श्रद्धा के प्रति आस्था रखते हुए यज्ञ को भी देवता के समान आराध्य बनाकर कोई भी मनुष्य धर्म का तत्त्व जान सकता है । हे तपोधन ! प्रधान तीर्थ, प्रधान धर्म हमारी यह आत्मा है । जब अंतर ही तीर्थ बन सकता है, तो उसके लिए भटकाव कैसा ? आत्मज्ञान और अहिंसा प्रधान धर्म ही धर्म का सबसे बड़ा रहस्य है, जिसे कठोर तपश्चर्या से नहीं प्राप्त किया जा सकता, वह तो आत्म परिष्करण और आत्म साधन से ही संभव है । यही मेरा उत्तम व्रत, यही मेरी साधना का मूल मंत्र है । अपने पुत्र-पौत्रादि, धन-संपदा के बीच रहकर भी मैं इस वृत्ति द्वारा जीवन निर्वाह करता हूं । मेरा गृहस्थाश्रम ही मेरे धर्मतत्त्व का रहस्य है । मैं न कोई तप करता हूं, न कोई जप, किंतु मेरी आत्मपरिष्करण भरी यह वृत्ति ही मेरी साधना है, यही मेरी सिद्धि और यही मेरा धर्मतत्त्व है ।

जाजलि को आत्म ज्ञान प्राप्त हुआ । उनका गर्व-खर्व भंग हो चुका था । द्वंद्वातीत उन्होंने तुलाधार के धर्म रहस्य को अपने जीवन का मूलाधार बनाया ।

—प्राचार्या
एम.के.पी. पो.ग्रे. कॉलेज,
देहरादून (उ.प्र)

सड़कें और उदासीन सरकार

• अवध श्रीवास्तव



म. प्र. उच्च न्यायालय ने हाल के एक फैसले में म. प्र. सरकार को निर्देश दिया है कि वह प्रदेश की तमाम बदहाल सड़कों की हालत सुधारने का काम शुरू करे, अन्यथा उसके विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी । यह फैसला उच्च न्यायालय ने एक जनहित याचिका पर विचार करते हुए दिया । देश की सड़कों के संदर्भ में एक मजाक अक्सर किया जाता है कि यहां प्रसूतिगृह तेजी से बंद होते जा रहे हैं । प्रसूति गृहों का काम भयंकर गड्ढोंवाली सड़कें कर देती हैं । प्रसूता को रास्ते में ही प्रसव हो जाता है ।

यह चुटकुला तो कसबों और शहर की सड़कों के संदर्भ में प्रचलित है। लंबी दूरी की सड़कों के हाल तो और बुरे हैं। अव्वल तो देशभर के चालीस हजार के लगभग गांव सड़क से जुड़े ही नहीं हैं, जहां सड़कें हैं, वे अत्यंत जर्जर और दयनीय स्थिति में हैं। देश की आजादी के पचास साल बाद भी कई हजार गांवों में गंभीर बीमारी की स्थिति में शहर से सामान लाने की स्थिति में ग्रामीण या तो डोली में बिठाकर बीमार को लाते हैं या सड़क व परिवहन का साधन न होने के कारण रोगी इलाज के अभाव में दम तोड़ देता है। इन मौतों को साधारण मौत न कहकर हत्या कहना अधिक श्रेयस्कर है। ऐसी हत्याएं, जो सरकार के प्रमाद व अदूरदर्शी नीतियों के कारण होती हैं।

सड़क को किसी भी राष्ट्र की रक्तवाहिनी नलिका कहा जाता है। और जब वे नसें जिनमें खून दौड़ता है, जर्जर हों, तो राष्ट्र के जर्जर होने की कल्पना आसानी से की जा सकती है। देश की तमाम सड़कें अपने निर्माण काल से दस वर्ष के अंदर गड्ढों में परिवर्तित हो जाती हैं। इस बात की चिंता सर्वोच्च न्यायालय से लेकर लोकसभा में मौखिक व कागजी तौर पर व्यक्त की जा चुकी है। किंतु नयी सड़कों के बनाने या खस्ता हाल में लेटी सड़कों की हालत सुधारने का कोई प्रयास सरकार की ओर से नहीं किया जा रहा।

उदासीन सरकार

यदि हम अपने देश की सड़क नीति की चर्चा करें, तो हम विश्व के कई अविकसित राष्ट्रों से भी अधिक पिछड़े, सड़कों के मामले में तो हैं। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो देश की सड़कों पर रखरखाव व सुरक्षा पर किये जानेवाला खर्च एकदम न्यून है। अमेरिका में प्राप्त रोड टैक्स का ९७%, जापान में ११० प्रतिशत सड़कों के अनुरक्षण पर खर्च किया जाता है। जबकि भारत में प्राप्त रोड टैक्स का मात्र २६ प्रतिशत धन सड़कों के रखरखाव पर व्यय होता है।

सड़कों की रक्षा के लिए टोल टैक्स लगाया जाता है। यह कर वास्तव में जो पुल बनते हैं, उनके रखरखाव के लिये लिया जाता है। यह पुल बनाकर सरकार इन्हें टोल टैक्स वसूलने के लिए नीलाम करती है। टोल-टैक्स से प्राप्त पूरी राशि सरकार के रखरखाव में जमा हो जाती है। इसमें से कितना धन सड़कों की रक्षा के लिए दिया जाए, यह तय नहीं है।

निजी हाथों की आस

कई सड़कें सौ साल पहले अंगरेजों के जमाने में बनी हैं। तब से आज वाहनों की संख्या दो सौ गुना बढ़ी है। और तो और वाहनों की भार क्षमता दस से पंद्रह गुना बढ़ी है। फिर ऐसे में पुराने माप की बनी सड़कों से उम्मीद करना कि वे वैसे ही सेवा करती रहें, बेमानी है। अगर सरकार अपने पास आर्थिक संसाधनों की कमी का रोना रोती है, तो उसे रोड टैक्स व टोल टैक्स लेने का भी नैतिक अधिकार नहीं बचा रहता। हालांकि अब सरकार ने अपनी कमजोरी को स्वीकार करके कि सड़कों का रख-रखाव उसके बस की बात नहीं हैं, निजी हाथों की तरफ सड़क निर्माण व रख-रखाव के प्रस्ताव बढ़ाये हैं।

भोपाल-इंदौर त्वरित मार्ग का ठेका एक निजी कंपनी को आठ करोड़ रुपये में दिया गया था। उसका निर्माण भी शुरू हो गया था, किंतु

फिलहाल इस महत्त्वाकांक्षी योजना का काम रुका पड़ा है । निजी हाथों में सड़क निर्माण का कार्य देने से सरकार व उसके खर्चीले लोक निर्माण विभाग के निकम्मेपन की पोल खुलती है । यहां अभी जो पहुंच मार्ग व सड़कें बनी हैं, वे सरकार की सूखा राहत योजना के तहत बनायी गयी हैं । इन सड़कों को चूंकि भीख-जैसी मजदूरी देकर बनाया गया है, तो उनमें गिट्टी, डामर या मिट्टी की ऊंचाई-जैसे मूल पहलुओं को दर-किनार कर दिया गया व एक

देश की सड़कों के संदर्भ में एक मजाक अक्सर किया जाता है कि यहां प्रसूतिगृह तेजी से बंद होते जा रहे हैं । प्रसूति गृहों का काम भयंकर गड्ढोंवाली सड़कें कर देती हैं । प्रसूता को रास्ते में ही प्रसव हो जाता है ।

वर्ष के अंदर सड़क फिर वैसी-की-वैसी हो गयी । वाहनों की हालत ऐसी सड़कों पर जल्दी ही खस्ता हो जाती है । चूंकि सरकारी काम 'अंधों के हाथी' की तरह होते हैं, इसलिए इनकी कोई स्पष्ट नीति नहीं होती । जिसको जैसा समझ में आता है, वैसा काम करने लगता है । इसीलिए म. प्र. में भोपाल से विदिशा के ५४ किलोमीटर के रास्ते में १२० स्पीड ब्रेकर हैं । वे भी इतने ऊंचे-ऊंचे, कि वाहन लगातार उलटकर दुर्घटनाग्रस्त होते रहते हैं, किंतु स्पीड ब्रेकर से दुर्घटना रुकती है इसलिए वे बिना सोचे-समझे कहीं भी व कितने ही बना देने चाहिए ।

सड़क निर्माण सरकारों की प्राथमिकता की सूची में नहीं है, इसलिए नीतियां भी वैसी ही बनती हैं । वर्ष में नवम्बर से मार्च माह तक सड़कों के निर्माण पर मजदूरों को दी जाने वाली राशि के भुगतान पर प्रतिबंध लिखित रूप से लगा दिया जाता है, इसलिए कुल सात माहों में से बरसात में चार माह निकालकर तीन माह अप्रैल, मई व जून में ही सड़क सुधार का काम होता है, इसलिए लगातार बढ़ते गड्ढे और बढ़ते जा रहे हैं । लोक निर्माण विभाग के उच्च अधिकारी सड़कों का हाल देखने कम ही मैदान में आते हैं व निचले स्तर पर राजनीति, आपसी लड़ाई एवं धनराशि की बंदरबाट से काम होता नहीं । वैसे ही पुरानी सड़कों की मोटाई (क्रस्ट थिकनेस) ४० से.मी. है, जो आज की वहन क्षमता के मान से ८० से.मी. होना चाहिए ।

जिम्मेदार कौन ?

यदि सरकार का अल्प वित्तीय साधनों का रोना सही भी मान लें, तो फिर कैसे बनेंगी यहां सड़कें ? कैसे रक्त वाहिनी कही जानेवाली सड़कों की मरम्मत होगी ? ये प्रश्न ऐसे नहीं हैं, जिनका उत्तर न हो । आसपास की सड़कों के संरक्षण का दायित्व तो जनता को खुद अपने हाथों में लेना होगा व सरकार के निर्माण कार्यों पर निगरानी भी रखनी होगी ।

सड़क व्यवस्था एक मूलभूत आवश्यकता व अधिकार है । इसे लापरवाही से अब और बदहाल न होने दिया जाए, यह देखने का दायित्व सभी का है ।

— १५/१ दया भवन,
वीर हकीकत राय मार्ग, किरी महल्ला,
विदिशा-४६४००१ (मध्य प्रदेश)

स्वास्थ्य की मूल्यवान निधि

● आचार्य महाप्रज्ञ

जीवन का प्रत्यक्ष संबंध शरीर से तथा परोक्ष संबंध मन के अनेक उपादानों और निमित्तों से है । भगवान महावीर ने जिन तत्त्वों का प्रतिपादन किया, उनमें प्रधान तत्त्व है— संयम । महावीर के इस दृष्टिकोण के अनुसार जीवनशैली, संयम प्रधान होनी चाहिए । इन सबका संबंध है संयम से । सभी व्यक्ति समता, संतुलन आदि चाहते हैं, किंतु जब तक संयम की साधना नहीं होती, तब तक न समता आती है, न उपशम आता है और न संतुलन आता है । सामान्यतः संयम का अर्थ बहुत सीमित समझा जाता है । हमें उसे व्यापक अर्थ में समझना होगा । यही समझा जाता है कि किसी विशेष प्रकार का व्रत लेना संयम है पतंजलि के अनुसार संयम का अर्थ है— धारणा, ध्यान और समाधि— तीनों का एकत्र योग । आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महावीर द्वारा प्रतिपादित संयम का अर्थ है— मस्तिष्कीय नियंत्रण । मस्तिष्क का एक भाग है— लिंबिक सिस्टम । यहां भावनाएं उपजती हैं । सुख-दुःख, प्रसन्नता आदि की अनुभूति होती है । जब तक लिंबिक सिस्टम पर नियंत्रण नहीं होता, तब तक भावनाओं पर नियंत्रण नहीं किया जा सकता । मस्तिष्क भाव-नियंत्रण का नियामक साधन है ।

मस्तिष्क पर नियंत्रण के अभाव में न आहार संयम हो सकता है और न अन्य संयम ही हो सकता है । लोग जानते हैं कि तंबाकू का सेवन करना, जरदा खाना, मद्यपान करना आदि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, पर वे छोड़ नहीं पाते । इसका स्पष्ट हेतु है कि उनका अपने मस्तिष्क पर नियंत्रण नहीं है । यदि मस्तिष्क पर नियंत्रण हो जाए, तो वह एक क्षण में छूट जाता है ।

रोग उत्पत्ति के हेतु

भगवान महावीर ने रोग की उत्पत्ति के नौ कारण बतलाये—

(१) अच्चासणयाए, (२) अहितासणयाए, (३) अतिणिद्दाए, (४) अतिजागतितेणं, (५) उच्चारणिहोहेणं, (६) पासवणणिरोहेणं, (७) अधाणगमणेणं, (८) भोयणपडिकूलताए, (९) इंदियत्थविकोवण्याए ।

१. अत्यधिक भोजन करना, २. अहितकर भोजन, ३. अतिनिद्रा, ४. अतिजागरण, ५. मल बाधा को रोकना, ६. मूत्र बाधा को रोकना, ७. पंथगमन, ८. प्रतिकूल भोजन तथा ९. इंद्रियार्थ-विकोपन ।

भोजन

पहला कारण है— अहितकर भोजन करना । भोजन में खान-पान की सभी वस्तुएं आ जाती हैं । तंबाकू, जरदा, शराब आदि

वस्तुओं का बार-बार सेवन भी रोग का हेतु है। अधिक वस्तुओं का उपयोग करना भी रोग का हेतु है।

श्रम स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक तत्त्व है। श्रम के बिना रक्त का संचार भी नहीं होता और व्यक्ति स्वस्थ नहीं रह पाता। महावीर ने रोग का एक कारण बताया अत्यशन अर्थात अत्यधिक खाना। अत्यधिक बैठे रहना भी रोग का एक कारण है। कुछ लोग सात-आठ घंटा बैठे रहते हैं। वे श्रम से जी चुराते हैं और रोग से आक्रांत हो जाते हैं।

अनिद्रा : अतिनिद्रा

अनिद्रा या अतिनिद्रा भी रोग का कारण बनती है। नींद स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, अनिवार्य है। इसीलिए अनिद्रा और अतिनिद्रा से बचना चाहिए, संयमित निद्रा लेनी चाहिए। आयुर्वेद में भी अतिनिद्रा से होनेवाली हानियों का उल्लेख है। उसमें दिवा-शयन— दिन में सोने का निषेध है। आयुर्वेद के अनुसार नींद और कफ का संबंध है। रोग के अनुसार विचार करने पर यह तथ्य सामने आता है कि अतिनिद्रा से आयु घटती है। नींद में श्वास की संख्या बढ़ जाती है। ज्यादा नींद लेनेवाला जीवनी शक्ति को कम करता है। अति जागरण भी रोग का एक कारण है।

वाणी का असंयम

वाणी का असंयम भी रोग पैदा करता है। इससे भी जीवनी शक्ति अधिक खर्च होती है। जैविक शक्ति के क्षरण के तीन मुख्य साधन हैं— आंख, वाणी और जननेंद्रिय। अंगुलियों से भी विद्युत निकलती है। जिन लोगों ने आभामंडल को देखा है या आभामंडल को जो देखना चाहते हैं, उन्हें ज्ञात है कि अंगुलियों से विद्युत का प्रवाह निकलता है। अधिक बोलनेवाला अपनी जीवनी शक्ति का अत्यधिक क्षरण करता है।

अब्रह्मचर्य

अब्रह्मचर्य भी रोग का प्रमुख साधन है। जीवन के तीन आलंबन हैं— ब्रह्मचर्य, आहार और निद्रा। काम की अति, आहार की अधिकता और नींद की अधिकता— तीनों रोग का कारण बनते हैं। इन सब पर नियंत्रण करना संयम है।

क्रोध के संवेग के प्रबल होने पर आदमी बीमार हो जाता है। इसका कारण है— मस्तिष्क में तनाव। मस्तिष्क में तनाव आते ही स्नायु-संस्थान दुर्बल हो जाता है। जिसका स्नायु-संस्थान दुर्बल होता है, उस पर रोग का आक्रमण होता रहता है। आयुर्वेद मानता है कि क्रोध से पित्त का प्रकोप बढ़ता है। उससे एसिडिटी बढ़ती है, अल्सर हो जाता है।

स्वास्थ्य और मस्तिष्क

स्वास्थ्य और मस्तिष्क— दोनों में गहरा संबंध है। जो व्यक्ति मस्तिष्क पर नियंत्रण करना नहीं जानता, नियंत्रण की विधियों को नहीं जानता, वह शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक दृष्टि से भी स्वस्थ नहीं रह सकता। आगंतुक बीमारियों पर उनका कंट्रोल न भी हो, परंतु बड़ी-बड़ी जो बीमारियां हैं, उनका संबंध संयम और असंयम से बहुत है। शरीर शास्त्र में मस्तिष्क का गहरा अध्ययन हुआ है। उसमें अल्फा और थीटा— इन तरंगों का अध्ययन हुआ है। अल्फा से मस्तिष्क का तनाव कम होता है। इसका तात्पर्य है कि ग्रंथियों का स्राव संतुलित होता है। जब हमारी अंतःस्रावी ग्रंथियों का स्राव संतुलित होने लगता है, तब

मनुष्य स्वस्थ रहता है ।

आरोग्य है समता

हम अध्यात्म के इन तत्त्वों पर विचार करें और जीवन शैली में इनका समावेश करें । समता अध्यात्म का तत्त्व है । समता का अर्थ है समभाव, कहीं झुकाव नहीं, कहीं विषमता नहीं । न चिंतन का वैषम्य, न कार्य का वैषम्य । करता है । मस्तिष्क को प्रभावित करनेवाला मुख्य तथ्य है— भावना । भावना का अर्थ है— बार-बार अभ्यास । जब मस्तिष्क में एक ही भावना बार-बार उभरती है, तो वह मस्तिष्क प्रशिक्षित हो जाता है । उसके बाद प्रशिक्षण के बिना संयम की बात सधती नहीं । मस्तिष्क सुझाव को स्वीकार करता है और इस स्वीकृति

हमारी जीवनशैली उपशम प्रधान, समता प्रधान तथा संतुलन प्रधान होनी चाहिए । इस प्रकार की जीवनशैली से शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रोगों से बचा जा सकता है । जीवनशैली का मुख्य तत्त्व है— संयम । यह तत्त्व सभी तत्त्वों के साथ अनुस्यूत है । जिस जीवनशैली में यह तत्त्व होता है वह जीवन सुखी और आनंदप्रद होता है ।

हमारी जीवनशैली उपशम प्रधान, समता प्रधान तथा संतुलन प्रधान होनी चाहिए । इस प्रकार की जीवनशैली से शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रोगों से बचा जा सकता है । जीवनशैली का मुख्य तत्त्व है— संयम । यह तत्त्व सभी तत्त्वों के साथ अनुस्यूत है । जिस जीवनशैली में यह तत्त्व होता है वह जीवन सुखी और आनंदप्रद होता है ।

जरूरी है प्रशिक्षण

प्रेक्षाध्यान पद्धति में अनुप्रेक्षा तथा कुछ अंशों में सम्मोहन का प्रयोग कराया जाता है । यह इसलिए कि मस्तिष्कीय नियंत्रण तथा भावनात्मक नियंत्रण सध सके । अनुप्रेक्षा में एक निश्चित शब्दावली को बार-बार दोहराया जाता है । अर्थात इस प्रक्रिया से हम मस्तिष्क को सुझाव देते हैं । यह मस्तिष्क को प्रभावित का कर्मशास्त्रीय कारण है लेश्या । यह प्रवाह भीतर विद्यमान है । यही हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है । शरीर शास्त्र की दृष्टि से माना जाता है कि ग्रंथियों का स्राव संतुलित होता है, तब स्वास्थ्य बना रहता है और जब यह स्राव असंतुलित हो जाता है, तब अस्वास्थ्य उभर आता है । इसी प्रकार हमारा भीतरी प्रवाह लेश्या भी हमारे स्वास्थ्य तथा अस्वास्थ्य के लिए जिम्मेवार है । हम पवित्र लेश्या या भावना का प्रयोग करें, मस्तिष्क उससे प्रभावित होगा ।

कार्यकारी होते हैं स्नायुगत संस्कार

आगमों में एक महत्त्वपूर्ण शब्द है भावियप्पा-भावितात्मा । भावितात्मा वह होता है, जिसने अपने मन को भावित, वासित कर लिया है । मस्तिष्क और स्नायु संस्थान को निरपेक्ष होकर अपने अनुसार बना लिया है ।

स्नायुगत संस्कार बहुत कार्यकारी होते हैं । कुछ क्रियाएं और स्नायविक शारीरिक अभ्यास के कारण भी चलती हैं । जिस घर में रहते हैं और प्रतिदिन जिन सीढ़ियों पर आरोहण-अवरोहण करते हैं, वहां प्रतिदिन जागरूक रहने की आवश्कता नहीं होती । सीढ़ियों पर पैर अपने आप उठेंगे और आगे बढ़ते जाएंगे । सीढ़ियों की ऊंचाई की ओर प्रतिपल ध्यान रखने की आवश्यता नहीं रहेगी । यह सारा स्नायविक अभ्यास के कारण होता है । यदि अन्य सीढ़ियों पर चढ़ना पड़े, तो वहां अत्यंत जागरूक रहना होता है । सीढ़ियों की ऊंचाई को ध्यान में रखकर पैर रखना होता है । हम स्नायु-संस्थान को जो अभ्यास देते हैं, वह वैसा ही करता है ।

मस्तिष्कीय नियंत्रण का सूत्र

स्नायु-संस्थान को किस प्रकार का अभ्यास देना है, वह व्यक्ति पर निर्भर करता है । अच्छा हो या बुरा, जैसा भी अभ्यास दिया जाएगा, स्नायु संस्थान वैसा करता रहेगा । साधना का प्रयोजन यही है कि जो दिया हुआ अभ्यास हितकर नहीं है, उसे बदलकर दूसरा हितकारी अभ्यास किया जाए । जो अभ्यास स्वास्थ्य के लिए बाधक है, उससे मुक्त होकर स्वास्थ्य-प्रदायी अभ्यास किया जाए । अनुप्रेक्षा और भावना के द्वारा ऐसा घटित किया जा सकता है ।

एक व्यक्ति पत्नी वियोग से अत्यंत दुःखी था । वियोग में दुःख का संवेदन करना उसका संस्कार था । उसे अनुप्रेक्षा का प्रयोग कराया गया । उसमें यह भावना पुष्ट हो गयी कि जहां संयोग है, वहां वियोग अवश्यंभावी है । संयोग में सुखी और वियोग में दुःखी होना एक संस्कार मात्र है । यथार्थ यह है कि संयोग और वियोग में पूर्ण समभाव रखें । दुःखी व्यक्ति ने भावना के इस मर्म को पकड़ा और उसका दुःख का संवेदन कम हो गया । वह प्रसन्न रहने लगा ।

क्रोध आता है तो क्षमा की भावना का अभ्यास करो । अहंकार है, तो नम्रता की भावना का अभ्यास करो । प्रतिपक्षी भावना से सफलता मिल सकती है । प्रतिपक्ष की भावना स्वास्थ्य की कुंजी है । एक व्यक्ति यदि प्रतिदिन यह कहता जाएगा कि— 'मैं बीमार हूं, बीमार हूं', तो वह बीमार ही बना रहेगा । अपने स्वर को बदलो— 'मैं रोगी नहीं हूं, स्वस्थ हूं, स्वस्थ हूं ।' इन प्रतिपक्षी स्वरों से आश्चर्य घटित होगा ।

इंद्रिय संयम और स्वास्थ्य

रोग का एक कारण है —इंद्रियत्थ विकोवणयाए— इसका अर्थ है काम विकार । इसका व्यापक अर्थ होगा इंद्रियों के विषयों का विकोपन मत करो, उन्हें उत्तेजित मत करो । शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श— इनका विकोपन मत करो । इन इंद्रिय विषयों का अतिभोग विकोपन रोगों का हेतु बनता है ।

उठना, बैठना, सोना, खड़ा होना, श्वास लेना आदि ये सारी छोटी क्रियाएं हैं, किंतु इनमें जितनी जागरूकता और संयम होगा, उतनी ही ये क्रियाएं हमारी जीवनशैली को निखारेंगी और तब जीवन प्रसन्नता से भरा रहेगा

स्वस्थ मस्तिष्क स्वस्थ जीवन का प्रतीक है । स्वस्थ मस्तिष्क का घटक तत्त्व है— संयम । इसके आधार पर कहा जा सकता है कि जीवनशैली का प्रधान तत्त्व है संयम । संयम प्रधान जीवनशैली स्वास्थ्य की मूल्यवान निधि है ।

(प्रस्तुति : ललित गर्ग)

का. मंत्री, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली—११०००२



कहानी

नर्बदा दीदी

• राम सरूप अणखी

कमाल टॉकीज चौक उसका पक्का अड्डा था । वह पिछले पहर यहां आती और चौक में इधर-उधर खड़ी रहती । कभी किसी मोची से अपने सैंडल पॉलिश करवा रही है, कभी साइकलों वाले की दूकान पर खड़ी नौकर लड़के के साथ इस तरह बात कर रही है जैसे वह उसकी ही साइकल की ट्यूब का पंक्चर लगा रहा हो । और नहीं तो किसी चाय की दूकान पर खड़ी कांच के गिलास में चाय पी रही है—छोटे-छोटे सड़ाके मार-मार कर । कमाल टॉकीज़ में फिल्म का टाइम होने लगता है, तो वह टिकट लेकर अंदर चली जाती है । लेडीज के विशेष बॉक्सों में कभी नहीं बैठती । आम जनता में बैठती है, अच्छे लोगों के बीच । घुसड़कर बैठती है जैसे उसे मुश्किल से सीट

मिली हो ।

नर्बदा सादा-मिजाज लड़की थी । हलके रंग की कमीज-सलवार, कभी-कभी हलके रंग की ही प्लेन साड़ी, पैरों में कभी सैंडल तो कभी चमड़े की चप्पल । हाथ में छोटा पर्स और छोटा ही रुमाल । चेहरे पर मामूली-सा मेकअप किया हुआ—यानी मेक-अप जैसे किया ही न हो । तीखे नैन-नक्श, कुदरती-सा किताबी चेहरा । मोटी-मोटी कजरारी आंखें । दंत पंक्ति से होंठों का परदा हटा नहीं कि चेहरा गुलाब की तरह खिल उठता । होंठ भिंचे होते तो उसकी आंखें हंसती थीं ।

उस दिन सिनेमा का टिकट लेकर वह अभी अंदर नहीं गयी थी और बाहर लोगों की भीड़ के बीच ऐसे खड़ी थी जैसे किसी का इंतजार कर रही हो । उसकी चोर-निगाह उस नौजवान पर ही टिकी रही, जो अपना टिकट लेकर उसी की तरह बाहर खड़ा था और उदास नजर आ रहा था । वह रह-रहकर अपने हिप पॉकेट पर हाथ रखता, जैसे कुछ टटोलकर देखता हो—या जैसे कोई जांच-पड़ताल कर रहा हो नर्बदा उसकी तरफ खिंच गयी और खिंचती ही चली गयी । आखिर उसने फैसला कर लिया कि वह उस नौजवान के साथ वाली कुरसी पर बैठेगी ।

फिल्म शुरू हुई । नौजवान फिल्म नहीं देख रहा था । पलभर के लिए सामने स्क्रीन पर नजर मारता और फिर आगे वाली कुरसी की पीठ पर माथा रखकर जाने क्या सोचने लगता । फिल्म की तरफ उसका कोई ध्यान नहीं था—जैसे ढाई-तीन घंटे का समय गुजारने के खयाल से ही हॉल में आया हो । जैसे हॉल में तीन घंटों के लिए सिर्फ सोने के लिए ही आया हो । जैसे ढाई-तीन घंटों के लिए बाहर के संसार से भागकर सिनेमाघर में घुस आया हो । नर्बदा सोच रही थी—जरूर इश्क का मरीज है । उसका भी फिल्म की तरफ ध्यान कहां था ? उसका सारा-का-सारा ध्यान नौजवान की तरफ था, मानो वह उसी के लिए सिनेमाघर के अंदर आयी हो ।

फिल्म का मध्यांतर हुआ तो लाइटें जलीं । वह फुरती से बाहर निकली । उसने अपने दुपट्टे के पल्लू में लिपटा नौजवान का पर्स बेमालूम ढंग से पकड़ रखा था । तेज कदमों से कमाल टॉकीज के चौक की भीड़ को चीरती वह चलती गयी और एक सूनी जगह पर जाकर फटाफट पर्स की तलाशी ली । उसमें दस का एक नोट और कागज का एक पुरजा था । पर्स दूर फेंककर दस का नोट अपनी ब्रा में खोंस लिया और गाली देते हुए कागज का पुरजा फाड़ने लगी । नजर लिखावट पर गयी, तो अक्षर उसे सुंदर लगे—जैसे छपे हुए हों । वह पढ़ने लगी । यह एक चिट्ठी थी, जो उस नौजवान लड़के ने अपने चाचा को लिखी थी । लड़का बी. ए. के आखिरी साल में पढ़ रहा था और उसके पास इस बार इम्तहान की फीस भरने के लिए कोई पैसा नहीं था । उसने चाचा को लिखा था कि वह एक सौ रुपया मनीऑर्डर से उसे भेज दे और वह यह सौ रुपया तब लौटा देगा, जब उसकी नौकरी लग जाएगी । चिट्ठी के अंत में लड़के का एड्रेस था । नर्बदा ने चिट्ठी को भी दस के नोट वाली जगह पर रख लिया ।

नर्बदा जब दसवीं कक्षा में पढ़ती थी, उसके बाऊजी चल बसे । वह रेलवे कर्मचारी थे । नर्बदा का न कोई भाई, न कोई बहन । एक मां थी बस । रेलवेवालों ने क्वार्टर भी खाली करवा लिया । वे किराये का मकान लेकर रहने लगीं ।

नर्बदा की मां चाहती थी कि उसका ब्याह हो जाए । पर नर्बदा कॉलेज में पढ़ रही थी । नर्बदा के बाऊजी कहा करते थे कि वह अपनी बेटी को ग्रेजुएट बनाकर ही उसका ब्याह करेंगे । और अब वह कॉलेज में पढ़ते हुए जैसे अपने बाऊजी की ही इच्छा पूरी कर रही थी । उसके दिल में कहीं यह आस भी बैठी हुई थी कि वह जब बी. ए. पास कर लेगी, तो उसे कोई अच्छी सर्विस मिल जाएगी । वह बाऊजी की जगह भी लग सकती थी । रेलवे की नौकरी वह करना नहीं चाहती थी । बाऊजी क्लर्क थे । नर्बदा नहीं चाहती थी कि वह क्लर्क बने । उसकी आकांक्षाएं तो ऊंची थीं । वह किसी अफसर लड़के के साथ ब्याह करवाना चाहती थी । अफसर लड़का क्लर्क लड़की के साथ ब्याह क्यों करवाना चाहेगा ? नर्बदा की मां ने बाऊजी का सारा बकाया ले लिया और अपनी पेंशन बंधवा ली । नर्बदा को अपने भविष्य के लिए आजाद छोड़ दिया । नर्बदा बी. ए. पूरी कर गयी, पर न तो उसे कोई अफसर लड़का मिल सका और न ही कोई ढंग की नौकरी । उधर उसकी मां का बैंक में रखा पैसा दाना-दाना करके घर कबीलदारी की खाइयों में चला गया । बस पेंशन-ही-पेंशन रह गयी । महंगाई के जमाने के में पेंशन बंधे-सीमित रुपयों से गुजारा मुश्किल था ।

नर्बदा शाम के हलके-हलके अंधेरे में जब घर आती, तो महल्ले के छोटे-छोटे बच्चे-लड़के-लड़कियां—सब उसके पीछे हो लेते, मानो नर्बदा एक तमाशा हो । वह बच्चों को टॉफियां, चॉकलेट, रेवड़ियां और गजकों के पैकेट बांटती चलती जाती । 'नर्बदा दीदी'—'नर्बदा दीदी'... सारे बच्चे बोलते, और उसके साथ-साथ चलते जाते । जिसे कुछ मिल जाता, वह वहीं-का-वहीं थमकर खाने लगता । बाकी बच्चे उसके साथ-साथ चलते रहते और अच्छी चीज मिलने की आस रखते । 'नर्बदा दीदी'... 'नर्बदा दीदी'... ! नर्बदा दीदी जैसे महारानी हो—सौगातें बांटनेवाली । जैसे उसका अपना कोई दुःख ही न हो ।

महल्ले के लड़के और लड़कियां हैरान-परेशान थे—नर्बदा दीदी कहां चली गयी ? महल्ले के छोटे बच्चों की तो जैसे मां मर गयी हो ! जैसे किसी ने उन मुंहों का दूध छीन लिया हो । बच्चों की भूख मर गयी थी । उन्हें टॉफियों का इंतजार नहीं था । वे नर्बदा की बाट जोहते थे और आहें भरते रहते थे ।

महल्ले के नौजवान लड़के-लड़कियों में भी वह हर मन-प्यारी थी । वह अभावग्रस्त-टूटे घरों के लड़कों और बेसहारा लड़कियों की फीसें भरती । किसी लड़के-लड़की को किसी और मामले में उसकी जरूरत होती, पैसों की मदद या कोई भावनात्मक मदद, तो नर्बदा को याद किया जाता । वह किसी पुलिस अफसर या छंटे हुए बदमाश की तरह सीना तानकर अगले के आगे लग जाती और हर मुकाम पर विजयी होकर आती । सारा महल्ला जानता था—

बच्चे से लेकर बूढ़े तक— कि नर्बदा जेबकतरी है। वह पुलिसवालों को 'हफ़्ता' देती थी। हवलदार-सिपाही उसे छिपे-छिपे सलाम ठोकते थे। 'हफ़्ता' लेनेवाला इलाके का पुलिस अधिकारी उसका इंतजार करता रहता था।

नर्बदा कभी सोचती तो सुन्न-की-सुन्न रह जाती, वह किस रास्ते पर निकल पड़ी है ! उसे तो किसी अच्छी नौकरी पर लगना था। उसे तो किसी अफसर लड़के के साथ ब्याह करवाना था। पर यह खयाल किसी झटके की तरह ही उसके दिमाग में उतरता और निकल जाता। अब तो यही उसकी जिंदगी थी। इसी जिंदगी में उसे लुत्फ मिलता था। जैसे वह जमाने का मुंह चिढ़ा रही हो। जैसे वह वक्त को ठेंगा दिखा रही हो। उसका अपना कोई कसूर नहीं था। यह तो जमाने ने उसे इस तरह का बना दिया था। जमाने ने ही उसे इस रास्ते पर डाला था।

नर्बदा के दो-दो अस्तित्व थे। एक अस्तित्व अवचेतन का और दूसरा चैतन्य का। जेब काटते समय उसके हाथों की पहले दो अंगुलियां ऐसे काम करतीं जैसे वह खुद बेहोशी की हालत में हो, उसे तो पता ही नहीं चलता था कि वह क्या कर रही है। सब कुछ खुद-ब-खुद ही होता चला जाता था। महल्ले के नौजवान लड़के-लड़कियों की आर्थिक सहायता करते समय या बच्चों को टॉफियां वगैरह बांटते समय वह पूरी तरह जागरूक होती थी। उस लगता था, वह यह अच्छा काम कर रही है। मां की वह कोई बात नहीं सुनती थी। मां कहती—"बदू, क्या तू इसी तरह सारी जिंदगी गुजार देगी ? ब्याह बाबत सोचा कभी कुछ ?"

नर्बदा कोई जवाब न देती। कोई जवाब दे ही न पाती। बस, सब-कुछ इस तरह ही होता जा रहा था, इस तरह ही बीतता जा रहा था। नर्बदा की जागरूकता भी जैसे अचेतता हो। मां को भी वह अच्छे-से-अच्छे कपड़े लाकर देती थी। घर में बढ़िया खाना बनता था। सारा सामान था घर में, जैसा नर्बदा के बाऊजी अपनी सारी जिंदगी में नहीं बना सके थे।

उस दिन सिनेमा में जिस नौजवान की उसने जेब काटी थी, अगले दिन ही नर्बदा ने उसे दो सौ रुपयों का मनीऑर्डर कर दिया और सुर्खरू हो गयी।

मनीऑर्डर मिलने के बाद नौजवान लड़के हितेश की उसे एक लंबी चिट्ठी मिली। मनीऑर्डर की वापसी रसीद भेजने के साथ ही हितेश ने नर्बदा के बारे में काफी कुछ पूछा था।

नर्बदा को एक बार तो बड़ी खीज हुई—भई, तूने दो सौ रुपया ले लिया, लेकर चुप हो जा और अपना काम पूरा कर। तूझे इससे क्या लेना है—'मैं कौन हूं, क्या काम करती हूं, इतनी अच्छी क्यों हूं...'।

मगर यह क्या ! नीम-बेहोशी की हालत में ही वह तो चिट्ठी लिखने बैठ गयी। पता नहीं कितने बरसों बाद वह चिट्ठी लिखने का निकम्मा-सा कार्य निभा रही थी ! लिखती गयी...लिखती गयी...उसकी चिट्ठी तो हितेश की चिट्ठी से भी लंबी होती जा रही थी। उसने अपने विषय में सब-कुछ बता दिया था। यहां तक कि जेब काटने के धंधे के बारे में भी बता दिया। उसकी चिट्ठी में अपनत्व था, प्यार था, जैसे कोई किसी अपने को सब-कुछ बता देता हो।

हितेश की एक और चिट्ठी आयी, पहले से भी ज्यादा लंबी । और चिट्ठियों का एक लंबा सिलसिला । दस दिनों के अंदर-अंदर दोनों की चिट्ठियों की अदला-बदली हो जाती । यह सिलसिला दो महीने चलता रहा । दोनों ने एक-दूसरे के बारे में सब-कुछ जान लिया, समझ लिया, एक-एक महीने के बाद दो-दो सौ के दो मनीऑर्डर नर्बदा ने उसे और भेजे थे ।

हितेश बी. ए. का इम्तहान देकर ईंटों के भट्ठे पर मुंशी की नौकरी करने लगा था । उसका शहर बड़ा शहर नहीं था । और फिर एक दिन नर्बदा के कहने पर वह उसके बड़े शहर गया । चार घंटों का रेल का सफर था । वे निश्चित स्थान पर मिले । बातें हुईं । वे चिट्ठियों के संसार से बढ़कर नया-नया महसूस कर रहे थे । सोना बाग की खुशबुएं लिये हवा किसी नशे का-सा संचार कर रही थी, उनके अलसाये-से शरीरों में ।

"तुम उस दिन यहां हमारे शहर में क्या करने आये थे ?"—लड़की ने पूछा ।

"किस दिन ?" लड़के को शायद याद नहीं रह गया था, पर यों ही उसके मुंह से निकल गया !

"जिस दिन तुम्हारा पर्स..." नर्बदा के चेहरे पर निश्छल हंसी थी ।

वह भी मुसकराने लगा । बोला—"यहां मेरे चाचा रहते हैं । उस दिन वह घर में नहीं थे । वह चिट्ठी मैंने इसलिए लिखी थी कि पोस्ट कर दूंगा । पर वह तुम्हारे हाथ लग गयी ।"

"वह चिट्ठी तो तुमने मेरे लिए ही लिखी थी—लिखी थी न ?" नर्बदा शरमा रही थी ।

"हां, फिर तो वह तुम्हारी हो गयी ।"

"तुम भी मेरे हो गये—नहीं ?"

"हां, यह तो है", लड़के ने अपना सारा वजूद समेटकर जवाब दिया ।

वह दिन और यह दिन, महल्लेवालों ने नर्बदा को फिर कभी नहीं देखा । उसकी मां उसकी राह ताकती रहती । सोचते-सोचते उसके माथे की ठीकरी कचर-कचर करने लगती—"यह क्या किया नर्बदा ने ? उसने तो कभी एक रात भी घर से बाहर नहीं काटी थी । कहीं भी घूम-फिर आती, कुछ भी कर आती, आखिर रात को घर आकर ही सोती थी ।"

महल्ले के लड़के और लड़कियां हैरान-परेशान थे—नर्बदा दीदी कहां चली गयी ? महल्ले के छोटे बच्चों की तो जैसे मां मर गयी हो ! जैसे किसी ने उन मुंहों का दूध छीन लिया हो । बच्चों की भूख मर गयी थी । उन्हें टॉफियों का इंतजार नहीं था । वे नर्बदा की बाट जोहते थे और आहें भरते रहते थे ।

—के. सी. रोड,
बरनाला-१४८१०१ (पंजाब)

जादुई दर्पण

जापान और चीन में सदियों से जादुई दर्पणों का निर्माण होता आया है । इस दर्पण में अपना चेहरा देखने पर वह आम दर्पणों की भांति दिखायी देता है । इसी दर्पण को सूर्य की ओर करके, परावर्तित प्रकाश को किसी सफेद परदे पर डालने से गौतम बुद्ध की अनेक मूर्तियां दिखायी देती हैं ।

व्यंग्य



प्रशंसा के चक्कर में फंसकर

● गोपालप्रसाद व्यास

मुझे बहुत-सी चीजें प्रिय हैं । कहें तो कुछ के नाम बताऊं ? गुलाब का इत्र, जूही की माला, रेशम का कुरता, खोए की बरफी, दही की गुझियां, असली घी की जलेबी और मगही पान मिल जाएं, तो समझ लीजिए— "उहां छांड़ि इहि बैठे वैकुंठा ।"

ब्राह्मण हूं, पर निरा पेटू नहीं । मुझे अपनी पुस्तकें भी कम प्रिय नहीं । लेकिन पुस्तकों से प्यार है, इसका यह भी अर्थ नहीं कि मैं संसारी नहीं । बीवी-बच्चे, घर-बार सभी तो मुझे प्यारे हैं ।

फिर भी एक वस्तु ऐसी बच ही जाती है, जिसकी इन सब चीजों से कोई तुलना नहीं । वह कोई बहुत बड़ी वस्तु नहीं । एक छोटी-सी बात है । यही अपनी मामूली-सी प्रशंसा । बस, यही एक चीज ऐसी है जिसे सुनने के लिए मैं क्या नहीं कर सकता, क्या नहीं सह सकता ?

खाना न दीजिए, कपड़ा न दीजिए, रुपया-रोजगार न दीजिए, पारिश्रमिक न दीजिए, लेकिन कृपा करके दिल खोलकर, झूठी ही सही, मेरी प्रशंसा किये जाइए, मैं आपकी जूतियों का गुलाम हूं । उस हालत में मुझ-जैसा बेदाम का नौकर, बे-उजर चाकर, आप कहीं खोजे भी न पाइएगा । अस्सी से ऊपर की आयु होती आयी । सैकड़ों ही दोस्त बने । लेकिन टिके वही, जो मेरी प्रशंसा करते रहे । जिसने खरी कही, मैंने उससे अपनी राह गही । क्या बताऊं, जानता सब हूं, मगर इस मामले में मानता किसी की नहीं । खरी बात कह सबसे सकता हूं, लेकिन खरी सुनकर मुझे प्रसन्नता हरगिज नहीं होती । असर मुझ पर मीठी बात का ही होता है । इसे लाचारी कहिए, कमजोरी कहिए, चाहें तो बुराई भी कह लीजिए । बात यह मुझमें है । मैं इससे इनकार नहीं करता ।

हिंदुस्तान में सोने का बड़ा मोल है । लड़ाई समाप्त हुए एक जमाना हो गया, मगर इसके भाव गिरते ही नहीं । कहते हैं 'प्लाटिनम' का मूल्य सोने से भी बड़ा है । रत्न-जवाहरातों के क्या कहने ! लेकिन मेरी दृष्टि में इन सबका

मूल्य प्रशंसा के दो मीठे शब्दों के मुकाबले तीन कौड़ी का भी नहीं ।

इसलिए मैं प्रशंसक के मूल्य को अच्छी तरह जानता हूं । क्यों न जानूं ? सरकारें भी तो प्रशंसकों के बल पर चलती हैं । सरकार क्या, भगवान को भी अगर प्रशंसकों का टोटा पड़ जाए, तो उसकी भी बधिया बैठ जाए । तरह-तरह के लालच देकर, वह अपने गीत उनसे गवाया करता है । कवियों के साथ भी यही बात है । कवि लोग अन्न-जल पर थोड़े ही जीते हैं ? ये तो प्रशंसा के पादप हैं । मिलती रहेगी, तो खिलते रहेंगे, नहीं तो कुम्हलाते क्या देर लगती है । इसीलिए उस दिन रेल में जब मुझे मेरी रचनाओं के एक प्रशंसक अनायास ही मिल गये, तो खुशी का ठिकाना न रहा ।

हम लोग उस दिन गाजियाबाद से दिल्ली लौट रहे थे । गाड़ी में जो साहित्य-चर्चा चली, तो बात-बात में एक महोदय मेरा नाम जान गये । वह स्वयं मेरे पास खिसक गये । कहने लगे : "धन्य भाग । वर्षों से आपका नाम पढ़ते-सुनते थे । बड़ी तमन्ना थी आपके दर्शनों की । क्या कमाल का लिखते हैं आप ? आपकी रचनाओं को तो हमने अखबारों से काट-काट कर एक रजिस्टर में चिपका रखा है । आपकी पुस्तकों के सभी संस्करण हमारे पास हैं । मेरी पत्नी तो आपकी रचनाओं के पीछे समझिए, जैसे पागल है । और-तो-और, मेरी छोटी मुन्नी को भी आपकी कविताएं कंठस्थ हैं ।"

शब्द क्या थे, मानो बूंद-बूंद से अमृत झर रहा था । यात्रा की सारी थकान, डिब्बे की ठेल-पेल और साहित्य-चर्चा से उत्पन्न उमस जैसे सब कुछ शीतल, तरल और क्या कहूं रसमय हो चला । मेरे मन की बंद कली जैसे खट करके खिल उठी ।

बगल में बैठे अपने मित्रों की ओर मैंने जरा तनकर देखा और महसूस किया कि उन पर ही नहीं, इन अनजान मित्र की बातों का असर सारे डिब्बे पर बड़ा अनुकूल पड़ा है । कुछ ही सैकिंडों में मैं उस डिब्बे का एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बन गया ।

अपनी प्रशंसा सुनकर क्योंकि सज्जन पुरुष संकोच करने लगते हैं, मैंने भी वही किया । मैं विनयी हो आया । कहने लगा, "जी, मैं क्या हूं ? यों ही कुछ लिख-विख लेता हूं । आप-जैसे गुणीजनों को कुछ पसंद आ जाए, मेरे लिए यही बहुत बड़ी बात है ।"

"विनय बहुत बड़ी बात है । विनय बड़ों को ही शोभा देती हैं", अनजान मित्र कहने लगे— "ज्ञानी ही सहनशील होते हैं । शिष्टता ओछों के बांटे नहीं आती । ओछे बरतन में तो पानी छलकता है । मैं हिंदुस्तान के अनेक साहित्यकारों और कलाविदों से मिला हूं । मुंह देखी नहीं कहता, 'राम-राम' उनमें यह बात कहां ? आपको तो देखकर ही ऐसा लगता है, जैसे अपने परिवार के ही आदमी हैं ।" कहते-कहते उन्होंने सिगरेट का पैकिट मेरी ओर बढ़ाया ।

मैंने और भी विनम्र होकर हाथ जोड़ लिये, तो वह कहने लगे— "अरे आप सिगरेट भी नहीं पीते ? तब और क्या पीते होंगे ? लेकिन इतना मादक, इतना सरस, चीजें आप लिखते कैसे हैं ? सच कहता हूं कि मैं तो आपकी जब रचनाएं पढ़ने लगता हूं, तो सुध-बुध खो बैठता हूं । अहा ! अभी परसों के साप्ताहिक में आपकी वह भ्रमर और कली वाली रचना पढ़ी



थी । क्या कहने हैं ? दिल बाग-बाग हो गया ।''

बातों का यह सिलसिला अभी और लंबा चलता, मगर गाड़ी शाहदरा स्टेशन पार कर यमुना के पुल पर आ गयी थी । दिल्ली जंक्शन आने ही वाला था ।

बातों-बातों में ज्ञात हुआ कि मेरे मेहरबान दोस्त कलकत्ते में अपना कोई बड़ा व्यापार चलाते हैं । दो दिन के लिए किसी काम से राजधानी आये हैं । वह जिस होटल में ठहरनेवाले थे उन्होंने उसका पता भी बताया और आग्रह किया कि मैं उनके यहां कम-से-कम एक बार चाय पीकर तो उन्हें अवश्य ही कृतार्थ करूं ।

दिल्ली में बसे ५० वर्ष से ऊपर हो गये । लेकिन अभी भी दिल्ली मुझसे कुछ दूर ही बनी हुई है । पुरखे कह गये हैं कि दिल्ली में आदमी को जरा सोच-समझकर चलना चाहिए । यहां लोगों से व्यवहार करते समय उन्हें बीस बार परखना चाहिए । इसीलिए कोई लाख कहे, मैं किसी को अपना घर नहीं दिखाता । मित्र लोग मेरी इस आदत से भली-भांति परिचित हैं । लेकिन कुछ अपनी आदत, कुछ पत्नी के अद्वैत स्वभाव और कुछ अल्प बचत योजना का असर कि मित्रों के उलाहने और अमित्रों के ताने कभी मुझ पर असर नहीं करते ।

लेकिन इस बार की बात दूसरी थी, क्योंकि श्रीमतीजी मैके पधारी हुई थीं और अभी महीने की सिर्फ तीसरी ही तारीख थी । आपसे क्या छिपाऊं, सबसे बड़ी बात यह है कि उन गुणग्राहक मित्र की बातों से अभी मेरी पूरी तसल्ली भी नहीं हुई थी । परिणाम यह कि एक कदम गलत उठ गया । वैसे ऐसे मामलों में मैं उचित-अनुचित का जरा कम ही खयाल रखता

हूं । लेकिन उस बार न जाने क्या हुआ कि उनके मुख से अपनी शराफत का गुणगान सुनकर मुझे उचित नहीं लगा कि अपने शहर में आये हुए एक दुर्लभ पारखी को अपने घर न बुलाकर खुद उनके किराये के होटल में चलकर चाय पीने की धृष्टता की जाए ।

अगर मैं जल्दी में न होता या मुझे एक बार भी अपनी बात पर फिर से विचार करने का

शब्द क्या थे, मानो बूंद-बूंद से अमृत झर रहा था । यात्रा की सारी थकान, डिब्बे की ठेल-पेल और साहित्य-चर्चा से उत्पन्न उमस जैसे सब कुछ शीतल, तरल और क्या कहूं रसमय हो चला । मेरे मन की बंद कली जैसे खट करके खिल उठी ।

अवसर मिल जाता, तो मैं कदापि वैसा नहीं करता । लेकिन गाड़ी स्टेशन पर ठहर गयी थी और लोगों के चढ़ने-उतरने की रेल-पेल फिर से शुरू हो गयी थी । इस हड़बड़ी में मैं फंस गया । और क्या बताऊं, जो अब तक कभी न किया था, वह कर ही डाला । यानी मैंने उन महाशय को अपने घर का पता बता दिया । बड़े तपाक से मैंने कहा : ''भला, यह भी कोई बात हुई ? आप हमारे शहर में आयें, और उलटे हम आपके मेहमान बनें । लाख दिल्ली अब पुरानी नहीं रही, लेकिन ऐसा भी क्या हुआ ? आपको मेरा घर पवित्र करना ही पड़ेगा ।''

थोड़े शिष्टाचार के बाद उन्होंने मेरा निमंत्रण स्वीकार कर लिया । दूसरे दिन मैंने उनके स्वागत की तैयारी की । पत्नी थी नहीं । नौकर घर में हम लोग खुद ही होते हैं । इसलिए, उस दिन मैं सुबह तड़के ही उठ बैठा । सारा घर साफ करके आइने के माफिक चमका दिया । चीजों को करीने से जमाया । बाजार से कुछ नमकीन, कुछ मीठा, कुछ फल लाकर रख छोड़े । कुछ पुड़िया पानों की भी पहले से ही ले छोड़ीं । पास के होटलवाले से कह आया कि ठीक ४ बजे किसी को भेजकर चाय के लिए पुछवा ले ।

मित्र घड़ी के टाइम पर टैक्सी से उतरे । टैक्सी का बिल चुकाने लगा, तो उन्होंने हाथ पकड़ लिया । घर में घुसते ही उन्होंने बच्चों के बारे में पूछा । यह बताने पर कि वे सब तो अपने ननिहाल गये हैं, एक सद्‌गृहस्थ की भांति उन्हें बड़ी निराशा हुई ।

सूने घर में हम लोग मेजों पर पैर फैलाकर जम गये । हमें डर भी किसका था ? न घर में पत्नी का, न बाहर सरकार का । हमने दाल-मोंठ से लेकर अणु-बम तक पर विशेषज्ञों की भांति चर्चा की । छात्रों की अनुशासनहीनता से लेकर स्वेज-समस्या तक हमारी तीखी नजर दौड़ गयी । हमने दुनिया के सभी बुद्धिमानों को उस समय लगभग बुद्धू ही सिद्ध कर दिया ।

हमारी बातचीत प्रायः साहित्य के आसपास घूमती रही । शायद ही संसार का कोई कवि, लेखक या उपन्यासकार ऐसा बचा हो, जिसके गुण-दोषों का हमने उस दिन परदाफाश न कर

डाला हो ।

मेरे मित्र की जानकारी अद्‌भुत थी । वह हर साहित्यिक की पुस्तकों के बारे में ही नहीं, उनकी आदतों, पसंदों और कपड़ों के बारे में भी पक्का पता रखते थे । किसकी किससे बनती है, किसकी किससे चलती है, किसने किसका कहां क्या चुराया है, कौन कहां क्या तिकड़म कर रहा है, इस सबका उन्हें सही-सही पता था । बीच-बीच में रामायण के संपुट-पाठ की तरह वह प्रसंग और व्यवहार की भी लगे-हाथों तारीफ करते चलते थे ।

मिठाई की मिठास उस दिन कैसी थी क्या बताऊं ? जब-जब वह महाशय मेरा गुणगान करते तब-तब मेरा नमकीन चीजों की सार्थकता पर विश्वास जमता जाता । फल सफल हो रहे थे । चाय आ रही थी और न जाने कहां समायी जा रही थी । मुझे लगा कि ये ७ घंटे जैसे ७ मिनटों में ही समाप्त हो गये । समय की क्रूरता का मैंने उस दिन सही-सही अनुमान किया । उस दिन मैंने जाना कि प्रिय कथन श्रवण के लिए किस प्रकार दो कान ही काफी नहीं हैं ।

काफी दूर तक मैं उन्हें छोड़ने गया । लौटा तो लगा कि मेरा मन भी कहीं बाहर ही छूट गया है । रात को बड़ी देर तक नींद नहीं आयी । तुलसीदास की यह चौपाई उस दिन मुझे कई बार याद आयी :

अब मोहि भा भरोस हनुमन्ता
बिनु हरि कृपा मिलहिं नहीं संता

पड़ा-पड़ा मैं यही सोचता रहा कि इसी प्रकार कोई सहृदय समालोचक मिल जाय तो मुझे व्यास, कालीदास, मिल्टन, शेक्सपीयर बनते अब देर नहीं लगती । सोते-सोते मुझे यह विश्वास भी हो गया कि लोग लाख ईर्ष्या करें मेरी कला को, साधना को, समझनेवाले अब पैदा होनेवाले हैं । मेरे महान बनने में अब देर नहीं ।

दूसरे दिन काफी देर गये मेरी आंख खुली । रात की प्रशंसा का खुमार अभी पूरा-पूरा भी नहीं उतरा था । मैंने आइने में गौर से झांककर बाल जरा सीधे किये । कमीज डालकर बाहर चाय पीने निकला तो याद आया, जेब खाली है । सोचा कुछ पैसा लेता चलूं । कल की चाय का बिल भी चुकाना है ।

लेकिन मेज की दराज खोली तो सन्न रह गया । वह अस्त-व्यस्त पड़ी थी । मनीबैग गायब था । दौड़कर दरवाजे पर गया तो देखा ताला-कुंजी सब अंदर से ठीक तरह बंद थे । जीना-खिड़की सब सही-सलामत थे । रात को सोने के बाद कोई आया नहीं । तब बटुआ क्या हुआ ?

मेरी आंखों के सामने से प्रशंसा का परदा खर्र से खिसक गया । एक-एक करके मुझे कल शाम की सारी घटनाएं याद आने लगीं । प्रशंसा मुझे काफी महंगी पड़ी थी । मेरे मेहरबान मित्र महीनेभर का पूरा वेतन अपनी प्रशंसाओं के पारिश्रमिक में वसूल कर ले गये थे ।

भला ऐसे चतुर कहीं होटलों का पक्का पता बता देते हैं ।

चाय के जूठे बरतन, चारों तरफ फैले सिगरेटों के टुकड़े, फलों के छिलके, जूठी तश्तरियां मानो सब विद्रूप से मुंह बिचकाकर मुझसे पूछ रहे थे— ''कहिए महाशय, महाकवि बनने में अब कितनी देर है ?''

— बी-५२, गुलमोहर पार्क,
नयी दिल्ली-११००४९

व्यंग्य

दिल्ली की बस में बैठा बच्चा अचानक रोने लगा। पिता ने रोने का कारण पूछा तो बच्चा बोला : "बस के ऊपर लिखा है—दिल्ली से रोपड़।"

●

अमित : "कहो, पत्नी के साथ कैसी कट रही है ?"

संजय : "क्या खाक कट रही है। पत्नी तो कटी पतंग की तरह इधर-उधर दौड़ रही है। अच्छा अपनी सुनाओ, तुम्हारी कैसी कट रही है ?"

अमित : "बस, हाल-फिलहाल तो मैं कटी पतंगों को लूट रहा हूं।"

●

पत्नी : "ए जी ! मैंने बहुत मेहनत से आज तुम्हारे ऑफिस के लिए सिंघाड़े का हलवा बनाया था, कैसा लगा ?" पति : "तुमने जितने परिश्रम से बनाया था, मैंने भी उसे उतने ही परिश्रम से खाया।"

●

मजदूर : "आपने मुझसे एक गधे की तरह काम करवाया और मजदूरी सिर्फ एक रुपया। कुछ तो न्याय कीजिए।

सेठ (अपने मुनीम से) : मुनीमजी, यह हमसे न्याय मांगता है। ऐसा करो, इसके सामने घास डाल दो और एक रुपया वापस ले लो।"

●

प्राथमिक चिकित्सा की कक्षा में अध्यापक ने एक नेता के लड़के से पूछा : "यदि कोई व्यक्ति बेहोश होने लगे तो तुम क्या करोगे ?"

"उसे थोड़ा-सा पानी पिला देंगे।" नेता के लड़के ने उत्तर दिया।

"और अगर पानी न मिला तो ?" अध्यापक ने पूछा।

"तो कम-से-कम उसे आश्वासन तो दे ही देंगे कि उसे पानी पिलाया जाएगा।"

● नरेन्द्र सिंघवी

एक महिला डॉक्टर के पास पहुंची और बोली : "डॉक्टर साहब, मैं बहुत परेशान हूं।"

"क्या तकलीफ है आपको ?" डॉक्टर ने पूछा।

"जी, मुझे रातभर नींद नहीं आती।" महिला ने कहा।

"तो क्या करती हैं आप रातभर ?" डॉक्टर ने प्रश्न किया।

"ऐसा है कि मुझे अपने पति पर विश्वास नहीं है। उन पर नजर रखने के लिए मैं रातभर जागती रहती हूं।" महिला ने अपनी परेशानी बतायी।

●

ऑफिस में एक सज्जन से उनके मित्र ने पूछा : "तुम्हारी पत्नी अब कैसी हैं ? उनकी कमर का दर्द ठीक हुआ या नहीं ?"

"हां, हां, बिलकुल ठीक हो गया।" सज्जन बोले।

"कैसे ?" मित्र ने जिज्ञासावश पूछा।

"जिस दिन से डॉक्टर ने कहा कि यह बुढ़ापे की निशानी है, उसी दिन से उसकी दर्द की शिकायत ठीक हो गयी।"

● वीणा श्रीवास्तव

तरंग

सवाल

सरकारों की घटती आयु पर
छात्र ने शिक्षक से पूछा सटीक सवाल
सर क्या पहले सरकारें
सचमुच चलती थीं पूरे पांच साल ?

●

अर्थ

होना ही था
तब अनर्थ
लगे ढूंढ़ने लोग जब
नेताजी की बातों का अर्थ !

● इंद्रजीत कौशिक

हादसा

आज एक आदमी
इस हैरानी से मर गया
कि एक दफ़्तर का बाबू
बगैर कुछ लिए उसका काम कर गया ।

●

असंभव

वे राजनीति के साथ
सत्य, अहिंसा, ईमानदारी
जोड़ रहे हैं क्या खूब !
पोपले मुंह से बादाम तोड़ रहे हैं ।

● अशोक अंजुम

चुनाव

परीक्षार्थी से परीक्षक ने किया प्रश्न
शिक्षा मंत्री कैसा होना चाहिए
परीक्षार्थी बोला
पहले शिक्षित मंत्रियों का
चुनाव करवाइए ।

नेता

जो वायदों के साथ विवादों को जन्म देता है
वोट के लिए धर्म-जाति को तौलता है
सत्ता के लिए अनर्गल बोलता है
वही आज का नेता है ।

● भारती पाण्डे

चमत्कार

अत्यधिक मूल्यवृद्धि से
फालतू मलाल है
मूल्य पर आधारित राजनीति
का ही यह चमत्कार है ।

●

अंतर

कवि और कपि में
अंतर इतना है
एक का मन उछले
दूसरे का तन ।

● मनोज कुमार श्रीवास्तव

छंद

मैंने सीखा है
खोलना भावों की गांठ
छूना एक आह
सहेजना गुनाह ।

●

संकोच

सूरज ने
देहरी पर दीप धरा
द्वार ना खुला
मैं कैसे दस्तक दूं ।

● मृत्युंजय

इतिहास की प्रसिद्ध शादियां

● डॉ. भगवान सिंह वर्मा

'जर, जोरू और जमीन' इतिहास को प्रभावित करनेवाले महत्त्वपूर्ण तत्व हैं। ऐतिहासिक घटनाओं के मूल में ये प्रमुख कारक रहे हैं। इतिहास की अनेक शादियां भी इन्हीं कारणों से प्रभावित जान पड़ती हैं। आदिकाल से अद्यपर्यंत होनेवाले वैवाहिक संबंधों ने अनेक स्वरूप प्रकट किये हैं। वे समयानुसार अनेक माध्यमों से संपन्न होते आये हैं, जिनके मूल में उक्त तीनों बातें प्रभावकारक रही हैं। अतः यदि हम इतिहास पर दृष्टिपात करें तो विवाह के ऐसे अनेक रोचक उदाहरणों की जानकारी होगी।

प्राचीनकाल में शादियों का स्वरूप आज के स्वरूप से भिन्न होता था। अतीत काल में शादियों का प्रमुख रूप स्वयंवर प्रथा होती थी, जो कन्याओं के अभिभावकों द्वारा आयोजित किये जाते थे। इन स्वयंवरों में कुंवारे राजकुमारों को आमंत्रित किया जाता था। प्रत्येक स्वयंवर की एक निश्चित शर्त होती थी, जिसे पूरा करना प्रत्येक प्रत्याशी के लिए आवश्यक होता था। निश्चित शर्त को पूरा करने में जो व्यक्ति समर्थ होता था, उससे संबंधित कन्या ब्याह दी जाती थी। इस व्यवस्था के पीछे धार्मिक एवं साहसिक भावना होती थी, जिनका पालन राजघरानों द्वारा किया जाता था। राम और सीता, द्रौपदी और पांडवों के विवाह स्वयंवर परंपरा के परिणाम थे। प्राचीनकाल में बहु-विवाह और अंतरजातीय विवाह भी होते थे, जिसके अनेक उदाहरण इतिहास में अंकित हैं। सती-प्रथा के प्रचलित होने की बात भी इतिहास में लिखित है। पुराने जमाने में ब्राह्मणों द्वारा चारों वर्णों की कन्याओं से अग्नि को साक्षी रखकर विवाह करने की बात धर्मसम्मत थी। पर ऐसा विशेष स्थिति में ही होता था, हमेशा नहीं।

राजनीतिक शादियां

प्राचीनकाल में नियोग-प्रथा भी प्रचलित थी, जिसे सामाजिक मान्यता प्राप्त थी। इसके अनुसार स्त्री को अपने अयोग्य पति के कारण किसी योग्य पुरुष से संतानोत्पत्ति का नैतिक एवं सामाजिक अधिकार प्राप्त था। इसे आज की तरह अतीत में बुरा नहीं माना जाता था, उसे धार्मिक मान्यता भी प्राप्त थी।

सिकंदर के आक्रमण के बाद चर्चित स्वरूप में नया परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ। इसके बाद

से शादियों के स्वरूप ने राजनीतिक मोड़ ले लिया और वे राजनीतिक आधार पर की जाने लगीं। चंद्रगुप्त मौर्य और हेलन की शादी इसी तथ्य को प्रमाणित करती है। सिकंदर के प्रांतपति सेल्यूकस को भारत सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने पराजित कर दिया। इस पराजय के बाद राजनीति से प्रेरित होकर सेल्यूकस ने अपनी पुत्री हेलन की शादी चंद्रगुप्त से कर दी। इसका उद्देश्य चंद्रगुप्त के भावी आक्रमण से मुक्त हो, उससे मैत्री करना था। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं। साम्राज्य-विस्तार की पूर्ति हेतु गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त ने नागवंश की राजकुमारी कुबेरनागा से विवाह किया था। उसने अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह दक्षिण के शक्तिशाली राजा रुद्रसेन से किया था। इन वैवाहिक संबंधों का उद्देश्य राजनीतिक लाभ प्राप्त करना था। इससे गुप्त-साम्राज्य की प्रतिष्ठा एवं शक्ति में बहुत वृद्धि हुई।

भाभी के साथ विवाह

इसके अतिरिक्त उस युग में विवाह का एक असाधारण स्वरूप भी प्रचलित था। चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपने बड़े भाई रामगुप्त की पत्नी ध्रुवदेवी के साथ विशेष स्थिति में जो विवाह किया, वह इसका ज्वलंत उदाहरण पेश करता है। शक राजा से पराजित होने पर रामगुप्त ने अपनी पत्नी ध्रुवदेवी को रात्रि में उसके पास भेजने का आश्वासन दिया। इसके कारण गुप्त वंश की प्रतिष्ठा पर आंच आ रही थी। अतः इस अपमान एवं लज्जाजनक घटना से गुप्त वंश को बचाने के ध्येय से उसके भाई चंद्रगुप्त ने शक राजा की हत्या कर दी तथा भाभी के साथ विवाह कर लिया। इस विवाह को सामाजिक मान्यता प्राप्त हुई।

प्राचीनकाल में बहु-विवाह और अंतरजातीय विवाह भी होते थे, जिसके अनेक उदाहरण इतिहास में अंकित हैं। सती-प्रथा के प्रचलित होने की बात भी इतिहास में लिखित है। पुराने जमाने में ब्राह्मणों द्वारा चारों वर्णों की कन्याओं से अग्नि को साक्षी रखकर विवाह करने की बात धर्मसम्मत थी। पर ऐसा विशेष स्थिति में ही होता था, हमेशा नहीं।

राजपूत काल में शादियों ने मान-मर्यादा का रूप ले लिया। इस काल में लड़कीवालों को लड़केवालों के यहां वैवाहिक संबंधों की स्थापना के लिए जाना होता था, जो राजपूतों को अपमानजनक प्रतीत होता था। अतः राजपूत काल में कन्या का जन्म अशुभ माना जाने लगा, जिससे मुक्ति पाने का मार्ग ढूंढ़ा गया। फलस्वरूप कन्याओं की हत्या की प्रथा चल पड़ी। इस काल में शादियां शक्ति के बल पर की जाने लगीं। पृथ्वीराज और संयोगिता की शादी इसका ज्वलंत प्रमाण है। आलोच्यकाल

में प्रचलित जौहर-प्रथा शादी की महत्ता एवं उसकी पवित्रता को प्रमाणित करती है ।

अंतरजातीय विवाह

भारतवर्ष में मुसलिम शासकों के आगमन के कारण वैवाहिक प्रथा को नया रूप मिला । मुसलमानों में बहु-विवाह की प्रथा धर्म-सम्मत मानी जाती है । फिर हरम की प्रथा भी इस काल में चल पड़ी, जहां सैकड़ों स्त्रियों को लूटकर उसमें रखा गया । इस प्रकार इस काल में स्त्रियों से संबंधित वारदातें एवं वासना को उद्दीप्त करनेवाली अनेक घटनाएं घटीं ।

अकबर का शासनकाल नवीन वैवाहिक संबंधों के लिए विख्यात है । उसने अंतरजातीय विवाह को प्रोत्साहित कर हिंदू-मुसलिम एकता को स्थापित करने का प्रयास किया । उसकी अनेक राजपूत रानियां थीं । इन वैवाहिक संबंधों के मूल में राजनीतिक कारण निहित थे । जहांगीर और नूरजहां तथा शाहजहां और मुमताज महल की शादियां भी उल्लेखनीय हैं ।

मराठा-शासनकाल में कुछ ऐसी शादियां हुई, जो अपने आप में विशिष्ट प्रकार की थीं । उनमें पेशवा बालाजी-बाजीराव और नाना-फड़नवीस की शादियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । सन् १७६१ में तृतीय पानीपत के युद्ध में मराठों की करारी हार से बालाजी-बाजीराव बहुत चिंतित और तनावग्रस्त हो गये थे । उनके स्वास्थ्य पर इसका बुरा प्रभाव पड़ा । इससे निजात पाने का सर्वथा एक नवीन एवं अनोखा उपाय मराठों द्वारा सोचा गया, जिसके अनुसार उन्हें एक षोडशी के साथ शादी करने का सुझाव दिया गया । ऐसा प्रस्ताव करने का कारण मनोवैज्ञानिक था, जिसके अनुसार यह सोचा गया कि पेशवा चिंताओं से मुक्त हो, अपना ध्यान दूसरी ओर केंद्रित कर सकेंगे । पर जैसा सोचा गया था, वैसा परिणाम नहीं हुआ और अंत में उनकी मृत्यु हो गयी । इसी प्रकार नाना-फड़नवीस की शादी भी ६० वर्ष की आयु में एक षोडशी से कर दी गयी थी ।

वर्तमान में भी ऐसी अनेक शादियां हुई हैं, जिनका बहुत महत्त्व है । इनमें फिरोज-इंदिरा, कृपलानी-सुचेता और सरोजनी-नायडू की शादियां प्रमुख हैं । ये शादियां परस्पर प्रेम एवं अंतरजातीयता के प्रति विश्वास की प्रतीक हैं । इनका राजनीतिक महत्त्व है । इससे जाति-पांति के बंधन शिथिल हुए ।

इस प्रकार इतिहास के विभिन्न कालों में शादियों के अलग-अलग स्वरूप, उद्देश्य और कारण रहे हैं, जिनके मूल में 'जर, जोरू और जमीन' की भावना प्रतिध्वनित होती है । विवाह एक सामाजिक संस्था है, हर व्यक्ति को इसमें प्रवेश पाना ही है । यह जिंदगी है, जुआ नहीं ।

— जैन मंदिर के पास, दुर्ग

विशालतम छेद

विश्व का विशालतम मानव-निर्मित छेद दक्षिणी अफरीका के किंबरली नामक स्थान पर है । इसकी परिमिति १.६ कि. मी. है तथा यह ८०० मी. गहरा है । यह सन् १८७१ में हीरे प्राप्त करने के लिए खोदा गया था । इससे तीन टन हीरे प्राप्त हुए थे ।

उसकी आंखों में अपरिचय की गंध और परिचय की सुवास है । मुसकान में, चाल में रॉबिट-सी गति, यंत्र-सी चंचलता और आभिजात्य का रुआब है ! मैमोरी में कंप्यूटर है ! संवेदनाओं में दबाव है ! वह कारडिआलोजिस्ट है, रोगी की उपस्थिति उसके मस्तिष्क को झनझना देती है । सतर्कता घेर लेती है । आंखों में उमड़ी पीड़ा वह पहचानता है ।

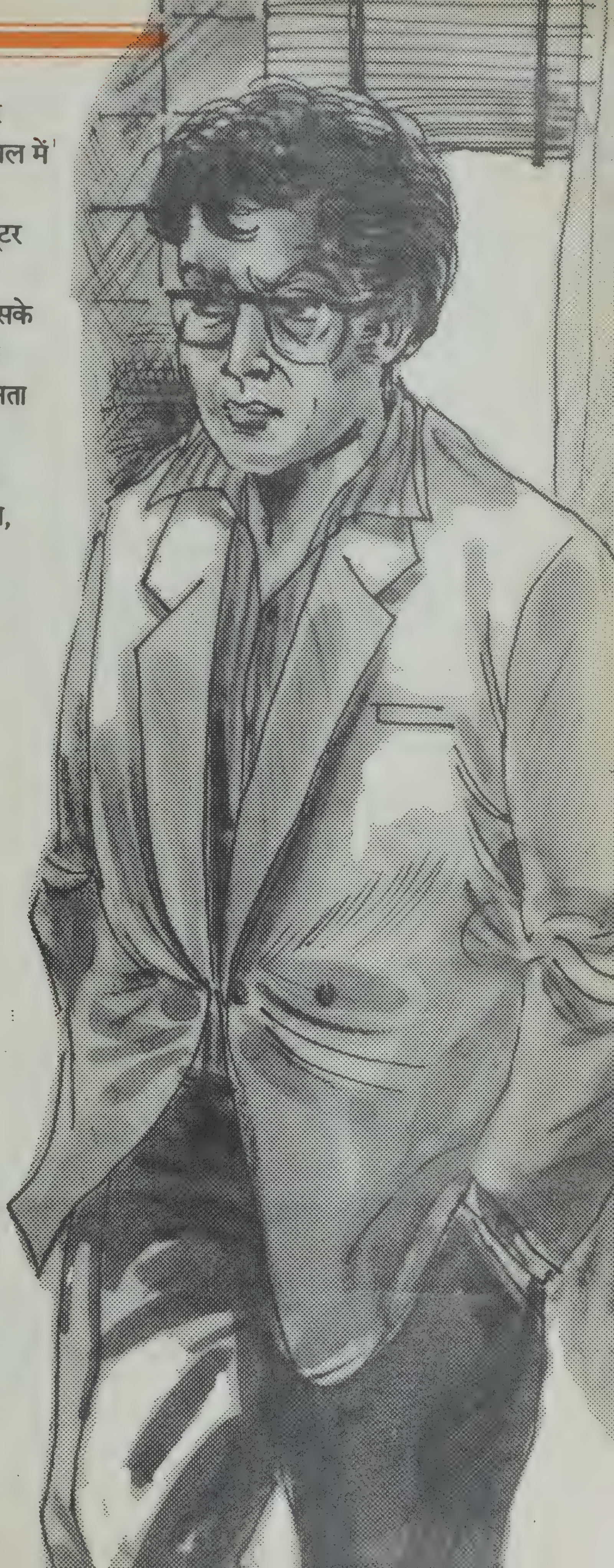
वह छरहरे शरीर ५'-९'' कद और भूरी नीली आंखोंवाला सामान्य आकर्षक, स्निग्ध,

कहानी

नियति

● डॉ. मधु संधु

व्यक्तित्व लिये विदेश-रिटर्न्ड है । शहर के कुछ जाने-माने अस्पतालों में वह जाता है ।उसका अपना क्लिनिक-कम-कंसलटैंट-हाउस है इंपोर्टेड गाड़ी है । बंगला है, सैलूलर फोन है, दस वर्षीया बेटी है—बिना मां की । कभी-कभी यह पेशा बेकार लगने लगता है । रॉबोट-सी रिसेप्शनिस्ट मेड सर्वेंट लगती है । थुलथुली देहों पर होल्टर लगाना वितृष्णा से भर देता है । ईको के रिजल्ट इस शहर



की खाने-पीने की आदतों को चुनौती दिया करते हैं । रोगियों को एक्सरसाइज के ढंग बताना व्यर्थ जान पड़ता है । हार्टबीट, ब्लडप्रैशर चैक करते-करते मन भटक जाता है, हालांकि रोगी को हिप्टोनाइज करना उसे आता है । सभी से आंखों में आंखें डालकर बात करना उसके कान्फीडैंस का भी प्रमाण है ।

आज भी याद आता है, पापा ने स्वयं सिटिंग दे-देकर उसे पढ़ाया और पढ़ाई के लिए एनकरेज किया था । ममा ने रात-बेरात दूध-बादाम पिलाये थे और डिग्री लेने के बाद वह लगभग बेकार था । हाउस-सर्जन बनकर रह गया था । फिर सब छोड़ डाला । कंपटीशन की तैयारी की । एम. डी. की और विदेश के लिए रवाना हो गया । इसी बीच शादी-बच्चे का जन्म—जैसी कुछ अनिवार्य घटनाएं भी घटीं, पर जब जीवन लक्ष्य डगमगाने लगे, तो सब व्यर्थ-सा ही लगता है । उन तनावभरे दिनों में पत्नी का सुख जाना ही नहीं और तब डायवोर्स झेलना पड़ा । बच्ची मां-भाई-भाभी के यहीं रही ।

नन्हीं बच्ची के क्लासरूम के बाहर की ग्राउंड में वह टहलने लगा । पिछले तीन महीनों से यही क्रम चल रहा है । पिछली शाम से ही वह इस घड़ी की प्रतीक्षा करने लगता है । टीचर की एक नजर उसके अंदर हलचल मचा देती है । कई बार तो सचमुच टीचर आब्जर्व करती है । उस दिन बच्ची ने कहा था—'पापा आप यहां मत टहला करो ।' टीचर ने आज फिर कहा—"प्रियेन्दु, पैक युअर बैग, युअर फादर हैज कम ।" दिनों तक मन मचलता रहा, 'होठों पर स्थायी मुसकान बिखर आयी ।'

× × ×

टीचर बहुत सुंदर है, वाइट शर्ट और ब्लू पैंट में तो टीन-एजर लगती है । टीचर कार में आती है, टीचर स्कूटर पर आती है, टीचर मिलिटरी जीप में आती है, टीचर पैंट पहनती है, टीचर सूट पहनती है, टीचर साड़ी पहनती है, टीचर स्लीवलैस पहनती है, फूल स्लीव्ज पहनती है, मैगा स्लीव्ज पहनती है, अंब्रेला कट पहनती है, हाईनैक पहनती है, लो बैक पहनती है, टीचर जूड़ा बनाती है, पोनी बनाती है । बार-बार देखने को, बतियाने को, अनजाने में छूने को मन होता है । रोम-रोम में टीचर बस गयी है, हर धड़कन में समा गयी है । पूरे दिमाग पर छा गयी है । टीचर स्वर्ग लोक की अप्सरा है । टीचर टी. वी. मॉडल का ही दर्शन है । टीचर किसी भी मिस वर्ल्ड या मिस यूनीवर्स से ऊपर है । एक दिन बच्ची ने कहा था—पापा महक कहती थी, "बताऊं तुम्हारे पापा ने आज क्या पहना है—ब्लू

नन्हीं बच्ची के क्लासरूम के बाहर की ग्राउंड में वह टहलने लगा । पिछले तीन महीनों से यही क्रम चल रहा है । पिछली शाम से ही वह इस घड़ी की प्रतीक्षा करने लगता है । टीचर की एक नजर उसके अंदर हलचल मचा देती है ।

पैंट, ग्रे शर्ट और पॉकिट पर पैन लगाया है, गोल्डन वाच है और हाथ में मैगजीन है ।'' अगर बच्ची की क्लासमेट इतना नोट कर सकती है, तो टीचर भी तो करती होगी । काश वह मेरे निकट आती, बतियाती— चलो पलभर के लिए गुजरती, उसके लिए कितना कीमती आफ्टर शेव लगाकर आता हूं । टीचर भी जरूर मेरे मन का हाल जानती—पहचानती होगी, छुपी नजर मुझ पर डालती होगी । बच्ची से कुछ पूछने का सोचती होगी । बच्ची द्वारा दिये गुलाब को मेरा उपहार मानती होगी । वर्षों विदेश में रहकर भी मन नहीं भटका, तब काम-काम और काम ही समक्ष था—कैरियर-कैरियर और कैरियर । टीचर का स्वर कितना मादक है, टीचर का अंगरेजी प्रौनॅनसिएशन कितना स्वीट है । टीचर का गरदन हिलाकर बाल झटकना झिंझोड़ जाता है । मां ने कहा था—'मर्द तो साठे पर पाठे होते हैं ।' मैं तो मात्र फोर्टी प्लस हूं । क्या आज सैनी हेयर ऑयल लाऊं ? शायद बाल्डनैस में फर्क पड़ जाए, क्या डोगरा हेयर सैलूनवाला डाई करवाऊं ? क्या आज से मौगा क्लिनिक का हैल्थ क्लब जॉयन कर लूं ।

उस दिन बच्ची कुछ उदास-सी थी पूछने लगी—''पापा सागर कहां है ?''

''क्यों बेटा ?'' ''पापा टीचर के हसबैंड की सागर ट्रांसफर हो गयी है । टीचर परसों चली जाएंगी ।'' मेरा मन पूरी तरह उखड़ जाता है । पलभर के लिए पूरा जीवन, दिमाग की सारी हलचल । इतने दिनों का उबलता लावा भूकंप बन जाता है । मन को बहलाना,बहकाना व्यर्थ हो उठता है ।



इतनी लंबी पढ़ाई ? पता ही नहीं चला कि सिर में कब सफेद बाल चमकने लगे । आंखों ने कब बाई-फोकल की डिमांड कर दी । इतनी लंबी यात्रा के बाद आज वह सैटल्ड है, सफल है, संतुष्ट है । पेशेंट्स घंटों प्रतीक्षा करते हैं । आपसास के गांवों, कस्बों, शहरों से आते हैं । उसकी उपस्थिति की गंध ही रोगी के लिए संजीवनी बन जाती है । जिंदगी का सबसे बड़ा दुःख यही होता है कि इनसान के सामने ही सब कुछ दसों अंगुलियों से फिसलता जाए और वह नितांत निःसहाय हाथ बांधे देखता रहे । यही उसके साथ हुआ । घर में अस्तित्व बियरर चैक का पर्याय बन गया । वही पारिवारिक सदस्य जीवनभर जिनके लिए जिया—मरा, आज दो मीठे बोलों का एहसान करने में कतराने लगे । उसकी पारिवारिक उपयोगिता को नकारने लगे, मां, भाभी, भाई का बार-बार उकसाना, नकारना, चुभने लगा, बच्ची सारे लाड़-प्यार की अवहेलना करने लगी । क्या यही नियाति है ? सब ऊब चुके हैं ।

—रीडर, हिंदी विभाग,
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय,
अमृतसर (पंजाब)-१४३००५

तीरथ वह, जिसके महासागर चरण पखारे

● डॉ. अनामिका प्रकाश

तमिलनाडु में स्थित रामेश्वरम् भारत के दक्षिणी सिरे पर हिंद महासागर के पास स्थित है। यह हिंदुओं का प्रमुख तीर्थ है। रामेश्वरम् चार धामों में से एक है तथा बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। रामेश्वरम् ५१.८ वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल का एक द्वीप यानी टापू है, जो एक लंबे पुल द्वारा मुख्य भूमि से जुड़ा है। यह द्वीप शंख के आकार का है।

मद्रास-एगमोर-तिरुचिरापल्ली-रामेश्वरम् रेल मार्ग पर तिरुचिरापल्ली से २७० कि.मी. की दूरी पर रामेश्वरम् स्टेशन है। रेलवे स्टेशन से लगभग दो कि.मी. की दूरी पर दक्षिण भारत का, आकार के हिसाब से, तृतीय वृहत्तम मंदिर 'रामेश्वरम् मंदिर' है। इसकी विशालता एवं भव्यता अद्वितीय है। इस मंदिर को स्वामीनाथ मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। यह विशाल मदिर १५१ एकड़ भूमि पर बना हुआ है। यह मंदिर द्रविड़ शैली का उत्कृष्ट नमूना है।

इस मंदिर के पूर्वी द्वार पर दस मंजिला तथा पश्चिमी द्वार पर सात मंजिला गोपुरम् बना हुआ है। इस मंदिर के बरामदे चार हजार फुट लंबे हैं, जो संसार में सबसे लंबे बरामदे माने जाते हैं। प्रत्येक बरामदा सात सौ फुट लंबा है। बरामदों के स्तंभों पर की गयी नक्काशी अपनी कला एवं सुंदरता से दर्शकों को मुग्ध कर देती है। यह मंदिर बारहवीं सदी में बनना आरंभ हुआ था। श्रीलंका के राजा पराक्रम बाहु ने गर्भगृह बनवाया था। बाद में अनेक राजा निर्माण और विस्तार कार्य कराते रहे और तीन सौ पचास वर्षों में यह पूरा हुआ। यह भारत का अद्वितीय मंदिर है।

रामेश्वरम् मंदिर के गर्भगृह में रामनाथ स्वामी के प्रतीक के रूप में एक शिवलिंग है। कहा जाता है कि इसकी स्थापना स्वयं श्री राम तथा



मितीर्थतम्

सीताजी ने की थी । इसलिए इस लिंग को 'रामलिंग' भी कहते हैं ।

मंदिरों की श्रृंखला

रामनाथ शिवलिंग के दाहिनी ओर पार्वतीजी का मंदिर है । प्रत्येक शुक्रवार को पार्वती की प्रतिमा का आकर्षक श्रृंगार किया जाता है । उन्हें सोने की पालकी में बिठाकर पूरे मंदिर को परिक्रमा करायी जाती है । रामनाथ मंदिर के उत्तर में भगवान शिवलिंगम् का मंदिर है तथा उसके पास ही विशालाक्षी का मंदिर है ।

रामनाथ स्वामी मंदिर के विस्तृत परिसर में अनेक मंदिर हैं, जिनमें शेषनारायण भगवान का मंदिर उल्लेखनीय है । इस मंदिर में भगवान विष्णु शेषनाग को बिछौना बनाकर शयन कर रहे हैं । रामनाथ मंदिर परिसर में बाईस कुंड हैं । इन कुंडों में स्नान करने से अनेक रोग दूर हो जाते हैं । मंदिर के पूर्वी गोपुरम् के सामने समुद्र तट है, जो अग्नितीर्थम् कहलाता है । श्रद्धालु पहले अग्नितीर्थ में स्नान करते हैं, फिर उन्हीं गीले वस्त्रों में मंदिर में आकर उन सभी बाईस कुंडों में स्नान करते हैं ।

पौराणिक कथाएं

कहा जाता है कि सीता को रावण के चंगुल से छुड़ाने के लिए श्रीराम ने यहीं से रावण के विरुद्ध युद्ध शुरू किया था । श्रीराम ने अपनी वानर सेना की सहायता से यहां लकड़ी, घास-फूस व पत्थरों का पुल बनवाकर धनुषकोटि से समुद्र पार किया था । यह स्थान सेतु बंध रामेश्वरम् के नाम से भी जाना जाता है । लंका विजय के उपरांत श्रीराम ने धनुष की नोंक से पुल तोड़ दिया था । आज धनुषकोटि



एक बंदरगाह के रूप में प्रसिद्ध है ।

पौराणिक कथानुसार लंका में विजय के बाद श्रीराम ने रावण की हत्या से लगे पाप से मुक्ति पाने के लिए शिव की आराधना करने का संकल्प किया । श्रीराम ने हनुमानजी से कैलाश जाने को और स्वयं शंकर भगवान से ही उनकी कोई उपयुक्त मूर्ति लाने को कहा । हनुमानजी कैलाश गये, किंतु उन्हें अभीष्ट मूर्ति नहीं मिल सकी, अतः हनुमानजी ने इसके लिए तपस्या शुरू कर दी । इधर हनुमानजी को देरी होते देख श्रीराम और ऋषियों ने मूर्ति स्थापना का शुभ मुहूर्त्त गंवाना उचित नहीं समझा । अतः सीताजी द्वारा बनाये गये बालू के शिवलिंग को उन्होंने स्वीकार कर लिया और सीता और राम ने उस ज्योतिर्लिंग की ज्येष्ठ शुक्ला दशमी, बुधवार को, जब चंद्रमा हस्त नक्षत्र में सूर्य वृष राशि में था, स्थापना की, जो कि रामेश्वरम् के नाम से

प्रसिद्ध हुआ।

कुछ समय बाद जब हनुमान कैलाश से लिंग सहित लौटे, तो वहां पहले से स्थापित लिंग को देखकर क्रोधित हो गये। हनुमान का क्रोध शांत करने के लिए श्रीराम ने पहले से स्थापित लिंग के बगल में ही हनुमानजी द्वारा लाये हुए लिंग को भी स्थापित कर दिया और यह घोषणा भी की कि रामेश्वरम् की पूजा करने से पहले लोग हनुमान द्वारा लाये हुए शिवलिंग, जिसका नाम काशी विश्वनाथ है, की ही पूजा करेंगे।

रामेश्वरम् मंदिर के गर्भगृह में रामनाथ स्वामी के प्रतीक के रूप में एक शिवलिंग है। कहा जाता है कि इसकी स्थापना स्वयं श्री राम तथा सीताजी ने की थी। इसलिए इस लिंग को 'रामलिंग' भी कहते हैं।

श्रीरामचंद्रजी के चरण चिह्न

रामेश्वरम् से लगभग दो किलोमीटर दूरी पर गंधमादन पर्वत अथवा पहाड़ी पर श्रीरामचंद्रजी के चरण बने हैं। यहां से रामेश्वरम् मंदिर तथा द्वीप का मनोहारी दृश्य दिखायी देता है। यहां 'राम झरोखा' भी है। ऐसा माना जाता है कि श्रीराम ने इस झरोखे से झांककर समुद्र का अवलोकन किया तथा समुद्र विस्तार मापकर लंका आक्रमण की योजना बनायी थी। 'राम झरोखे' में अगस्त्य मुनि का आश्रम भी है।

मान्यता है कि लंका जाने से पहले दर्भघास पर श्री राम ने विश्राम किया था। रामनापुरम के उत्तर-पूर्व में सोलह किलोमीटर की दूरी पर नौ ग्रहों वाला नवपाशनम् मंदिर है। यह देवी पट्टनम् के नाम से भी जाना जाता है। रामेश्वरम् से लगभग दो कि.मी. की दूरी पर लक्ष्मण तीर्थ है, जहां श्रद्धालुगुण स्नान करते हैं। लक्ष्मण तीर्थ में मुंडन तथा श्राद्ध भी होता है। यहां पर लक्ष्मणेश्वर शिव मंदिर है। यहां से लौटते समय सीता तीर्थ कुंड मिलता है। वहां श्रीराम तथा पंचमुखी हनुमान की मूर्तियां हैं। उससे कुछ आगे रामतीर्थ नामक बड़ा सरोवर है। इसी सरोवर के किनारे श्रीराम मंदिर दर्शनीय है।

तिरूकल्याणम् अर्थात प्रभु विवाह

रामेश्वरम् मंदिर में संपूर्ण वर्ष उल्लास, उमंग, उत्साह और उत्सव का वातावरण रहता है। यहां हर महीने कोई-न-कोई पर्व मनाया जाता है। जनवरी-फरवरी में तैराकी पर्व की धूम रहती है। जुलाई-अगस्त का महीना तिरूकल्याणम् अथवा प्रभु के विवाह की धूम में बीत जाता है।

समुद्र ने रामेश्वरम् धाम को मुख्य भूमि से अलग कर दिया है। मंडपम् और पमवन रेल स्टेशनों के बीच पमवन रेल पुल है, यह देश का सबसे बड़ा पुल है, जिसका निर्माण कार्य लगभग दस वर्ष में पूरा हुआ था। पुल के निर्माण के बाद सड़क मार्ग से रामेश्वरम् की यात्रा सुगम हो गयी है। मदुरै से रेल या बस द्वारा रामेश्वरम् आसानी से पहुंचा जा सकता है। समुद्र के बीच चलती रेलगाड़ी बड़ी मनोहारी लगती है। रामेश्वरम् का निकटतम हवाई अड्डा मदुरै है, जो रामेश्वरम् से लगभग १७३ कि.मी. की दूरी पर है।



शंकराचार्य मठ

रामेश्वरम् पर्यटन की यादें संजोकर रखने के लिए यहां से शंख, मनके तथा ताड़ के पत्तों से बनी विभिन्न आंकर्षक वस्तुएं खरीदी जा सकती हैं जो रामनाथ स्वामी मंदिर के आस पास के बाजार में आसानी से मिल जाती हैं । रामेश्वरम् में यात्रियों के ठहरने के लिए कई धर्मशालाएं एवं लाज आदि उपलब्ध हैं ।

आर.बी. २ जी.एफ.बी. रेलवे कालोनी, बाद (मथुरा)



श्रद्धालुओं के सांसारिक कार्यक्रम

चित्र : डॉ. अनामिका प्रकाश





फिल्म

नयी अभिनेत्रियां : अंधी दौड़ में

भारतीय सिनेमाकाश में आज नवोदित तारिकाओं की भीड़-सी इकट्ठी हो गयी है। जिस तरह आकाश में छितराये तारों में भेद कर पाना कठिन होता है, कुछ तारों—जैसे ध्रुव को छोड़कर, उसी तरह इन तारिकाओं में भी भेद कर पाना कठिन-सा लगता है। एक-सी वेशभूषा, एक-सी मुसकान और एक-सी भाव-मुद्रा। कभी-कभी तो लांग शॉट में फिल्माये गये नृत्य-दृश्यों में तो यह अंतर करना और भी कठिन हो जाता है कि यह मनीषा कोइराला है या रवीना टंडन या सोनाली बेंद्रे! मुसकान भी एक-सी चेहरे पर चस्पा होती है—चाहे माधुरी दीक्षित हो या महिमा चौधरी। लेकिन काफी समानताओं के बावजूद आज की कुछ तारिकाओं ने अपना स्थान बनाया है—जैसे मनीषा कोइराला, करिश्मा कपूर, जूही चावला आदि लेकिन इनमें भी वह बात नहीं, जो स्मिता पाटिल या शबाना आजमी की तरह अपनी अभिनय क्षमता के बल पर दर्शक के दिल में बस जाएं। ये नवोदित तारिकाएं आंखों को तो सुहाती हैं, लेकिन कुछ देर के लिए ही, दिल में नहीं बस कर पातीं।

इसीलिए जब कभी आज के दौर की फिल्मों के नृत्य या गायन के टुकड़ों के बीच, पुरानी फिल्मों के नृत्य या गायन के दृश्य आ जाते हैं तो एक सुकून-सा मिलता है। आज न मीना कुमारी हैं, न मधुबाला, न नर्गिस, न नूतन और न गीता बाली। पर इन अभिनेत्रियों के दृश्यों को देखते हुए आज की तारिकाओं के दृश्य फीके पड़ने लगते हैं। पुरानी अभिनेत्रियां उन



बुझे हुए तारों सी लगती हैं, जो सदियों पूर्व समाप्त तो हो चुके हैं, पर उनका प्रकाश आज भी हमें दिखायी दे रहा है। नूतन, नर्गिस, मीना कुमारी, मधुबाला-जैसी अभिनेत्रियां आज नहीं हैं लेकिन उनके अभिनय-कौशल से हम आज भी चमत्कृत होते हैं।

सुशिक्षित भी, निर्भीक भी !

यों, पूर्व पीढ़ी की अभिनेत्रियों की तुलना में आज की तारिकाएं अधिक सुशिक्षित, अधिक निर्भीक और समय से भी आगे निकल जाने की ललक लिये हुए हैं। पूर्व पीढ़ी की अभिनेत्रियों के विपरीत उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि भी बिलकुल भिन्न और कभी-कभी अभिजातीय भी है। मनीषा कोइराला नेपाल के एक प्रतिष्ठित राजनीतिक परिवार से है तो करिश्मा कपूर के पीछे बंबई फिल्म जगत के 'प्रथम परिवार' कहे जानेवाले 'कपूर खानदान' का मान-सम्मान और कीर्ति है। माधुरी दीक्षित एक सुशिक्षित मध्यवर्गीय परिवार से है। पुरानी अभिनेत्रियों के पीछे एक विशेष किस्म के परिवार हुआ करते थे, चाहे नर्गिस हों या निम्मी, या मधुबाला या मीना कुमारी। लेकिन इन अभिनेत्रियों ने अपनी अभिनय क्षमता से दर्शक की प्रशंसा ही नहीं, उसका आदरभाव भी अर्जित किया, जबकि आज की तारिकाएं अपनी पाश्चात्य अल्प वेशभूषा, लटके-झटके वाले अंग प्रदर्शन के बावजूद वह लोकप्रियता हासिल नहीं कर पायी हैं, जो पूर्व पीढ़ी की अभिनेत्रियों ने की थी।

'मुंबई में घुटन'—तबू

निस्संदेह आज की कुछ तारिकाएं बेहद सुंदर भी हैं, जैसे ऐश्वर्य राय और तबू, जिसे 'माचिस' फिल्म के लिए नेशनल अवार्ड भी मिला है। आज की तारिकाओं में तबू से अभिनय क्षेत्र में कुछ कर दिखाने की उम्मीद बनती है।
शुरू-शुरू में तो तबू भी 'ग्लेमरस' अभिनेत्रियों में एक इजाफा ही लगती थी लेकिन 'माचिस' में उसने अभिनय क्षमता से उस मुकाम की ओर बढ़ना शुरू कर दिया है, जो मधुबाला, नर्गिस, नूतन और वहीदा रहमान—जैसी श्रेष्ठतम अभिनेत्रियों का है। हिंदी फिल्मों में ही नहीं, तबू ने तेलुगू फिल्म जगत में भी अपनी पहचान बनायी है। तेलुगू फिल्म 'निन्ने पेल्लादाता' में अभिनय के लिए उसे फिल्म फेयर अवार्ड भी मिला है। तबू एक संवेदनशील अभिनेत्री है। मुंबई के बारे में वह कहती है, 'मुझे घुटन-सी होती है यहां। मुंबई मेरा खून करती है।' वह विनम्र भी है, 'जब भी मैं शबाना आंटी को देखती हूं तो खुद को छोटा महसूस करती हूं।

ढेर सारे एवार्डों और शानदार अदाकारी के बाद भी वे कितनी अप्रभावित हैं ।'

पुरानी रूढ़ियां तोड़ डालीं—मनीषा कोइराला

तबू की तरह ही जिस बहु-चर्चित अभिनेत्री ने कुछ फिल्मों में अपनी छाप छोड़ी है, वह है मनीषा कोइराला । 'ए लव स्टोरी', 'बांबे', 'खामोशी—द म्युजिकल' आदि में मनीषा के अभिनय को सबने सराहा है और माना है कि वह केवल थिरकनेवाली ही नहीं, भावप्रवण अभिनेत्री भी है । मनीषा कोइराला नेपाल के एक प्रगतिशील परिवार से है । अपने परिवार की स्त्रियों के बारे में वह कहती है, 'वे सचमुच प्रगतिशील हैं । मेरे जीवन में आयी सभी स्त्रियां प्रगतिशील रहीं । एक समय जब बहुएं घूंघट काढ़ती थीं तो मेरे घर की स्त्रियां जींस पहनती थीं । वे नेपाल में घर-घर जाकर लड़कियों को शिक्षा दिलाने का आग्रह करती थीं । मेरे परिवार की स्त्रियों ने तमाम पुरानी रूढ़ियां तोड़ डालीं ।'

विचारों और व्यवहार में खुलापन मनीषा को विरासत में मिला है । और उसका यही खुलापन फिल्म जगत के कुछ पत्रकारों के लिए चटकदार मसाला बन गया । मनीषा के मद्यपान और प्रेम-प्रसंगों के मनगढ़ंत किस्सों ने उसकी छवि बिगाड़ने में कोई कमी नहीं छोड़ी लेकिन कुछ फिल्मों में उसके श्रेष्ठ अभिनय ने लोगों को यह स्वीकार करने पर भी मजबूर किया कि चाहे जो हो, मनीषा एक कुशल-सफल अभिनेत्री भी है ।

करिश्मा—कपूर खानदान की विरासत

मनीषा-जैसी ही कुछ-कुछ स्थिति करिश्मा कपूर की थी । एक विशेष तरह की फिल्मों के लिए ही वह उपयुक्त समझी जाती थी—द्विअर्थी संवाद, उत्तेजक भाव-भंगिमाएं, भौंडी वेशभूषा । उसकी ऐसी फिल्में चलीं भी खूब लेकिन श्रेष्ठ अभिनेत्री के रूप में वह कोई पहचान नहीं बना पायी । इधर कुछ फिल्मों में उसने अपने अभिनय की छाप छोड़ी है—जैसे 'राजा हिन्दुस्तानी' या 'दिल तो पागल है' ।

स्मिता, शबाना, परवीन बाबी आदि की पीढ़ी के बाद जो इधर नयी तारिकाएं आयीं उनमें बहुचर्चित रही माधुरी, जूही चावला और ऊपर उल्लिखित अभिनेत्रियां । इनके अलावा और भी हैं, जैसे रवीना टंडन, उर्मिला मार्तोंडकर, शिल्पा शिरोडकर और 'विश्व



सुंदरियां' सुष्मिता सेन, ऐश्वर्य राय ।

सेक्स भी अहम हिस्सा—महिमा चौधरी

इधर 'मॉडलिंग' व्यवसाय से फिल्मों में आने का रिवाज-सा बन गया है । जीनत अमान, किमी काटकर, स्वरूप संपत आदि पहले मॉडलिंग से ही जुड़ी हुई थीं । मॉडलिंग से ही जुड़ी एक और नयी अभिनेत्री चर्चा में है—महिमा चौधरी ।

कुछ वर्षों पहले टी.वी. पर एक शीतल पेय का विज्ञापन बहुत आता था । उसे सुपरिचित अभिनेता आमिर खान के साथ दो अपरिचित लड़कियों ने किया था । एक बेहद साधारण-एक सुंदर । सुंदर लड़की बाद में विश्व सुंदरी बनी और लोगों ने उसका नाम जाना —ऐश्वर्य राय ।

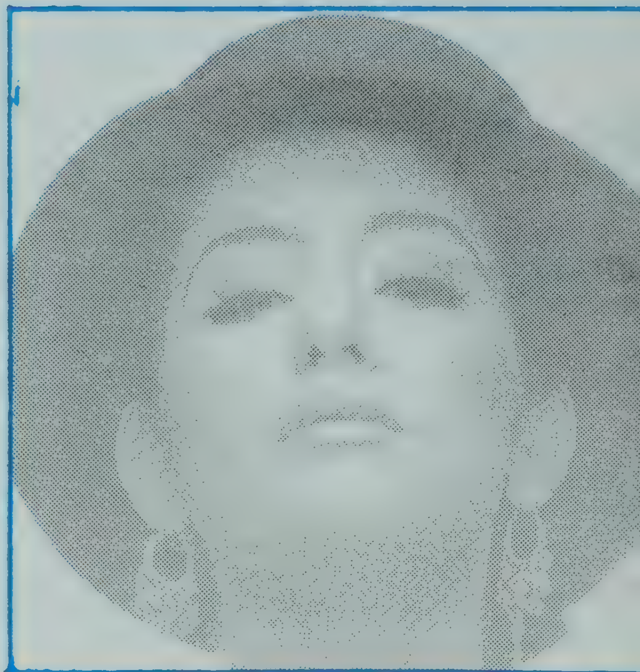
दूसरी लड़की पेप्सी, कैमे, वाल्श आइसक्रीम, डोनियर सूटिंग, वीडियोकान आदि कंपनियों के विज्ञापनों की आकर्षक, लेकिन अपरिचित-सी, सफल मॉडल रही । उसे फिल्मी भाषा में कहें तो 'ब्रेक' मिला सुभाष घई की फिल्म 'परदेश' से, और साथ ही उसे एक नया नाम भी मिला —महिमा चौधरी ।

महिमा का कहना है—

'अपनी प्रतिभा के बदौलत सिने फलक पर अपनी विशिष्ट छवि कायम करने की लालसा मुझे फिल्मों की ओर खींच लायी । मैं नाम, शोहरत और पैसा कमाना चाहती हूं ।'

मधुबाला और माधुरी दीक्षित से प्रभावित महिमा 'नंबर वन' के चक्कर से दूर रहना चाहती है । वह इस आरोप से भी सहमत नहीं कि 'केवल आज की फिल्मों में सेक्स भुनाया जा रहा है । पुरानी फिल्मों में भी 'हॉट सीन' हुआ करते थे ।' महिमा को ऐसे सीन करने से कोई गुरेज भी नहीं । वह कहती है, 'मैं ऐसे दृश्यों को करने में कोई नुकसान नहीं समझती, बशर्ते फिल्म की कहानी में ऐसे दृश्यों की मांग हो । सेक्स भी तो इनसान की जिंदगी का एक अहम हिस्सा है ।'

महिमा की आगामी फिल्में हैं —'प्यार कोई खेल नहीं' और 'चैंपियन', 'हद कर दी आपने', 'दाग', 'हमको तुमसे प्यार है' ।



मॉडल से 'विश्व सुंदरी' और 'विश्व सुंदरी' से अभिनेत्री —यह सफर है खूबसूरत ऐश्वर्य राय का । ऐश्वर्य ने एक तमिल फिल्म से सिने जगत में पदार्पण किया । फिल्म अच्छी थी, पर आर्थिक रूप से सफल नहीं रही । उसकी हिंदी फिल्में भी विशेष ध्यान आकर्षित नहीं कर पायीं, पर ऐश्वर्य निराश नहीं ।

ग्लैमर और मिठास ही नहीं —सोनाली बेंद्रे

एक और मॉडल जो अच्छी अभिनेत्री होने के बावजूद कोई हिट फिल्म नहीं दे पायी, वह है

सोनाली बेंद्रे । सोनाली सुंदर है, प्रतिभासंपन्न और नृत्य कुशल भी । लेकिन एक समय वह एक-जैसी दर्जनों भूमिकाओं में फंस-सी गयी थी । आज उसने ऐसी फिल्में स्वीकार करना बंद कर दिया है । सोनाली इस बात से बड़ा असहज अनुभव करती है कि वह अभी भी अपनी उसी 'सुकोमल-सुंदर मॉडल चेहरा' वाली छवि से मुक्त नहीं है । वह कहती है, 'मैं सिर्फ ग्लैमर और मिठास ही नहीं हूं बल्कि



आक्रामक भूमिकाएं भी कर सकती हूं, बशर्ते कि कोई मुझ पर विश्वास करे । 'नाराज' में मैंने ऐसी ही भूमिका की थी । 'भाई' में मैंने 'टाम ब्वॉय' की भूमिका की है । 'इंग्लिश बाबू देसी मेम' में मैंने बिना मेकअप के ग्लैमरहीन नायिका की भूमिका की । फिर भी लोग मेरे पास एक ही तरह की भूमिकाएं लेकर आते हैं जैसी उन्होंने अपने दिमाग में मेरी छवि बनायी हुई है ।

एक और मॉडल है, जिसने अपनी अभिनय क्षमता से न केवल भारतीय वरन विदेशी दर्शकों और आलोचकों को भी प्रभावित किया है, वह किट्टू गिडवाणी । किट्टू गिडवाणी मॉडल भी रही हैं लेकिन थियेटर उसका पहला शौक रहा है । किट्टू गिडवाणी की कोई कमर्शियल फिल्म नहीं है, लेकिन टेलीविजन सीरियलों और एक फ्रेंच फिल्म तथा 'रुक्मा बाई की हवेली' में उसके अभिनय को बहुत सराहा गया है । फ्रेंच में निष्णात किट्टू गिडवाणी का सबसे प्रथम टेली सीरियल था —'तृष्णा', जो प्रसिद्ध लेखिका के उपन्यास 'प्राइड एंड प्रेज्युडिस' पर आधारित था । किट्टू थियेटर की देन है । उसने शालेय जीवन से ही नाटकों में काम करना शुरू कर दिया था । किट्टू ने फ्रेंच नाटकों में भी कार्य किया है । गोविंद निहलाणी की फिल्मों 'रुक्मा बाई की हवेली' और 'द्रोहकाल' में भी उसके अभिनय को सराहा गया । राज खोसला की फिल्म 'डांस ऑव द विंड' में किट्टू को नांत (फ्रांस) में सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार मिला । किट्टू कहती हैं, ''यह रोल ग्लैमरहीन था, जिसमें एक गायिका अपने आपको बाहरी दुनिया से काटकर अपने आप में समेट लेती है ।'' इस भूमिका को करने के पूर्व किट्टू ने छह मास तक शास्त्रीय संगीत का विधिवत प्रशिक्षण लिया ।



काजोल, प्रख्यात अभिनेत्री शोभना समर्थ



की धेवती, नूतन की भतीजी और तनूजा की बेटी है । निस्संदेह अभिनय क्षमता उसे विरासत में मिली है ।

सन् १९९२ में 'बेखुदी' से फिल्म में प्रवेश करने वाली काजोल की १९९३ में एक फिल्म हिट हुई —'बाजीगर' । १९९५ में उसकी पांच फिल्में आयीं जिनमें 'दिल वाले दुलहनियां ले जाएंगे' काफी सफल रही । सन् १९९७ में उसकी चार फिल्में आयीं —'सपने', 'गुप्त', 'हमेशा' और 'इश्क' । काजोल ने सकारात्मक तथा नकारात्मक, दोनों प्रकार की भूमिकाएं कुशलता से निभायी हैं । काजोल की छवि एक उद्दंड, नखरैल, बिगड़ैल लेकिन प्रतिभासंपन्न अभिनेत्री के रूप में रही है, लेकिन उसका कहना है, "मैं भी अन्य लड़कियों की तरह हूं । बहुत ही अच्छी लड़की हूं । मैं प्रचलित मूल्यों को मानती हूं ।" पर वह यह भी कहती है, "हर इनसान को अपनी जिंदगी अपने हिसाब से जीना चाहिए । मैं खुद को टिपिकल रूढ़िवादी परिवार में एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में देखती हूं ।"

अंधी दौड़ का अभिशाप

आज की तारिकाओं में उर्मिला मातोंडकर, पूजा भट्ट, शिल्पा शेट्टी, पूजा बतरा —जैसी अनेक अभिनेत्रियां हैं, जो प्रतिभा संपन्न हैं और निर्देशक का कुशल मार्गदर्शन उनसे भी शायद वैसा ही काम करवा सकता है, जैसा गुलजार ने 'माचिस' में तबू से करवाया है । दिक्कत यह है कि फिल्म निर्माण से जुड़े लोग 'अंधी दौड़' में विश्वास रखते हैं । एक नृत्य संयोजन के लोकप्रिय होते ही आनेवाली फिल्मों में भी वैसे ही नृत्य-संयोजनों की भरमार लग जाती है और तब सभी फिल्में एक-सी लगने लगती हैं, और साथ ही अभिनेत्रियां भी । कुछ बेहद प्रतिभा संपन्न अभिनेत्रियां उनके 'फ्रेम' में फिट नहीं हो पातीं और वे धीरे-धीरे ओझल होने लगती हैं । अपने समय की प्रसिद्ध अभिनेत्री उषा किरण की बेटी तन्वी प्रतिभा संपन्न अभिनेत्री थी । जिन कुछ फिल्मों में उसने काम किया, उन सबमें उसका अभिनय चिरस्मरणीय रहा । अब तन्वी आजमी यदा-कदा सीरियलों में नजर आती है ।

इधर अभिनय भी प्रोफेशनल कैरियर बनता जा रहा है । युवक-युवतियां बाकायदा प्रशिक्षण लेकर फिल्मों में प्रवेश करना चाहते हैं । फिल्मों में ग्लैमर के अलावा पैसा भी है और भौतिक सुख-समृद्धि भी । जो समर्पित होते हैं, लक्ष्य के प्रति वे सफल भी होते हैं । रेखा, श्रीदेवी-जैसी अभिनेत्रियों ने यह सिद्ध ही कर दिया है कि प्रतिभा के साथ परिश्रम और लगन का संगम हो जाए तो अंततः सफलता मिलती है । बस, एक अवसर मिलने की जरूरत होती है । आज की तारिकाओं को अवसर तो मिल रहे हैं, उन्हें लगन और परिश्रम से अपनी प्रतिभा को संवारना है । पत्थर पर घिस जाने के बाद ही हिना रंग लाती है ।

प्रस्तुति : द. प्र. शु.

कहानी

अनावश्यक

• बाला शर्मा

'रीचिंग टुमारो, फ्रंटियर' बस इतनी-सी सूचना— वह कागज का पुरजा मात्र ही तो है नन्हा-सा, पर इतने बेचैन क्यों हो उठे हैं रविकांत ? इस ऊबड़-खाबड़ पड़े लॉन में इस तरह दूब को रौंदते न जाने कितने चक्कर लगा डाले हैं। बुलू कल आ रही है न जाने कितने प्रश्न करेगी अपनी मां के बारे में।

हर बार यही तो होता था। जब भी कोई समस्या होती, तब वे रात के नीरव वीराने में इसी प्रकार बौखलाये से चक्कर लगाते रहते। प्रभा ही उन्हें आकर उस संकट से उबार ले जाती थी और वे अबोध नन्हें बच्चे से चुपचाप उसके पीछे चले जाते। सब कुछ भूलकर सुकून की नींद सो जाते।

पर आज वह नहीं हुआ। पूरी कोठी में सन्नाटा जैसे पांव पसारकर लेटा है। केवल निशीथ के कमरे की बत्ती जल रही है। शायद जाग रहे हैं दोनों। सांझ को पार्टी में गये थे, वहीं से खा आये होंगे। रीना अच्छी गृहस्थिन बहू है। उनका बहुत ध्यान भी रखती है। खाना, सोना तब कुछ करीने से उनके ठंडे, गर्म कपड़े, टाई, मोजा सब यथास्थान रहता है। सब कुछ सलीके से उनकी पसंद का ही।

फिर क्या रह जाता है ? क्यों छूट जाता है मन का चैन। फिर रात के सन्नाटे में शुरू हो जाता है ठंडी दूब को रौंदना। ऊबड़-खाबड़ राह पर नंगे पांव चलना। क्या कारण है भला ?

क्या तुम कभी मेरा ध्यान भी रखती हो ? उमां से शिकायत रहती थी सदा— । उसका अल्हड़ लापरवाह स्वभाव रविकांत को कभी नहीं सुहाया। घर-गृहस्थी का हर सुख दिया था उसने। निशीथ और बेला से अनन्य प्यार था उन्हें। अच्छा पद, वेतन, मान सब कुछ था। पर क्यों नहीं रह सकी 'संतुष्ट' वह ? अतृप्ति की आकुल परछाई क्यों छायी रहती सदा उसके आनन पर। तभी एक धमाका हुआ, "अरे आज भाभी की कविता सुनी। भई बड़ा सोज है उनकी आवाज में तो।" वर्मा ने बड़े उत्साह से बताया। वे आश्चर्य से केवल उसका चेहराभर देखते रह गये। "क्या कह रहे हो ?"

"हां सही कह रहा हूं, आज ही सुनी है।"

"अरे नहीं भई, कोई और होगी।" फोन पर, वे उसका चेहरा तो नहीं देख पाये परंतु उसकी आवाज से आश्चर्य की परिसीमा और एक अतिरिक्त आवेग झलक रहा था जो वास्तव में उन्हें नहीं सुहाया।

"अरे नहीं मैं सही कह रहा हूं— वहां उस फंक्शन में सुनी थी। उसके स्वर में बनावट की परछाई नहीं थी।"

सांझ यूं ही घर पर बिताने का निश्चय कर क्लब नहीं गये। सीधे बैडरूम में ही चले आये। उमां की वार्डरोब खुली पड़ी थी, साड़ियां एक ओर खिसकाकर पलंग पर अधलेटे हो गये। "अरे आज—कैसे वक्त ?" उमां की भीगी देह पर केवल पारदर्शी

गाउन लिपटा था। मन ललक उठा कि अंक में सिमेट लें, पर— । 'बस सोचा यूं ही—' कहकर उठ खड़े हुए। होंठों तक आकर बात ठहर गयी। उमां ने सरसरी निगाह डाली फिर कपड़े लेकर बाथरूम में घुस गयी। उसे अंक में सिमेट लेने की इच्छा बलपूर्वक दबा ली थी। तब— । काश ऐसा सब न किया होता तब— । वह कविता के मधुर बोल गुनगुनाती स्वयं भी कविता बनी थी साक्षात्! और उनका कठोर अनुशासित मन व्यवस्था के बोझ तले दबा रह गया था। मन की अतल गहराइयों में उमां साक्षात प्रतिमा बनी बैठी थी। भले ही, परंतु प्रकट में वह सब स्वीकार कर सके उनका स्वाभिमान, उस सबकी आज्ञा कैसे देता भला।

फिर डायरी के पन्नों पर मोती से अक्षर टंकते गये। इंद्रधनुष के सातों रंग उमां की कविता में सिमटते रहे। वर्मा ने कई बार आग्रह किया कि चलो अमुक हॉल में आज फंक्शन है, भाभी का भी प्रोग्राम है, पर नहीं—वक्त बरबाद करना, वह संभव नहीं—- उनकी नोट बुक में दिन के चौबीस घंटों का टाइम टेबल बना रहता।

घर द्वार व्यवस्थित था। निशीथ और बुलू अच्छे कान्वेंट में पढ़ रहे थे। स्वयं उनका अपना कैरियर आकाश की ऊंचाइयों को छू रहा था, पर क्या था जो उमां को उस सबसे संतुष्टि नहीं थी। उसका व्यापारी मन वह सब सोचने के स्तर पर नहीं था।

कंपनी एग्जीक्यूटिव बनने के सपने बचपन से देखे थे। तभी न, आई.ए.एस. छोड़ दिया और मैनेजमेंट में चले गये। उमां के पापा ने घर नहीं देखा— बस देखा था उनका उज्ज्वल भविष्य, जीवन में आगामी उन्नति। तब शशिकांत को भी शायद उतना अनुमान नहीं था कि उन्नति के चरम सोपान पर पहुंच सकेंगे।

उमां से प्रेम किया था अथाह गहराइयों तक तन-मन से एकाकार हुए थे। अनुभूति के चरम क्षणों में तृप्ति का सुख भोगा था और प्रतिफल भी मिला था। कोई भी उनके सुख-संसार को ईर्ष्या का विषय बना सकता था, इसमें संशय नहीं। रूखे बालों को सिमेटकर जूड़ा बनाती उमां की वह अल्हड़ आकृति हृदय में आज भी सिमटी है। शायद वह जो प्रथम दृष्टि में प्रेम हो जाने वाली बात है वही होकर उस सब पर टीका-टिप्पणी करने का समय उन्हें कभी नहीं मिला। फिर आज उस सोये हुए प्रसंग की शव परीक्षा क्यों?

"पापा अंदर चलकर सो जाइए न", निशीथ को सामने पाकर जड़वत खड़े रह गये— ।

"अरे तुम।"

"जी मैंने देखा, आप बहुत देर से लॉन में टहल रहे हैं।" असमंजसभरे स्वर में जैसे सफाई दे रहा हो।

"हां : आ" निःशब्द लंबे कदम रखते हुए अपने कमरे तक चले आये।

फोम के नरम गद्दों में जैसे सांप रेंग रहे हैं। नींद पलकों से कोसों दूर अंधेरे में छत पर बनते-सिमटते साये देखना, यही तो नियति रह गयी है अब। पास के कमरे में चूड़ियों की खनखनाहट से माथा तवे-सा जलने लगता है। तब भी यही होता था। पर, उमां तो, 'कभी बच्चे सुन रहे हैं, 'थक रही हूं।' हजार कारण रहते उसके पास, फिर स्वयं शशिकांत परिवार और काम दोनों में तालमेल बैठा पाना भी तो कितना कठिन था।

बच्चों को होस्टल भेज दिया । यहां शहर से इतना दूर कोई ढंग का स्कूल भी तो नहीं— सुबह नाश्ते की टेबल पर उमां का मुरझाया चेहरा देख मन में कसक होती, पर उसके अकेलेपन का बोझ बांट सकें, उतना समय कहां था उन्हें । पत्र-पत्रिकाओं से घर भरा रहता । बीच-बीच में उमां की कविता-कहानियां छपने की जानकारी मिलती, पर कभी बैठकर पढ़ने का समय नहीं रहता । डाक का पुलिंदा खोलकर चपरासी उमां की डाक छांटकर अलग कर देता, तब आश्चर्य भी होता । कितना मान-सम्मान मिल रहा है उसे, वह जो कि निरी मूर्ख ही थी उनकी दृष्टि में ।

"उंह कविता कहानी से क्या पेट भर सकेगा", कहकर अहं शांत कर लेते ।

"शायद प्रशंसा के दो बोल इनसे भी मिलें ।"

उमां मन ही मन आस लगाये रहती । और रविकांत उसके बिखरे साड़ियों के अंबार, ड्रेसिंग टेबल पर उल्टी-सीधी पाउडर कंघी, बाथरूम में साबुन पानी के छींटों को देखकर वितृष्णा से होंठ भींच लेते । फिर जब घर में काकटेल डिनर होते, तब अतिथियों के बीच चहकती उमां को देखकर आश्चर्य हो साड़ी के लहराते जरीदार पल्लू इवनिंग इन पेरिस की वह जानलेवा सुगंध ओह आज भी स्मृतियों के ज्वार लहक उठते हैं । पाक कला के न जाने कितने नमूने तैयार किये जाते । घर-बाहर सब नये सिरे से साज-सज्जा होती । रविकांत को बड़ा सुकून मिलता, बहुत गर्व होता उमां पर ।

"नहीं— फूहड़ नहीं है ।" उसका अपना तरीका है स्वयं को समझा लेते ।

"आपके गीत बड़े दिलकश हैं ।"



"उस कहानी में बड़ा दर्द था ।"

"आपकी फोटो देखी थी फलां मैगजीन में ।"

रविकांत उस सबके अभ्यस्त हो गये थे । शुरू में ईर्ष्या का जहर जो उनके माथे चढ़ जाता और कई-कई दिनों तक अबोला चलता, दोनों के बीच । वह सब अब नहीं रहा । शायद आयु के चार दशक पार कर उमां की अल्हड़ हो आयी देह ही थी जो उन्हें निश्चिंत कर रही थी ।

"निशीथ तेरी मम्मी का प्रोग्राम है वहां— तुझे पास तो मिले होंगे ।" सतीश ने जैसे सूचना भर दी थी । उमां ने स्वयं कोई चर्चा क्यों नहीं की—निशीथ को अच्छा नहीं लगा । पुरुष होने का दंभ तो मां के रिश्ते से भी ऊंचा था । कविता और साहित्य के भूत में उलझी वह दुनियादारी से बेखबर रहती । स्वेद बिंदु माथे पर छलछला जाते, काली घुंघराली लटें बिखर जातीं और अनजान दृष्टि उसी में उलझ रहती । निशीथ और बुलू अब वय संधि की रेखा पर खड़े थे । मम्मी की प्रशंसा अच्छी लगती; परंतु कभी-कभी वह छिछले रिमार्क सुन निशीथ क्रोध से कांपने लगता । मन ही मन घृणा भी करता और पापा को दोषी ठहराने लगता । वह जो घृणा की परछाइयां उसकी दृष्टि में तैरने लगी हैं क्या है इन सबका कारण ?

बरस दर बरस इसी ओहा-पोह में बीतते रहे । बुलू का ब्याह, निशीथ का डॉक्टर बन जाना सब कुछ यथायोग्य होता रहा । रविकांत ऊंचाइयों के सोपान लांघते रहे और उमां उन सबसे दूर अकेलेपन की खाइयों में भटकती रही ।

बैरा टेबल सजाता रहा । महाराज सुस्वाद भोजन बना प्रतीक्षा करते रहते । माली गुलदस्ता बना टेबल पर सजा जाता । महकते फूल मुरझा जाते और रविकांत को खाने का समय मिलना भी कठिन रहता । कभी निशीथ आ जाता मित्रों सहित, तो घर में हंसी गूंज उठती । उमां को अच्छा लगता आग्रहपूर्वक सबको बनाकर खिलाना । बच्चों में रच-मिलकर गप्पें लगाना । पर निशीथ या उसके मित्रों में सकुचाहट देख-देख स्वयं ही वहां से दूर हट जाना ।

"तेरी मम्मी का टाइम कैसे पास होता है । उस दिन नरेन को कहते सुना तो आश्चर्य हुआ कि अन्य किसी को क्यों नहीं हुआ खयाल ।"

"टाइम— अरे टाइम है ही कहां उनके पास, हमारे लिए भी नहीं टाइम तो ।" स्वर में उदासी घुली थी ।

"दादा, वहां ऐग्जीबीशन में साड़ियों की

वह उमां की लिखी अंतिम चिट्ठी उनके हाथ में थमा गया था, "मैं आप लोगों के लिए तो अनावश्यक ही रही थी सदा । तब फिर मेरा अंतिम संस्कार भी मेरा यही बेटा करेगा । यही अंतिम इच्छा है मेरी बस । अनावश्यक.....

सेल लगी है, ले चलो न हमें ।'' बुलू का जिदभरा लड़ियाता स्वर उन्हें चौंका गया । क्यों नहीं वह उन्हीं से आग्रह करती ? मां तो है न उसकी ।

''मम्मी के साथ जा.न ।''

'उहूं, उन्हें कहां पसंद है वह सब ?''

मन में हिलोर उठी थी । ममता का वेग संभाल पाना कठिन था । आंखें नम हो आयीं । फिर आग्रहपूर्वक बुलू को ले गयी थी— स्वयं ही ड्राइव किया तो बुलू चहक उठी, ''साड़ियों, जूतों के पैकेट दामादजी के लिए'', निशीथ के लिए न जाने क्या-क्या खरीद लिया । केवल पति के लिए कुछ नहीं खरीदा ।''

''नहीं वे अपनी पसंद के बिना कुछ नहीं पहनेंगे ।'' बुलू के आग्रह पर संकोचवश इतना ही कह पायी । अब जब जीवन के तीन-चौथाई प्रहर बीत गये उन बीते प्रसंगों को खंगालने से क्या लाभ । तब बुलू जितनी ही उम्र रही होगी । मम्मी से तीज और रक्षाबंधन पर मिले रुपये जोड़कर ऊन खरीद लायी थी तब । रविकांत की आय अधिक नहीं थी । रात में जागकर सबकी नजर बचाकर पुलोवर बुनकर बक्स के नीचे की तह में रख दिया था । रविकांत उसे लिवाने आये तो उन्हें पहनाकर आश्चर्य देना चाहती थी, पर नहीं, वहां तो उपहास की सी झलक जो उनके होंठों पर डोल गयी थी सो उमां के मन पर बर्फ जमा गयी थी जैसे । बस वही एक शून्य जम गया है मन की तलहटी पर । स्वयं के नाकारा होने का आवेग मन को कचोट उठता है । रात के सन्नाटे में नींद पास नहीं फटकती । हवा की सरसराहट झींगुरों के स्वर सब उसके साथी हैं ।

रविकांत क्लब में एक राउंड खेलकर नित्य का कोटा लेकर, ठीक समय पर छुरी-कांटा लेकर आते हैं । समय पर छुरी-कांटा, नैपकीन सब साफ-सुथरा रहे, टेबल पर सजा रहे तो सब शांत रहता है । बस यहीं तक पत्नी अथवा गृहस्वामिनी का श्रेय उमां को जाता है । इतने बरस बीत गये उनकी निजी वार्डरोब खोलने का साहस नहीं जुटा पायी और न ही यह जान पायी कि उनका वेतन कहां, कितना व्यय होता है ?

जो कुछ चाहिए सब कुछ तो मिलता है तुम्हें । शुरू में एक-दो बार साहस करके पूछा था तो रूखा-सा वह उत्तर मन को साल गया था । दो-चार कड़े शब्दों का आदान-प्रदान, फिर अबोला और संबंधों की शिला बर्फ बनकर रह गयी । अपनत्व की अथवा जीवन-संगिनी बन पाने की ललक मन में ही रह गयी । उस शून्य को पाट सके उसका एक ही तो सहारा था, पुस्तकों का वह संसार कहीं बहुत अपना था । परंतु वहां भी अब व्यवधान पडने लगा था ।

उस दिन काव्य गोष्ठी में वह युवक प्रथम पंक्ति में बैठा बड़े मनोयोग से सुन रहा था, फिर उसके भीगे नेत्र तो उमां को भी असमंजस में डाल गये थे । कहीं देखा था उसे, कहां देखा होगा ? ओह निशीथ के साथ आया था एक बार, तभी मिला था । पर इससे अधिक जानकारी नहीं थी ।

''मैं आपसे मिलने आ सकता हूं ।'' उसका आतुर आग्रह । इनकार नहीं कर सकी थी । प्रायः ही कभी-कभी कविता-कहानी पर चर्चा चल पड़ती, तभी जान पायी थी । मातृत्व अधूरा था सो ममता का आश्रय चाहिए था पर निशीथ को उतना निकट आना शायद अच्छा नहीं लगा, अथवा स्वयं के अधिकार को बांट पाना असह्य था उसे । डॉक्टर बनने जा रहा

था। साइकोलॉजी तो पढ़ी ही होगी परंतु व्यवहार में कोरा ही था।

"रमेन बीमार है।" किसी ने सूचना दी तो उमां स्वयं को रोक नहीं सकी थी। स्वयं ही गाड़ी निकालकर उसे देखने चली गयी। मध्यम वर्ग का लड़का साधारण-सा कमरा लेकर रहता था। दो-चार साधारण से कपड़े, खाट, बिस्तर, पुस्तकें, बुखार में तपता रहा था। दुर्बल तो हो ही गया था। उमां का नित्य उसे दवा पथ्य आदि भिजवाना घर में किसी को नहीं सुहाया। इसे जानती थी, पर 'घर क्या मेरा भी नहीं है', सोचकर उस सबको अनदेखा करती रही। वही बन गया था कारण। ज्वालामुखी भड़क उठा। फिर जो लावा बिखरा तो उस घर की सुख-शांति, रविकांत का सुख-संसार, सब कुछ भस्म हो गया।

निशीथ का गड़गड़ाता स्वर, उमां का अवाक होकर उसे देखते रहना, रमेन पर लगाये गये लांछन, सब कुछ वे मूक पत्थर हुए देखते रह गये। उसका उसी प्रकार उठकर घर से चले जाना उन्हें भयंकर आघात दे गया था। परंतु पति होने का अहं उनके आड़े आ गया और बेटे के साहस पर दंग रह गये, परंतु जड़वत हुए देखते रह गये। और उमां, उसका तो घर-संसार भरा ही कब था जो रीत जाने की चिंता करें। रमेन को दोनों जून हाथ से बनाकर खिलाते जो तृप्ति उसकी ममता को मिलती है उसका सुख ये क्या जान पाएंगे।

शशिकांत रात्रि के नीरव सन्नाटे में करवट बदलते महाकाल का घंटा सुन रहे हैं। समय की टक, टक, टक चल रही सुई की घड़ियां उन्हें आनेवाले कल से आगाह कर रही हैं। रीमा का फुसफुसाता स्वर, "तुम्हारे बाबूजी क्या



रात-रात भर जागकर हम पर पहरा लगाते रहते हैं?" उनके हृदय पर कील ठुकती प्रतीत होती है।

उस सबको अनदेखा कर सके, उतनी शक्ति है उनमें। परंतु अब बुलू जो आकर प्रश्नों की बौछार करेगी, क्या होगा उनका उत्तर। सहधर्मिणी को पद की गरिमा नहीं दे सके। उसकी ममता को आग स्वयं उसके पति ने ही दी है। आज जब अन्यथा लेने से बच सकने को तत्पर है, उमां की जो अंतिम क्रिया का प्रश्न उठा था। तब रमेन का वह हुंकारभरा उद्‌घोष, "अपनी मां की अंतिम क्रिया का अधिकार तो केवल मेरा ही है। जिंदगी में जिसे दुत्कार कर निकाल दिया, उसे आज आग देने किस मुंह से आ गये।" वह सिंह गर्जना और निशीथ का हाथापाई पर उतर आना वह सब जैसे किसी अन्य के साथ घट रहा था। वे स्वयं तो बस शून्य देखतेभर रह गये थे।

वह उमां की लिखी अंतिम चिट्ठी उनके हाथ में थमा गया था, "मैं आप लोगों के लिए तो अनावश्यक ही रही थी सदा। तब फिर मेरा अंतिम संस्कार भी मेरा यही बेटा करेगा। यही अंतिम इच्छा है मेरी बस। अनावश्यक......

— ७३, बनारसी दास स्टेट
लखनऊ रोड, दिल्ली

अंतरिक्ष अन्वेषण की रोचक घटनाएं

• कालीशंकर



अंतरिक्ष अन्वेषण एक बड़ा साहसी कार्य है तथा इस कार्य में बढ़ते हुए प्रयास मानव की आकांक्षाओं और उम्मीद के प्रतीक हैं । अंतरिक्ष अन्वेषण की अनेक रोचक और कौतूहलपूर्ण बातें यादगारों का संग्रह बन गयी हैं ।

विश्व के प्रथम अंतरिक्ष यात्री यूरी गगारिन अपने परिवार को बिना बताये हुए ही अंतरिक्ष उड़ान के लिए चले गये थे । उनके परिवारवालों को समाचार के माध्यम से पता चला कि वे अंतरिक्ष में पहुंच गये हैं । परिवारजनों को केवल इतना मालूम था कि अंतरिक्ष यात्रा के लिए उनका चयन हो गया है लेकिन उड़ान किस दिन होगी इसके लिए उन्हें कोई सूचना नहीं थी । यूरी गगारिन के विषय में ही एक और रोचक बात थी । जब वे पैराशूट से अंतरिक्ष यात्रा की वापसी में एक गांव के खेत में उतरे, तब खेत के पास एक औरत और उसकी लड़की भेड़ चरा रही थीं । गांव की औरत को अंतरिक्ष उड़ान की कोई जानकारी नहीं थी । उसने गगारिन से बड़ी सहजता से पूछा, ''क्या अंतरिक्ष से आ रहे हो ?'' गगारिन का बड़ी सहजता से दिया हुआ उत्तर था, ''शायद ऐसा ही है ।''

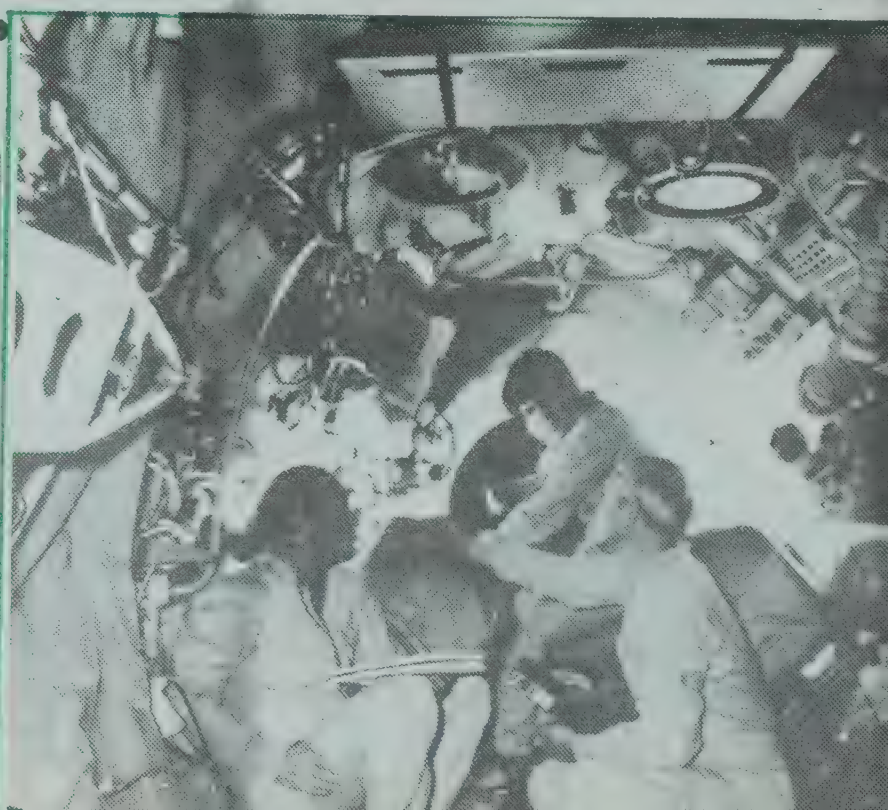
केनेडी की अभिलाषा

चंद्रमा की सतह पर उतरनेवाले नील आर्मस्ट्रांग विश्व के प्रथम अंतरिक्ष यात्री बने जिन्होंने पहली बार चंद्रमा की सतह पर पैर रखे । लेकिन आर्मस्ट्रांग से पहले चंद्रमा की सतह पर पहली बार उतरने के लिए एक अन्य अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री ग्रिसम का चयन किया गया था । जिस दिन उनका चयन हुआ था उस

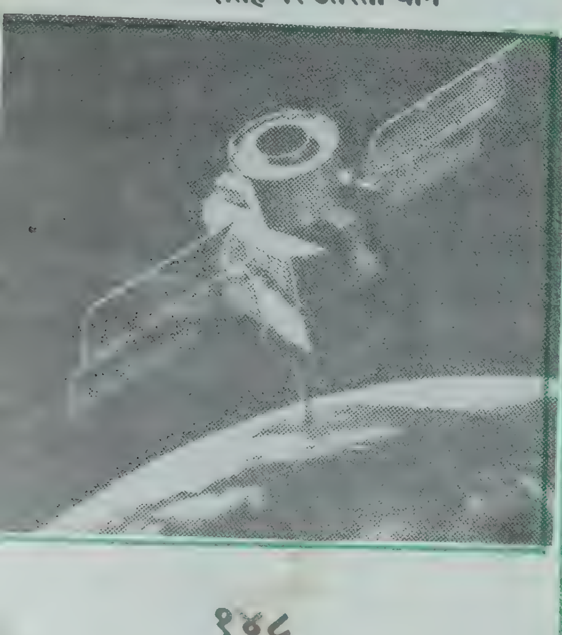
शाम वे अपने घर पहुंचे तो बड़े खुश नजर आ रहे थे । जब पत्नी ने उनसे पूछा, ''क्या बात है जो इतना खुश नजर आ रहे हो ?'' ग्रिसम ने पत्नी से मजाक में कहा, ''सोचकर अंदाजा लगाओ ।'' खैर पत्नी अनुमान नहीं लगा सकी । ग्रिसम ने बताया कि उनका चयन चंद्रमा पर उतरनेवाले प्रथम व्यक्ति के रूप में किया गया है । लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था । २६ जनवरी १९६७ को अपोलो-१ यान के प्रक्षेपण मंच पर एक परीक्षण के दौरान आग लग जाने के कारण तीन सदस्यों के समूचे चालक दल के साथ एड ग्रिसम की मृत्यु हो गयी । बाद में नील आर्मस्ट्रांग को चंद्रमा पर उतरनेवाले प्रथम अंतरिक्ष यात्री के रूप में चुना गया ।

यह सर्वविदित है कि अंतरिक्ष अन्वेषण और विशेषकर चंद्रमा की सतह पर मानव को उतारने की भूतपूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जान एफ. केनेडी की बहुत बड़ी महत्त्वाकांक्षा थी जो उनकी मृत्यु के बाद पूरी हुई । अमेरिका के द्वारा मानव को चंद्रमा पर उतारने से संबंधित २५ मई, १९६१ को अमेरिकी सीनेट के संयुक्त सेशन में दिया गया उनका विख्यात भाषण, ''मैं विश्वास करता हूं कि इस देश को, मानव को सफलतापूर्वक चंद्रमा की सतह पर उतारने तथा सुरक्षित उसे पृथ्वी पर लाने की दिशा में एक निर्णायक भूमिका निभानी चाहिए ।'' यह भाषण उनके अदम्य अंतरिक्ष प्रेम को दर्शाता है । सीनेट के अपने विख्यात भाषण के बाद जब जॉन एफ. केनेडी उस शाम अपने घर आये तो अपने परिवारजनों को बड़ी खुशी से बताया कि, मैंने अमेरिकी व्यक्ति को चंद्रमा पर भेजने का आज निर्णय ले लिया है । अपने इस निर्णय की उन्हें इतनी अधिक प्रसन्नता थी कि उन्होंने अपने परिवारजनों को बताया, ''मैं पूरी तरह आशावान हूं कि मेरा यह निर्णय सफल होगा । लेकिन तब तक यदि मैं जीवित न रहा तो तुम लोग मुझे याद करना, जब मनुष्य चंद्रमा पर उतरे । उस समय मैं स्वर्ग में कुरसी पर बैठा हुआ मनुष्य के चंद्रमा पर उतरने का नजारा बड़ी अच्छी तरह से

सोयूज-टी-१२ के अंदर यात्री →



सतह पर उतरता यान



देख सकूंगा । केनेडी का अंतरिक्ष प्रेम इतना अधिक था कि एक बार विश्वविख्यात राकेट विशेषज्ञ वर्नर वॉन ब्राउन ने जॉन एफ. केनेडी के छोटे भाई सीनेटर एडवर्ड केनेडी से पूछा, ''जब तुम भाई लोग एक साथ सुबह का नाश्ता करते थे तो आपस में क्या बातें करते थे ?'' एडवर्ड केनेडी ने बताया, ''जब हम लोग बड़े भाई (राष्ट्रपति) के साथ नाश्ता करते थे तो उस समय हम सारे भाई अधिकांशतः अंतरिक्ष उड़ान के बारे में ही बातें करते थे ।''

चैलेंजर की दुर्घटना

२८ जनवरी १९८६ को अमेरिकी स्पेस शटल चैलेंजर की दुर्घटना हुई जो अंतरिक्ष विज्ञान की सबसे हृदय विदारक दुर्घटना थी । इसमें सभी सातों अंतरिक्ष यात्री वीरगति को प्राप्त हुए । इस उड़ान में 'अंतरिक्ष में प्रथम अध्यापक' के रूप में एक महिला अंतरिक्ष यात्री क्रिस्टा मैकाफी थीं । इसके साथ ही साथ वे अंतरिक्ष शटल में जानेवाली प्रथम प्राइवेट व्यक्ति थीं । वे अमेरिका के एक स्कूल में अध्यापिका थीं । उनकी कक्षा के बच्चों को अपनी मैडम के अंतरिक्ष में जाने के प्रति अत्यधिक प्रसन्नता थी । जिस दिन मैडम को अंतरिक्ष में जाना था, उस दिन सुबह ही बच्चे स्कूल में टेलीविजन के सामने स्पैस शटल चैलेंजर की उड़ान की प्रतीक्षा करने लगे । उड़ान का अभिनंदन बच्चों ने ताली बजाकर किया तथा कुछ ही मिनटों में स्पेस शटल में धमाका हुआ । बच्चों ने समझा कि मिशन सफल हो गया है । अबोध बच्चे खुशी से ताली बजाने लगे, लेकिन तभी दूसरी मैडम ने डांटकर बच्चों को ताली बजाना बंद कराया । हकीकत जानने के बाद बच्चे बहुत रोये । यह एक बड़ा हृदय विदारक दृश्य था ।

भारतीय यात्री राकेश शर्मा

'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा' हमारे देश का बहुत ही श्रद्धापूर्ण देशभक्ति गान है । अब तक यह गीत हम लोग अपने देश में ही गाते थे लेकिन यह गीत अंतरिक्ष में भी गाया जा चुका है । ३ अप्रैल १९८४ को भारत के राकेश शर्मा दो अन्य रूसी व्यक्तियों के साथ सोयुज टी-११ में बैठकर अंतरिक्ष में पहले से चक्कर लगा रहे सैल्युट-७ अंतरिक्ष स्टेशन पहुंचे । उनके ८ दिन के अंतरिक्ष प्रवास के दौरान भारत की भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने उनसे बात की । बात करते समय इंदिराजी ने उनसे पूछा, ''अंतरिक्ष से भारत कैसा दिखायी पड़ता है ?'' अंतरिक्ष यान के अंदर से राकेश शर्मा का जवाब था, ''सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा ।''

मानवीय भावनाओं को स्थान

अंतरिक्ष अन्वेषण में उपग्रहों, प्रोबो, अंतरिक्ष स्टेशनों तथा योजनाओं के नामकरण में धार्मिकता और मानवीय भावनाओं का काफी ध्यान रखा गया है । रूस के तथा दुनिया के प्रथम स्थायी अंतरिक्ष स्टेशन का नाम मीर है । रूसी भाषा में मीर शब्द का अर्थ है शांति । सन् १९५७ में रूस के द्वारा अंतरिक्ष में भेजे गये विश्व के प्रथम उपग्रह का नाम स्पुतनिक रखा गया । स्पुतनिक भी रूसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है— सहयात्री अर्थात साथ चलनेवाला यात्री । अमेरिका की चंद्र परियोजना का नाम 'अपोलो' रखा गया । वैसे 'अपोलो' रोमन भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है

सूर्य। लेकिन चंद्र अंतरिक्ष अभियान के संदर्भ में प्राचीन देवी-देवताओं को सम्मान देने की दृष्टि से परियोजना का नाम 'अपोलो' रखा गया। अभी जुलाई १९९७ में अमेरिका ने पाथ फाइंडर नामक प्रोब मंगल ग्रह में भेजा था। यह अभियान ४०-५० दिन का था। प्रोब के साथ एक छोटी-सी बग्घी (रोवर) भी भेजी गयी। इस बग्घी का मुख्य काम था इसमें लगे उपकरणों की मदद से मंगल ग्रह की मिट्टी की रासायनिक तथा अन्य दृष्टि से पता करना। उसकी सूचना लैंडर के माध्यम से पृथ्वी को भेजना। बग्घी का नाम सोजोर्नर रखा गया था। इस नाम की अपनी एक विशिष्टता है। सोजोर्नर एक अफ्रो-अमेरिकी समाज सुधारक थे तथा मानव कल्याण के लिए घूम-घूमकर उन्होंने अनेक कार्य किये। इसीलिए सोजोर्नर बग्घी ने मंगल ग्रह में घूम-घूमकर काफी आंकड़े भेजे जो सोजोर्नर नाम को साकार करती है।

यह सर्वविदित है कि अंतरिक्ष अन्वेषण और विशेषकर चंद्रमा की सतह पर मानव को उतारने की भूतपूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जान एफ. कैनेडी की बहुत बड़ी महत्वाकांक्षा थी जो उनकी मृत्यु के बाद पूरी हुई। अमेरिका के द्वारा मानव को चंद्रमा पर उतारने से संबंधित २५ मई, १९६१ को अमेरिकी सीनेट के संयुक्त सेशन में दिया गया उनका विख्यात भाषण, "मैं विश्वास करता हूं कि इस देश को मानव को सफलतापूर्वक चंद्रमा की सतह पर उतारने तथा सुरक्षित उसे पृथ्वी पर लाने की दिशा में एक निर्णायक भूमिका निभानी चाहिए।"

पहली बार स्पेस वाक

अंतरिक्ष यात्रा के दौरान अंतरिक्ष यात्रियों को कई बार कुछ मुश्किल कार्य भी करने पड़ते हैं। कई बार उन्हें अंतरिक्ष यान से बाहर मुक्त अंतरिक्ष में आकर कई प्रकार के कार्य करने पड़ते हैं। हम भली-भांति जानते हैं कि अंतरिक्ष का पर्यावरण मानव के लिए पूरी तरह आत्मघातक है। मुक्त अंतरिक्ष में कार्य करने की प्रक्रिया को अंतरिक्ष विज्ञान की तकनीकी भाषा में 'स्पेस वाक' कहते हैं। मनुष्य के द्वारा पहली बार स्पेस वाक रूस के अंतरिक्ष यात्री एलेक्सी ल्योनोव के द्वारा अंतरिक्ष यान वोस्खोड-२ से बाहर निकलकर १८ मार्च १९६५ को की गयी।

अमेरिकी अंतरिक्ष संस्था 'नासा' के पास चार स्पेश शटल थे, लेकिन चैलेंजर की दुर्घटना के बाद अब इसके पास तीन स्पेश शटलें बची हैं। 'नासा' का स्पेश शटल कार्यक्रम काफी व्यस्त कार्यक्रम है। हर उड़ान के लिए अंतरिक्ष यात्रियों की एक टीम (अधिकतम ७ अंतरिक्ष यात्री) बहुत ही सोच-समझकर काफी प्रशिक्षण के बाद बनायी जाती है। टीमों में शादीशुदा तथा गैर-शादी-शुदा दोनों ही प्रकार के अंतरिक्ष यात्री पुरुष और अंतरिक्ष यात्री महिलाएं होती हैं,

एक बार ऐसा ही मौका आया जब स्पेस शटल टीम में ५ अंतरिक्ष यात्रियों के साथ एक विवाहित दंपति भी गये। ये दंपति थे अंतरिक्ष यात्री श्रीमान मार्क सी. ली एवं श्रीमती नैन्सी जान डेविस। मिशन में अधिक विलंब हो जाने के कारण नासा को इस विवाहित दंपति को एक साथ भेजना पड़ा।

मरम्मत भी

वैसे तो अंतरिक्ष कार्यक्रमों का सुनियोजन और डिजाइन बड़ी ही सूझ-बूझ से किया जाता है लेकिन फिर भी कभी-न-कभी गलती हो ही जाती है। २० फरवरी १९८६ को रूस ने अंतरिक्ष स्टेशन 'मीर' अंतरिक्ष में स्थापित किया। इसमें लगातार अंतरिक्ष यात्री रहते हैं तथा आते-जाते रहते हैं। अंतरिक्ष यात्री सोयुज श्रेणी के यान से आते-जाते हैं, लेकिन खाद्य सामग्री और उपकरण इत्यादि एक प्रकार के यान, जिसमें कोई अंतरिक्ष यात्री नहीं होता, के द्वारा भेजे जाते हैं। इस यान का नाम है 'प्रोग्रेस'। २५ जून १९९७ को ९.१० बजे (जीएमटी समय) मालवाहक यान प्रोग्रेस एम-३४ मीर स्टेशन के स्पेक्टर माड्यूल से टकरा गया तथा उसमें लगे हुए चार सौर पैनेलों में से एक को क्षतिग्रस्त कर दिया। इसके कारण स्पेक्टर माड्यूल की बिजली की आपूर्ति प्रभावित हुई तथा स्पेक्टर माड्यूल का दाब कम होने लगा। माड्यूल को तुरंत सील कर दिया गया। बाद में इसकी मरम्मत का कार्य किया गया।

जब प्रथम चंद्र यात्री के रूप में नील आर्मस्ट्रांग का नाम घोषित किया गया, तब उन्हें विश्व के अनेक स्थानों से पत्र मिले। यह बताने के लिए कि जब वे चंद्रमा की सतह पर उतरें तो वे क्या बोलें। इन अनेक सुझावों में बाइबल के उद्धरण और शैक्सपीयर के नाटकों से लिए हुए कुछ उद्धरण और अंश थे। नील आर्मस्ट्रांग एक गंभीर व्यक्ति थे। उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। पृथ्वी से चंद्र यात्रा प्रारंभ होने के बाद उनके सहयोगी अंतरिक्ष यात्रियों —माइकल कालिन्स तथा अलि्ड्रन ने भी उनसे वही प्रश्न पूछा कि चंद्र सतह पर पहले आप क्या बोलेंगे ? लेकिन आर्मस्ट्रांग की शालीनता यही थी कि मिशन की सफलता ही सबसे बड़ा उद्धरण होगी जो वे मूक रूप में बोलेंगे।

'कहां से शुरू हुई मंगल ग्रह के अन्वेषण की कहानी ?' यह भी बड़ी रोचक घटना है। कहानी की शुरुआत एक उल्का, जिसका नाम 'एएलएच ८४००१' है, से होती है। यह उल्का अमेरिकी टीम की एक महिला रॉबर्टा स्कोर को अचानक ही प्राप्त हुई। जब वे अंटार्कटिका में एलेन हिल नामक स्थान से अपनी बर्फ में चलनेवाली बग्घी में बैठकर गुजर रही थी। सन् १९६९ से अब तक अंटार्कटिका में लगभग १०,००० उल्काएं पायी गयी हैं। जांच-पड़ताल के बाद पता लगा कि इनमें १२ उल्काएं ऐसी हैं जो मंगल ग्रह से गिरी हैं। इन १२ उल्काओं में उपर्युक्त वर्णित 'एएलएच ८४००१' उल्का सबसे पुरानी है। नासा के जॉन्सन स्पेश सेंटर में इसका वृहत परीक्षण किया गया, जिसके आधार पर नासा ने मंगल ग्रह में जीवन होने की पुष्टि की। तभी से मंगल ग्रह में अन्वेषणों को एक नयी तेजी मिली।

— डी-६, मल्टी स्टोरी फ्लैट्स
पंडारा पार्क, नयी दिल्ली-३

भूतों से बचने के लिए उसने बनवाई इमारत

• सुशील कुमार श्रीवास्तव

यह कहना ही ज्यादा ठीक होगा कि उस विशाल भवन को भूतों ने ही बनवाया है। यदि ऐसा न होता तो शायद इतनी बड़ी जमीन पर फैला वह महलनुमा मकान कभी अस्तित्व में ही न आता।

हुआ यह कि एक विधवा महिला को विरासत में करोड़ों रुपये की संपत्ति मिली। इन रुपयों से उसने अपनी भरी जवानी से बुढ़ापे तक पहुंचकर और मौत की नींद सोने तक केवल एक ही काम किया और वह था एक ऐसा मकान बनाना, जिसके पास भूत व दुष्ट आत्माएं आने से डरें और जिसमें पुण्य आत्माओं के सत्कार के लिए सब सुविधाएं मौजूद हों।

नेक आत्माएं

इस विधवा महिला का नाम था—सारा विंचेस्टर। उसे अपने ससुर की अथाह संपत्ति विरासत में मिली थी। उसके ससुर अपने समय में 'राइप किंग' माने जाते थे। उनकी बंदूक की गोलियों से पता नहीं कितने जीव-जंतु और आदमी इस संसार से विदा हुए थे। इस विरासत के साथ ही सारा को ऐसा महसूस होने लगा कि उसके ससुर द्वारा मारे गये प्राणियों की आत्माएं भी उसे विरासत में प्राप्त हुई हैं। उसने सोचा कि इन बुरी आत्माओं से बचने का एक ही उपाय है कि दुष्ट आत्माओं को दूर रखा जाए और नेक आत्माअं को किसी प्रकार का कष्ट न होने दिया जाए।

इस वहम को मन में लिए सारा विंचेस्टर ने बोस्टन के एक आत्मा विशेषज्ञ से मुलाकात की। विशेषज्ञ ने अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से सारा के वहम को यकीन में बदल दिया और कहा कि उसके ससुर द्वारा मारे गये आदमियों, औरतों और जानवरों की आत्माएं ससुर की इस अथाह संपत्ति और उसके भावी मालिक का भी बराबर पीछा करेंगी।

सारा ने इस अध्यात्मवादी व्यक्ति से आत्माओं को देखने व उनसे बातचीत करने की शिक्षा भी ली। इस तंत्र-मंत्र की शिक्षा से वह इस नतीजे पर पहुंची कि उसका पीछा करनेवाली आत्माएं 'रेड इंडियंस' की होंगी,

जिन्हें गोरे अमेरिकियों ने नेस्तनाबूद कर दिया था । उसने ध्यान लगाकर यह भी जाना कि नेक आत्माएं उसे इतना तंग नहीं करेंगी, जितना कि बुरी आत्माएं ।

काफी सोच-विचार के बाद अंततः वह इस निष्कर्ष पर पहुंची कि यदि वह नेक आत्माओं के लिए एक भवन का निर्माण करें, तो बुरी आत्माएं उसे तंग नहीं कर पाएंगी । इस नतीजे पर पहुंचते ही उसने तुरंत अपनी योजना को कार्यरूप देना शुरू कर दिया । वह कैलिफोर्निया पहुंची और वहां कूपरटीनों के पास १८ कमरों का एक मकान उसने खरीद लिया । यह भवन तब बन ही रहा था ।

सारा विंचेस्टर ने अपने इस विशाल मकान में एक विशेष कमरे को अध्यात्म-कक्ष के रूप में बनाया हुआ था । वह इस कमरे में बैठकर घंटों समाधिलीन रहती । वह नेक आत्माओं की जरूरतों के बारे में जानकारी प्राप्त करती । ज्यों ही उसे कुछ विचार आते, उन्हें वह कागज पर लिख लेती और अपनी सेक्रेटरी को उन्हें फौरन हकीकत का रूप देने का आदेश देती ।

आवाजें आती रहीं

इस निर्माणाधीन भवन को खरीदते ही उसका वहम कई रूप धारण करने लगा । उसके मन में जो आता, उसे जल्दी से जल्दी पूरा करने की वह कोशिश करने लगी । मकान लेने के बाद उसके दिमाग में आया कि यहां कारीगरों के हथियारों और मिस्त्रियों के हथौड़ों की आवाज कभी नहीं रुकनी चाहिए । सन् १८८४ से लेकर सारा विंचेस्टर की मृत्यु ५ सितम्बर, १९२२ तक २२ कारीगर दिन-रात उसके उस मकान में काम करते रहे । चौबीसों घंटे वहां कुछ टूटने व बनने की आवाजें आती रहीं ।

जब १८ कमरों का वह मकान दिन-प्रतिदिन चारों दिशाओं में फैलने लगा, तब सारा विंचेस्टर ने उस मकान के आस-पास की सारी जगह खरीद ली । हर बार बड़ी चारदीवारी बनायी जाती और उस नयी जगह के जुड़ते ही पहली गिराकर नयी उठायी जाती । सबसे बड़ी खूबी यह थी कि उस मकान में दिन-रात काम करने वाले तमाम कारीगरों व अन्य नौकरों ने अपनी मालकिन सारा विंचेस्टर को कभी देखा तक नहीं था ।

सारा विंचेस्टर ने केवल एक नौकर को अपने करीब आने की इजाजत दे रखी थी और वह था उसका चीनी रसोइया । यह रसोइया सारा के पास ३८ वर्ष तक रहा और उसके लिए भोजन बनाने का काम उसी का था । वह क्या भोजन खाती थी, यह भी उस चीनी रसोइये के अतिरिक्त किसी को ज्ञात न होता था । इस रसोइये के अलावा सारा के पास उसकी एक

भांजी भी रही । सारा की यह भांजी उसकी सेक्रेटरी और सहायिका का काम करती थी । भांजी सारा के साथ ही रात का खाना खाती थी । भांजी के कार्य व उसकी सेवा तथा वफादारों से सारा प्रसन्न थी । सारा ने मृत्यु पूर्व अपनी इस भांजी के नाम अपनी विशाल संपत्ति का काफी भाग विरासत स्वरूप छोड़ा ।

सारा विंचेस्टर ने अपने इस विशाल मकान में एक विशेष कमरे को अध्यात्म-कक्ष के रूप में बनाया हुआ था । वह इस कमरे में बैठकर घंटों समाधिलीन रहती । वह नेक आत्माओं की जरूरतों के बारे में जानकारी प्राप्त करती । ज्यों ही उसे कुछ विचार आते, उन्हें वह कागज पर लिख लेती और अपनी सेक्रेटरी को उन्हें फौरन हकीकत का रूप देने का आदेश देती । ये विचार भी सचमुच एक से एक निराले होते । ये विचार कैसे-कैसे होते, यह उनके द्वारा किये गये काम से अंदाजा लगाया जा सकता है—

सारा विंचेस्टर की मृत्यु के समय १८ कमरों वाला यह मकान १६० कमरों का बन चुका था । उस मकान में उस समय के पांच करोड़ रुपये तक का सामान आ चुका था । इस बीच न जाने कितने बड़े-बड़े चैंबर बनाये गये और उन्हें नेक आत्माओं की सुविधा के अनुकूल न पाकर गिरा दिया गया ।

सारा ने अपने सोने के कमरे में जगह-जगह पर शीशे लगवाये थे । उनका विश्वास था कि शीशों के कारण दुष्ट आत्माएं उसके कमरे में घुस नहीं सकेंगी ।

सारा ने अपने अध्यात्म कक्ष के लिए एक गुप्त रास्ता बनवाया हुआ था, जिसके बारे में उसके अलावा और कोई नहीं जानता था । इस कमरे की ओर जाने वाली सीढ़ियां इतनी भूल-भुलैया वाली थीं कि उस पर चढ़ते हुए कोई भी आदमी चक्कर खाकर गिर सकता था । सारा का यह खयाल था कि इन सीढ़ियों के रास्ते बुरी आत्माएं उस तक नहीं पहुंच सकतीं ।

अपने अध्यात्म कक्ष में नेक आत्माओं को प्रसन्न करने के लिए उसने विविध प्रकार की वस्तुएं जमा कर रखी थीं । समाधि के दौरान नेक आत्माओं की पसंद की वस्तुएं उसे पता चलती और वह जैसे भी हो, उन्हें प्राप्त करके अपने अध्यात्म कक्ष में लाकर रख देती ।

सारा विंचेस्टर द्वारा निर्मित यह विशाल भवन आज भी एक रहस्य की कहानी बन कर अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य में कूपरटीनों के पास खड़ा है । अब इसे 'भुतहा बंगला' कहा जाने लगा है ।

— आसाम काटन मिल्स,
पोस्ट-चारद्वार
जिला— शोणितपुर (असम) ७८४१०३

दही का उपयोग

दही गुणकारी पथ्य है । बवासीर आदि रोगों में इससे बहुत लाभ होता है । इससे निर्बलता दूर होती है और मन प्रसन्न रहता है । पतले दही में थोड़ा भुना हुआ जीरा डालने से वह और अधिक गुणकारी हो जाता है । वर्षा-ऋतु में दही का सेवन कम करना चाहिए ।

स्वामी विवेकानंद ने भविष्यवाणी की थी कि २१वीं सदी में भारत विश्व का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनेगा । स्वामीजी के शब्दों में, भारत एक हजार वर्ष की तंद्रा त्यागकर उठेगा ग्रामों से, खेत खलिहानों से, टूटी-फूटी झोपड़ियों से, वैभव संपन्न शहरों की दरिद्र मानसिकता को उजागर करने वाली गंदी बस्तियों से, चिर उपेक्षित वनांचलों से, दयनीय अवस्था में जी रहे किंतु अपने पसीने से भारत

खबर करो स्वर्ग के सम्राट को

डा. दीनानाथ तिवारी

की फुलवारी को सींचनेवाले मेहनतकश मजदूर, किसानों और श्रम-साधकों से ।'' जन-प्रेरणा जगाने, स्वावलंबन एवं स्वाभिमान के आधार पर सामाजिक पुनर्निर्माण एवं विकास के मार्ग पर अग्रसरित करने का प्रयास स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा ही किया जाएगा ।

पुनः विश्व का प्रेरणा केंद्र

आचार्य विनोबा भावे के अनुसार, ''जहां तक २१वीं सदी के भारत का प्रश्न है, किसी को भी इसमें शक नहीं होना चाहिए कि यह सत्य और अहिंसा के संदेश के साथ पुनः विश्व का प्रेरणा केंद्र बनेगा । और ऐसे भारत के निर्माण में स्वयंसेवी संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होगी । सरकार कोई भी हो, अपने बल पर कोई सामाजिक परिवर्तन कभी नहीं ला सकती । यह काम जनता का है, जनसेवकों का है और उसकी अभिव्यक्ति जनसेवी संस्थाओं के माध्यम से ही संभव है ।''

महात्मा गांधी के शब्दों में, ''भारत के सात लाख गांवों में बसे लाखों करोड़ों लोग जिस प्रकार अपना भोजन स्वयं बनाते हैं, उसी प्रकार अपना वस्त्र खुद ही तैयार करने लगें तो यह हर दृष्टि से बेहतर होगा । अपनी आवश्यकताओं के उत्पादन पर हमारे ग्रामवासियों का नियंत्रण न रहा तो वे उस आजादी को कायम न रख पाएंगे जिसका सुख वे अनादि काल से उठा रहे हैं । स्व-रोजगार की अर्थव्यवस्था का कोई पर्याय नहीं है ।'' स्वयंसेवी संस्थाएं जनसहयोग के बल पर देखने में छोटी पर प्रभाव में बहुत बड़ा कार्य संपन्न कर सकती हैं ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लोगों को रामराज्य

मिलने की आशा थीं लोगों को विश्वास था कि गरीबी, शोषण, बीमारी, बेकारी, भुखमरी, अशिक्षा एवं पर्यावरण के ह्रास से उन्हें मुक्ति मिलेगी । उन्हें विश्वास था कि संत तुलसीदास के वर्णनानुसार उन्हें तीनों प्रकार के दुखों से छुटकारा मिलेगा—

दैहिक, दैविक भौतिक तापा ।
राम राज नहि कांहुहि व्यापा ।।

स्वराज्य मिलते ही लोगों को विश्वास था कि—

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद दुःखभाग भवेत ।।

आजादी मिलने के बाद सर्वाधिक महत्व का काम था राष्ट्र की नवरचना करना । केवल सत्ता के द्वारा सब कुछ साध्य होगा, यह दोषपूर्ण वृति सब पर सवार हुई । परिणामस्वरूप त्याग और बलिदानों द्वारा प्राप्त सत्ता भी भ्रष्टाचार का शिकार बनी । कविवर चंद्रकांत भारद्वाज के अनुसार—

धरा खिन्न है, गगन मौन है
हिमगिरि विंध्या जड़ित हो गये
प्रलय लहर है चढ़ी जा रही
बाढ़ों में सर्वस्व बह रहा
कितना कर्दम, कितनी लाशें
कितनी हिंसा
भ्रष्टाचार, पाप, दुष्कर्म, द्वेष
और विच्छेद भयंकर
घोर दरारें लील रहीं
एकात्म भाव सौहार्द मिलता
अखंड एकता
समरसता उपकार भावना
दिव्य चेतना, विशद कल्पना,
सज्जनता छत पर बैठी है
धर्म और कर्तव्य लटकते
सभी लुटेरे, छलिये दुर्जन
लूट रहे जो बचा रह गया ।

श्री अटल बिहारी वाजपेई के अनुसार देश की प्रगति पथ पर ले जाने हेतु पुनः दिया जलाना होगा :—

भरी दुपहरी में अंधियारा
सूरज परछांई से हारा
अंतरतम का नेह निचोड़ें
बुझी हुई बाती सुलगायें
आओ फिर से दिया जलायें ।।

गरीबी, बेकारी, बीमारी से त्रस्त स्थिति में एवं निराशा, भ्रष्टाचार, अनाचार एवं पर्यावरणीय समस्याओं से ग्रस्त वातावरण में लोकशक्ति, विज्ञान एवं तकनीक के सहारे ही समस्याओं का निराकरण संभव है । 'उत्थान' एक स्वयंसेवी संस्था ने 'आत्मवत सर्वभूतेषु' की अनुभूति से 'सर्वभूतहितेरतः' को आचरण में उतारा है । उत्थान संस्था द्वारा किये कार्य इस प्रकार हैं—

१. वनवासियों का समन्वित विकास

गरीबी, भुखमरी, बीमारी, अभाव, संकट कोई भेद नहीं करते तथा सभी को आपदग्रस्त करते हैं । हजारों साल से वन एवं आदिवासी एक दूसरे के पूरक रहे हैं । वनों से आदिवासियों को खाद्य-पदार्थ, चारा, जलाऊ लकड़ी, अन्य वनोपज, रोजगार, समृद्धि एवं उनकी संस्कृति के विकास को बल मिला । वनों में उनके गहरे मनोभावों को संतोष मिलता है । वानिकी विकास को आधार बनाकर उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक, आर्थिक आवश्यकताओं एवं सुविधाओं की पूर्ति कर उनके समन्वित विकास का प्रयास उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश में किया गया ।

२. गरीबी उन्मूलन का प्रयास

प्रचलित शिक्षा पद्धति लोगों में स्वावलंबन आधारित आजीविका चलाने की प्रेरणा नहीं

देती । वह नौकरी करने की मानसिकता पैदा करती है । इससे लोगों में आत्मविश्वासहीनता तथा जिम्मेदारी वहन करने की अक्षमता बढ़ती है । उत्थान ने कृषि-वानिकी अपनाकर तथा बांस, मूंज एवं जड़ी-बूटियों का उत्पादन एवं उन पर आधारित ग्रामीण-उद्योग लगवाकर लगभग ३००० परिवारों को गरीबी से छुटकारा दिलाया है । शिक्षण तथा प्रशिक्षण से मानव संसाधन का विकास तथा उन्हें स्वावलंबी एवं सामूहिक रूप से कार्य करने हेतु तैयार किया गया ।

३. जलग्रहण क्षेत्र का विकास

जल ही जीवन है । इलाहाबाद शहर के पश्चिम भाग में लगभग ४००० हैक्टर क्षेत्र में ईंट भट्टों ने भूमि की खुदाई करके उसे बीहड़ क्षेत्र में बदल दिया है, जहां कुंओं में जल का स्तर १२० फुट नीचे चला गया । गर्मी में रेतीली तथा पकी हुई मिट्टी के तपने से इस क्षेत्र का तापक्रम ४५ डिग्री से. से बढ़ जाता है, इससे गरम हवा तेजी से ऊपर उठती है । उसकी जगह भरने हेतु गंगा एवं यमुना नदियों से तेज हवाएं उठती हैं । कभी. कभी इस प्रकार की हवाएं झंझावत का रूप ले लेती हैं, जिससे इलाहाबाद शहर में प्रतिवर्ष हजारों पेड़, खंभे तथा घर तहस-नहस हो जाते हैं । लाखों रुपयों की संपत्ति नष्ट हो जाती है ।

कोटवा-रहीमाबाद जहां से जल ग्रहण शुरू होता है, जल एवं भूमि के संरक्षण की व्यवस्था की गयी । प्रत्येक खेत की मेड़ों पर बांस एवं मूंज लगाई गयी, जिससे हरियाली के साथ ही हवा के बेग को रोका गया । पानी रोकने से कुंओं में पानी का स्तर बढ़ गया । पूरे क्षेत्र में हरियाली तथा कुटीर उद्योगों का जाल-सा बिछ गया । इलाहाबाद शहर में आंधियों एवं झंझावतों की कमी हो गयी । इससे पर्यावरण में पर्याप्त सुधार हुआ है ।

४. स्वास्थ्य लाभ के प्रयास

स्वास्थ्य लाभ के लिए शुद्ध वायु, पीने योग्य पानी, संतुलित भोजन, स्वस्थ, वातावरण, उपचार की सुविधा एवं योगोपचार आवश्यक है । इस समय औषधीय पौधों की नितांत कमी का सामना करना पड़ रहा है । उत्थान ने ११५ प्रजाति के औषधीय पौधों को एक रोपणी में

महात्मा गांधी के शब्दों में, "भारत के सात लाख गांवों में बसे लाखों करोड़ों लोग जिस प्रकार अपना भोजन स्वयं बनाते हैं, उसी प्रकार अपना वस्त्र खुद ही तैयार करने लगें तो यह हर दृष्टि से बेहतर होगा । अपनी आवश्यकताओं के उत्पादन पर हमारे ग्रामवासियों का नियंत्रण न रहा तो वे उस आजादी को कायम न रख पाएंगे जिसका सुख वे अनादि काल से उठा रहे हैं । स्व-रोजगार की अर्थव्यवस्था का कोई पर्याय नहीं है ।"

लगाया है । प्रतिवर्ष यहां लगभग विभिन्न प्रजाति के डेढ़ लाख पौधे तैयार किये जाते हैं । उन्हें वैद्यों, हकीमों तथा इच्छुक व्यक्तियों को मुफ्त उपलब्ध कराया जाता है ताकि जड़ी-बूटी उद्यान विकसित हो सकें । लोगों को औषधि का स्रोत आसानी से मिल सके ।

प्रदूषण मुक्त एवं प्राणवायु युक्त पर्यावरण बनाने हेतु गांवों में सफाई, पेयजल की व्यवस्था, शौचालयों का निर्माण तथा नीम, पीपल एवं मुनगा के पौधों का रोपण कराया गया । चायल तहसील के पांच गांवों में अभिनव प्रयोग पूरा हो चुका है । स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता के लिए ग्राम शिविर लगाये जाते हैं ।

५. प्रौढ़ शिक्षा

प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम दो गांवों में चलाया गया । उन्हें शिक्षित बनाने के साथ-साथ, स्वास्थ्य, सफाई तथा ग्राम विकास हेतु तैयार किया गया ।

६. मदर एन. जी. ओ. का काम

उत्तर प्रदेश के १० सबसे पिछड़े जिलों में स्वयंसेवी संस्थाओं को परिवार कल्याण क्षेत्र में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया गया । नव दंपत्तियों को, पंचायत के सदस्यों को तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को आजीवन स्वास्थ्य लाभ हेतु प्रशिक्षित किया गया । सभी प्रकार के साधारण रोगों को ठीक करने हेतु कुछ आयुर्वेदिक औषधियों से लोगों को परिचित कराया गया ताकि वे तत्काल उपचार कर सकें एवं इन दवाओं से किसी प्रकार का नुकसान न हो ।

७. उत्थान की भविष्य की योजना

प्रकृति के प्रति स्नेह और आदर की भारतीय परंपरा अत्यंत प्राचीन है । भारत की विशाल वनस्पति संपदा जोकि स्वास्थ्य रक्षण में परमोपयोगी है, उसके समुचित प्रयोग के साथ-साथ आगामी रख रखाव की ओर ध्यान आकृष्ट कर रही है । सतत् विकास के लिए जल एवं भूमि का संरक्षण, पर्यावरण में सुधार, मरुस्थलों के विस्तार में कमी, मौसम की विषमताओं एवं जैविक विविधता के क्षरण को रोकना ध्येय है । गरीबी उन्मूलन हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य, उत्पादक एवं क्रियात्मक प्रयास, कुटीर उद्योग, स्थानीय आवश्यकता के अनुरूप सस्ती टेक्नोलाजी, किसानों द्वारा उत्पादित माल की बिक्री, न्यायपूर्ण शोषणरहित समाज और आर्थिक सुरक्षा पर विशेष कार्य करने की योजना है । जन हिताय एवं जन सुखाय के उद्देश्य से जब हम अपनी अर्थव्यवस्था को संपन्न बनाने की आशा में विदेशियों के लिए उसके द्वार खोलते हैं तो हमें अपने राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए ।

श्री अरविंद ने कहा था कि भूत का गौरव, वर्तमान की पीड़ा और भविष्य के सपने किसी समाज को आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं । रामधारी सिंह 'दिनकर' के शब्दों में :—

स्वर्ग के सम्राट को जाकर खबर कर दें,
रोज ही आकाश चढ़ते जा रहे हैं ये,
रोकिये, जैसे बने इन स्वपनवालों को,
स्वर्ग की ही ओर बढ़ते जा रहे हैं ये ।

—१८-ए, ऑकलैंड रोड
कैंट पुलिस स्टेशन के पीछे
सिविल लाइंस, इलाहाबाद
(उ. प्र.)

उसके दोनों हाथ नहीं हैं और दोनों पैर भी नहीं । फिर भी वह सामान्य मनुष्य की तरह काम-काज में जुटा हुआ दिखायी देता है । शाम को सब्जी लेने बाजार तो जाता ही है । दिनभर के कार्य-क्रम में समाचार-पत्र पढ़ना समाज सेवा करने और सामाजिक व राजनीतिक जानकारी लेने के लिए सार्वजनिक स्थानों में उपस्थित मिलता है । शादी-बारातों, मेलों-ठेलों में भी सामान्य मनुष्य की तरह वह ऊंची

प्रदेश के टिहरी-गढ़वाल के देवप्रयाग क्षेत्र में रह रहे हैं ।

उनका कहना है कि अपना घर-परिवार छोड़कर जब वे गढ़वाल राइफल्स की तीसरी बटालियन में भरती हुए उस समय उनकी उम्र १८ वर्ष की थी । सन् १९५४ से लेकर सन् ५९ तक वे इसी बटालियन में रहे और सन् १९५९ में गढ़वाल राइफल्स की चौथी बटालियन खड़ी हुई तो उस में उनका विलय हुआ ।

न हाथ, न पैर फिर भी पहाड़ पर सैर

● सूर्यप्रकाश टोडरिया

चढ़ाइयों और नीची ढलानों को पार करता हुआ अपनी उपस्थिति दर्ज करता है—सदानीरा भागीरथी और अलकनंदा के तट पर बसे देवप्रयाग में ।

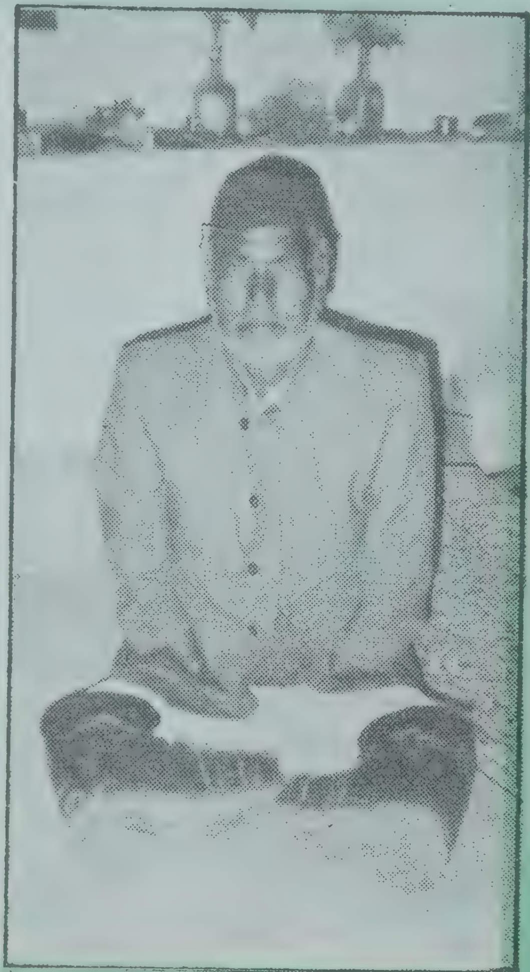
अद्भुत व्यक्ति

जिसकी भौगोलिक संरचना से बड़े-बड़े पर्वतारोही और साहसिक अभियानों से जुड़े सैलानी और यायावर भी खौफ खाते हैं । ऐसी परिस्थितियों में बगैर हाथ-पैर के एक व्यक्ति जुड़ा रहा है । वह अद्भुत व्यक्तित्व, गढ़वाल राइफल्स से सेवानिवृत्त विकलांग सैनिक गणेशनारायण कुकरेती हैं । यह आज भी उत्तर

वे बताते हैं कि १९ अप्रैल, १९५४ में जब वे गढ़वाल राइफल्स में भरती हुए थे, तब १९६२ के भारत-चीन युद्ध में गढ़वाल की आठों बटालियनों को भेजा गया था ।

चीनी सैनिक तिब्बतियों का भेष बदलकर किसी भी तरह से काश्मीर से अरुणाचल (पूर्वी क्षेत्र) को अपने कब्जे में लेना चाहते थे और उन्हीं की वेश-भूषा में वह हमला भी करते थे ।

नवम्बर मध्य के दिन थे और बर्फ भी काफी पड़ गयी थी । उनकी बटालियन अरुणाचल के तवांग क्षेत्र में तैनात कर दी गयी थी । इसी युद्ध में बर्फ के कारण उनके दोनों



६६ वर्षीय श्री कुकरेती दोनों हाथ और दोनों पैरों से विकलांग होने के बावजूद अपने घर से बाजार तक के सभी छोटे-बड़े कार्यों को स्वयम् ही करते हैं ।

हाथ व दोनों पैर भी खराब हो चुके थे । सन् १९६५ के भारत-पाक युद्ध में भी वह सीमाओं पर तैनात थे ।

श्री कुकरेती कहते हैं कि भारत के जवानों के बुलंद हौसले देखकर चीन के जवानों की कोशिशें नाकाम होती रहीं । अंधाधुंध गोला-बारूदों की बौछार और हड्डी जमा देनेवाली बर्फ की ठंड में उनकी सेना भी संघर्षरत थी ।

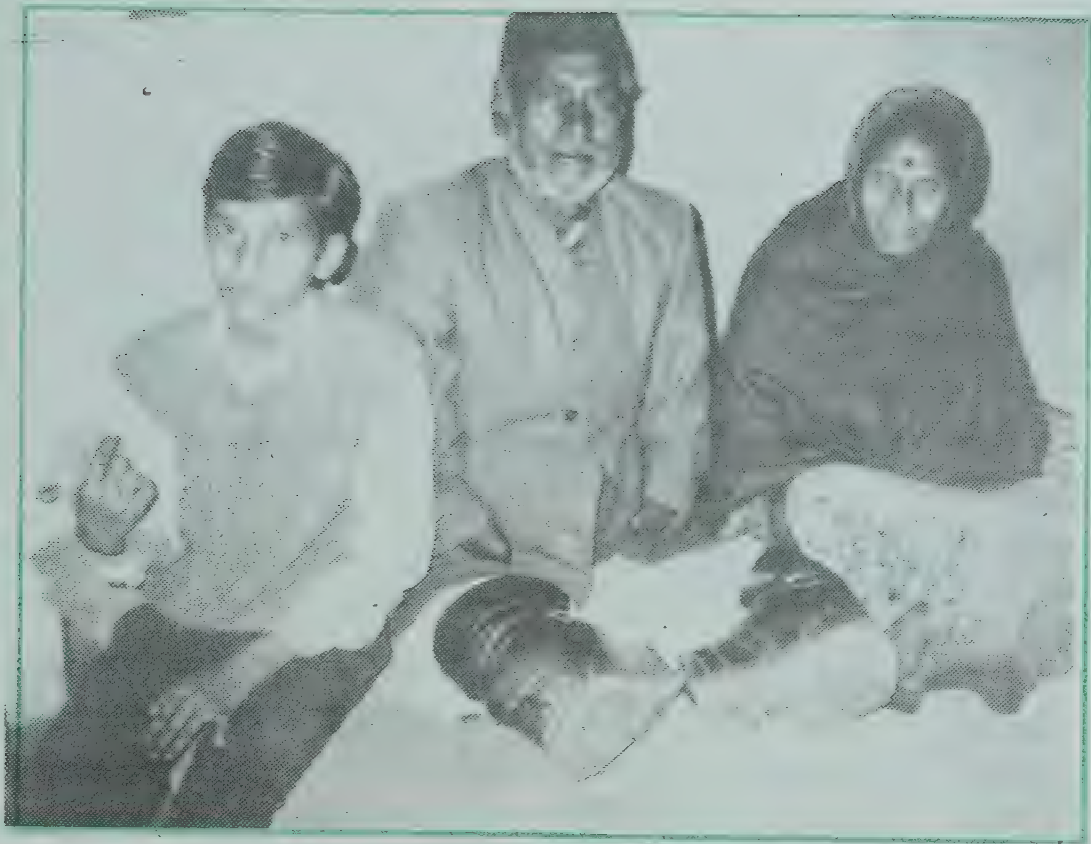
हाथ-पैर काटने पड़े

अपने साथ हुई दुर्घटना में श्री कुकरेती कहते हैं कि वर्ष १९६५ में उन्हें सैनिक अस्पताल रुड़की, पुणे और उसके बाद देहरादून के सैनिक अस्पतालों में भरती कराया गया । सैनिक अस्पताल देहरादून से उन्हें कृत्रिम अंग लगवाने के लिए आर्टिफीशियल लिंब सेंटर, पुणे भेजा गया । उनके हाथ और पैर इतने खराब हो चुके थे कि सेना के सर्जन भी इलाज करने से कतराते थे । उन्हें वार-मैडल से सम्मानित भी किया गया ।

वर्ष १९७४-७५ में बर्फ से खराब हुए उनके दोनों हाथ और दोनों पैरों को सैनिक अस्पताल के सर्जनों को काटना पड़ा । इसके बाद उन्हें कृत्रिम अंग लगवाने पड़े । जब सन् १९७४ में चौथा वेतन आयोग आया, तब से पूर्व-सैनिकों की पेंशन में थोड़ी बढ़ोत्तरी हुई, लेकिन रेजीमेंट में यह रिपोर्ट सन् १९८८ से लागू हुई । तब से उन्हें सहायक के लिए ३०० रुपये, मेडिकल ग्रांट, महंगाई भत्ता सहित मात्र दो हजार रुपये बतौर पेंशन दिये जाने लगे ।

गुजारा नहीं होता

उनकी शिकायत है कि जिला सैनिक



गणेश नारायण कुकरेती परिवार के साथ

कल्याण बोर्ड भी प्रदेश के प्रत्येक जनपद में गठित किये गये हैं, लेकिन वे भी पूर्व सैनिकों को इतनी आर्थिक सहायता उपलब्ध नहीं करवा पाते, जिससे उनके परिवारों का संतोषजनक रूप से निर्वहन हो सके । वहां से भी १००-२०० रुपये की धनराशि ही दे पाते हैं ।

विकलांग सैनिक गणेशनारायण कुकरेती का कहना है कि उत्तर-प्रदेश सरकार भी अपने प्रदेश के पूर्व सैनिकों को किसी भी तरह की सुविधाएं या अनुदान उपलब्ध नहीं कराती हैं । जबकि हरियाणा, महाराष्ट्र, पंजाब व राजस्थान की सरकारें अपने पूर्व सैनिकों को बराबर सुविधाएं देती रहती हैं । दो हजार रुपये प्रतिमाह आज की महंगाई और पर्वतीय क्षेत्र की विषम परिस्थितियों को देखते हुए पर्याप्त नहीं है ।

६६ वर्षीय श्री कुकरेती दोनों हाथ और दोनों पैरों से विकलांग होने के बावजूद अपने घर से बाजार तक के सभी छोटे-बड़े कार्यों क स्वयम् ही करते हैं ।

गढ़वाल राइफल्स की चौथी रेजीमेंट के इस जवान ने देश और समाज के लिए जो कुछ खोया, वह तो इतिहास के पृष्ठों में आज भी दर्ज है, किंतु शासन-प्रशासन युद्ध में विकलांग हुए उन शहीदों या देशप्रेमियों के लिए क्या कर रहा है, यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित है ।

— १४-बी, क्रास रोड, देहरादून-२४८००१

बालक कृष्ण जब विभिन्न विज्ञानों और कलाओं का प्रशिक्षण पाने लायक हुए, तो उन्हें ऋषि संदीपन के आश्रम में, जो कि एक आवासीय शिक्षण-संस्था जैसा होता था, भेजा

धर्मक्षेत्रे प्रबंधक्षेत्रे

गुरुदक्षिणा

• सुरेश कांत

> *गुरु (शिक्षक) की प्राचीन अवधारणा अत्यधिक सशक्त है । आधुनिक प्रबंधन के संदर्भ में समस्त व्यावहारिक प्रयोजनों के लिए बॉस या प्रबंधक को वह हैसियत प्राप्त है । कोई भी कर्मचारी अपने कामकाजी जीवन को अपने निजी जीवन से पूर्णतया अलग नहीं कर सकता । इन दोनों से जुड़ी सफलताएं, असफलताएं, समस्याएं, दबाव और मांगें एक-दूसरे का अतिक्रमण करती रहती हैं ।*

गया । कृष्ण बहुत परिश्रमी, साहसी और विनम्र थे । आश्रम में रहते हुए वे जंगल से लकड़ी काटकर लाने और गायें दुहने-जैसे अजीब-से काम भी खुशी-खुशी कर लेते । ऋषि संदीपन कृष्ण को, जो न केवल एक उत्कंठित छात्र थे वरन् तेजी से सीखनेवाले भी थे, प्रशिक्षित करके बहुत आनंदित हुए । आश्रम में प्राप्त समझ और ज्ञान कृष्ण की भावी शिक्षा-प्राप्ति का ठोस आधार बने ।

प्रशिक्षण पूर्ण होने पर कृष्ण ने अपने गुरु से पूछा कि वह उनके प्रति अपने सम्मान और कृतज्ञता के प्रतीकस्वरूप उन्हें क्या दे सकते हैं ? ऋषि ने स्वयं द्वारा प्रदत्त प्रशिक्षण का परीक्षण करने के लिए कृष्ण से असुरों द्वारा अपहृत अपने पुत्र को छुड़ाने के लिए कहा । श्रीकृष्ण ने असुरों पर आक्रमण कर ऋषि संदीपन के पुत्र को उनसे छुड़ा लिया और उसे ऋषि को लौटा दिया, और इस प्रकार वह गुरु की अपेक्षाओं पर खरे उतरे ।

आधुनिक प्रबंधन

गुरु (शिक्षक) की प्राचीन अवधारणा अत्यधिक सशक्त है । आधुनिक प्रबंधन के संदर्भ में समस्त व्यावहारिक प्रयोजनों के लिए बॉस या प्रबंधक को वह हैसियत प्राप्त है । कोई भी कर्मचारी अपने कामकाजी जीवन को अपने निजी जीवन से पूर्णतया अलग नहीं कर सकता । इन दोनों से जुड़ी सफलताएं, असफलताएं, समस्याएं, दबाव और मांगें एक-दूसरे का अतिक्रमण करती रहती हैं । आदमी की घरेलू अपेक्षाएं अनिवार्य रूप से उसके साथ उसके दफ़्तर चली आती हैं, जिनका उसके कार्य-निष्पादन या आउटपुट पर

स्वर्ण-पिंड

- ***प्रबंधक को एक गुरु की तरह होना चाहिए । सबल, सक्षम और विश्वसनीय अधीनस्थ तैयार करके प्रबंधक नयी-नयी और ज्यादा महत्त्वाकांक्षी परियोजनाओं की संकल्पना और आयोजना कर सकता है ।***
- ***केवल आत्म-विकास ही भावी उन्नति और सफलता सुनिश्चित कर सकता है ।***
- ***कार्य-निष्पादन में अनवरत सुधार अधीनस्थ द्वारा अपने प्रबंधक को दी जा सकने वाली सर्वोत्तम दक्षिणा है ।***

सीधा प्रभाव पड़ता है । आदमी को अपनी विभिन्न समस्याएं सुलझाने में सहायक योग्यताएं, गुण, मूल्य और ज्ञान समान होते हैं, अलबत्ता एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में उनका प्रयोग भिन्न होता है । प्रबंधक को अलग-अलग कर्मचारी के विभिन्न पक्षों का वस्तुनिष्ठ तरीके से मूल्यांकन करना चाहिए और फिर उस कर्मचारी को प्रशिक्षण और मंत्रणा देनी चाहिए । ऐसे मार्गदर्शन का लक्ष्य उस कर्मचारी को अनवरत आत्म-विकास द्वारा समर्थ बनाना होना चाहिए, ताकि वह जीवन में आनेवाली व्यापक समस्याओं का मुकाबला कर सके । यह ज्ञान-दान एक सुनियोजित, समयबद्ध गतिविधि होनी चाहिए । अधीनस्थों की इस बात में मदद करनी चाहिए कि वे अपने स्वयं के हित में सीखने की जरूरत को हृदयंगम करें । सफल होने की ज्वलंत इच्छा यदि एक बार प्रदीप्त कर दी जाए तो उसके परिणामस्वरूप उपयुक्त प्रयास आदमी से स्वतः होने लगते हैं ।

प्रबंधक को अपने अधीनस्थों से धन या भौतिक वस्तुओं के रूप में दक्षिणा (शुल्क) की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए । यदि कभी अधीनस्थों द्वारा ऐसा प्रस्ताव किया जाए, तो उसे सर्वथा नकार देना चाहिए । अधीनस्थों को भी ऐसे उपहार प्रदान करने के बजाय अपनी निष्ठा के प्रदर्शन, ज्ञान के प्रयोग और आत्म-विकास द्वारा, और सबसे बढ़कर, सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए अपनी सफलताएं और विफलताएं अपने बॉस के साथ बांटकर गुरु-दक्षिणा चुकानी चाहिए । अधीनस्थों में अपनी धारणाएं और विचार, चाहे वे उनके प्रबंधकों की धारणाओं और विचारों के विपरीत ही क्यों न हों, तर्कपूर्ण ढंग से और दृढ़ता के साथ व्यक्त करने का साहस होना चाहिए । प्रबंधकों को उनमें यह साहस विकसित करना चाहिए और असहमति को अपने विरोध के रूप में नहीं लेना चाहिए । अपने अहं को ताक पर रखकर उन्हें अपने अधीनस्थों की बातें गौर से सुननी चाहिए और उनमें से तर्कसंगत बात को स्वीकार कर स्वयं और संगठन, दोनों को उससे लाभान्वित करना चाहिए । यह व्यवहार बॉस और अधीनस्थों के बीच एक भावनात्मक बांड यानी बंधन विकसित करेगा, जिससे पूरी टीम समर्थ बनेगी ।

—२५-ए, पॉकेट जे. एंड के.
दिलशाद गार्डन, दिल्ली-११००९५

दिसंबर '९७ में राष्ट्रपति के हाथों पनरवा गांव की पहाड़ी पर राणा पुंजा की एक मूर्ति का अनावरण होना था । लेकिन पनरवा के राणा मनोहर सिंह सोलंकी को मूर्ति स्थापित तो दूर की बात, अनावरण करने देना तक नापसंद था । दरअसल, पनरवा के किसी भी स्थान में पुंजा की मूर्ति स्थापित करने पर सोलंकी की दो के पन्ने पलटने पर वक्त को उकसा दिया है ।

राणा प्रताप सिंह की समझ से यह बात बिलकुल परे थी कि दूसरे की औरत को बहला-फुसलाकर अपनी पत्नी बना लेने में तीसमार खां बनने जैसी कोई बात है । फिर भी दूसरे की औरत को अपने मोहजाल में फांसते ही 'बड़ा घाघरा' यानी उसकी कीमत चुकाकर



राणा प्रताप के हाथ बने भील

● नारायण राव

शर्तें माननी होंगी । पहली, घोषणा करनी होगी कि पुंजा भील नहीं, राजपूत थे । दूसरी, राजपूती लिबास में लकदक पुंजा को घोड़े पर सवार दिखाना होगा । सोलंकी का कहना था कि वह खुद राजपूत और राणा पुंजा की अगली पीढ़ी के हैं । कहना न होगा कि सन् १५६७ में महाराणा प्रताप के बाद के लगभग साढ़े चार सौ साल बाद भील सरदार पुंजा की मूर्ति स्थापित करने पर आपत्ति उठाते हुए मनोहर सोलंकी ने भील और राजपूतों के बीच गरमागरमी को हवा दे डाली है । इस हादसे ने ही राजघराने के दास्तान उसे अपने घर की दहलीज के अंदर लाने की कूवत तो नहीं दिखायी जाती ! राणा प्रताप को भला इसका अहसास होता भी तो कैसे ? क्योंकि, अपने-पराये किसी की भी पत्नी या बेटी की तरफ आंखें उठाकर देखने की उन्हें फुरसत नहीं थी !

मगर अरावल्ली के बीहड़ में समुरा के भिल्लू राजा पुंजा के विवाह में राणा प्रताप को मजबूरन जाना पड़ा था । क्योंकि, भील सरदार पुंजा की सहायता के बिना अकबर से मुकाबला करना राणा प्रताप के लिए कतई मुमकिन नहीं

था । मजे की बात, रेवाकांथा के पराक्रमी भील काटू की बीवी कब भील सरदार पुंजा के प्रेमजाल में फंस गयी, इसकी आहट शुरू में काटू को नहीं मिल पायी थी । और जब भनक मिली, उससे पहले ही काटू की बीवी पुंजा के घोड़े पर सवार होकर रफूचक्कर हो गयी ।

राणा प्रताप को इसका भी शिद्दत से अहसास था कि अरावल्ली अरण्य के भूगोल की जानकारी सिर्फ भीलों को थी । इसलिए अकबर से लोहा लेने में उन्हें भीलों की सख्त जरूरत थी । इसके बावजूद भीलों के कुनबे में औरत-मर्द की आपसी बेहयाई और दारू पीकर हुड़दंग मचाने पर राणा प्रताप को बेतरह चिढ़ थी । फिर भी राणा प्रताप को यह अहसास हो गया था कि घाघरा और पीठ उघरी चोली में भील युवतियां किसी भी गबरू मर्द को रिझा सकती हैं ।

मजबूरी राणा प्रताप की

भील सरदार पुंजा का विश्वास जीतने के लिए राणा प्रताप को भीलों के हाथों पानी पीने और उनके साथ बैठ कंद-मूल और भील युवतियों के हाथों तैयार मदिरा को हलक से नीचे उतारने में कोई उज्र नहीं था । यहां तक कि उनके राजपूत चेले-चांटियों और फौजी सूरमाओं के भील कन्याओं को अलग से पत्नी बनाने को भी राणा प्रताप अनदेखा-अनसुना कर झेलते रहे । वह भी सिर्फ आनेवाले अकबर का खयाल कर । राणा प्रताप के पिता उदय सिंह भी राजपूतों के साथ भीलों के मेलजोल के हिमायती थे । क्योंकि, उन्हें भी मालूम था कि भीलों की ताकत का सहारा लिये बिना मुगलों से लोहा लेना संभव नहीं । लेकिन राणा प्रताप के भाई इस सोच के कतई कायल नहीं थे । तमाम राजपूत अगर गामेतिया, कतारा और मीना भीलों के साथ एकजुट हुए होते, तो राजपूतों की चूलें हिलाना बाबर या अकबर के बस में नहीं हुआ होता । क्योंकि, जंगल के अंदर भीतरघात करने में भीलों का कोई मुकाबला नहीं था ।

यह कहना प्रासंगिक है कि राणा प्रताप के पराक्रमी पिता उदय सिंह युवतियों के मोहपाश से स्वयं को कभी मुक्त नहीं कर पाये । राणा प्रताप को इसका गहरा सदमा पहुंचा था कि उनकी माता जयंती के बजाय कम उम्र रानी भटियानी से बेपनाह मुहब्बत करने की वजह से उनके पिता ने नाकारा जगमल को मेवाड़ का राजसिंहासन सौंप दिया था । लेकिन रानी भटियान्नी के इशारों पर नाचनेवाले और उनके यौनाकर्षण के तावेदार बने रहे उदय सिंह ने जब इस पत्नी की सलाह पर नामुराद जगमल को ताजपोशी करवाकर मेवाड़ को नेस्तनाबूद किया तो इसकी आहट पाते ही दूसरे राजपूत राणाओं ने बौखलाकर जगमल को सत्ताच्युत कर दिया । मगर इसके बाद रोते-रोते अकबर के कदमों में

मेवाड़ के राणा प्रताप को जिन भीलों ने माह-दर-माह पनरवा के घने जंगलात में बीहड़ों का रास्ता दिखाया, उनके साथ राजपूतों के खून के रिश्ते थे । अल्हड़ और मादक भील नवयौवनाओं ने भी एक दूसरी विधा में राजपूत योद्धाओं को प्रशिक्षित किया था ।

जा गिरा जगमल अजमेर में मुगलिया फौजी बन राणा प्रताप से मोरचा लेने के लिए डट गया। उसी दौरान निहायत ही मामूली रस्म अदायगी के बीच कुंभलगढ़ में राणा प्रताप का राज्याभिषेक हुआ।

हालांकि, राणा प्रताप का उदय सिंह की निंदा करना भिल्लू राज को नागवार गुजरा था। क्योंकि उदय सिंह ने ही भीलों के साथ राजपूतों की मित्रता को अनिवार्य महसूसते हुए कहा था कि किसी भील के रक्ततिलक के बिना किसी भी राजपूत की ताजपोशी मुकम्मिल नहीं हो सकती। और फिर एक दिन राणा प्रताप ने चित्तौड़गढ़ के पास वन जंगल में गंभीरी नदी के किनारे भील पुंजा को अपनी आपबीती सुनाते हुए अचानक अपनी तलवार से अंगुली चीर खून का टीका भील सरदार के ललाट पर लगाते हुए कहा, "आज से तुम राणा पुंजा हो।

पंडित न होते हुए भी राणा प्रताप ने पंडितों से जान लिया था कि संस्कृत का भील पतित होने के बावजूद द्रविड़ में उसका धर्म केवल युद्ध है। इसीलिए राणा प्रताप ने पुंजा से कहा था, "तुम्हारे वीरत्व ने तुम्हें मेरी आंखों में राजा बना दिया। तुम्हारी सहायता से मैं चित्तौड़गढ़ को मुगलों के शिकंजे से दोबारा जीत लेना चाहता हूं।" हालांकि, चित्तौड़ पर राणा प्रताप कब्जा तो नहीं कर सके लेकिन पुंजा को साथ लिये अरावल्ली अरण्य में अकबर के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध करते रहे और अंततः पिछोला झील के किनारे एक साधारण-सी कुटिया में सन् १५९७ में उन्होंने अपने जीवन की अंतिम सांस ली।

—१० ए, बड़ा पुकुर रोड, एन्टाली रोड पो. ओ.
कलकत्ता-७०००२०

इनके भी बयां जुदा-जुदा

इश्क से तबियत ने जीस्त का मजा पाया
दर्द की दवा पायी दर्द लादवा पाया

—गालिब

वतन की फिक्र कर नादां मुसीबत आनेवाली है
तेरी बरबादियों के मशवरे हैं आसमानों में

—इकबाल

खुदा ने आज तक उस कौम की हालत नहीं बदली
न हो जिसको खयाल खुद अपनी
हालत के बदलने का

—हाली

कश्ती को समुंदर में नहीं डालते मल्लाह
होते हैं हवाओं के जब आसार मुखालिफ

—रजा रामपुरी

फाकाकशी में खुश हूं पर इतना तो दे मुझे
शर्मिंदगी न हो किसी मेहमां के सामने

—नवाज देवबंदी

किस किसको बताएंगे जुदाई का सबब हम
तू मुझसे खफा है तो जमाने के लिए आ

—अहमद फराज

नन्हें बच्चों ने छू भी लिया चांद को
बूढ़े बाबा कहानी सुनाते रहे

—वसीम बरेलवी

शाम होने पे बुझा देता हूं मैं सारे चिराग
दिल ही काफी है तेरी याद में जलने के लिए

—[illegible]

तुम लोगों से कह-सुनकर
खुद सम्मान कराते फिरते हो
वो जो भी है जैसा भी है उसकी
अपनी पहचान तो है

—ब्रज अभिलाषी

एक घर को तरस रहे हैं हम
यूं तो सारी जमीं हमारी है

—अख्तर शाहजहापुरी

प्रस्तुति : कुलदीप तलवार

ये सब एक साथ आये, हमारे लिए तो सिर्फ उस दिन के समाचारपत्रों के प्रमुख आकर्षण थे, परंतु प्रचलित प्रणालियों पर, जिनका संबंध पत्रकारों और पर्यवेक्षकों से बहुत है, ऐसे आघात हैं जो वर्तमान सामाजिक-शासनिक व्यवस्थाओं को आतंकित करते हैं, और उनके प्रति एक ओर अविश्वास अतिरंजित करते हैं, दूसरी ओर उन तक बहुत में, जो दो लोकसभा निर्वाचन हुए उनके पूर्व, और तत्काल बाद परिणामों के आकलन और प्रकाशन के पहले जो पर्यवेक्षण और सर्वेक्षण हुए, उनकी सत्यता इतने अपर्याप्त अंशों में सिद्ध हुई कि इनकी आवश्यकता और औचित्य आपत्ति में आ गया है । निष्कर्ष यह रहा है—कदाचित ही किसी की भविष्यवाणियां पूरी तरह सही उतरी हैं । भविष्यवाणियों से

भ्रांति और शक्ति

• राजेन्द्र शंकर भट्ट

सहानुभूति और खेद, क्षमाप्रार्थना, पहुंचाते हैं ।

इनमें विरोधाभास भी है, और विपर्यय भी, यह विचित्र स्थिति कि जिस पर, जिन पर, इतना विश्वास किया जाता है, व्यय किया जाता है और व्यवस्थाएं एवं भविष्य जिनसे इतना प्रभावित होता है, उनका अपना अस्तित्व और स्वयं उनकी अस्मिता कितनी संदिग्ध हो गयी है ।

एक भारत की बात लें, एक अमेरिका की, यह साबित करने के लिए कि जो संस्थाएं तथा वास्तविकताएं होती हैं, उनका प्रभाव और परिणाम हर जगह एक साथ रहता है । दो बीच के प्रकरण हैं जिनका संबंध सारे संसार से हो जाता है ।

चुनावी सर्वेक्षणों का औचित्य

भारत में सन् १९९६ में और सन् १९९८ सामान्यतः आभास ज्योतिष की गणना से होता है, लेकिन निर्वाचनों में भावी परिणाम विश्लेषणकर्ताओं के ऐसे समूहों ने प्रकट एवं प्रचारित किये थे जो अपने को प्रायः वैज्ञानिक मानने लगे हैं—तकनीक और साधन ऐसे अपनाते हैं जिनकी आधुनिकता और विश्वव्यापी स्वीकृति उन्हें अति विश्वासी और प्रभावी बनाने लगी है । उदाहरण यह दिया जाता है कि तमिलनाडु में जो आश्चर्यकारी और सफलतादायी गठबंधन हुआ, वह इसी प्रकार के एक सर्वेक्षण से प्रेरित हुआ था । महाराष्ट्र और राजस्थान में जो उलटफेर हुए, उन्हें, इनके लिए कलंकारी कहा जा रहा है । 'जो सदा सत्य नहीं हो वह विज्ञान नहीं होता', इस तर्क से इस समस्त सर्वेक्षण व्यवस्था को नकारा जा रहा है ।

इसका अधिक विवेचनीय पक्ष यह है कि निर्वाचनों के पूर्व किये गये सर्वेक्षणों के परिणामों के प्रकाशन से मतदाता प्रभावित हो सकते हैं, जिससे बचाने के लिए निर्वाचन आयोग ने इस बार कुछ प्रतिबंध लगाये थे लेकिन उनकी अवधि की समाप्ति के एक मिनिट बाद प्रसार साधनों ने जो विस्तृत एवं व्ययकारी 'एक्ज़िट पोल' कराया, नमूने के मतदाताओं से जानकर बताया कि उन्होंने किस को अपना मत दिया, और विज्ञापित किया, वह तो चारों खाने चित्त गिर गया ।

अलोकतांत्रिक कृत्य

जो पर्यवेक्षण-सर्वेक्षण निर्वाचनों के पहले होते हैं, हफ़्तों पहले, और कुछ ही दिन पहले भी, दोनों मतदाताओं की निर्णय-स्वतंत्रता के विपरीत, उनकी निर्णय-बुद्धि के प्रति अपमानकारक और देश की निर्वाचन-व्यवस्था को दूषित करनेवाले हैं । प्रत्येक निर्वाचन से अपेक्षा होती है कि मतदाता स्वविवेक से, बिना बाहरी प्रेरणाओं के, अपना मन बनाएंगे, और मत देंगे । जो दूसरा पक्ष है—मत मांगनेवालों का, उसका भी हक बनता है मतदाताओं के सामने अपने को उपयुक्त सिद्ध करने का । यह मतदाता पर निर्भर करता है कि वह किसके आग्रह का आदर करे, परंतु मतदाता क्या करेगा, इसका पूर्वानुमान और उसका प्रकाशन-प्रचार, अवांछित, अनुचित और अनावश्यक है । यह मतदाताओं पर दुष्प्रभाव है, अलोकतांत्रिक है कि ज्यादा लोग इसको मत दे रहे हैं, तुम भी इसी को मत दो । या यदि तुमने इसे मत दिया तो वह बेकार जाएगा । अनुकूलता-प्रतिकूलता जो भी निर्वाचन-पूर्व सर्वेक्षणों से निर्मित होती है, सामान्य प्रक्रिया में बाधक, अतएव आपत्तिजनक है । यह ऐसा व्यय है धन का, शक्ति का, समय का, जिससे कम से कम इस निर्धन देश को बचाया जाना चाहिए । कुछ के शौक और स्वार्थ के लिए समस्त मतदान प्रक्रिया को कलुषित नहीं किया जाना चाहिए ।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दुरुपयोग

तात्कालिक प्रश्न इनके सत्य सिद्ध नहीं होने से बन गया है । साथ-साथ उन समाचारपत्रों, दैनिकों, साप्ताहिकों को लिया जाना चाहिए जो ऐसे सर्वेक्षण 'बाहरी विशेषज्ञ सेवाओं' से कराते हैं और स्वयं भी अपने संवाददाताओं आदि के माध्यम से भविष्यवाणियां करते रहते हैं । इन दोनों वर्गों के असत्य सिद्ध होने पर उनकी प्रतिष्ठा की ही हानि होती है । पाठक जो प्रभावित होते हैं, वो प्रश्न अलग है । समाचारपत्रों के स्वामी और संपादक जो सर्वसामान्य पाठकों से, जिनमें सभी विचार और दलों के होते हैं, लाभान्वित होते हैं वे किसी एक पक्ष या प्रकार के प्रत्याशियों का प्रचार कैसे कर सकते हैं ? यह नैतिक और सैद्धांतिक प्रश्न है परंतु यह तो नितांत अनुचित और आपत्तिजनक है कि समाचारों को उद्देश्यपूर्वक अतिरंजित किया जाए । किसी के पक्ष में, किसी के विरोध में । 'लहर ऐसे बतायी जाती है' जिसमें संवादकजी स्वयं भी डूब जाते हैं । यह भी क्या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार में आता है ?

भारत को छोड़ें, अमेरिका चलें । वहां के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन इन दिनों आपत्तिजनक यौनाचार के आरोपों से ग्रस्त हैं । इनका सूत्रपात

सन् १९९३ में प्रकाशित इस विषय के विशेष आलेख से हुआ था, जिसके रचयिता डेविड ब्रोक ने क्लिंटन से क्षमा याचना की है, और इसे उन्होंने स्वीकार कर लिया है परंतु इसका इस मामले की प्रगति और परिणाम पर प्रभाव नहीं पड़ेगा । जो हानि होनी थी, हो चुकी । अब मामला जाँचकर्ताओं और न्यायालयों के हाथों में है ।

परिस्थितियों के संबंध में किये जाते हैं, उनके सार्वजनिक किये जाने पर आपत्तियां कर रहे हैं । अर्थात् वास्तविकताओं के प्रकट किये जाने पर आपत्तियां राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी 'इस युग में' की जा रही हैं । ये सर्वेक्षण संबंधित व्यक्तियों के लिए कभी-कभी आवश्यक चेतावनी बन जाते हैं, इससे उन्हें किसी राष्ट्र के शासन के स्वार्थ के लिए वंचित

यह 'कर्त्तव्य', ही है जो जब चाहे-जैसा रूप ले लेता है । कर्त्तव्य सदा स्पष्ट नहीं होता, स्वार्थों से वह सदा भरा रहता है, अपने से भी और दूसरों के से भी । मनुष्य जो होता है, उसके लिए 'मनुष्योचित व्यवहार' बहुत कठिन होता है । इसी तरह से तो हमने संसार को स्वर्ग की जगह स्वर्ग में बाधक बना लिया है ।

करना उचित नहीं माना जा सकता ।

इन स्थितियों ने पत्रकारों की तथाकथित स्वतंत्रता और विध्वंसकारी चेष्टाओं पर गंभीर प्रश्न उठाये हैं ।

इनमें सबसे पहला है कि क्या राष्ट्र और राष्ट्र की राजनीति को क्षतिग्रस्त करने की अनुमति दी जा सकती है ? डेविड ब्रोक ने कह दिया कि मूलतः 'अमेरिकन स्वेकटेटर' में प्रकाशित उनके आलेख का जो कुप्रभाव हुआ उसकी अपेक्षा उन्हें नहीं थी । वार करनेवाला उसका परिणाम पहले से नहीं जाने तो उसे 'पागल' कहा जाता है । ऐसे पागल पत्रकार वर्ग में रहने देने योग्य हैं या नहीं ? इस पर ऐसे उन समस्त देशों में विचार होना चाहिए जिनमें आधुनिक पत्रकारिता विकसित हो गयी है ।

दूसरी ओर अनेक देश अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष की ओर से जो वार्षिक सर्वेक्षण उनकी आर्थिक

उधर, विश्व स्वास्थ्य संगठन को ब्रिटेन में प्रकाशित ऐसे समाचारों पर आपत्ति है कि उसने सिगरेटों के प्रभाव के संबंध में किये गये एक सर्वेक्षण को 'दबा रखा है ।' इसकी सत्यता की बात छोड़ें, सवाल दो मुखा यह है कि जो नहीं है उसको प्रकाशित अथवा प्रतिपादित कैसे किया जा सकता है ?

अस्पष्ट कर्त्तव्य

दिन ऐसा था जिसमें ऐसे सवालों के जवाब उसी दिन प्रकाशित अन्य 'सामग्री' में मिले । चाहे डेविड ब्रोक हों, चाहे उन्हें 'स्वार्थी सामग्री' देनेवाले क्लिंटन के अंगरक्षक, सामाजिक ईर्ष्याओं ने धन लिप्सा को बढ़ाया है—आसपास जो हैं उनसे 'उन्नत' हमारा जीवनयापन होना चाहिए, ऐसी अभिलाषाएं

अति और अनुचित अर्जन की ओर ले जाती हैं । जो चतुर हैं, वे चरित्रवानों को पीछे छोड़ रहे हैं । अपनी सामर्थ्य से अधिक सहारा दूसरों के दोष-दर्शन से लिया जा रहा है ।

दिल्ली के समाचारपत्रों में उसी दिन दो प्रवचन भी छपे । एक के लेखक थे डॉ. दीपक चोपड़ा । जिन्होंने कि अनुकरणजनित आचरण को भी आपत्तिजनक बताया, भौतिक भ्रांतियों से सावधान किया, वास्तविकताओं की ऐसी व्याख्याएं कीं जो सामान्य विचारों के विपरीत हैं । जैसे—उन्होंने कहा मानस मस्तिष्क में नहीं होता, शरीर के हर अंग और पोर में अवस्थित है । सच भी है, स्पर्श किसी अंग का किया जाए प्रतिक्रिया पूरे शरीर में होती है । संपूर्ण शुद्धि ही संस्कार दे सकती है । स्वयं समाचारपत्रों के कैसे' संस्कार हो गये हैं ? इसने इस दिन के इस आधुनिकता-प्राचीनता के अद्भुत सम्मिश्रण से प्रणीत दिव्य उद्बोधन को दी गयी महत्ता के अनुपात में आशंकाएं निर्मित कीं । नगण्य नेताओं के पारस्परिक द्वेष व्यक्त करनेवाले और बढ़ानेवाले, वक्तव्य अतिविस्तार से प्रकाशित किये जाते हैं, और ऐसे उच्च चरित्र उत्प्रेरित करनेवाले प्रवचन छोड़ दिये जाते हैं या बहुत कतरब्योंत पा लेते हैं । जिसका प्रभाव उचित हो उसका संक्षिप्तीकरण आधुनिक पत्रकारिता हो गयी है ।

जिस दैनिक ने डॉ. दीपक चोपड़ा के व्याख्यान को सबसे अधिक स्थान दिया उसी ने ' 'धर्म को कभी नहीं छोड़ने का आह्वानह' श्री जयेन्द्र सरस्वती स्वामी की ओर से भी प्रकाशित किया । दैनिक जीवन के सामान्य व्यवहार से कैसे देवत्व की ओर उठा जा सकता है, इसको स्वामीजी ने समझाया था । उन्होंने भी उचित व्यवहार से उन्नति की प्राप्ति का प्रतिपादन किया ।

इसमें जोड़ें न्यायाधीश वी. एस. मालीमथ के विचार । वे सदस्य तो हैं राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के, परंतु प्रतिपादन कर्त्तव्यों-दायित्वों का कर रहे हैं, दायित्व-बोध से ही देश का उद्धार होगा, इस विश्वास से वे इसके वास्ते राष्ट्रीय आंदोलन आवश्यक बताते हैं । स्वार्थ-भावनाओं ने देश की बहुत हानि की है, पशुत्व की ओर ले जानेवाली यह वृत्ति निराकरण के योग्य हैं ।

यह 'कर्त्तव्य' ही है जो जब चाहे-जैसा रूप ले लेता है । कर्त्तव्य सदा स्पष्ट नहीं होता, स्वार्थों से वह सदा भरा रहता है, अपने से भी और दूसरों के से भी । मनुष्य जो होता है, उसके लिए 'मनुष्योचित व्यवहार' बहुत कठिन होता है । इसी तरह से तो हमने संसार को स्वर्ग की जगह स्वर्ग में बाधक बना लिया है ।

—'स्फटिक' ३-म्यूजियम मार्ग, जयपुर (राज.)

मलाई औषधि भी

मलाई दूध का सर्वोत्तम और असली अंश है । मलाई खाने से ताकत बढ़ती है और वायु का नाश होता है । कमजोर और पेट के रोगियों को मलाई नहीं खानी चाहिए । भारी होने के कारण इसे कम मात्रा में खाना चाहिए । जिनकी पाचनशक्ति तीव्र है, उन्हें ही उचित मात्रा में इसका सेवन लाभप्रद होता है ।

भारत के महान ग्रंथों में 'तिरुक्कुल' भी एक माना जाता है । यह ग्रंथ तमिल साहित्य का गौरव है तथा भारतीय साहित्य का भूषण है । विश्व साहित्य में भी इसका विशेष स्थान है । कुरल एक सामान्य नीति ग्रंथ है । जिस प्रकार यह ग्रंथ ईसा की प्रारंभिक शताब्दी में समदृत हुआ था उसी प्रकार आज भी हो रहा है ।

तिरुक्कुल और प्रजातंत्र

• डॉ. जा. आशीर्वादम

प्रजातंत्र तो आधुनिक युग की शासन पद्धति का सिद्धांत है । जब तमिलों के इस महान नीति ग्रंथ 'तिरुक्कुल' का निर्माण हुआ (ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी) तब प्रजातंत्र के शब्द का नामोनिशान तक न था । तब राजसत्ता का शासन चलता तथा प्रजा गुलाम बनकर रहती थी । किसी काल विशेष का ग्रंथ न होने के कारण इसका प्रभाव अब इस प्रजातंत्र शासन पद्धति के युग में भी प्रबल है ।

धर्मनिरपेक्षता

'तिरुक्कुल' एक समधर्म ग्रंथ है । यह ग्रंथ हिंदू, जैन, बौद्ध, ईसाई आदि सभी से समदृत है । फिर भी इसके रचयिता तिरुवल्लुवर हिंदू धर्म के अनुयायी ही थे । हिंदू होते हुए भी तिरुवल्लुवर ने अपने ग्रंथ को सभी धर्म के लोगों के लिए ही बनाया है । हमारे संविधान के अनुसार भी इस देश को धर्मनिरपेक्ष देश घोषित किया गया है । प्राचीन काल के काव्य लक्षणों के अनुसार किसी भी काव्य के रचयिता को मंगलाचरण में अपने पूज्य भगवान के नाम का उल्लेख करके उसकी स्तुति करना अनिवार्य था । अपने ग्रंथ को धर्मनिरपेक्ष बनाने के उद्देश्य से 'तिरुवल्लुवर' ने काव्यों के इस प्राचीन नियम को ही तोड़ डाला था । अपने दोहों से भरे इस नीति ग्रंथ के मंगलाचरण में आपने किसी ईश्वर का नाम खुल्लमखुल्ला नहीं बताया । मगर 'आदिभगवान' पुष्पों पर गमन करनेवाले (सभी के हृदय कमलों में निवास करनेवाले) विशुद्धबाण धारण करनेवाले; पंचेंद्रियों के विकारों का भस्मीकरण करनेवाले आदि मुआवरों द्वा ही प्रतीकात्मक रूप से ईश्वर का उल्लेख किया है । अपने दोहों द्वारा आपने जो उपदेश दिये हैं वे सभी धर्म के लोगों के लिए उपयपोगी हैं ।

उत्तम नागरिकता

नागरिक का उत्तम होना प्रजातंत्र के लक्षणों में प्रमुख था । कुडिथिचल (वंश का तत्व) के शीर्षक के अंतर्गत कुलीनता सम्मान, महानता, सर्वगुण संपन्नता, शिष्टाचार आदि शीर्षक के तेरह अध्यायों में वल्लुवर ने जिन गुण विशेषों को निर्धारित किया है वे सब गणतंत्र के उत्तम नागरिक के लक्षण के अनुरूप हैं । इन अध्यायों में उत्तम नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को जिस प्रकार व्यक्तिगत, गार्हस्थ्य तथा

सामूहिक व्यवहार करना चाहिए, उन सब के लिए उपदेश प्राप्त होते हैं ।

'कुडियिचल' शीर्षक (वंश का तत्व) के भीतर के तेरह अध्याय अध्यायों के पहले अध्याय में वल्लवुर ने कहा है, "ईमान, लज्जा, सदाचार, सत्य आदि जीवन जीने के लिए आवश्यक गुण हैं ।" आदर्श जीव ही उत्तम प्रजा बन सकता है । वल्लुवर के अनुसार आदर्श व्यक्ति में चार गुण और होते हैं । वे इस प्रकार हैं : प्रसन्न मुख, दान, मधुर भाषण, दूसरों की निंदा न करना । अगले ही अध्याय में वल्लुवर ने कहा है, "सुयश एवं सम्मान के इच्छुक सुयश प्राप्त होने पर भी अगौरवपूर्ण कार्य नहीं करेंगे ।" अगौरवपूर्ण कार्य से आज की स्थिति में तात्पर्य व्यंजनों में मिलावट, रिश्वत आदि से है । 'यथा राजा तथा प्रजा' राजतंत्र युग का उद्धरण अब गणतंत्र के युग में ठीक उल्टा ही साबित होता है । अब-जैसी प्रजा वैसे शासक कहना ही ठीक है । अब प्रजा ही शासक को नियुक्त करती है और शासन का अस्तित्व प्रजा पर ही निर्भर है । आदर्शजीवी के लक्षण बताते समय आदर्शहीन के लक्षण का भी परिचय इस ग्रंथ में वल्लुवर ने कराया है । वे कहते हैं कि श्रेष्ठता भी आचरणहीन के साथ पड़ जाए तो वह उसका भी दुष्प्रयोग ही करेगा । (कुल संख्या ९७७) इस दोहे से जो संदेश मिलता है वह अब के गणतंत्रके युग में विचारणीय बात है । सरकार की योजनाएं चाहे वे जो भी हों तभी कामयाब होंगी जब प्रजा गौरवपूर्ण हो ।

सत्ता की सीमा

अरत्तुप्पाल (धर्मपक्ष) पोरुटपाल (अर्थपक्ष) कामत्तुप्पाल (कामपक्ष) आदि तीन प्रधान भागों में विभाजित 'तिरुक्कुरल' ग्रंथ में दूसरे भागवाले अर्थपक्ष में पूर्ण रूप से राजनीति की ही चर्चा है । यह कौटिल्य के अर्थशास्त्र के समान ही है । वल्लुवर के अर्थपक्ष के इस भाग में सामंत, दुर्ग, खाद्य आदि के अध्यायों में राजतंत्र के विषयों की चर्चा होती है । फिर भी इसी भाग में 'नरेश का गुण कर्म', 'विचारपूर्ण चुनाव', 'सुशासन', 'कुशासन' आदि के शीर्षक के जो अध्याय हैं । वे सब गणतंत्र शासन प्रणाली के कुछ उपयोगी सुझावों से ओतप्रोत हैं । नरेश के गुणकर्म के शीर्षकवाले इस भाग के पहले अध्याय में शासकों के छह अंग बताए गए हैं । वे क्रमशः सैन्य, प्रजा, धन, अमात्य, मित्र, दुर्ग आदि हैं । गणतंत्र में भी शासन की बागडोर संभालनेवालों को इन सभी अंगों की उपलब्धियां अनिवायं हैं ही । वह अंगों के बाद नरेश की चार क्षमताएं बतायी जाती हैं (कुरल संख्या : ३८२) वे क्रमशः निर्भयता, दान, बुद्धिमत्ता, उत्साह आदि हैं । छह अंग और चार क्षमताओं के साथ-साथ 'तिरुवल्लुवर' ने राजाओं के लिए तीन प्रकार की साधनाओं को भी निर्धारित किया है । आजकल के अवसर पर भी मंत्री प्रधानों के लिए इन तेरह वस्तुओं का होना अनिवार्य है । इसी अध्याय के एक दोहे में वल्लुवर ने विशिष्ट रूप से कहा है कि जिसके दर्शन सुलभ हों और जो कठोर वचन नहीं कहता हो उस राजा की प्रशंसा होती है

—"**काटचिक्कु रालिचन कटुंचचोल अल्लनेल मीक्कूरुम मन्नन निलम** "(कुरल संख्या ३८६)

प्राचीन काल के राजतंत्र के अतिरिक्त यह गुण आजकल के प्रजातंत्र के प्रधानों में अतिरिक्त यह गुण आजकल के प्रजातंत्र के प्रधानों में पाया जाना बहुत अनिवार्य है क्योंकि इनको ही पांच सालों में एक बार चुनावों का सामना करना

पड़ता है । और अपने प्रसन्न मुख तथा मधुर वाणी द्वारा जनता को संतुष्ट रखना पड़ता है । गणतंत्र में शासक जनता का सेवक मात्र है । जिस प्रकार नौकर मालिक को खुश रखना चाहता है वैसे ही गणतंत्र के शासक को अपनी सेवाओं द्वारा जनता को खुश रखना पड़ता है । तभी वह दुबारा निर्वाचित हो पाएगा । इन सभी बातों को ध्यान करके ही महाकवि भारती ने भी कहा है, "**ऐकलोरूम इन नाह्दु मन्नर**" इसका अर्थ है, "हम सब इस देश के राजा हैं ।"

'शक्ति का बोध' के शीर्षक में वल्लवुर ने राजसत्ता की सीमा की चर्चा करते हुए कहा है —"शासक को अपनी सत्ता की सीमा को पहचानकर उसके अनुसार ही चलना चाहिए ।" **(अध्याय संख्या ४७)** उनका कहना है कि जो शासक घमंडी होता है और मनमाना शासन करता है वह सत्ताच्युत हो जाएगा । यहां वल्लुवर का तात्पर्य सत्ा के दुष्प्रयोग से ही है । गणतंर्खशासन पद्धति में भी सत्ता का दुरुपयोग गंभीर बात है । यथार्थ में देखा भी जाता है कि सत्ता का दुरुपयोग करनेवाली सरकार अगले ही चुनाव में सत्ताच्युत हो जाती है ।

शिक्षा का महत्त्व

राजनीति की चर्चा होनेवाले 'अर्थपक्ष' के भाग में नरेशों के गुण बताने के बाद आनेवाले दो तीन अध्यायों में शिक्षा श्रवण, बुद्धिमत्ता आदि शीर्षक से जो उपदेश वल्लुवर ने दिये हैं वे सब गणतंत्र के युग में जनसमुदाय के लिए बहुत उपयोग हैं । यहां वल्लुवर ने शिक्षा के महत्त्व पर जोर दिया है । उनके अनुसार, "शिक्षा मानव के लिए नेत्र समक्ष है ।" गणतंत्र में भी नागरिक का शिक्षित होना अनिवार्य है । यह भी देखा जाता है कि विश्व के कुछ गणतांत्रिक देशों में पढ़े-लिखे लोगों को ही मताधिकार प्रदन किया जाता है । भारत में भी स्वतंत्रता केबाद शिक्षा प्रणाली पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है । यहां तक कि प्रौढ़ शिक्षा का भी प्रचार जोर पकड़ रहा है ।

कुरल के ग्रंथ के ४५वें अध्याय में सुशासक तथा कुशासक दोनों का तुलनात्मक अध्ययन देखने को मिलता है । 'आतंकवाद' को भंग करना सुशासन के लक्षणों में प्रमुख कहा गया है । गणतंत्र में भी प्रजा के पूर्णरूप से वृतंत्र होने पर भी हिंसा आदि में लग जाने का अधिकार उन्हें नहीं दिया गया है । हिंसात्मक गतिविधियों में लगे लोगों को गणतंत्र के शासक को भी राजसत्ता के शासक की भांति कठोर दंड देना आवश्यक है । यह जनता पर अत्याचार नहीं माना जाएगा । एक अति सुंदर उपमा द्वारा इस बात का स्पष्टीकरण तिरुवल्लुवर

> 'तिरुक्कुरल' एक सर्वधर्म ग्रंथ है । यह ग्रंथ हिंदु, जैन, बौद्ध, ईसाई आदि सभी से समादृत है । फिर भी इसके रचयिता तिरुवल्लुवर हिंदु धर्म के अनुयायी ही थे । हिंदु होते हुए भी तिरुवल्लुवर ने अपने ग्रंथ को सभी धर्म के लोगों के लिए ही बनाया है ।

ने किया है, "खेत में अनाज के साथ-साथ घास-फूस भी देखा ही जाता है। किसान तो फूस को उखाड़ फेंकता है। वैसे ही शासक को भी आतंकवादियों को उखाड़ फेंकना चाहिए।" (कुरल संख्या ५५०)।

मंत्रित्व

तिरुक्कुरल का ६४वें अध्याय 'मंत्रित्व' है। जिसके दक्ष दोहों में मंत्रियों के लक्षण बताये गए हैं। जो आज के मंत्रियों पर भी लागू होते हैं। इस प्रकार हैं :

- साधन, काल, कर्म तथा उसके करने की विशिष्टि रीति के ज्ञान से संपन्न होता है मंत्रित्व (६३१)
- निर्भयता, संरक्षण की शक्ति, अध्ययन, ज्ञान तथा हठ प्रयास आदि से सुसंपत्र होता है मंत्रित्व (६३१)
- आवश्यकतानुसार संबंध-विच्छेदन; संरक्षण द्वारा व्यक्ति को पुनः मिला देने की शक्तियों से सुसंपत्र होता है मंत्रित्व (६३४)

विचारपूर्ण चुनाव

चुनाव का नाम तिरुवल्लुवर के समय की राजनीति में नहीं था फिर भी 'विचारपूर्ण चुनाव' शीर्षक से एक अध्याय में तिरुवल्लुवर में जिन विषयों की चर्चा है वे सब आज के गणतंत्र के चुनाव की गतिविधियों के ही अनुरूप हैं। साथ ही कुरल के अर्थपक्ष के भाग के अंतर्गत ही यह अधिकार देखने को मिलता है जहां राजनीति की बातों की चर्चा होती है (५१वां अध्याय) यहां एक विशिष्ट प्रकार के दोहे में वल्लुवर ने कहा भी है— **"गुणम नाडी कुटरमुम नाडी अवटरुल मिकै नाडी मिक्ककोलल"** (कुरल संख्या ५०३) अर्थात —"गुणों एवं दोषों का भी विवेचन करके उसमें जिसकी अधिकता हो, उसी से किसी को पहचानो।" इस दोहे में उत्तम व्यक्ति को पहचानने का मार्ग बताया गया है।

इसी का प्रयोग करके मतदाता चुनाव में खड़े उम्मीदवारों में से श्रेष्ठ उम्मीदवारों में से श्रेष्ठ व्यक्ति को पहचान सकता है तथा उसे मत देकर निर्वाचित कर सकता है। यदि इसी उपाय का प्रयोग सब करेंगे तो संपूर्ण संसद गुणवान व्यक्तियों से ही भरी रहेगी तथा आदर्श सरकार की स्थापना होगी जो पूरे पांच साल रहकर देश उन्नति करेगा। वल्लुवर ने इसी अध्याय के और एक अन्य दोहे में सचेत भी किया है कि बंधु बांधवहीन व्यक्ति का चुनाव मत करो (कुरल संख्या ५०६)

नागरिक का मूल अधिकार

गणतंत्र शासन पद्धति की सबसे बड़ी खूबी संविधान द्वारा प्रदान किया गया नागरिक का मूल अधिकार है। इसके अनुसार नागरिक स्वतंत्रतापूर्वक लिख-बोल सकते हैं। इस सबंध में भी तिरुक्कुरल में एक दोहा देखने को मिलता है। **"एप्पोरुल चार वाय केटपिनुम अप्पोशल मेच्पोरुल काप्पतरिवु"** अर्थात "बात चाहे किसी के मुंह से भी निकले उसकी अच्छाई या बुराई को परख लेनेवाला ही बुद्धिमान है।" इससे वल्लुवर का तात्पर्य है कि बोलनेवाला जो भी हो उसे बोलने देना चाहिए। गणतंत्र में नागरिक के मूल अधिकार को ही यह दोहा ही हमें ज्ञात देता है।

जी, कलैमगल नगर
पूंमल्ली : चेन्नई-६०००५६

जासूसों से सघन पूछताछ

• धर्मेन्द्र गौड़

काउंटर-एस्प्योनाज' (प्रति-गुप्तचरी) के क्षेत्र में संसार के सभी देश 'इंटरोगेशन' (पूछताछ) को सर्वाधिक महत्त्व देते हैं। दुश्मन के भेदियों से वास्तविकता उगलवा लेना ही पूछताछ करनेवाले अफ़सर की सफ़लता की कसौटी है। चाहे शांति के दिन हों अथवा युद्ध के, 'इंटरोगेशन' की महत्ता यथावत कायम है। बल्कि यों कहिए कि पूछताछ के तौर-तरीकों में दिनोंदिन निखार आता ही जा रहा है।

संसार के लगभग सभी बड़े देशों—अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन और चीन के नामी पूछताछ करनेवालों से कुछ-न-कुछ सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है मुझे। अमेरिका ने सहारा लिया 'लाई डिटेक्टर' का, जिससे कुशल जासूसों का कुछ नहीं बिगड़ता। वे अपना संतुलन कायम रखते हुए इस मशीन की पकड़ से साफ बच निकलते हैं। अधिकतर निर्दोष व्यक्ति ही इसका शिकार होते हैं 'प्रोंटोथॉल इंजेक्शन' देकर 'सस्पेक्ट' (संदिग्ध व्यक्ति) का सचेत मस्तिष्क सुला दिया जाता है। फिर उसकी अचेत बुद्धि टटोली जाती है। यह तरीका पूरी तरह सफल हो नहीं पाया।

अमानुषिक तरीका

रूसी तरीका नितांत भिन्न और 'क्रूड' किस्म का है। वे अपने आश्रित उस विवश व्यक्ति को बड़ा ही दीन-हीन और तुच्छ मानकर चलते हैं। विभिन्न अमानुषिक तरीके इस्तेमाल करके उसकी इज्जत के साथ खिलवाड़ करते हैं। प्रश्नकर्ता बिना किसी रुकावट के घंटों तक सवालों की झड़ी लगा देता है। चौबीस घंटों में आधे घंटे से अधिक उसे सोने नहीं दिया जाता। नतीजा यह कि उससे सब कुछ उगलवाकर ही दम लेते हैं। कुछ ऐसे व्यक्तियों से भी पाला पड़ता है जो कुछ भी कबूल करने से बेहतर समझते हैं मौत को गले लगाना। 'इंटरोगेशन' का यह तरीका किसी भी हालत में सभ्य नहीं कहा जा सकता।

फ्रांसीसियों का तरीका कुछ और ही है। दो अफसर एक साथ पूछताछ करते हैं। एक का व्यवहार मैत्रीपूर्ण होता है, जबकि दूसरा उसे दुश्मन समझकर आगे बढ़ता है। वे संदेहयुक्त व्यक्ति को कमरे में अकेला छोड़ देते हैं। फिर अचानक प्रकट होकर प्रश्नों की बौछार लगा देते हैं। अप्रसन्न होकर प्रश्नकर्ता गालियां तक बकने को आमादा हो जाता है, जबकि दूसरा उसकी

पीठ थपथपाकर सांत्वना देता रहता है । इस कष्टदायक माहौल में विजयश्री हाथ लगती है उस भद्र पुरुष के और 'सस्पेक्ट' उसके सामने सब कुछ उगलकर रख देता है । पूछताछ का यह तरीका पचास प्रतिशत तो सफल माना ही जाएगा ।

जापानी कमाल

'इंटरोगेशन' का सबसे शानदार तरीका था ब्रिटेन का । लेकिन, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जांबाज जापानियों ने उन्हें भी गुप्तचर इतिहास की सबसे गहरी शिकस्त दी । अंगरेजों की वर्षों की साधना, लगन और गहरी छानबीन पर आधारित इंटरोगेशन के उनके बेहतरीन तौर-तरीके धरे रह गये । जापानियों ने वह काम कर दिखाया कि ब्रिटिश गुप्तचर संस्था 'फोर्स वन-थ्री-सिक्स' की तो बिसात ही क्या, लंदन का वार ऑफिस तक एकबारगी हिल उठा ।

घटना अप्रैल १९४४ की है । बर्मा पर ब्रिटिश आक्रमण की तैयारी पूरी हो चुकी थी । कोहिमा में अंगरेजों की दूसरी डिवीजन तैनात थी और इम्फाल में १७वीं । उत्तरी बर्मा में शाही जापानी सेनाओं का नेतृत्व कर रहे थे लेफ्टिनेंट-जनरल कवाबे । उनके अधीन थे दो मेजर-जनरल यामामोतो और तनाका । उयू चांग नदी के किनारे मैंग-कैंग नामक स्थान से मेजर-जनरल यामामोतो के नेतृत्व में शाही जापानी सेनाएं कोहिमा में ब्रिटिश सेना के साथ मुठभेड़ के चक्कर में थीं और चिंडविन नदी के किनारे थोंगडुट नामक स्थान से मेजर-जनरल तनाका इम्फाल पर जबरदस्त आक्रमण की तैयारी में थे ।

इस समय तक मित्र-राष्ट्रों के हाथ केवल मृत जापानी सैनिक ही लगे थे । ज़ीवित जापानियों की संख्या नगण्य थी । जापानी भाषा जाननेवाले अफसर भी बहुत कम थे । अतः इंगलैंड भारत और श्रीलंका में कई स्थानों पर ब्रिटिश तथा भारतीय अधिकारियों को जापानी भाषा सिखायी जाने लगी । कालांतर में यही अफसर सीमा क्षेत्र में भेजे जाने लगे, पकड़े गये जीवित जापानियों को 'इंटरोगेट' करने । इनके अलावा कुछ खास व्यक्ति 'स्कॉटलैंड यार्ड' से भी तलब किये गये थे । इन्हें दीमापुर, नौगांव और शिलांग में रखा गया था ।

जापानियों की स्कीम थी इन पूछताछ करनेवाले विशेषज्ञों का ही सफाया कर देना, जिससे संकटकाल में उनके गुप्तचर तथा सेनाधिकारी अंगरेजों के चंगुल में फंस जाने पर भी किसी हद तक अपने भेद महफूज रखने में कामयाब हो सकें । इस कार्य के लिए 'स्वीसाइड स्क्वाड' के कुछ खास प्रशिक्षित गुप्तचर सीधे टोकियो से तलब किये गये थे । प्लास्टिक सर्जरी द्वारा उनके गुप्तांगों में मटर के दाने के बराबर भयंकर मार करनेवाले बम फिट किये गये थे, जिनके विस्फोट का संपर्क उनके बायें हाथ की एक अंगुली के तनाव से था ।

हाराकिरी का अनोखा ढंग

अपने सैनिक दस्तों में घुले-मिले थे 'स्वीसाइड स्क्वाड' के कुछ जापानी जासूस जिनका मिशन ही था किसी प्रकार अपने आप को दुश्मन के हवाले कर देना ।

इस समय अपने सेनाध्यक्षों के आदेश पर वीर जापानी 'हाराकिरी' (आत्महत्या) करने में ही विशेष गौरव का आनंद ले रहे थे । दुश्मन को अच्छी तरह मौत का दरवाजा दिखाने के

बाद जब देखते कि अब और कोई चारा नहीं, तो तुरंत आत्महत्या करके देश-भक्ति का पर्याप्त परिचय दे रहे थे ।

तभी बर्मा-नगालैंड सीमा स्थित त्वेनसंग नामक स्थान पर कुछ नगाओं ने एक जापानी सैनिक को धर-दबोचा । जामा-तलाशी लेने के बाद उसके पास से कुछ हथियार, ग्रिनेड, गुप्त दस्तावेज, नक्शे आदि बरामद हुए । मुख्य था एक नक्शा जिसमें सीमा-क्षेत्र के कुछ प्रमुख स्थानों पर मशीनगन, टैंक, ट्रैंच, ऑव्ज़रवेशन पोस्ट, कब्रिस्तान, ब्रिगेड, ब्रिगेड-हेडक्वार्टर्स के चिह्न अंकित थे । तब तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा । वे कातामुरा नामक उस जापानी कैदी को तुरंत कोहिमा ले गये, जो दूसरी डिवीजन का हेडक्वार्टर्स था । कोहिमा से उसे दीमापुर भेजा गया, फिर नौगांव । फोर्स वन-थ्री-सिक्स के ब्रिटिश इंटरोगेटर्स की टीम वहीं तैनात थी ।

एक-दो दिन के अंतर में दूसरा जापानी गुप्तचर करेनों द्वारा पकड़ा गया पलेल के आसपास । इसे थौंगडुट से रवाना किया गया था । नाम था उसका मारूयामा । जामा तलाशी लेने पर उसके पास भी आपत्तिजनक सामग्री बरामद हुई । उसे तुरंत इम्फाल ले जाया गया जहां १७वीं डिवीजन तैनात थी । फिर वहीं से सुरक्षा सैनिकों द्वारा शिलांग भेज दिया गया । इम्फाल मोरचे पर पकड़े गये संदिग्ध व्यक्तियों को पूछताछ के लिए शिलांग ही ले जाया जाता था । वहां भी कई माहिर इंटरोगेटर्स मुहैया किये गये थे ।

'इंटरोगेशन' का सबसे शानदार तरीका था ब्रिटेन का । लेकिन, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जांबाज जापानियों ने उन्हें भी गुप्तचर इतिहास की सबसे गहरी शिकस्त दी । अंगरेजों की वर्षों की साधना, लगन और गहरी छानबीन पर आधारित 'इंटरोगेशन' के उनके बेहतरीन तौर-तरीके धरे रह गये ।

नौगांव और शिलांग दोनों स्थानों पर उन जापानी कैदियों के साथ निहायत दोस्ताना तरीके से पेश आया गया । ब्रिटिश अफसर उन्हीं के साथ खाते-पीते और उन्हीं की मंजी हुई भाषा में मुक्त हृदय से मैत्रीपूर्ण वार्तालाप करते । जापानी कैदियों की केवल एक ही शर्त थी कि भारतीय अधिकारियों को उनके पास फटकने न दिया जाए । बिना हीला-हवाला यह शर्त तुरंत मान ली गयी । अंगरेजों ने भी न तो खाने के समय उन्हें कांटा-छुरी दिये, न ही उनके पायजामों में कमरबंद डालने की अनुमति दी ।

सुरक्षा की दृष्टि से ही यह अहतियात बरती गयी थी कि कहीं कैदी आत्महत्या न कर लें । उनके रहने-सहने, खाने-पीने का इंतजाम भी निहायत माकूल था । पाबंदी थी तो बस इतनी कि ब्रिटिश सिक्योरिटी गार्ड्स की नजरों से उन्हें

क्षणभर के लिए भी ओझल नहीं होने दिया जाता था ।

धीरे-धीरे इन दोनों कैदियों ने वे सभी भेद उगलकर रख दिये, जिनके बारे में उन्हें इंपीरियल जनरल हेडक्वार्टर्स, टोकियो में हिदायत दी गयी थी । अंगरेज अफसरों की खुशी का ठिकाना न रहा, क्योंकि उनके पास अपने सूत्रों द्वारा संकलित सूचनाओं के आधार पर इन सभी समाचारों को सौ फीसदी सही पाया गया । इसी खुशी में रात का भोजन 'शैंपेन' के दौर से शुरू हुआ । कैदियों ने जी भरके पी... । तभी अचानक उन्होंने अपने बायें हाथ की अंगुली पीछे की ओर मोड़ी । तार खिंचे और जोरदार धमाकों के साथ उनके गुप्तांगों में रखे मटर के दानों के बराबर शक्तिशाली बमों का भीषण विस्फोट हुआ । उनके शरीर तो चिथड़े-चिथड़े हो ही गये, बमों के स्प्लिंटर की मार से एक भी ब्रिटिश इंटरोगेटर जीवित न बचा ।

इस अप्रत्याशित घटना से रियर हेडक्वार्टर्स, फोर्स वन-थ्री-सिक्स, ५३ ए, गरियाहाट रोड, बालीगंज, कलकत्ता में तो मातम छा ही गया, साउथ-ईस्ट एशिया कमांड के सुप्रीम अलाइड कमांडर लॉर्ड लुई माउंटबैटन भी सिर धुनते रह गये । सभी हैरत में थे कि आखिर यह सब हुआ कैसे ! गुप्तचरी के इस महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में जापानियों ने अंगरेजों को गहरी शिकस्त दी । चिंता इस बात की नहीं थी कि दस अंगरेजों को अपनी जान से हाथ धोने पड़े । मूल प्रश्न था—जापानी भाषा सीखे-सिखाये 'इंटरोगेशन' में माहिर विश्वासपात्र अफसरों की पूर्ति कैसे और कहां से की जाए ?

सुप्रीम अलाइड कमांडर ने केंडी (श्रीलंका) से आदेश जारी किया कि पकड़े गये जापानियों से प्राथमिक पूछताछ भारतीय अधिकारी ही करें । अंतिम चरण में अलबत्ता ब्रिटिश अफसर 'इंटरोगेट' करें, जिनकी संख्या १ से अधिक न हो ।

दुश्मन को मारकर मरते रहे

अपने गुप्तचरों द्वारा जनरल किमूरा को इस गहरी साजिश का पता चल गया । उन्होंने सीमा क्षेत्र के कुछ पुलों को चुना जिनके ऊपर से 'थ्री-टनर' गाड़ी निकलने पर इधर-उधर लगभग छह-छह इंच जगह शेष रह जाती थी । इन पुलों के ठीक सामने करीब दो सौ गज की दूरी पर बंकर खुदवाकर 'स्वीसाइड स्क्वाड' के जांबाज गुप्तचरों को मय मशीनगन, गोलियों, खाद्य सामग्री और पानी के जमींदोज कर दिया । केवल दो सूराखों से ही सांस लेने के लिए हवा उपलब्ध थी । एक सूराख पुल के ठीक सामने पड़ता था और दूसरा बंकर के पीछे । सामने वाले छेद में मशीनगन की नली फिट की गयी और बंकर के भीतर उसके शेष भाग । घास-पात और जंगली पौधे बंकर के ऊपर यथावत उगे रहने दिए । इस भूमिगत गुप्तचर का एक ही काम था—बिना दुश्मन को आभास मिले उनकी सैनिक सामग्री बरबाद करना और भूख-प्यास से मरने की नौबत आने पर 'हाराकिरी' कर लेना ।

चिंडविन नदी का सकरा पुल पार कर के जैसे ही ब्रिटिश दस्ते की एक 'थ्रीटनर' गाड़ी ने पकोक्कू क्षेत्र में प्रवेश किया कि सनसनाती हुई एक गोली आकर ड्राइवर के सीने में लगी । वह वहीं ढेर हो गया । उसके दोनों हाथ 'स्टीयरिंग व्हील' पर ही रहे और गाडी ढलान पर लुढ़कती

रही । कुछ देर बाद संतुलन डांवाडोल होने पर वह सड़क छोड़ दाहिनी ओर खड्ड में जा गिरी । पेट्रोल टंकी में आग लगी और फौजी साजो सामान सहित ड्राइवर वहीं राख की ढेरी में बदल गया । इसी प्रकार कई अन्य ड्राइवरों का भी यही हाल हुआ, किंतु सभी गाड़ियां जली नहीं ।

जब काफी समय तक इस कॉनवॉय की कोई खैर-खबर नहीं मिली, तो ब्रिटिश अधिकारी चिंतित हुए । कई भारतीय अफसरों के साथ वे उस पुल तक गये । अपनी जीपें इसी पार रोक दीं और तितर-बितर होकर पैदल पुल पार करने लगे । फिर पहुंचे ढलान पर । अधिक दूर जाने भी न पाये थे कि दायें-बायें खड्ड में पड़ी उन्हें अपनी थ्री-टनर गाड़ियां दिखायी दीं । किसी प्रकार मृत ड्राइवरों को बाहर निकाला । खून से लथपथ उनके सीनों में लगभग एक ही जगह गोलियां लगी थीं । सभी गाड़ियों के विंड ग्लास चूर-चूर हो गये थे । फौजी सामान बिखरा पड़ा था ।

इन सबको जीपों में लादकर शव-परीक्षा के लिए पौक नामक स्थान पर लाया गया । 'सर्च पार्टी' यहीं से रवाना हुई थी । दूसरे दिन वे फिर वहीं जा पहुंचे जांच-पड़ताल करने । अपने साथ कुछ पैदल सैनिक भी ले गये । चप्पे-चप्पे का निरीक्षण किया, फिर भी दुश्मन का कहीं नामोनिशान नहीं । अंत में वे पौक वापस लौट आये और घटना की सूचना इम्फाल, कोहिमा और कलकत्ता भिजवा दी ।

रियर हेडक्वार्टर्स, फोर्स वन थ्री सिक्स, कलकत्ता से उन्हें आदेश मिला—'एक डमी ड्राइवर के साथ गाड़ी फिर उसी पुल से पार करायी जाए ।' आदेश का अक्षरशः पालन किया गया । जब थ्री-टनर ढलान पर पहुंची तो उसी प्रकार सामने से आती एक गोली उस मसनूयी ड्राइवर के सीने को छेद गयी । गाड़ी लुढ़ककर खड्ड में जा गिरी ।

सुरक्षा की दृष्टि से ही यह अहतियात बरती गयी थी कि कहीं कैदी आत्महत्या न कर लें । उनके रहने-सहने, खाने-पीने का इंतजाम भी निहायत माकूल था । पाबंदी थी तो बस इतनी कि ब्रिटिश सिक्योरिटी गार्ड्स की नजरों से उन्हें क्षणभर के लिए भी ओझल नहीं होने दिया जाता था ।

छानबीन का लाजवाब सूत्र

अब तो अंगरेज अफसरों को छानबीन करने का एक लाजवाब सूत्र मिल गया । उन्होंने जमीन से गाड़ी में बैठे ड्राइवर के सीने तक की ऊंचाई नापी । सीने में गोली प्रवेश करने के ढंग से वे भी इसी नतीजे पर पहुंचे कि हमला अधिक दूर से नहीं किया गया । इस सिलसिले में गोली दागे जाने के कोण को खास अहमियत दी गयी, फिर उसी दिशा में चप्पे-चप्पे की छानबीन शुरू हुई । कई संदिग्ध पेड़ों के तनों को रोंद डाला गया, इस शुबहे से कि उन्हें पोला कर के उनमें बैठा कोई जापानी तो यह हरकत नहीं कर रहा है । झाड़ियों में घुसकर कई स्थान खोद डाले गये । कहीं कुछ हाथ नहीं लगा । आखिरकार, हारे-थके वे शाम होने से पहले

सही-सलामत अपने 'बेस' पर वापस लौट आये ।

दूसरे दिन सुबह से ही यह क्रम फिर चालू हुआ । अचानक एक भारतीय मेजर को जमीन में पैसे (पुराने) की गोलाई का एक छेद नजर आया जो घास-पात में छिपा-सा लग रहा था । पहले तो उसे सांप का बिल होने का अंदेशा हुआ । शक रफा करने की नीयत से एक सैनिक को गोल संगीन लगी राइफल लेकर छेद में डाली और इसे इधर-उधर घुमाने लगा । अंदर 'टख-टख' की आवाज हुई और शीघ्र ही उसने टीले को खोद डालने का आदेश दिया ।

खुदाई होने पर बंकर के अंदर एक जापानी मिला । उसका सुता-सुता पीला चेहरा इस सत्य का प्रतीक था कि न जाने कितने दिनों से वह बिना पर्याप्त पानी और हवा के जमींदोज होकर जी रहा था । मशीनगन की नली उसी छेद में स्थिर थी । हालांकि बंकर में शस्त्रों की कमी नहीं थी, फिर भी न जाने किस प्रेरणावश उसने किसी भी भारतीय को मारने की चेष्टा नहीं की और बखुशी आत्मसमर्पण कर दिया ।

कई बार एक बंद कमरे में ले जाकर इस जापानी गुप्तचर को वस्त्रहीन किया गया । फिर बड़ी ही सावधानी से उसके पूरे शरीर का जायजा लिया गया कि कहीं 'प्लास्टिक सर्जरी' द्वारा उसके किसी अंग में बाल से भी बारीक तार तो नहीं दौड़ाया गया, जिसका संबंध बदन के किसी भाग में रखे विनाशकारी बमों से हो !

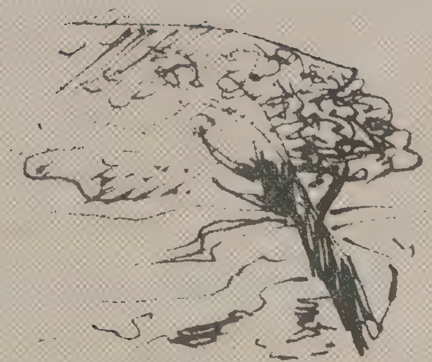
जब इस क्रिया से भी सफलता न मिली, तो अधिकारियों ने अपना अंतिम दांव आजमाया । कैदी को पेट के बल ऑपरेशन टेबिल पर लिटाया गया । एक-एक हजार वाट के दो बल्बों की तेज रोशनी उसकी पीठ पर पड़ रही थी । यहां उस के गुप्तांग का भी सूक्ष्म निरीक्षण किया गया । जब वहां भी किसी प्रकार के शक-शुबहे की गुंजाइश न रही, तो अफसर ने एक औजार लेकर उसे धीरे-धीरे गुप्तांग में प्रवेश कराया ।

आधा मिनट भी न बीतने पाया कि औजार किसी कड़ी चीज से टकराया । उसने समझा कि शायद हड्डी हो, औजार को आहिस्ता से बाहर खींच लिया । तभी अचानक उसकी नजर पड़ी एक छोटे-से 'ऑपरेशन' के निशान पर । उसके संदेह को कुछ बल मिला । गौर से देखने पर वहां बाल से भी बारीक, ठीक उसी के जिस्म के रंग का लगभग एक इंच लंबा तार नजर आया, जिसके दोनों सिरे स्वतः शरीर में गायब हो गये ।

बहुत ही बारीक तार उसकी बायें हाथ की एक अंगुली से लेकर गुप्तांग तक ले जाया गया था, जहां मटर के दाने के बराबर चार विनाशकारी बम फिट किये गये थे । अंगुली को पीछे की ओर झटके से मोड़ते ही तार में खिंचाव पैदा होता और प्रलयंकारी बम स्वतः फट जाते । इन्हें धारणा करनेवाले का शरीर तो चिथड़े-चिथड़े हो ही जाता, तीस फुट की दूरी तक जो भी प्राणी होता, उसकी भी वही दशा होती ।

इस प्रकार जापानियों की यह अंतिम योजना भी सफल हुई नहीं और जनरल किमूरा की सेना अप्रैल १९४५ के अंत तक मीकतिला में मर-खपकर बरबाद हो गयी । जनरल किमूरा की पराजय का मतलब ही था बर्मा में जापान के सूर्य का अस्त हो जाना ।

—रूंगटा बिल्डिंग, सिनेमा रोड
गोरखपुर-२७३००१



धरती पर स्वर्ग : नियाग्रा प्रपात

आकाश से धरा तक एक-सा रंग
श्वेत जल-नद की मधुर जल-तरंग
मनहर मधुरम वर्षा की फुहार
वायु की जल से कैसी मनुहार ।
हरीतिमा से पूर्ण मधुवन प्यारा
धरती पर स्वर्ग या भ्रम हमारा
अद्भुत नियाग्रा की अनुपम धारा ।
मधुप्रिय भंवरों का मधुर संगीत
श्वेत पक्षियों के सतत गूंजते गीत
माणिक और मोतियों का यह संगम
मधु-रस के यहां अद्भुत रंगम ।
प्रिय मधुमयी बहकती धारा
धरती पर स्वर्ग या भ्रम हमारा
अद्भुत नियाग्रा की अनुपम धारा ।
नभ से गिरी बनी अमृत की धार
नदी रूप में किया धरा से प्यार
सुंदर वन में किये नर्तन औ अभिसार
धरा-प्रकृति का उन्मुक्त प्रेम व्यवहार ।
प्रतिबंधों से दूर जगत यह न्यारा
धरती पर स्वर्ग या भ्रम हमारा
अद्भुत नियाग्रा की अनुपम धारा ।

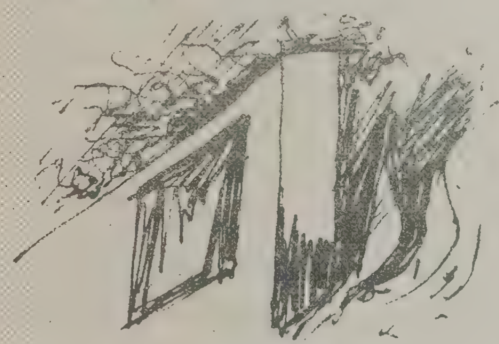
—सतीश चतुर्वेदी
४३, ग्रीन एवेन्यु, कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)

पाकिस्तानी : उर्दू कविता

दीवारें

● डॉ. वजीर आगा

सदियों चुप रही दीवारें
और फिर एक रात जाने कैसे
दीवारों पर शब्दों के अंगारे चमके
अंगारों ने मिलजुलकर शोले
भड़काये
सारे शहर में आग लगी
कागज के मलबूस जले



काले नंगे जिस्मों से बाजार भरे
आवाजों के झक्कड़ आये
बादल चीखा
आंगन के बेदाग बदन पर
जली हुई हड्डियों के ओले पत्थर बनकर बरस पड़े
अगले दिन जब उजली धूप पिघलने आयी
सबने देखा दीवारों के होंठ नीले थे
सब नंगी थीं
घटती-बढ़ती छाया की
गूंगी भाषा में
बोल रही थीं !

—अनु : केदारनाथ कोमल
एल-१/५५-बी, डी.डी.ए. फ्लैट्स, कालकाजी, नयी
दिल्ली-१९

यह महीना और आपका भविष्य

● पंडित शिव प्रसाद पाठक

मेष : आकस्मिक धन लाभ से लंबित समस्याओं का समाधान होगा । आत्म शांति तथा सुखानुभूति होगी । आर्थिक योजनाओं के क्रियान्वयन में उच्चाधिकारियों का योगदान रहेगा । नवीन मित्रों से सावधानी हितकर होगी । मास मध्य में स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता का उदय होगा । पारिवारिक अथवा मांगलिक कार्यों की पूर्ति से प्रसन्नता होगी ।

वृषभ : सामाजिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी । नवीन मित्रों का समागम उत्साहदायी होगा । शत्रुपक्ष की क्रियाशीलता से चिंता होगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा । न्यायालयीन कार्यों में मनोवांछित सफलता मिलेगी । आजीविका की दिशा में वांछित परिवर्तन होगा । संपत्ति अथवा वाहनादि पर व्यय की अधिकता होगी । मासांत में संभाषण के असंतुलन से व्यर्थ विवाद होंगे ।

मिथुन : आत्म विश्वास तथा पुरुषार्थ से नवीन कार्यों में सफलता मिलेगी । आजीविका की दिशा में वांछित परिवर्तन होगा । पदोन्नति अथवा पद परिवर्तन का योग होगा । पारिवारिक खिन्नता से व्यर्थ भावनात्मक पीड़ा होगी । सामाजिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्यय होंगे । प्रवास उपलब्धिदायक होगा । लेखन, सृजन अथवा रचनात्मक कार्यों से यश प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी ।

कर्क : मास में आध्यात्मिक अभिरुचि में वृद्धि होगी । आजीविका की दिशा में नवीन अवसरों का उदय होगा । विशिष्ट यात्रा से आत्म संतुष्टि होगी । पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा । सामाजिक कार्यों में विरोधाभास की अधिकता होगी । शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर छवि बिगाड़ने का प्रयास करेगा । धार्मिक सत्संग अथवा तीर्थयात्रा सुखदायी होगी ।

सिंह : राजकीय कार्यों में दायित्वों की अधिकता होगी । नवीन योजनाओं में वांछित सफलता मिलेगी । पारिवारिक दायित्वों में उदासीनता बढ़ेगी । व्यर्थ विवादों से मानसिक क्लेश तथा भावनात्मक पीड़ा होगी । न्यायालयीन कार्यों में धीमी उन्नति होगी । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता होगी । उदर अथवा रक्त विकारों से पीड़ा का सामना करना होगा ।

कन्या : परिवार में धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों की पूर्ति होगी । सामाजिक कार्यों में नेतृत्व मिलेगा । शत्रु पक्ष से सुलह के अवसरों का उदय होगा । संपत्ति संबंधी लंबित समस्या का समाधान होगा । परोपकारी अथवा साझेदारी कार्यों में सावधानी रखें । प्रवास उपलब्धिपूर्ण होगा । 'स्वविवेक निर्णय' से आकस्मिक

ग्रह स्थिति : सूर्य १४ मई से वृषभ में, मंगल १६ से वृषभ में, बुध १० से मेष में, २९ से वृषभ में, गुरु २५ से मीन में, शुक्र २४ से मेष में, शनि मेष में, राहु सिंह में, केतु कुंभ में, हर्षल, नेपच्यून मकर में, प्लेटो वृश्चिक राशि में भ्रमण करेंगे ।

पर्व और त्यौहार

[illegible] जयंती, [illegible] जयंती, [illegible] पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, [illegible] श्री गणेश चतुर्थी, [illegible] एकादशी, [illegible] शनि प्रदोष, [illegible] अमावस्या, [illegible] तृतीया, [illegible] श्री गणेश चतुर्थी, [illegible] षष्ठी, [illegible] षष्ठी, विंध्यवासिनी पूजा ।

धनलाभ होगा ।

तुला : भाग्योदयी स्थितियों का उदय होगा । नवीन योजनाओं में व्यस्तता बढ़ेगी । राजकीय अधिकारियों की अनुकंपा से शत्रु पक्ष का पराभव होगा । प्रियजन की अस्वस्थता पर व्ययाधिक्य होगा । प्रवास से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी । आर्थिक संसाधन में वृद्धि होगी । नवीन मित्रों का समागम उत्साहदायी होगा । आमोद-प्रमोद की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा ।

वृश्चिक : व्यक्तित्व विकास के अवसरों का उदय होगा । साहसिक प्रयासों से प्रतिकूल स्थितियों का उदय होगा । मित्रों के सहयोग से आर्थिक समस्या का समाधान होगा । पारिवारिक दायित्वों में वृद्धि होगी । रक्त संबंधियों से व्यर्थ पीड़ा होगी । आजीविका की दिशा में वांछित परिवर्तन से प्रसन्नता होगी । संपत्ति, वाहनादि पर धन व्यय होगा ।

धनु : मास में कार्यों की अधिकता होगी । दिनचर्या की अनियमितता से अस्वस्थता का उदय होगा । उच्चाधिकारियों के सहयोग से वांछित पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी । स्वजनों के सहयोग से मांगलिक कार्यों की पूर्ति होगी । पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति से उत्साहवृद्धि होगी । न्यायालयीन अथवा संपत्ति कार्यों में अवरोध उपस्थित होंगे ।

मकर : मास में भौतिक उपलब्धियों से आत्म विश्वास में वृद्धि होगी । लंबित योजनाओं की पूर्ति से आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी । स्वास्थ्य संबंधी अस्थिरता बढ़ेगी । वाहनादि का प्रयोग सावधानी से करें । मित्रों के सहयोग से शत्रु पक्ष से सुलह होगी । न्यायालयीन कार्यों में आंशिक सफलता मिलेगी । मासांत में भावनात्मक पीड़ा होगी ।

कुंभ : पारिवारिक वातावरण उत्साहदायी होगा । उच्चाधिकारियों को अनुकंपा से विशिष्ठ लाभ मिलेगा । सामाजिक अथवा रचनात्मक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी । पश्चिम दिशा में प्रवास से लाभ मिलेगा । संपत्ति समस्या का समाधान होगा । शत्रु-पक्ष के स्वमेव पराभव से प्रसन्नता होगी । संभाषण में संयम रखें । परोपकारी अथवा जोखिमपूर्ण कार्यों को टालना हितकर होगा ।

मीन : मास में उतार-चढ़ाव की अधिकता रहेगी । नवीन मित्रों से लाभदायी स्थितियों का उदय होगा । शत्रु पक्ष गुप्त षड्यंत्र कर छवि बिगाड़ने का प्रयास करेगा । नवीन उद्यमों में राज्याधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा । दौड़-धूप की अधिकता से अस्वस्थता का उदय होगा । ■

प्रवेश

हम नहीं मैं..मैं... मैं

भौतिकता की चकाचौंध में
लोग सिमटकर रह
गये हैं केवल खुद में
और भूल गये हैं कि
खुद के दायरे से बाहर
एक खुशनुमा संसार भी है
मगर उस संसार में शामिल होने के लिए
स्वयं को स्वयं के दायरे
से निकाल बाहर करना होगा
और स्वयं में संसार को समाना होगा
मगर बुद्धि पर इतराते मानव को होश कहां
कि संसार से जुदा हो खुद में सिमटकर
जीने का कहां—क्या—कैसे मोल चुकाना होता है
'हम' को विभक्त कर 'मैं... मैं... मैं'... में बांटने
की ही परिणति है कि सब पाकर भी
आज हम सर्वस्व खोते ही जा रहे हैं
और अपने 'मैं' के अस्तित्व पर ही
प्रश्नचिह्नों की लकीर खींचे जा रहे हैं
फिर भी हमें गर्व है कि मैंने ऊंचाई पा ली है
'हम' से विच्छिन्न हो खड्ड में गिरने की ग्लानि नहीं
गरूर है कि 'मैंने' सर्वस्व बटोर लिया है ।

● मथुरा सिंह

आत्मकथ्य : कविता मेरे लिए साधन भी है व साध्य भी जिसके माध्यम से मैं अपने द्वंद को दूसरों में स्थापित करने का यत्न करता हूं । शायद उससे किसी के चिंतन को सही दिशा मिल जाए ।

पता : ४०२/९, डी. के. डी. कालोनी,
पो.—बेलगछिया, कलकत्ता-७०००३७



मुझको अच्छा लगता है

भोर की धूप का छू लेना
मुझको अच्छा लगता है ।
चांदनी की फुहार में भीगना
मुझको अच्छा लगता है
फूलों पर छलकती शबनम को
मुझको छूना अच्छा लगता है
भीगी हुई दूब पर चलना
मुझको अच्छा लगता है
आंखों में स्वप्नों को सहेजना
मुझको अच्छा लगता है
और अच्छा लगता है
यह जानना कि
मन के भीतर बची है जीवित
एक अच्छा लगने की इच्छा ।

● कुमकुम चौधरी

आत्मकथ्य : कविता मेरे लिए सैलाब है जो कभी-कभी हृदय में उफन पड़ता है और कभी ऐसा शांत कि लिखने को एक शब्द न मिले ।

पता : भवानी निकेतन डी. एस. ग्राउंड, कैंपस
नवरतन हाता, पूर्णिया, (बिहार)





आगमन

तुमने कहा था कि
मैं तुमसे कुछ मांगू
पर क्या मांगू ?
कैसे मांगू ? यही सोचते
रात बीत गयी
पर कुछ समझ न आया।
इतने ही में द्वार पर तेरे
कदमों की आहट मिली
मन प्रफुल्ल हो उठा
सच ! और क्या मांगती
तेरे आगमन के सिवा
तुमने बड़ा ही अनुग्रह किया
जो मेरे एक आमंत्रण पर आ गये ।

● कु. सुनीता पटेल

आत्मकथ्य : मेरी भावनाओं का जब इस विस्तृत विश्व की अनुपम कृतियों से संयोग होता है तो शब्दों के पुष्प कविता के रूप में स्वतः ही प्रस्फुटित हो जाते हैं ।

पता : द्वारा : श्री के. सी. पटेल
तहसील—बगीचा, जिला—रायगढ़ (म. प्र.)
ग्राम-पोस्ट—महादेवडांड़





मंजिल

क्यों हो गयी हवा से खुशबू अलग
कि चमन में बहार का आना बंद हो गया
कि खिलते थे कभी फूल जहां
अब कांटों का आशियाना हो गया
कि मिलते होंगे कहीं धरती और आकाश
खयाल यह अब पुराना हो गया
चाहता बहुत हूं तुम तक पहुंचना
कि दिल मेरा अब बेगाना हो गया
थक गये हैं कदम चलते-चलते
दूर बहुत तेरा आशियाना हो गया !

—'अभिषेक'

पता : द्वारा— श्रीमती उमा वर्मा, एल-५१ न्यू सुभाषनगर, भोपाल (म.प्र.)

आत्मकथ्य :
जो कह दिया/सो बह गया
जो अन कहा/सो लिख दिया
एक प्रवाह बन गया/दूसरा शाश्वत हो गया !

रचनाकारों से

● *प्रवेश :* स्तंभ हेतु नवोदित कवि अपनी पांच रचनाएं आत्मकथ्य, पासपोर्ट साइज श्वेत-श्याम फोटो अपने पूरे पते के साथ भेजें । यदि रचना स्वीकृत की जाएगी तो इसकी सूचना आपको यथा-समय दे दी जाती है, इसलिए इस संबंध में पत्र व्यवहार करना व्यर्थ है । रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी । अतः आप डाक टिकट साथ न लगाएं ।—संपादक,

जगदीश नारायण शर्मा, मथुरा

प्रश्न : शनि की साढ़े साती कैसी गुजरेगी ?

उत्तर : पहले ढाई साल कष्टकारी, द्वितीय ढैया में कुछ राहत और अंतिम साधारण ।

मांगीलाल, भोपाल

प्रश्न : मेरे ऊपर जो मुकदमे चल रहे हैं—उनमें कब तक और निर्णय क्या होगा ?

उत्तर : निर्णय आपके हक में होने की संभावना कम ही है ।

प्रीती जानी, कलकत्ता

प्रश्न : विवाह कब व कौन-सी दिशा में ? वर कैसा व वैवाहिक जीवन कैसा ?

उत्तर : विवाह अगले वर्ष । वर संपन्न और वैवाहिक जीवन सुखमय होगा ।



● अजय भांबी

उमा महेश्वर श्रीवास्तव, लखनऊ

प्रश्न : वर्तमान नौकरी में परिवर्तन कब तक ? रत्न बताएं ।

उत्तर : नौकरी में परिवर्तन गुरु-मंगल दशा में होगा । मूंगा पहनें ।

श्रीराम सिंह, सीतामढ़ी

प्रश्न : प्रोन्नति कब होगी ?

उत्तर : ढाई वर्ष पश्चात् ।

जगमोहन शर्मा, दिल्ली

प्रश्न : अपना रोजगार या नौकरी कब तक ?

उत्तर : नौकरी वर्षांत तक मिल जाएगी ।

सुभाष चंद्र गौर, तराना

प्रश्न : मन चाहे स्थान पर स्थानांतरण कब तक होगा ?

उत्तर : मन चाहे स्थान पर स्थानांतरण आगामी तेरह माह में संभावित है ।

अल्का श्रीवास्तव, गोरखपुर

प्रश्न : विवाह कब तक होगा ? दांपत्य सुख कैसा रहेगा ?

उत्तर : विवाह अगले वर्ष और दांपत्य सुख मध्यम रहेगा ।

तुलसी मुंदड़ा, विदिशा

प्रश्न : क्या आगे राजनीति में आने का योग है ?

उत्तर : यह योग आपकी पत्री में कटा हुआ है ।

निधि वर्मा, मिर्जापुर

प्रश्न : वर्ष १९९८ में मेडिकल में प्रवेश होगा या नहीं ?

उत्तर : संभावना प्रबल है ।

मनीष कुमार वैष्णव, मॉडलगढ़ (भीलवाड़ा)

प्रश्न : मेरा एस. टी. सी. में नंबर कब आएगा ? उपाय सुझाएं ?

उत्तर : अत्यधिक प्रयत्नों के बाद ही अगले वर्ष संभव होगा ।

मीनू, करनाल

प्रश्न : विवाह कब तक ? घर-वर कैसा होगा ?

उत्तर : सितंबर १९९८ से पूर्व विवाह तय हो सकता है । शादी अगले वर्ष । पति

थोड़ा गरम मिजाज का होगा ।

विनोद कुमार सिन्हा, देवघर

प्रश्न : निलंबन, विभागीय आक्षेप से मुक्ति एवं प्रोन्नति कब तक ?

उत्तर : अभी समय लगेगा ।

श्रृंगिका वर्मा, ग्वालियर

प्रश्न : अच्छी सर्विस कब और कैसी ?

उत्तर : वर्तमान दशा में अच्छी सर्विस संभव नहीं है ।

दिनेश शर्मा, कठुआ (जे. एंड के.)

प्रश्न : नौकरी मिलेगी तो कब तक ? ज्योतिष कैसा चलेगा ? अपना परामर्श दें ।

उत्तर : अच्छी नौकरी अगले वर्ष । ज्योतिष का कार्य मध्यम फलदायी रहेगा ।

उर्मिला देवी, चंडीगढ़

प्रश्न : पुत्र पुनीत कुमार की कुंडली है । विवाह कब होगा ?

उत्तर : योग चल रहा है, प्रयास बढाएं ।

नरेन्द्र कुमार शर्मा, पौड़ी गढ़वाल

प्रश्न : पदोन्नति एवं अपना मकान कब होगा ?

उत्तर : पदोन्नति दो वर्ष पश्चात । प्रयत्न करने पर मकान अगले वर्ष शुरू हो सकता है ।

अनुपम, गाजियाबाद

प्रश्न : विवाह कब तक ?

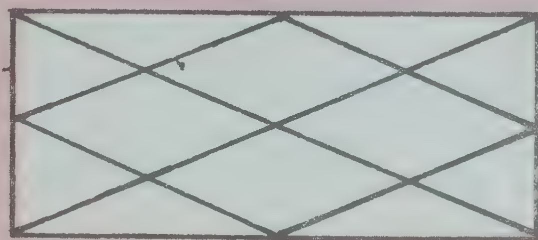
उत्तर : चौबीस वर्ष पूर्ण होने पर । साथ ही शनि का उपाय करें ।

अनिल कुमार गुप्त, शाहजहांपुर

प्रश्न : पैतृक जमीन पर मकान निर्माण कब तक ?

उत्तर : प्रयास करेंगे तो इसी वर्ष संभव है ।

प्रविष्टि-१९१



नाम...

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख) ....महीना.........................सन्.

जन्म-स्थान...

जन्म-समय ....

वर्तमान विंशोत्तरी दशा का विवरण..

पता...

आपका एक प्रश्न ....

इस पते को ही काटकर पोस्टकार्ड पर चिपकायें...

संपादक (ज्योतिष विभाग)— प्रविष्टि— १९१ 'कादम्बिनी'

हिंदुस्तान टाइम्स भवन,

१८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

अंतिम तिथि : २० मई, १९९८

आज

तेरे प्यार को क्या नाम दूं ए मेरे हमसफर
बढ़ गये वहीं कदम जाना न चाहा जिस डगर
गम की ही तारीकियों में खो गये थे हम कहीं
खींच लाते हो मुझे तुम जहां उजाले हैं वहीं
जाने क्या पाना था मुझको और अब है क्या मिला
साथ चलने की कसम खा रहे थे तुम मगर।

जाने कितना दे सकोगे साथ मेरा तुम कभी
जान पाएंगे उसे हम वक्त आएगा तभी
चाह पर मेरी भरोसा कर सकोगे तुम क्या
खाक सब अरमान होंगे बीत जाएगी उमर।

क्या गलत और क्या सही अब तलक न जान पाये,
तुम मेरे थे कभी या आज हो ना मान पाये,
आज हंस के गुजार लूं मैं
कल की है किसको खबर
तेरे प्यार को क्या नाम दूं ए मेरे हमसर॥

—डॉ. (कु.) नीलम दीक्षित
बी-१०९, डिफेंस कॉलोनी, नयी दिल्ली

नारी की अस्मिता

वसंती चांदनी के आंगन में
अलबेली चंद्रकिरणों के प्रांगण में
समाये जूही चमेली की वासंती महक को
स्वर्ण जड़ित कंगनों की खनखनाहट को
लेटी लावण्य रूपसी फूलों की शैया पर
चंद्रमहल की राजश्री अंकशायनी बनकर
निहारती नाना भोग विलासों को
ऐश्वर्य सुख के अपार व्यसनों को
त्रस्त-सी विरक्त-सी कुंठित-सी
सिमटी पड़ी है जो
ढलते साये के कमजोर बाजुओं में
झलकती झुर्रियों की लालिमा में
सूखी खांसी की बलगमी सरगम में
ढलकती धड़कती सांसों की कंपन में
वासना की टपकती लरजती अधिकृत लार में
सिसकती नवयौवना अपनी मनोवेदना पर
यौवन के अभागे पहाड़ पर
नारी की परिणति पर
नारी की अस्मिता पर...
नारी की अस्मिता पर...।

—अमर तनोत्रा
बी-३/९८ सी. डी. डी. ए. फ्लैट्स, केशवपुरम,
दिल्ली-३५

पलाश

हरियाली को मुंह चिढ़ाता पुष्पित हुआ पलाश!
रूखा तन है सूखा वन है
गिने-चुने वे हरे पात भी
सहमे, सकुचे झुके-झुके हैं
इन सबके ऊपर मदमाता
पुष्पित हुआ पलाश!
तप्त धरा है रूक्ष झाड़ है
इस पर वन-अनल दहकाता पुष्पित हुआ पलाश!
फैली कैसी विरस श्री कितना निर्गंध धूम
फिर भी मन-मन भर भाता पुष्पित हुआ पलाश!
समय पारखी ने बसंत पुकारा
तब ठंडी शाखों में जिजीविषा बन
पुष्पित हुआ पलाश!
मन करता है भर लूं आंचल
तुम्हें भेज दूं रख पाती में
लाल शीतल राग जगाता
पुष्पित हुआ पलाश!

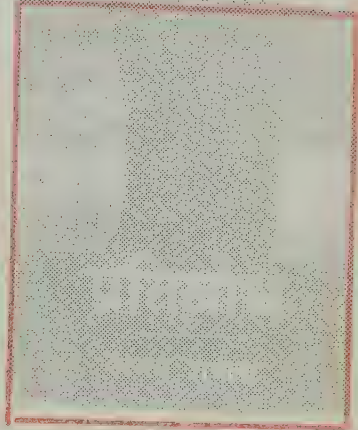
—मंजु ज्योत्स्ना
ई-३०१, पूर्वाशा, मयूर विहार फेज १, दिल्ली-९१

नयी कृतियां

भारतीय संस्कृति कथा-कोश : अनेक झंझावात और उतार-चढ़ावों के बीच भी भारतीय संस्कृति की धारा अविरल प्रवाहित हो रही है। स्वतंत्रता के स्वर्ण जयंती वर्ष में श्री अमरनाथ शुक्ल ने निष्ठा और श्रम से ऐसा अद्भुत प्रयास किया है। वेद, पुराण, उपनिषद, आरण्यक, रामायण, महाभारत, श्रीमद्‌भागवत आदि प्राचीन ग्रंथों से चुने हुए प्रसंग, आख्यान तथा कथाएं लेकर उन्हें सहज भाषा में शुक्लजी ने लिखा है और अकारादि क्रम से इस कोश में संजो दिया है। एक सौ तीस से अधिक विभिन्न पात्रों के नाम से इन कथाओं को दिया गया है। कथाओं में देवताओं, दानवों, ऋषि-मुनियों, राजाओं तथा गंधर्व, यक्ष-किन्नरों की ही नहीं, बल्कि समस्त जड़-चेतन, पशु-पक्षी, नदी-पर्वत तथा समुद्र से संबंधित कथाएं भी हैं। ये कथाएं मनोरंजक हैं और इससे भी बढ़कर परिवेश में व्याप्त प्राणमय पर्यावरण में हमें समन्वयपूर्ण सुखद जीवन जीने की प्रेरणा देती हैं। प्रत्येक कथा के अंत में संदर्भ ग्रंथ का उल्लेख होने से इस ग्रंथ की उपयोगिता बढ़ गयी है। 'भारतीय संस्कृति तथा कोश' अत्यंत संग्रहणीय ग्रंथ है।

प्रकाशक : शुभकामना कला निकेतन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२; मूल्य : २९० रु.।

प्रतिबोध : अजय शुक्ला के इस काव्य संग्रह में व्यक्तित्व के घटकों— चेतन, बुद्धि, अहं, अंतःकरण, स्मृतियां एवं भावनाओं के मानसिक अंतर्द्वंद्व को एक प्रयोगात्मक शैली में दर्शाया गया है—**न जाने क्यों/इतने वर्षों विचरण के बाद/आज मेरे समक्ष अचानक/सार्थकता के बोझिल प्रश्न नहीं हैं।**



कवि ने प्रतिबोध प्रक्रिया को एक यात्रा का यथार्थ स्वरूप देकर सुंदर एवं मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है—**आज इतने वर्षों बाद अचानक/स्वयं से यह भटकाव कैसा ?**

प्रकाशक : प्रकाशन संस्थान, ४७१५/२१ दयानंद मार्ग, दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२, मूल्य : ५० रु.।

डायमंड पॉकेट बुक्स ने हाल ही में कला, संस्कृति, स्वास्थ्य तथा ऐतिहासिक पुरुषों के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालनेवाली कई महत्त्वपूर्ण कृतियों का प्रकाशन किया है। इनमें वीर सावरकर के जीवन पर आधारित डॉ. भवान सिंह राणा की पुस्तक **'भारत के महान अमर क्रांतिकारी वीर विनायक दामोदर सावरकर'** (मूल्य-२५ रु.), लौह पुरुष सरदार पटेल के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालनेवाली डॉ. भवान सिंह राणा की पुस्तक **'लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल'** (मूल्य-२५ रु.), चंद्रशेखर आजाद के बलिदान पर रौशनी डालनेवाली डॉ. भवान सिंह राणा की पुस्तक **'चंद्रशेखर आजाद'** (मूल्य-२५ रु.), लाला लाजपत राय के उल्लेखनीय कार्यों पर प्रकाश डालनेवाली डॉ. भवान सिंह राणा की पुस्तक**'लाला लाजपत राय'** (मूल्य-२५ रु.), लक्ष्मी बाई के जीवन संघर्ष पर आधारित डॉ. भवान सिंह राणा की

पुस्तक '**झांसी की रानी लक्ष्मी बाई**' (मूल्य-३० रु.) तथा चाणक्य के विभिन्न कथनों पर प्रकाश डालती डॉ. भवान सिंह राणा की पुस्तक '**चाणक्य सूत्र**' (मूल्य-३० रु.) का प्रकाशन किया है ।

इसके अतिरिक्त योगासन पर आधारित आचार्य भगवान देव की पुस्तक '**योगासन और स्वास्थ्य**' (मूल्य-४० रु.), रंगों एवं सूर्य चिकित्सा पर प्रकाश डालती आचार्य सत्यानंद की पुस्तक '**सूर्य चिकित्सा**' (मूल्य-३० रु.), शरीर के विभिन्न अंगों के परिचय, उन पर होनेवाले रोगों तथा स्वयं निदान की विधि बतानेवाली डॉ. एस.के. शर्मा की पुस्तक '**अपना स्वास्थ्य अपने हाथ**' (मूल्य-३० रु.), होम्योपैथी चिकित्सा से विभिन्न रोगों के निदान पर प्रकाश डालती डॉ. एस. चौहान की पुस्तक **डायमंड होम्योपैथिक गाइड**' (मूल्य-४० रु.), सार्वभौमिक ऊर्जा तथा स्पर्श चिकित्सा के अद्भुत रहस्यों का खुलासा करती रजनीकांत उपाध्याय की पुस्तक '**रेकी**' (मूल्य-६० रु.) तथा यंत्र, मंत्र और तंत्र के विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा करती पं. राधाकृष्ण श्रीमाली की पुस्तक '**मंत्र शक्ति से कामना सिद्धि**' (मूल्य-३० रु.) तथा वास्तुशास्त्र के विभिन्न आयामों, उसके व्यावहारिक, वैज्ञानिक पहलुओं पर प्रकाश डालती पंडित गोपाल शर्मा की पुस्तक '**सुगम वास्तुशास्त्र**' (मूल्य-६० रु.)-जैसी उत्कृष्ट पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं । उक्त पुस्तकें सभी पाठकों के लिए उपयोगी हैं । इन पुस्तकों के प्रकाशक हैं :—

डायमंड पॉकिट बुक्स (प्रा.) लि., एक्स-३०, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-।। नयी दिल्ली-११००२० ।

नागफनी के जंगल : संगीता गुप्ता का यह कहानी संग्रह है । इसमें उनकी आठ कहानियां संकलित हैं । आबिदा, स्नेह का पथ, एक चिट्ठी तुम्हारे नाम, अन्याय के विरुद्ध, बसंत की खोज में शोषण, आस्था के फूल तथा नागफनी के जंगल—जैसी कहानियों में उन्होंने अपने अंतर्मन की व्यथा तथा समाज की उस जिजीविषा को व्यक्त किया है जो उन्होंने अपने आसपास के जीवन में देखी हैं तथा भोगी हैं ।

प्रकाशक : अतुल प्रकाशन, ११३१ कटरा, इलाहाबाद-२११००३; मूल्य : ५० रु. ।

इस पार उस पार : संगीता गुप्ता नब्बे के दशक के काव्य जगत का एक उभरता हुआ हस्ताक्षर हैं । 'इस पार-उस पार' उनका दूसरा काव्य संग्रह है । इसमें उनकी छोटी-बड़ी ५८ कविताएं हैं । उनकी कविताओं में नारी जीवन की विडंबना सजीव बनकर उभरी है—**उस देश की बेटी हूं/जहां जन्म के पहले/लड़की भ्रूण हत्या की/शिकार होती है/यदि भूल से/दुनिया में आ ही गयी तो/भूदान गोदान की भांति/कन्यादान के लिए पाली जाती है ।**



भारतीय समाज में नारी की स्थिति, उसकी पीड़ा और उसके जीवन संघर्ष को शब्दों में पिरोकर कवयित्री ने अपनी रचनाओं के माध्यम से देश और समाज को एक संदेश भी दिया है—**पढ़ना-लिखना/सीना-पिरोना/खाना बनाना/घर सजाना/सिखाने का एक ही मकसद/विवाह/मानो विवाह बलिदान हो/और वह/बलि का बकरा ।**

प्रकाशक : तन्मय प्रकाशन, त्रिकूट बिल्डिंग, ४ सी लैंस डाउन प्लेस, कलकत्ता-२९; मूल्य : १०० रु. ।

साहित्य भवन प्रा. लि. के हाल के प्रकाशनों में 'भारत में लोक साहित्य', 'भारत के कर्णधार', 'कर्मपथ', 'लायली आसमान', 'पति सुधार केंद्र' तथा 'बृज के वैष्णव संप्रदाय और हिंदी साहित्य'—जैसी पुस्तकें उल्लेखनीय हैं। डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय की पुस्तक '**भारत में साहित्य**' में भारत की विभिन्न भाषाओं के लोक साहित्य की उत्पत्ति, अध्ययन तथा उसके विकास पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक का मूल्य सजिल्द १४० रु. है।
पी. डी. टंडन की पुस्तक '**भारत के कर्णधार**' में देश के अनेक महान नेताओं के जीवन एवं कृतित्त्व पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक का मूल्य सजिल्द ७० रु. है।
आर. के. श्रीवास्तव की पुस्तक '**कर्मपथ**' काव्य संग्रह है जिनमें कवि ने अपनी कविताओं के माध्यम से कर्म का महत्त्व सर्वोपरि माना है। इस काव्य संग्रह का मूल्य ३५ रु. है।
'**लायली आसमान**' महाश्वेता देवी का उपन्यास है। उपन्यास लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह की पीड़ा तथा उस आखिरी सितारे की आखिरी चमक लायली आसमान के दुःख, दर्द और असंतोष की कहानी है। मूलतः बंगला में लिखे गये इस उपन्यास का अनुवाद वीरेंद्रनाथ मिश्र ने किया है। उपन्यास का मूल्य १०० रु. है।

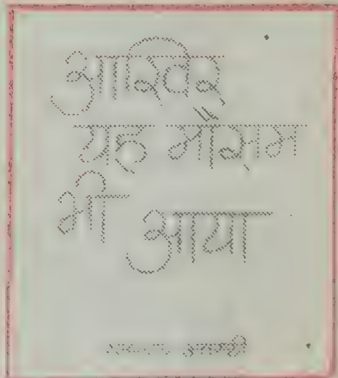
श्रवण कुमार गोस्वामी की कृति '**पति सुधार केंद्र**' नाट्य संकलन हैं। आकाशवाणी के 'हवा महल' कार्यक्रम के अंतर्गत कई नाटक प्रसारित हो चुके हैं। इसमें नौ नाटकों को संकलित किया गया है। मूल्य सजिल्द ५० रु. है।

हरिमोहन दास टंडन की पुस्तक '**ब्रज के वैष्णव संप्रदाय और हिंदी साहित्य**' में वैष्णव धर्म के संक्षिप्त इतिहास, कृष्णोपासना, ब्रज के संप्रदायों का हिंदी साहित्य तथा हिंदी साहित्य के विविध अंगों पर सांप्रदायिक प्रभाव का वर्णन है। पुस्तक का मूल्य १५० रु. है।
उक्त सभी पुस्तकों के प्रकाशक हैं—

साहित्य भवन प्रा. लि., ९३ जीरो रोड, इलाहाबाद-३।

राजपाल एंड संस

राजपाल ने कई उल्लेखनीय कृतियों का प्रकाशन किया है जिनमें 'प्रतिरोध', 'आखिर यह मौसम भी आया', 'साथ सहा गया दुःख', 'पुण्यतोया' तथा 'भूख आग है' प्रमुख हैं।
डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय का '**प्रतिरोध**' नया उपन्यास है जो उनके उपन्यास 'मेरे पक्षधर और दूसरा भूतनाथ' की अगली कड़ी है। यह उपन्यास एक नया प्रयोग है और संकल्पबद्ध नायक की संघर्ष गाथा है। मूल्य—१७५ रु.।
आखिर यह मौसम भी आया', कवि रमानाथ अवस्थी का नया काव्य संग्रह है। प्रख्यात गीतकार रमानाथ अवस्थी ने अपने इस काव्यसंग्रह के माध्यम से न केवल हिंदी कविता बल्कि उनकी कविताओं में आज की दिनोंदिन बिगड़ती राजनीतिक-सामाजिक स्थिति का भी प्रभावी चित्रण है। उनकी प्रेम कविताएं हृदय में चोट करती हैं। इस काव्य संग्रह की कीमत १२५ रु. है।



'**साथ सहा गया दुख**' नरेन्द्र कोहली का नया उपन्यास है जिसमें बच्चे की बीमारी और मृत्यु

की घटना में पति और पत्नी का साथ सहा गया और एक-दसूरे में बांटा गया दुःख उपन्यास का विषय है । उपन्यास का मूल्य है ५० रु. ।

'पुण्य तोया' प्रतिभा राय की औपन्यासिक कृति है जिसमें गांव की अर्धशिक्षित, किंतु अत्यंत सुंदर स्त्री किस प्रकार विवाहित होने पर भी पुरुष की वासना का शिकार बनती है और स्वयं अपना कोई दोष न होने पर भी किस प्रकार समाज के हाथों प्रताड़ित होती है—जैसी घटनाओं का मार्मिक वर्णन है । मूलतः उड़िया में लिखे गये इस उपन्यास का हिंदी रूपांतर अजय कुमार पटनायक एवं शंकरलाल पुरोहित ने किया है । उपन्यास की कीमत १५० रु. है ।

'भूख आग है'—कृष्ण बलदेव वैद की नाट्यकृति है । इस नाट्य कृति में वर्तमान सामाजिक परिवेश की यंत्रणा और जिजीविषा का वर्णन है । यह एक विडंबना प्रधान नाटक है । यह नाटक उन स्वप्नों का मरसिया भी है जो संघर्ष के दौरान लोगों को जिलाए रखता है । इस नाट्य कृति की कीमत है—७० रु. । इन सभी पुस्तकों के प्रकाशक हैं—

राजपाल एंड संस, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली ।

किताबघर द्वारा हाल में प्रकाशित पुस्तकों में 'अनंत नाम जिज्ञासा' और 'यदा कदा' प्रमुख हैं ।

'अनंत नाम जिज्ञासा' अमृता प्रीतम के संस्मरणों और मन में यदा कदा आये विचार बिंदुओं का संकलन है । यह कृति एक तरह की आपबीती है जिसे लेखिका ने शब्दों के माध्यम से पाठकों के सम्मुख रखा है । मूल्य है—८० रुपये ।

'यदा-कदा' यतीन्द्र मोहन प्रताप मिश्र की कविताओं का पहला संग्रह है । काव्य संग्रह की विभिन्न कविताओं में कवि ने सुख-दुःख, आशा-निराशा, विषाद और आनंद के पलों को विभिन्न रूपों में चित्रण कर काव्य जगत में प्रवेश किया है । इस काव्य संग्रह की कीमत ७५ रु. है । इन पुस्तकों के प्रकाशक हैं—

किताब घर, २४ अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२ ।

'अशोक'—डॉ. राधाकृष्ण शर्मा द्वारा लिखित इस पुस्तक में सम्राट अशोक के व्यक्तित्व, मौर्य साम्राज्य के पतन और अशोक के दायित्व तथा मौर्य साम्राज्य के पतन के कारणों पर चर्चा की गयी है ।

प्रकाशक : शर्मा पुस्तक मंदिर, मोहननगर, छपरा (बिहार); मूल्य-३५ रु. ।

छलांग : अरुण सीतेश का यह कहानी संग्रह है जिसमें उनकी दो दर्जन कहानियां हैं । नारी मनोविज्ञान के विभिन्न बिंदुओं पर रोशनी डालती कहानियां नारी के अंतर्द्वंद्व तथा उसकी पीड़ा को बखूबी दर्शाती हैं ।

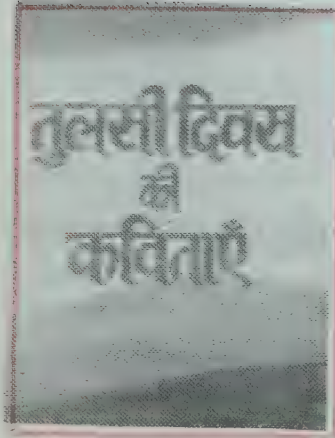
प्रकाशक : आर्य बुक डिपो, ३० नाईवाला, करोलबाग, नयी दिल्ली-११०००५; मूल्य : ४५ रु. ।

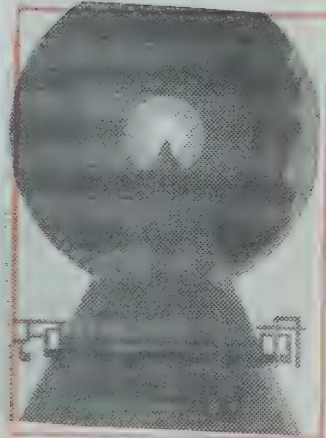
सिने पर्सनैलिटी : प्रमोद लायटू की यह पुस्तक उन सिने प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी है जो अपने पसंदीदा फिल्म स्टारों के बारे में जानने-समझने के इच्छुक हैं । इस पुस्तक में सिने जगत के २५ नये-पुराने स्टारों के जीवन-प्रसंग तथा उनकी आंतरिक झांकी प्रस्तुत की गयी है ।

प्रकाशक : कृजला प्रकाशन, ४८ एफ, पॉकेट-४, मयूर विहार, फेज-।, दिल्ली-११००९१; मूल्य : १०० रु. ।

स्वस्थ संस्कृत जीवनम् : डॉ. उमा पांडेय और डॉ. कृष्ण नारायण पांडेय द्वारा लिखित इस पुस्तक में लोकजीवन में संस्कृत के प्रयोग तथा उसके प्रसार के लिए संस्कृत की सूक्तियों को हिंदी में रूपांतरित कर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया गया है ।

प्रकाशक : सरस्वती साहित्य संस्था, २९५ जागृति इंक्लेव, विकास मार्ग, दिल्ली-११००९२; मूल्य : १५ रु. ।





तुलसी दिवस की कविताएं : एशियाई कविता के प्रमुख हस्ताक्षरों में एक तुलसी दिवस नेपाली कविता के अग्रणी कवि हैं । उन्होंने प्रयोगशील कविता को संवेदनशीलता के उत्कर्ष तक पृहुंचाया है ।

गंगा प्रसाद विमल, रणजीत साहा तथा डॉ. रामदयाल राकेश के द्वारा अनुदित तथा संकलित इस काव्य संग्रह में करीब तीन दर्जन कविताएं हैं । उनकी कविताओं में मानवीय वस्तुरूप लक्षित है तथा उपमहाद्वीप की जटिल तसवीरों का भाषायी रूप प्रतिबिंबित है ।

प्रकाशक : भारतीय प्रकाशन संस्थान, ४८५५/२४ अंसारी रोड दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२; मूल्य : ८० रु. ।

स्वामी दयानंद की जीवन यात्रा : आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानंद ने हिंदुओं में राष्ट्रीयता का जो बिगुल फूंका है, उससे पूरे समाज में नवचेतना का प्रादुर्भाव हुआ है । इस पुस्तक में स्वामी दयानंद के जीवन तथा उनके कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है ।

जगतराम आर्य और यशपाल पुरोहित के संपादन में प्रकाशित यह पुस्तक हर वर्ग के पाठक के लिए एक अनमोल निधि है जो स्वामी दयानंद को भीतर तक जानना चाहते हैं और उनसे प्रेरणा लेना चाहते हैं ।

प्रकाशक : आर्य प्रकाशन मंडल, सरस्वती भंडार, गांधी नगर, दिल्ली-११००३१; मूल्य : ३० रु. ।

भोजपुरी निबंध चिंतामणि : डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने अपनी पुस्तक में भोजपुरी भाषा साहित्य और उसके इतिहास पर प्रकाश डाला ही है, साथ ही इस पुस्तक के माध्यम से भोजपुरी साहित्य को एक अनमोल कृति प्रदान की है । भोजपुरी में ही लिखी यह पुस्तक भोजपुरी भाषा प्रेमियों एवं शिक्षार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी साबित होगी ।

प्रकाशक : शुभम् प्रकाशन, १७७ शहरारा बाग, इलाहाबाद (उ.प्र.); मूल्य : ३५ रु. ।

एकांत के क्षण : श्री राम निरंजन शर्मा 'ठिमाऊ' की इस पुस्तक में उनके २९ ललित निबंध संग्रहीत हैं । इन निबंधों में लेखक ने अपने जीवनानुभवों और अनुभूत सत्यों को वाणी दी है । निबंधों के विषय आम आदमी के परिवेश और दैनंदिन जीवन के आसपास के हैं ।

प्रकाशक : हिमाचल पुस्तक भंडार, सरस्वती भंडार, गांधी नगर, दिल्ली-११००३१; मूल्य : ६० रु. ।

प्रस्तुति : सु.

भारतीय भाषा केंद्र की विचार गोष्ठी

देहरादून : 'अंगरेजी भाषा हिंदी व दूसरी भाषाओं की सौत के रूप में है । भारतीय भाषाओं के बीच सीधा अनुवाद होना चाहिए । अंगरेजी भाषा को इसके बीच में नहीं लाना चाहिए'—उक्त विचार प्रख्यात साहित्यकार तथा कादम्बिनी के संपादक राजेन्द्र अवस्थी ने यहां एम.के.पी. कॉलेज के सभागार में भारतीय भाषा केंद्र द्वारा 'आजादी के पचास वर्ष एवं भारतीय भाषाएं' विषय पर आयोजित गोष्ठी में व्यक्त किये ।

श्री अवस्थी ने गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कहा कि 'मातृभाषा को सर्वप्रथम वरीयता दी जानी चाहिए ।' राजनीतिक लोगों ने इस देश को जातीयता, धर्मवाद, क्षेत्रवाद तथा भाषावाद में बदलने की कोशिश की, जिससे समस्याएं बढ़ीं, लेकिन हमारा देश अनेकता में एकतावाद को लेकर हमेशा आगे बढ़ता रहा है ।

नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष सुमतींद्र नाडिग ने इस अवसर पर कहा कि 'भारतीय भाषाओं का एक-दूसरे से काफी पुराना संबंध है ।' इस संबंध को समझकर ही हमें भारतीय भाषाओं व हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए प्रयास करने होंगे ।

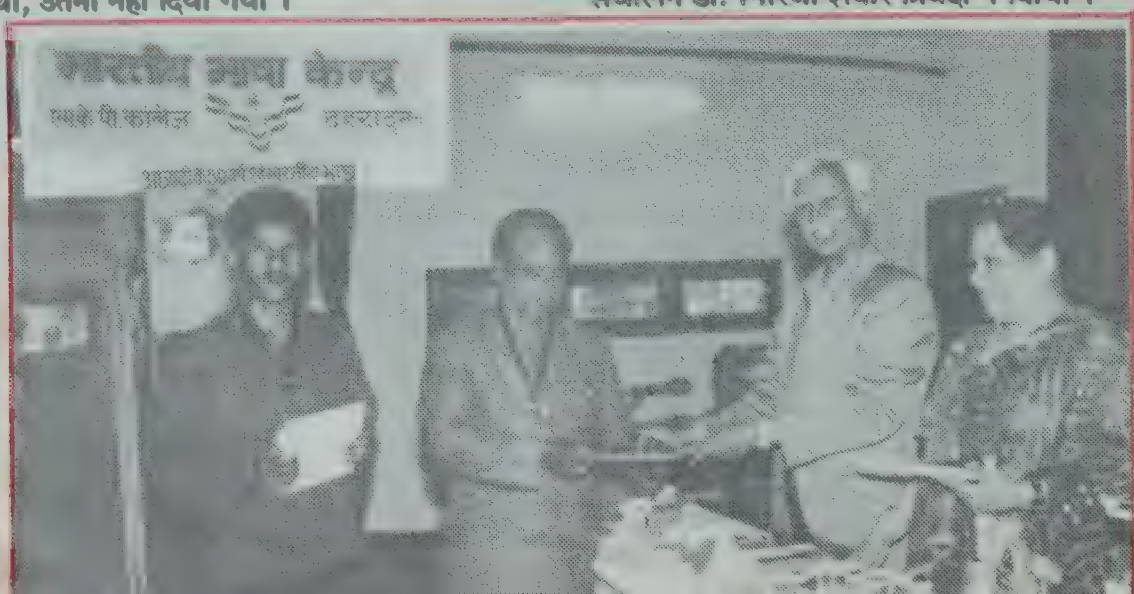
केंद्रीय हिंदी निदेशालय के पूर्व निदेशक व साहित्यकार गंगा प्रसाद विमल ने कहा कि 'पिछले पचास वर्षों में हिंदी व भारतीय भाषाओं के विकास के लिए जितना ध्यान दिया जाना चाहिए था, उतना नहीं दिया गया ।'

इस अवसर पर केंद्र की निदेशक एवं प्राचार्य डॉ. सुधा पांडे ने कहा कि भारतीय भाषाओं के स्वरूप को साकार करने में सभी को अपना योगदान देना होगा तथा हिंदी के प्रति और अधिक उदार होने की जरूरत है ।

ओ.एन.जी.सी. के अपर कार्यकारी निदेशक (सुरक्षा एवं सतर्कता) घनश्याम मुरारी श्रीवास्तव ने कहा कि हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को सीखने के प्रति जो चेतना विकसित हो रही है वह देश की एकता के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है ।

इस अवसर पर वर्ष ९५-९६ तथा ९६-९७ के प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र एवं मैडल प्रदान किये गये । इससे पहले मुख्य अतिथि श्री नडिग ने दीप प्रज्वलित कर गोष्ठी का उद्घाटन किया । उन्होंने इसके बाद नवोदित स्वर का विमोचन किया । इनमें डॉ. गिरिजा शंकर त्रिवेदी, राजेन्द्र शर्मा, राम प्रताप वर्मा आदि कई प्रशिक्षणार्थी थे । कार्यक्रम का संचालन सरोज त्रिपाठी ने किया ।

गोष्ठी के दूसरे सत्र में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन ओ.एन.जी.सी. के निदेशक (कार्मिक) जौहरीलाल ने किया । इस अवसर पर भाषा केंद्र की ओर से श्री जौहरीलाल के साथ ही गढ़वाल मंडल विकास निगम के अध्यक्ष डॉ. देवेंद्र भसीन, कादम्बिनी के संपादक राजेन्द्र अवस्थी, नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष सुमतींद्र नडिग तथा हिंदी निदेशालय के पूर्व निदेशक गंगा प्रसाद विमल आदि को सम्मानित किया गया । कार्यक्रम का संचालन डॉ. गिरिजा शंकर त्रिवेदी ने किया ।



के.के. बिड़ला फाउंडेशन पुरस्कार

के.के. बिड़ला फाउंडेशन का वर्ष १९९७ का वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए सांतवां घनश्याम दास बिड़ला पुरस्कार भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर की सायिड स्टेट एंड स्ट्रक्चरल केमिस्ट्री यूनिट के प्रो. बिमान बागची को प्रदान करने की घोषणा की गयी है । इस पुरस्कार के अंतर्गत प्रो. बागची को १.५० लाख रुपये नगद तथा प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया जाएगा ।

त्रिदिवसीय रसशास्त्र कार्यशाला संपन्न

नयी दिल्ली । काया-माया आयुर्वेदिक अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र के प्रांगण में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय रसशास्त्र कार्यशाला का गत माह में आयोजन हुआ । कविराज नानक चंद शर्मा की अध्यक्षता में काया-माया चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित काया-माया आयुर्वेदिक अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र द्वारा आयोजित कार्यशाला का भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकांत जी ने उद्घाटन किया । इस समारोह में श्री जनेश्वर मिश्र निवर्तमान पेट्रोलियम एवं गैस मंत्री मुख्य अतिथि थे और समारोह की अध्यक्षता देश के ख्यातिलब्ध मूर्धन्य चिकित्सक पद्मभूषण श्री वैद्य बृहस्पति देव त्रिगुणा ने की । इस कार्यशाला में भारतवर्ष के ख्यात प्राप्त चिकित्सक एवं रसशास्त्रियों ने भाग लिया । विशेषाभिमंत्रितों में रसशास्त्रियों के अतिरिक्त भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद के अध्यक्ष वैद्यवर पं. श्री रामजी शर्मा, निखिल भारत वर्षीय आयुर्वेद महामंडलाध्यक्ष वैद्य पं. शिवकरण शर्मा जी छांगाणी, श्रीमती शांता शास्त्री सचिव, भारतीय चिकित्सा पद्धति, संयुक्त सचिव (भारतीय चिकित्सा पद्धति) श्री प्रदीप भार्गव तथा श्री योगेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, सचिव, स्वास्थ्य परिवार कल्याण प्रमुख थे । मंच संचालन वैद्य गौरीलाल चानना ने किया ।

महामूर्ख सम्मेलन

जयपुर—तरुण समाज के तत्वावधान में हास्य-व्यंग्य कवियों को लेकर २७वें महामूर्ख सम्मेलन का विश्वंभर मोदी के संयोजकत्व में आयोजन किया गया । संचालक थे रमेश गुप्त चातक । इस सम्मेलन में सर्वश्री हुल्लड़ मुरादाबादी, सुरेश नीरव, सांड़ नरसिंह पुरी, किरण जोशी, सत्यदेव शास्त्री 'भौंपू', योगेन्द्र मौदगल्य, तेजनारायण शर्मा 'बेचैन', डॉ. सुरेश अवस्थी, आदित्य चेतन, लट्टूरी लट्ठ, लालबत्ती मेनपुरी, प्रभात प्रणय, सुरेन्द्र दुबे, नवनीत हुल्लड़ एवं सौरभ प्रसन्न ने अपनी हास्य-व्यंग्य कविताओं से श्रोताओं को रसविभोर किया । इन्हीं कवियों ने दूसरे दिन अलवर में आयोजित महामूढ़ सम्मेलन में भी अपना काव्य पाठ किया । महामूढ़ सम्मेलन के संयोजक थे—विपल्व मोदी ।

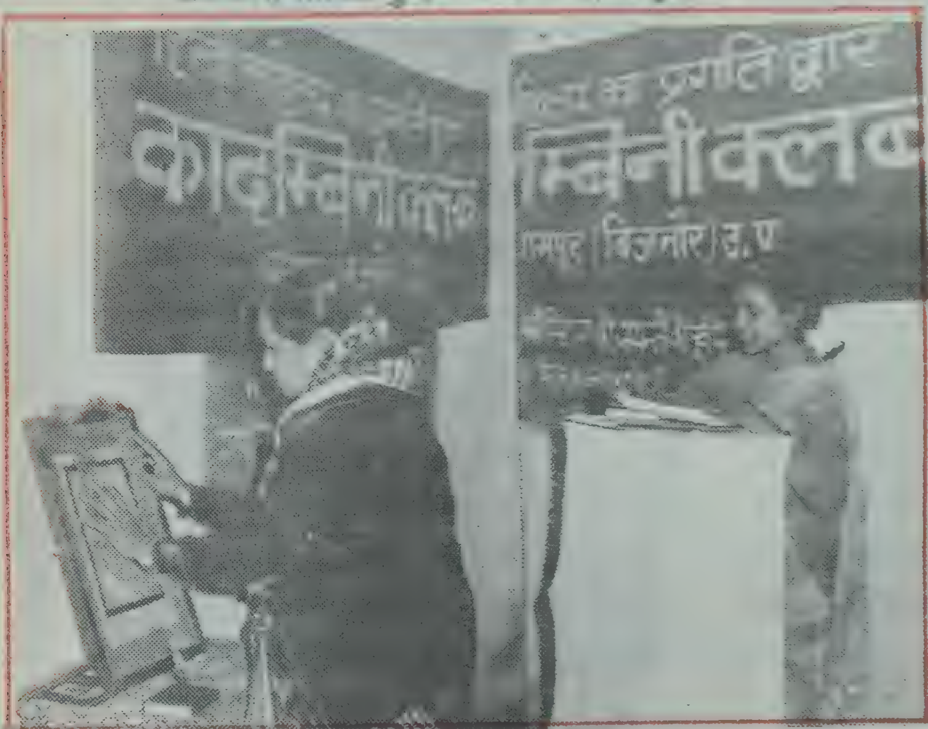
डॉ. सरोजनी प्रीतम सम्मानित

एक अप्रैल को उज्जैन में आयोजित २८वें अखिल भारतीय टेपा सम्मेलन में हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए हास्य-व्यंग्य का प्रथम महिला गद्य-पद्य पुरस्कार डा. सरोजनी प्रीतम को प्रदान किया गया । डॉ. सरोजनी प्रीतम की हास्य-व्यंग्य की अब तक तीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । गत वर्ष उन्हें 'वूमन ऑफ द ईयर' का पुरस्कार भी मिल चुका है ।

पिछले दिनों स्वीडन के एक छोटे-से गांव युंग शीले में भारतीय संध्या का आयोजन किया गया । इस अवसर पर एक स्वीडिश युवक ने भारतीय तबले में संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भारत से आलोक आदित्य उपस्थित थे ।



धामपुर कादम्बिनी क्लब ने सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की १०१वीं जयंती की पूर्व संध्या पर एस. बी. डी. महिला महाविद्यालय परिसर में एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया। काव्य गोष्ठी प्राचार्य डॉ. सरोज मार्कण्डेय की अध्यक्षता में हुई जिसमें डॉ. विजय लक्ष्मी अग्रवाल, कु. सोनिका सक्सेना, दिव्या गुप्ता, विनोद शर्मा, नीरजा सिंह, कु. सुनीता देवी, डॉ. कंचन गुप्ता, रीता सिंह, स्नेह अग्रवाल, सावित्री दुबे, जया खालिदा, तबस्सुम, डॉ.



शशि सिंह, नीरज आत्रेय, अर्चना सिंह, पूजा सिंघल, सुनंदा तथा मोनिका ने भाग लिया। संचालन कु. रीता सिंह ने किया।

नवलगढ़ कादम्बिनी क्लब ने एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया। काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता समाजसेवी निजामुद्दीन खत्री ने की। गोष्ठी के मुख्य अतिथि मो. अली आदिल थे। श्री सुधाकर श्रीवास्तव ने सरस्वती वंदना की। काव्य पाठ करनेवाले प्रमुख कवियों में सुधाकर श्रीवास्तव 'सुधाकर', मो. आदिल, मुमताज अहमद, नरेन्द्र सिंह '[illegible]', खालिद मोहम्मद, शहनाज बानो, [illegible] सिंह 'शेखावत', कृष्णानन्द शर्मा, विनोद चतुर्वेदी आदि प्रमुख थे। मंच संचालन श्री सुरेश ठाकुर ने किया। क्लब के संयोजक श्री सुधाकर श्रीवास्तव 'सुधाकर' ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

हिंगोली, वैदन कादम्बिनी क्लब के सदस्यों की वार्षिक बैठक आयोजित की गयी जिसमें क्लब द्वारा किये गये पिछले वर्ष के कार्यों की समीक्षा की गयी। बैठक में नवीन सत्र १९९७-९८ हेतु क्लब कार्यकारिणी का चयन किया गया। कार्यकारिणी की केंद्रीय समिति हेतु श्री अनिल कुमार नोतवानी को संयोजक एवं श्री संजय सिंह परिहार 'पद्म' को कार्यकारी संयोजक नियुक्त किया गया।

सतना कादम्बिनी क्लब द्वारा पं. कमलाकर चतुर्वेदी की अध्यक्षता में एक परिचर्चा गोष्ठी का आयोजन किया गया। 'राजनीतिक प्रदूषण एवं साहित्य की भूमिका' विषय पर आयोजित इस गोष्ठी में वरिष्ठ कवि श्री वंशपति प्रसाद तिवारी ने राजनीति में आयी नैतिक मूल्यों में गिरावट पर चिंता व्यक्त की। सारगर्भित व्याख्यान हेतु श्री मनीष दत्त पांडेय एवं श्री प्रदीप सिंह गहरवार (युवा रचनाकार) को प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कवि गोष्ठी संपन्न हुई, जिसमें श्री रामफल शुक्ल 'प्राण', डॉ. बांके

बिहारी द्विवेदी, श्री अंजनी त्रिपाठी (पत्रकार), श्रीमती किरन पांडेय, शारदा प्रसाद तिवारी, मुनिराज पटेल, राजकुमार धर द्विवेदी (गीतकार) श्रीमती सुषमा पांडेय एवं डॉ. श्रीमती त्रिवेणी गुप्ता की उपस्थिति उल्लेखनीय रही । अंत में कादम्बिनी क्लब के संयोजक श्री हरिहर प्रसाद तिवारी ने आभार व्यक्त किया ।

बेतिया कादम्बिनी क्लब की मासिक बैठक स्थानीय महाराजा पुस्तकालय में संपन्न हुई जिसमें संयोजक डॉ. (इं.) केदारनाथ के अतिरिक्त मोहन मधुर, राजेन्द्र अनल, डॉ. परमेश्वर भक्त, प्रो. राजदेव प्र. यादव, डॉ. अवधेश विद्रोही, किशोरी लाल अंशुमाली, पुरुषोत्तम प्रसाद, रवीन्द्र प्र. श्रीवास्तव एवं मंत्रमुदित आदि सदस्यों ने भाग लिया ।

कटनी कादम्बिनी क्लब द्वारा क्लब संयोजिका सुश्री मंजुला खरे के निवास पर नवागत क्लब सदस्यों का परिचय कार्यक्रम आयोजित किया गया तथा क्लब के गठन के उद्देश्यों से परिचित कराते हुए एक लघु कथा प्रतियोगिता आयोजित किये जाने का प्रस्ताव रखा गया ।

बोकारो कादम्बिनी क्लब द्वारा एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया । संयोजिका डॉ. मंजु मेहारिया, सचिव सुश्री जयश्री अखौरी, बोकारो महिला कॉलेज के अंगरेजी विभाग से श्रीमती स्वर्णलता दास, हिंदी विभाग से श्रीमती उषा गुप्ता, संस्कृत विभाग से श्रीमती मनोरमा सहाय, इतिहास विभाग से श्रीमती दीपा सिन्हा, वनस्पति विभाग से श्रीमती सुषमा रानी आदि सदस्याएं इस अवसर पर उपस्थित थीं तथा श्री महेश मेंहदी, चास कॉलेज के श्रीवर्णवालजी, श्रीरामनारायण उपाध्याय, श्री तिवारीजी आदि कविगणों ने अपनी रचनाएं सुनायीं । इस अवसर पर सीवान से पधारे श्री बालेश्वर बाबू विशिष्ट अतिथि थे ।

वड़ोदरा कादम्बिनी क्लब तथा केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद ओ.एन.जी.सी. शाखा के सामूहिक तत्त्वावधान में क्लब के सक्रिय सदस्य व परिषद के उपाध्यक्ष श्री अनवर जमाल के निवास पर एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया । गोष्ठी की अध्यक्षता शायर खलीलभाई धनतेजवी ने तथा संचालन कादम्बिनी क्लब के संयोजक डॉ. माणिक मृगेश ने किया । कवि गोष्ठी में पाठ करनेवाले कवि-कवयित्रियों में डॉ. ऋषिपाल धीमान, डॉ. शिवा कनाटे, सैयद नदीम अली, सुरेन्द्र कुमार लखानी, नवरंग, के.एम. शाह, अशोक उपाध्याय, रमेश पंड्या आरस, ललित राणा आतस, बेजान बहादुरपुरी, रसीद मीर, सदफ बड़ौदवी, सतीश शर्मा, जिगर पंड्या, ब्रजेश वालंद, श्रीमती हिना मेहता एवं श्रीमती जीनत जमाल प्रमुख थे ।





समस्या-पूर्ति-२२४

पीढ़ियां

प्रथम पुरस्कार

सुबह की इस धूप में, ताजा नहायी सीढ़ियां
मार मौसम की सही, काई लगी ये सीढ़ियां
चरण थकते हैं परन्तु, नहीं थकतीं सीढ़ियां
इन्हीं कदमों से हैं गुजरीं, जाने कितनी पीढ़ियां

— रेणु सिन्हा
वनस्पति विज्ञान विभाग
सुंदरवती महिला महाविद्यालय
भागलपुर-८१२००१

द्वितीय पुरस्कार

ध्यान मानवता का मन में
शहर में या खंडहर में साथी न हो, परवाह नहीं
धर्म की चढ़ सीढ़ियां
कर्म ऐसा कर तपस्वी याद रखें पीढ़ियां

— रत्ना मिश्र
१८ मनुजेंद्र रोड, दमदम कैंट, कलकत्ता-७०००२८

तृतीय पुरस्कार

याद ने तन-मन बुहारा देहरी घर द्वार आंगन
नेह चंदन हो गया फिर चूमकर सौ बार तन-मन
प्रिय प्रतीक्षारत पुलक की साक्षी ये सीढ़ियां
वेदना हंसती रहेगी पीढ़ियां-दर-पीढ़ियां

—पुष्पेश पुष्प
ग्राम—चकिया पोस्ट—परसा तिवारी (गोंडा)

दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राकेश शर्मा द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, 18-20, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से मुद्रित तथा प्रकाशित

समस्या-पूर्ति २२६



किसका है

समस्या-पूर्ति साहित्य की पुरानी विधा है । हमने उसे फिर से जीवित किया है । यहां प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उपर्युक्त शीर्षक पढ़िए, इसे लेकर आपको सिर्फ छंदबद्ध ही नहीं, अतुकांत कविता भी हो सकती है, लिखनी है, उसमें भावों का गांभीर्य आवश्यक है । रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की हो । समस्या-पूर्ति के परंपरागत नियमों के अनुसार चित्र के नीचे दिये शब्द कविता के अंत में ही आने चाहिए ।

१. समस्या-पूर्ति केवल पोस्टकार्ड पर ही भेजें ।
२. समस्या-पूर्ति संपादक के व्यक्तिगत नाम से नहीं भेजें ।
३. एक बार पुरस्कृत व्यक्ति की रचना छह माह तक दोबारा पुरस्कृत नहीं की जाएगी ।

पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है—

प्रथम—२५० रु., द्वितीय—२०० रु. और तृतीय—१५० रु.

अंतिम तिथि : २५ मई, १९९८


स्वाद व सुगन्ध में आज भी सर्वश्रेष्ठ
रत्ना छाप
ज़ाफरानी पत्ती
भारत में पहली बार
होलोग्राफिक
50 ग्रा० व 10 ग्रा० के पाउच में
PRATIBHA
ZAFRANI ZARDA
FLAVOURED CHEWING TOBACCO FLAKES
IS 2344
CM/L-1081435
आई.एस.आई. के मानदंड पर
एकदम खरा एक मात्र ज़र्दा
प्रभात ज़र्दा उत्पादन
वैधानिक चेतावनी तम्बाकू चबाना स्वास्थ्य के लिये हानिक